❀ ओ३म् ❀

संगीत-रत्न-प्रकाश।

❀ प्रथम-भाग ❀

——:०:○:०:——

राजगीत १

हे सकल उत्पादकेश्वर,
एक तूही सार है।
वेद सम्यक रीति से,
यह कह रहा हर बार है॥
भूल जाता एक भी,
जो प्राणियों में से इसे।
अन्त में वह दुःख की,
सहता अनेकों मार है॥
पा न सकता वह कभी सुख,
दूसरे भी जन्म में।
मत सभी को हे महेश्वर,
ठीक यह स्वीकार है॥
रँग जमाना चाहिये,
तेरा हमें हद्-भूमि में।

लाभदायक जीवनी को,
और क्या व्यापार है ॥
ध्यान से तुझ में समाहित,
जो कि कर्णाधम रहें ।
तो उन्हें है सौख्य सागर,
क्या दुखद संसार है ॥

भजन २

बिनती करो दीन दयाल की, जो है सबका हितकारी ।
नहीं भरोसा है पलभर का, काम न आवे कोई घरका ।
सुमिरन करलो जगदीश्वर का, छोड़ो प्रकृति कुचाल की ॥
इतनी है सीख हमारी ॥ जो है सब० १ ॥

जग में कोई नहीं तुम्हारा, जीते जी का धंधा सारा ।
किसके मात पिता सुत दारा, पूर्ति न होगी ख्याल की ॥
क्यों नाहक उम्र गुज़ारी ॥ जो है सब० २ ॥

काम क्रोध मद लोभ बिसारो, दशो इन्द्रियां अपनी मारो ।
एक धर्म को मन में धारो, फांसी ममता जाल की ॥
तोड़ो हो मुक्ति तुम्हारी ॥ जो है सब० ३ ॥

बाग़बग़ीचा क़िला तबेला, दुखदायक तजो सभीझमेला ।
आखिर जावे जीव अकेला, घड़ी आवे जब काल की ॥
पड़ी दौलत रहे मुरारी ॥ जो है सब० ४ ॥

दादरा ३

झूला डोले जगत में प्रानी।

करत फिरत है मेरी मेरी, सुत कुटुम्ब सम्पति रजधानी ॥१॥
न्यायअन्याय कछु नहिं जाने, करतफिरत अपने मनमानी ॥२॥
अपना धरम नहीं पहचानत, निशि दिन काम करे शैतानी ॥३॥
समझाये भी समझत नाहीं, होगी पीछे बहुत हैरानी ॥४॥
हटत नहीं बलदेव बदी से, जग में तेरी तनक जिंदगानी ॥५॥

भजन ४

पितु मातु सहायक स्वामि सखा,
तुमहीं एक नाथ हमारे हो।
जिनके कछु और अधार नहीं,
तिनके तुमहीं रखवारे हो ॥
प्रतिपाल करो सगरे जग को,
अतिशय करुणा उर धारे हो।
भुलि हैं हमहीं तुमको तुमतो,
हमरी सुधि नाहिं विसारे हो ॥
उपकारन को कछु अन्त नहीं,
छिनही छिन जो विसतारे हो।
महाराज! महा महिमा तुम्हरी,
समुझै विरले बुधवारे हो ॥

भजन ७

दो०-तुम बिन मेरा कौन है, हे अनाथ के नाथ ।
इस असार संसार में, पकड़ उबारो हाथ ॥

टेक-प्रभु दुख सागर संसार से, हो पार लगानेवाले ।

धन यौबन और कुटुम्ब हमारा । संग में कोई न चलनेहारा ॥
फिर हम किसका तक सहारा । खाली जायें घरबार से ॥
तुम ही हो धीर बँधाने वाले ॥ हो पार० ॥

मन चंचल वश में नहीं आवे । चमकदार चीज़ो में जावे ॥
दुष्ट कर्म हम से करवावे । अपने वेग अपार से ॥
झट पापों में ला डाले ॥ हो पार० ॥

इन्द्रिय वश में नहीं आती है । विषय भोग में फँस जाती है ॥
निर्बल करके भटकाती है । इनके दुष्ट विचार से ॥
हो तुम्हीं बचानेवाले ॥ हो पार० ॥

यह शरीर जो सब से प्यारे । वह भी तो नहीं होयँ हमारे ॥
जिस दिन होयँ जीव से न्यारे । आगे मरघट द्वार से ॥
हैं पीठ दिखानेवाले ॥ हो पार० ॥

हो निराश सब ओर से आये । जगत दुखों ने बहुत सताये ॥
तुम बिन स्वामी कौन बचाये । तीनों तापों की मार से ॥
हो तुम्हीं बचानेवाले ॥ हो पार० ॥

भजन ८

है अपरम्पार, प्रभो ! तुम्हारी महिमा ।
अद्भुत है तुम्हारी माया, नहीं पार किसी ने पाया ।
गये सब ऋषि मुनि हार ॥ प्रभो० ॥१॥
रवि चन्द्र और यह तारे, चर अचर जीव जड़ सारे ।
तुम्हीं को रहे पुकार ॥ प्रभो० ॥ २ ॥
तुम्हीं हिरण्यगर्भ कहलाये, निज से ब्रह्माण्ड रचाये ।
कौन कर सके शुमार ॥ प्रभो० ॥ ३ ॥
हो जगत के आदी कारण, तुम्हीं किये हुये हो धारण ।
तुम्हीं करते हो संहार ॥ प्रभो० ॥ ४ ॥
सब बलो में तुमही बल हो, सब चल है तुम्हीं अचल हो ।
तुम्हीं सुख के भण्डार ॥ प्रभो० ॥ ५ ॥
यों वासुदेव गाता है, जो तुम्हें हृदय लाता है ।
वही जन होवे पार ॥ प्रभो० ॥ ६ ॥

दादरा ६

ईश्वर लीजै खबरिया हमारी ।
हो निराश सब ओर स स्वामी, आन पड़े है शरण तुम्हारी ॥१॥
भारत आरत विलख रहा है, रहा न कोई धर्म व्रत धारी ॥२॥
भक्ति तुम्हारी तज कर हमने, जड़ पूजे बन दुष्ट पुजारी ॥३॥
नर तन पाय तुम्हें नहिं खोजा, जीती बाजी जगत् में हारी ॥४॥
काम क्रोध मद लोभ के वश में, हमने सुध बुध सभी बिसारी ॥५॥

बाल युवा और वृद्ध अवस्था, विषयो में खो बैठे सारी ॥६॥
वासुदेव कहे विद्या बल दो, भिक्षा मांगे खड़े हम भिखारी ॥७॥

ठुमरी १०

ओङ्कार भजो, अहङ्कार तजो, पछताओ नहीं जो भई सो भई ।
अविचार अनीति तजो मन से, मदमस्त रहो मत यौवन से ।
उपकार करो तन मन धन से, इतनी वय बीत गई सो गई ॥१॥
परका दुख देख सहाय करो, बिगरे नहि धर्म उपाय करो ।
करनी शुभ अवसर पाय करो, अबलो तुम नींद लई सो लई ॥२॥
कर ध्यान सनातन चाल चलो, अघरूप हुताशन में न जलो ।
अबतो अपने दोउ हाथ मलो, तुम ने विष बेल बई सो बई ॥३॥

ठुमरी ११

अबहीं से सुधार करो अपना, नहि बिगरी का कुछ सोच करो ।
अति दीन कहा प्रभु शरण गहो, मत जीवन में अघ ओघ भरो ।
वेदों के उपदेश सुनो, मन के ममता मय दोष हरो ।
विनती किशोर करे सब से, शिर पे अपने मत दोष धरो ॥

दादरा १२

जगदीश्वर तुम्हारा सहारा हम्हैं,
यहां सूझै न कोई हमारा हम्है ।

बालकपन से आज तलक [illegible] !
तुमही ने तो सहारा हम्हैं ॥ १ ॥
ढूँढ फिरे हम सभी ओर हैं,
मिला न तुमसा पियारा हम्हैं ॥ २ ॥
चहिये सदा शुभ एक मोक्ष पद,
सारे सुखो का भँडारा हम्हें ॥ ३ ॥
अन्धकार से दूर हटाओ,
निज ज्ञान का दे उजियारा हम्हैं ॥ ४ ॥
भवसागर की धार प्रबल है,
इस्मे भी दो छुटकारा हम्हे ॥ ५ ॥
आर्य पुरोहित विनय करे प्रभु !
निज से न कीजै नियारा हम्हे ॥ ६ ॥

रेखता १३

स्वामिन् दयालुता से दुख दर्द हरिये ।
उर में विवेक भरिये चित को प्रसन्न करिये ॥
पशु तुल्य काम क्रीड़ा गो ग्राम में न उलझे ।
परिपक्व शुक्र होवे विनती सु कान धरिये ॥
कर्णान्धता विदूरैं वैदिक सुविज्ञता से ।
आनन्द की सुचरचा मस्तिष्क माहिं भरिये ॥

गजल १४

इतनी ज़िल्लत पे भी अफ़सोस ! कि ग़फ़लत है वही ।

धर्म के का[illegible]से हैयात कि नफ़रत है वही ॥
लाख समझाया मगर अब भी न माने अफ़सोस ।
खोटे कर्मों की तरफ़ हाय कि रग़बत है वही ॥
बुतपरस्ती को किया वेदों से साबित मज़मूम ।
मूर्ती पूजा की अफ़सोस कि आदत है वही ॥
सारे संसार की नज़रों में हुये गरचे ज़लील ।
पर दिमागों में भरी आप के नख़वत है वही ॥
वेद मत पर चलो गर शान्ती के ख़्वाहां हो ।
सच्चा आनन्द है जिसमें कि यह मत है वही ॥

गजल १५

रंज क्या २ न सहे धर्म से ग़ाफ़िल होकर ।
पाप क्या २ न किये विषयो पै मायल होकर ॥
राज धन सम्पदा और दौलतो उम्मीद बक़ा ।
हाय क्या २ न गया हाथ से हासिल होकर ॥
बुतपरस्ती करी और पूजे क़दम शूद्रों के ।
तेरे अहकाम से मालिक मेरे गाफिल होकर ॥
अक्ल थी इल्म था और फनो हुनर सब कुछ था ।
हाय ग़ज़ब कैसे बने लायको काबिल होकर ॥
पहले अफ़ज़ल थे कर्म जन्म की परवाह नथी कुछ ।
अब ज़लालत में गिरे जन्म से अफ़ज़ल होकर ॥
मानलो मानलो इज्जत जो पुरानी चाहो ।
अब भी आर्य बनो सत धर्म में शामिल होकर ॥

गजल १६

परम पिता का प्रेम प्यारे, जो तेरे मन में भरा हुआ है।
तो मोक्ष आनन्द हाथ बांधे, हमेशा सन्मुख खड़ा हुआ है॥
है जिनको मुक्ती के पदकी इच्छा, गुज़ारें आयू वह इस तरह से।
कि तार ईश्वर के जपका मन में, हरएक सायत बँधा हुआ है॥
जगत्पिता के जो देखने को, भटकते फिरते है बेसमझ हैं।
तलाश उसकी अबस है बाहर, जो अपने अन्दर रमाहुआ है॥
क्लेश क्योंकर न दूरजावें, वह शान्त हरदम न होवे क्योंकर।
कि जिसका ईश्वर की याद में मन, बड़ी लगन से लगा हुआ है॥
न मनहो स्थिर कभी भी उसका, समाधी उसकी लगे न हर्गिज़।
जो इस जहां के विषयों के अन्दर, आसक्त होकर फँसा हुआ है॥
बुरा जो औरो का चाहते है, बुराई होती है आखिर उनकी।
वही भला है कि जिस्से हांपर, कभी किसी का भला हुआ है॥
वही जहां में है मर्द मैदां, उसी को होती है कामयाबी।
पराये उपकार पर कमर को, जिस आदमी ने कसा हुआ है॥
जगन्नियंता है सर्व व्यापक, हर एक हरकत वह देखता है।
वह सबसे वाक़िफ़ है जो किसी ने, किसी जगहपर करा हुआ है॥
बुरे अमल की सज़ा है मिलती, अवश्य इस में नहीं है संशय।
अगरचे ज़ाहिर में कर्म कोई, हरएक नज़र से छुपा हुआ है॥
मनुष्ययोनी का लाभ उसी को, उसीका जीवन सफल है केवल।
कि जिसने तनमनको मनके निश्चय से, ईश्वर अर्पण करा हुआ है॥

ग़ज़ल १७

शरण हम प्रभू तेरी आये हुये हैं।
दो कर जोड़े सर को झुकाये हुये हैं॥
न भक्ती न श्रद्धा में मन चित लगाने।
बने पापी पुण्य को भुलाये हुये हैं॥
त्यागा पुरुषार्थ अहंकार में फँस।
कुसंगति से हरदम दबाये हुये है॥
न बल है न बुद्धी न विद्या की शक्ती।
अधोगति पे अपनी भुलाये हुये है॥
स्थिरता न मन को भटकता फिरे यह।
विषयो से बहुत हम सताये हुये हैं॥
करो हम पै कृपा दयामय पिता जी।
उठाओ हमें जो गिराये हुये हैं॥
प्रवृत्ती हो शुभ कर्म और शुभ गुणों में।
मिलें धर्म धन जो गँवाये हुये है॥
हो सत विद्या और ज्ञान से शुद्ध हृदय।
नियम पाल जो तू बनाये हुये है॥
धरम भूख हम को सदा हो प्रभू जी।
बढ़े शान्ति भारी जलाये हुये है॥
गंगाराम सप्रीति पर उपकार सीखे।
मिटे कपट मन में जो लाये हुये है॥

ग़ज़ल १८

मद्दाह सब हैं तेरे, जो हैं ज़बान वाले ।
सुनते हैं नग़मा तेरा, यहां जो हैं कान वाले ॥ १ ॥
बन्दे हैं ख़ाक दर के, सिजदे में सर झुके हैं ।
तौक़ीरो शान वाले, नामो निशान वाले ॥ २ ॥
चौखट पे तेरी करते, जो सल्तनत को क़ुरबां ।
दिल के ग़नी हैं कैसे, ये आसितान वाले ॥ ३ ॥
मन्दिर ही मसजिदों में, वह ख़ासकर नहीं है ।
क्यों शोर ग़ुल मचाते, टंटन अज़ान वाले ॥ ४ ॥
दिल में तेरे निहां है, क्यों ढूढ़ता नहीं तू ।
बाहर न वह मिलेगा, आहो फ़िग़ान वाले ॥ ५ ॥

ग़ज़ल १९

किस पर्दे में निहां है कोनो मकान वाले ।
तेरा निशां कहां है, ऐ बे निशान वाले ॥ १ ॥
बुलबुल ने तुझ से सीखा, पुरसोज़ नग़मा ख़ाली ।
गुल रंगो बू है तेरा, ऐ गुलसितान वाले ॥ २ ॥
ज़ुलमत कदा में जाकर, तुझ को टटोलते हैं ।
नादां वह कम समझ है, वहमो गुमान वाले ॥ ३ ॥
बिजली की ख़ुश अदाई, तारों की जगमगाहट ।
सब में है नूर तेरा, अय ऊंची शान वाले ॥ ४ ॥
इसरार मारफ़त को, क्या जाने शेख़ो पंडित ।

नाक़ूस वाले यह है, वह हैं अज़ान वाले ॥ ५ ॥
गर वस्ल का है तालिब, हो जा फ़िदा तू उसपर ।
यह सच्ची बन्दगी है, अय ज्ञान ध्यान वाले ॥ ६ ॥

ग़ज़ल २०

तेरा निशां कहां है, अय बेनिशान वाले ।
ढूंढ़े तुझे कहां हम, ऐ लामकान वाले ॥ १ ॥
परदो मे तू निहां है, आता नहीं नज़र मे ।
कैसे पहुंच हो तुझतक. ऐ आसमान वाले ॥ २ ॥
हर गुल में बू है तेरी, हरशय में रंग है तेरा ।
तू है मुहीत सब में, ऐ दो जहान वाले ॥ ३ ॥
पहिचाने कोई क्योंकर, अक़्लो ख़िरद हैं हैरां ।
हसरत में सब पड़ेहै, यहां ज्ञान ध्यान वाले ॥ ४ ॥
साधू की यह सदा है, जग रैन का है सुपना ।
हो तू फ़िदा न इस पर, ऐ आन बान वाले ॥ ५ ॥

ग़ज़ल २१

उस को जो देखना हो, योगी हों ध्यान वाले ।
आनन्द हम जो चाहें, हों ब्रह्म ज्ञान वाले ॥ १ ॥
क्या शोक है फिर इसका, गर हम नहीं रहेंगे ।
जब रहसके न यहांपर, विक्रमसी शान वाले ॥ २ ॥
वह राज़ हो ख़ुशी का, तक़लीद में उमर के ।
वेदों के मोतक़िद हों, ये सब क़ुरान वाले ॥ ३ ॥

वेदों की फिर हक़ीक़त मालूम [illegible] उन्हें कुछ।
वेदार्थ करना सीखे, इंगलिश ज़बान वाले ॥ ४ ॥
हों ओ३म् के उपासक अमरीका और यूरुप।
जापान चीन वाले, हिन्दोस्तान वाले ॥ ५ ॥
उन देशों को सुधारे, अब चल के आर्य्य लीडर।
अब तक जो मांस मदिरा, आदिक हैं खाने वाले ॥ ६ ॥
हम को तो चाहिये है, एक आत्मिक इमारत।
हम क्या करेंगे बनकर, आली मकान वाले ॥ ७ ॥
जितने है दृष्टिगोचर, होंगे फ़िदा फ़ना सब।
अदना सी शान वाले, आली निशान वाले ॥ ८ ॥

गजल २२

भगवन् दया की दृष्टी, अब टुक इधर भी करदो।
रहमत से अपनी दामन, इस दीन का भी भरदो ॥ १ ॥
आज्ञा का तेरी पालन, निशि दिन करूं मैं स्वामी।
भिक्षुक हूँ नाथ तेरा, भक्ती का मुझ को वर दो ॥ २ ॥
माता बहिन व कन्या, समझूँ, पराई नारी।
समभाव सब को देखूं, ऐसी मुझे नज़र दो ॥ ३ ॥
बे पुत्र ही है बेहतर, गर हो अधर्मी बालक।
कुल की करे बड़ाई, ऐसा प्रभू पिसर दो ॥ ४ ॥
पुरुषार्थ कर के जो कुछ, मिल जाय नाथ सामाँ।
उस में ही हे दयामय ! सन्तोष और सबर दो ॥ ५ ॥
बेकार है वह धन जो, परस्वार्थ में न व्यय हो।

दुखिया अनाथपालन, करने को नाथ ज़र दो ॥ ६ ॥
कर्मानुसार यदि मैं, मानव शरीर पाऊँ ।
हे ईश ! जन्म मेरा, सत आर्य्यों के घर दो ॥ ७ ॥
संकट हज़ार पड़ने, पर भी धरम न छोड़ूं ।
निर्भय, अशोक, बल से पूरित प्रभू जिगर दो ॥ ८ ॥
कर जोड़ मित्र तुम से, है नाथ अब विनय यह ।
अपनाही ध्यान मुझको, नित शाम और सहर दो ॥ ९ ॥

भजन २३

टेक–कर कृपा पार उतारियो मेरी टूटीसी किश्ती है ।
तुम अविनाशी अजर अमर हो, सारे भूमण्डल के घर हो ।
सब के बाहर और भीतर हो, कारीगर बड़े भारी हो ॥
रची सकल अजब सृष्टी है ॥ मेरी० ॥
सब का न्याय करोहो न्याई, बिन वज़ीर और बिना सिपाही ।
करो फैसले क़लम न स्याही, ऐसे न्यायकारी हो ॥
नहीं ग़लती पड़ सक्ती है ॥ मेरी० ॥
अब तक दुख भोगे हैं भारी, बहुत हुई दुर्दशा हमारी ।
अब आये हम शरण तुम्हारी, तुमही देश हितकारी हो ॥
तारो तो तर सक्ती है ॥ मेरी० ॥
बिना कृपा करुणानिधि तेरी, कुछ नहिं पार बसाती मेरी ।
तेजसिंह भारत की बेड़ी, काट कभी दुख टारियो ॥
जो हृदय कुमति बसती है ॥ मेरी० ॥

गजल २४

शरण अपनी में रख लीजे, दयामय दास हूँ तेरा।
तुझे तजकर कहां जाऊँ, हितू को और है मेरा॥
भकटता हूँ मैं मुद्दत से, नहीं विश्राम पाता हूं।
बचा दे सब तरह से अब, मुझे आफ़ात ने घेरा॥
सताया राग द्वेषो का, तपाया तीन तापो का।
दुखाया जन्म मृत्यू का, हुआ तँग हाल है मेरा॥
दीन दुख मेटने वाला, तुम्हारा नाम सुनकर मैं।
शरण में आ गिरा अब तो, उठा ले किस लिये गेरा॥
क्षमा अपराध कर मेरे, फ़क़त अब आश है तेरी।
दया बलदेव पर कर के, बना ले नाथ निज चेरा॥

गजल २५

हे न्यायकारी ! हे निर्विकारी !! हे जातवारी !!! तुम्हीं हमारे।
न और कोई हितू हमारा, हमें बचाओ हम हैं तुम्हारे॥
बग़ैर दुनिया को हमने देखा, खुद मतलब के हैं यार सारे।
किस से कहें अब दिलदर्द अपना, हैं जानी दुश्मन कि जो थे प्यारे॥
ज़माना भी कुछ निराली सजधज, बदल रहा है अजीब रँग ढँग।
जो थे कभी नूर में चूर भरपूर, फिरते हैं दर दर वह मारे मारे॥
जो थे समझते कि हम है सारे मुल्कों के मालिक ग़रीब परवर।
बली पहलवां लाखो हुनर वर, नहीं पता वह किधर सिधारे॥
इस दुनिया फ़ानी में हमने देखे, हज़ारों बनते बिगड़ते लाखो।

फिर किस की शादीग़मी मनावें, किसे बनावें आंखों के तारे ॥
लगी है अबतो तुम्हीं से आसा, बलदेव को निज बनालो दासा।
जैसा है खोटा खरा या खासा, तुमने तो लाखोंहि पापी तारे ॥

गजल २६

हमारी एक विनय तुम से, दयामय दीन हितकारी।
मिटाओ मेरे हृदय की, अविद्या रूप अँधियारी ॥
प्रकाशित ज्ञान अपने का, हृदय में कीजिये सूरज।
मिले कल्याण का रस्ता, बनें हम सुख के अधिकारी ॥
गया है छूट वह मारग, हमारे पूर्व पुरुषों का।
बिना उसके हमारी हो गई अब दुर्दशा भारी ॥
हमारा धर्म वैदिक था, उपासक आप के हम थे।
हुये अब पन्थ नाना ही, औ नाना इष्ट औतारी ॥
अहिंसा त्याग चोरी था, धर्म व्रत पूर्व पुरुषों का।
वहां हिंसक औ बटमारी, शराबी चोर औ ज्वारी ॥
जहां ऋषि मुनि थे ब्रह्मचारी पुरुष नारी सदाचारी।
वहां अब प्रायः नर नारी, हुये कुलटा औ व्यभिचारी ॥
यहां के दीन औ दुखिया, नहीं इम्दाद पाते हैं।
मुचण्डे भांड़ और वेश्या, उड़ावें माल बदकारी ॥
मचा अन्धेर अब ऐसा, हवा बदली ज़माने की।
तुम्हीं पर आशा है भारी, तुम्हीं पितु बन्धु महतारी ॥
तुम्हीं हो धर्म के पालक, अधर्मी दुष्ट कुल घालक।
समझ बलदेव निज बालक, बचाओ वेग बलधारी ॥

ग़ज़ल २७

प्रभू को छोड़ कर तैंने लगन किस से लगाई है।
हुआ नादान क्यों ऐसा समझ क्या बंच खाई है॥
जो है सब सृष्टि का पालक भुलाया उसको तैं मूरख।
बुतो को पूज कर प्यारे नफ़ा क्या तूने पाई है॥
जो है हर वस्तु में व्यापक ईश निराकार अविनाशी।
बना कर उसकी जड़ मूरत मन्दिर में जा बिठाई है॥
वह है मौजूद सब घट मे हमेशा देखता सब को।
बदी नेकी का फल देता वह ईश्वर सब का न्याई है॥
नहीं वह जन्म मृत्यु के कभी बन्धन में आता है।
बताकर जन्म क्यों उस को वृथा तुहमत लगाई है॥
छुटा नहीं मैल है मनका नहाया लाख तिर्बेनी।
लिखाया नाम सन्तों मे भरी दिल में खुटाई है॥
राम और कृष्ण सत् पुरुषों की क्यों निन्दा करे मूरख।
बनाकर स्वांग क्यो तैंने हँसी उनकी कराई है॥
हजारों दीन और दुखिया न पाते एक टुकड़ा तक।
तै दे दे दान दुष्टों को वृथा दौलत लुटाई है॥
ज़रा अब होश में आजा उठा ग़फ़लत के परदे को।
भजन वलदेव कर उसका जो सब का खुशनुमाई है॥

ग़ज़ल २८

मुल्क भारत की अविद्या से खराबी होगई.६

चाल खिसलत की हकीकत लाजवाबी होगई ॥
थे हज़ारों तत्वज्ञानी महऋषी इस देश में।
उनकी यह औलाद जाहिल औ शराबी होगई ॥
होगये फ़िर्क़े हज़ारों मुख़्तलिफ़ इक एक से।
दीन मत के बाब में बिल्कुल नवाबी होगई ॥
बाप शैवी बन गये बेटा उन्हीं के शाक्तिक।
हैं मियां मुन्नी तौ घर ज़ौजे वहाबी होगई ॥
एक घर में चार फ़िर्क़े क्यों न हो खानेख़राब।
नेस्तो नाबूद की सूरत शिताबी होगई ॥
तंगदस्ती मुफ़लिसी भारत में घर २ घुमगई।
दर्द ग़म से ज़र्द रुख़ रंगत गुलाबी होगई ॥
अब तो चेतो भाइयों ! बलदेव मुल्की खैरोख़्वाह।
देखिये इस मुल्क की क्या इनकलाबी होगई ॥

भजन २९

प्रभु तूही पालनहार दयामय आश तुम्हारी है।
द्वेष नृपति है अविद्या राज्य पर, हुआ अन्धेर अकाज दिये कर।
हास्य की नौबत बजे, क्रोध की ध्वजा पसारी है ॥ प्रभु० ॥
फूट बैर छल हठ है घर घर, बैरन बढ़गई इतनी यहां पर।
प्रीति प्यार नाहिं भ्रात, पुत्र प्रिय नहि महतारी है ॥ प्रभु० ॥
गति संसार का पार न जाना, मूरख मनवा फिरे दिवाना।
चेतो अब करे हाय, धार में नाव हमारी है ॥ प्रभु० ॥

तू है शान्तिमय शान्तिदे स्वामी, न्यायकारी तेरा रहूँ अनुगामी।
पाठक शरण तुम्हारी, लाज रख तुही सुखकारी है ॥ प्रभु० ॥

लावनी ३०

उमर सब ग़फ़लत में खोई, किया शुभकर्म न तैं कोई।

फिरचो स्वारथ में दीवाना, नहीं परमारथ पहिंचाना।
खेलना खाना अठिलाना, कामक्रीड़ा में सुख माना॥

दोहा–जग धन्धों में खो दिया, सारा समय अमूल।
रैन गँवाई सोय के, बीती उमर फजूल॥

बेल तैं पापों की बोई, किया शुभ कर्म न तैं कोई॥ १॥

विमुख हुये निज प्रभुसे प्यारे, किये दुर्गुण भारे भारे।
हज़ारों बेगुनाह मारे, दीन और दुखिया हन डारे॥

दोहा–अब क्या उत्तर देयगा, न्यायाधीश दरबार।
जहां न झूठे साक्षी, नहिं वकील मुख़्त्यार॥

चले फिर वहां न बदगोई, किया शुभकर्म न तैं कोई॥ २॥

समझ मन अब तो सैलानी, छोड़ दे अब बेईमानी।
चले गये लाखों अभिमानी, तू है किस गिन्ती में प्रानी॥

दोहा–हर सुमिरन कर जीव जड़, तुझे कहूँ हरबार।
सारी उमर नींद में खोई, ऐ मतिमन्द गँवार!॥

वेग उठ बहुत लिया सोई, किया शुभकर्म न तैं कोई॥ ३॥

सुहृद सुत पितु कुटुम्ब दारा, हुआ क्यों धन पर मतवारा।
काल का आयेगा हलकारा, छुटेगा इक दिन संसारा॥
दोहा–सपना सा हो जायगा, सुत कुटुम्ब धन धाम।
हो सचेत बलदेव नंद से, जप ईश्वर का नाम॥
मनुष्य तन फिर २ नहि होई, किया शुभकर्म न तै कोई॥ ४॥

ख्याल ३१

गऊ कन्या विधवा के दुःखपर ध्यान न दोगे ऐ भाई!।
सुख स्वप्ने में मिले न तब तक विचार दखो अन्याई॥
गऊ हतन होती है हज़ारों कन्या रात दिन रोती हैं।
लाखों विधवा वाली उमर की अँसुओं से मुँह धोती हैं॥
गऊ बैलो बिन खेती नाश भई उपाधि लाखन होता है।
कठिन क़ैद में विधवा कन्या जन्म अकारथ खोती है॥

शेर।

आह इन की ने यह भारत सारा ग़ारत कर दिया।
सुख न स्वप्ने में रहा सब दुःख ही दुःख भर दिया॥
पाप करने से न डरते धर्म कर से धर दिया।
क्यों वह सुनंत है किसी की मुल्क मुफ़लिस कर दिया॥
ऐ खुदग़रज़ो! डरो ईश से रहम करो तजि कुटिलाई॥सु०॥
विधवा बाली रो रो सर दीवारों से टकराती हैं।
कात पीस बहु उम्र गुज़ारें नाना कष्ट उठाती हैं॥

तुम्हारे धन से लुच्चे लाखों वेश्या मज़े उड़ाती हैं।
पुलाव ज़र्दा उड़ै तुम्हारे धन से गऊ कटवाती हैं॥

शैर।

सोचो हिन्दू भाइयो ! यह ज़ुल्म क्यों करते हो तुम।
मुल्क दुश्मन ज़ालिमों की पर्वरिश करते हो तुम॥
अपने हमवतनो के दुख पर ध्यान नहिं धरते हो तुम।
बेहया बदज़न पै क्यों दिलोजान से मरते हो तुम॥
बेशर्मो ! तुम्हें राख पेटमें नाहक बोझ मरी माई ॥ सु०॥

हुए हज़ारों शूर वीर भारत में पहले बलवाना।
धर्यवान औ दयावान विद्याकी खान जिन्हें जगजाना॥
उन्हीं के कुल में अब तुम ऐसे कटे न चूहे का काना।
ज़नखापन की चलो चाल औ सुनो रंडियों का गाना॥

शैर।

क्या तुम्हारी अक़्लों पर अब हाय पत्थर पड़ गए।
बकते बकते रात दिन समझाते हम तो हड़ गए॥
अपनी नारी छोड़ क्यों रंडी के घर जा सड़ गए।
हाय क्यों भारत के ग़ारत करने पर अब अड़ गए॥
ऐ बेशर्मो ! शर्म करो क्यों हँसी बड़ों की करवाई ॥ सु०॥

देव भूमि भारत को तुम ने बना दिया बूचड़खाना।
मद्य मांस खा खाकर, कर दिया मुल्क अपना बेगाना॥

लाखों दीन बेवा अनाथ भारत में तड़पे बे दाना।
रो २ खून जिगर को खातीं तुम्हें न उनका कुछ ध्याना॥

शैर।

धन हमारे देश का बदकार लाखों खा रहे।
भांड़ वेश्या मुफ़्तखोरे बैठे मौज़ उड़ा रहे॥
है तुम्हें धिक्कार बिधवा दीन रो चिल्ला रहे।
कूबकू कितने ही अंधे लूले धक्का खा रहे॥
विनय करत बलदेव नाथ भारत की सुरत क्यों बिसराई।
सुख सपने में मिले न तब तक विचार देखो अन्याई॥

ग़ज़ल ३२

सुनो जगदीश! बिनती को तुमहीं से आश भारी है।
सुधारो अब कृपा करके दशा बिगड़ी हमारी है॥
अविद्या देश में फैली हुआ मूरख यह भारतवर्ष।
बिगाड़ा रीति नीतों को परस्पर वैर जारी है॥
रहा न धन यहां पर कुछ न अब रहने की आशा है।
निरुद्यमता ने घर दाबा हुआ भारत भिखारी है॥
नहीं है देश की ममता किसी भारत निवासी को।
करें अब क्या यतन प्रभुजी! पड़ा दुख सर पै भारी है॥
नहीं है ऐसा कोई जन जो हम को आके धीरज दे।
यह क्यों रोते हो तुम साहिब दगों से रक्त जारी है॥

ख्याल ३३

गऊ कन्या दुख भरें रात दिन तुम वेश्या के दास हुये।
विचार करके मन में देखो अब तुम हिन्दू खास हुये॥

चौक १

अति निन्दित जो नाम तुम्हारा विदेशियों ने रख दीना।
बास्तव में वह नाम सार्थक अब तो तुम ने कर लीना॥
अनाचार भरमार किये और अधरम से रिश्ता कीन्हा।
मूरखता को मित्र बनाया धर्म अधर्म नहीं चीन्हा॥
इस कारण से तुम्हारे मित्रो! सब सुख सत्यानाश हुये॥वि०॥

चौक २

पढ़ देखो इतिहास तुम्हारे पुराने पुरखा थे कैसे।
उलट पलट क्या हुआ देखलो रहे न तुम अब थे जैसे॥
सबब सोचिये इस अवनति का यतन कीजिये फिर वैसे।
पड़े रहोगे नींद गर्क में मिलें नहीं फिर दो पैसे॥
क्यो पड़गये समझकर पत्थर रुखसत होश हवास हुये॥वि०॥

चौक ३

दुराचार यह देख तुम्हारे मुझ से रहा न जाता है।
दशा देश की देख देखकर मुझ को रोना आता है॥
गऊ कन्या की देख दुर्दशा बिल्कुल जी घबड़ाता है।

तुम इस क़दर ऐश में डूबे भारत प्राण गँवाता है ॥
भाई तुम्हारे भूखों मरते तुम ऐसे ऐयाश हुये ॥वि०॥

चौक ४

वेश्या को तुम माल खिलाते निज नारी भूखो मरती ।
इसी सबब से बहुत नारि घर बार छोड़ वेश्या बनतीं ॥
बहुत मरे विष खाय २ बहु कुवां बावली में पड़ती ।
तुम वेश्या जबतक नहिं त्यागत आतिश हो काया सड़ती ॥
शर्म न आवे मुँह दिखलाते धन खोकर बदमाश हुये ॥वि०॥

चौक ५

वेश्या को धन दे दे कर गौवां का गला कटाते हो ।
खूब सोचलो तुम्हीं पीर पर कुर्बानी करवाते हो ॥
धर्म काज में देत न कौड़ी नाच में झट दे आते हो ।
अनाथ हमवतनो के हाल पर ज़रा तरस नहि खाते हो ॥
इन कर्मों से जभी तुम्हारे देश २ उपहास हुये ॥वि०॥

चौक ६

इसी से पड़ते काल हाल भारत का क्या वेहाल हुआ ।
सत्यधर्म उठ गया मुल्क से इसी से पायेमाल हुआ ॥
हमदर्दी औ भ्रातृभाव का जबसे यहां हलाल हुआ ।
फूट फैलगई सारे मुल्क में दिलों में सबके मलाल हुआ ॥
आंख खोलकर अबतो देखो सुख सारे हैं नाश हुये ॥वि०॥

चौक ७

हे जगदीश्वर! जगतपिता !! अब तुम्हीं आपदा निर्वारो।
दे विद्या बुधि ज्ञान करो इस मूरखता को मुँह कारो॥
कठिन कुमति से हे करुणामय! करो दास को निस्तारो।
परब्रह्म पूरण परमेश्वर! दुष्ट कर्म से कर न्यारो॥
विनय करत बलदेव तुम्हीं से सब से निपट निराश हुये। वि०

भजन ३४

ढूंढा सारे शास्त्र पुराण में, पद हिन्दू कहीं न पाया।

मनू वेद औ छहो शास्त्र में, पता मिला नहीं कोष मात्र में।
हिंदू पद नहीं मिला तंत्र में, बह सत बचन सुनाया॥ पद०॥
लुग़त फ़ारसी में ग़यास है, उस में हिन्दू लिखा खास है।
देखो खोल हो जिस के पास है, काफ़िर चोर बताया॥ पद०॥
जब संकल्प पढ़ो हो भाई, शब्द आर्य्य ही वेद सुनाई।
फिर क्यों छाई मूरखताई, हिन्दू वहां न आया॥ पद०॥
यह है पक्ष यवनों का सारा, हिन्दू रख दिया नाम हमारा।
कहे मुरारी मित्र तुम्हारा, नया गीत कथ गाया॥ पद०॥

भजन ३५

तुम्हें शर्म ज़रा नहीं आती, पद हिन्दू कहलाने में।
बहुत समय हिन्दू कहलाये, अर्थ समझमें कभी न आये।

स्वामी जी ने भी समझाये, बनो आर्य्य की जाती ॥
क्या काफ़िर बन जाने में ॥ पद० १ ॥

लुग़त में हिन्दू देखा भाला, डाकू चोर अर्थ है काला ।
अब तो खासा हुआ उजाला, कैसे अन्धेरी भाती ॥
है लाभ श्रेष्ठ बाने में ॥ पद० २ ॥

मत अब हिन्दू शब्द पुकारो, अपना आर्य नाम उच्चारो ।
सत् उपदेश सुन जन्म सुधारो, बनो धर्म के साथी ॥
नहीं देर मोक्ष पाने में ॥ पद० ३ ॥

सत् उपदेश हुआ अब जारी, खुशी मनाओ नर और नारी।
खुदग़र्ज़ों ने डिगरी हारी, कूट रहे हैं छाती ॥
वर्मा कहे सोलाने में ॥ पद० ४ ॥

ख्याल ३६

हिन्दूपन से धोय हाथ अब परमेश्वर के दास बनो ।
करो कर्म अनुकूल वेद के फिर तुम आर्य ख़ास बनो ॥

चौक १

बिना धर्म सुख मिले न सपने क्यों नाहक मन भटकावो ।
दम्भ कपट छल त्याग न जबतक सीधे मारग पर आवो ॥
चाहे जितनी गंगा नहावो गया प्रयाग चाहे नित जावो ।
सुखकी शकल देख नहीं पैहो चाहे दुनिया में धावो ॥
सत्यधर्म में श्रद्धा लावो पैहो भोग विलास घनो ॥ करो० ॥

चौक २

दश लक्षण जो कहे धर्म के मनूशास्त्र में सुखदाई ।
पहला धीरज क्षमा दूसरा दम तीजा जानो भाई ॥
है चौथा अस्तेय पांचवां क्रिया शौच पुनि बतलाई ।
इन्द्रिय निग्रह छठा सातवें बुद्धी की निर्मलताई ॥
अष्टम विद्या नवम सत्य अरु दशवें क्रोध का नाश गनो॥ क०॥

चौक ३

यही धर्म है मनुष्यमात्र का इसी के ऊपर चित लावो ।
क्यो दुनिया में फिरो भटकते धन देकर धक्के खावो ॥
मन को करो पवित्र चित्त से राग द्वेष को बिसरावो ।
स्थिर हो बैठो एकान्त में भजन करो शान्ती पावो ॥
लगन लगाओ उस ईश्वर से जग से निपट निराश बनो। क०॥

चौक ४

वैरभाव बिसराय परस्पर प्रीति करो सब नर नारी ।
करो सत्य व्यवहार जगत उपकार वेद गावे चारी ॥
तजो कुपथ की बान कहा लो मान हानि इस में भारी ।
करो भक्ति निष्काम छूट जाय जन्म मरण की बीमारी॥
शरण गहो बलदेव ईश की मत विषयन के दास बनो ॥ क०॥

भजन ३७

दयानिधि सब दुख दूर करो।
हम को सुख भोगन को मारग कितहुँ न सूझि परो।
लौकिक हाय हाय में हारे अब तव ध्यान धरो॥
जोर बटोर पाप की पूंजी करम कपाल भरो।
कर्ण समान भीरु भक्तन के हे हरि शोक हरो॥

क़व्वाली ३८

मालिक मेरी मदद कर मुश्किल हटान वाले।
जब से नजर कड़ी है आफत में जाँ पड़ी है।
अब तो बचाले, बन्ध्र सब के कहान वाले॥ १॥
सुत मित्र नारि भाई नहीं वक्त के सहाई।
यहां के यहां रहेंगे रिश्ता बढ़ाने वाले॥ २॥
आलम को मैंने देखा अच्छी तरह परेखा।
सब ऊपरी है अपने बातें बनाने वाले॥ ३॥
जब कूच मेरा होगा सब कुछ यहीं रहेगा।
आमाल ही रहेंगे दुख से बचाने वाले॥ ४॥
यह अर्ज है चरन की कर शुद्ध चाल मन को।
तुझ को ही जान जावे मुक्ती दिलाने वाले॥ ५॥

भजन ३९

दो०—हे अखिलेश विशुद्ध विभु, कुछ तो लेहु निहार।
बिन अधार किस भांति हम, डूब रहे मँझधार॥

ईश्वर तुम सर्वाधार हो,
मेरी लेहु खबर जल्दी से ॥ टेक ॥

सबके तुम्हीं सखा पितु माता, धर्म अर्थ कामादि प्रदाता।
शरण आपके जो भी आता, करो उसी को पार हो ॥ १ ॥
तुमने रचे पदारथ सारे, पृथ्वी सूर्य्य चन्द्र नभ तारे।
आँखों से तुम नहीं निहारे, निराकार करतार हो ॥ २ ॥
यद्यपि रहा धर्म से न्यारा, विषय भोग में समय गुजारा।
अबतो आपका लिया सहारा, तुमही परमोदार हो ॥ ३ ॥
भवसागर से मुझे बचाओ, नैया मेरी पार लगाओ।
वासुदेव पर अब दुर जाओ, दीनों के आधार हो ॥ ४ ॥

राग विष्णुपद ४०

दीनबन्धु जग विदित नामभव वेग सुनौ हरि मेरी टेर। टेक।
हा! मैं बड़ा दुराचारी हूं, धर्म्म न धारा अविचारी हूं।
लीजै लीजै मम दिशि हेरि ॥ १ ॥
छल बल मैंने खूब कमाये, अघ प्रवाह में सुकृत बहाये।
होगी होगी तब क्यों तेर ॥ २ ॥
कर्ण निरन्तर श्रीयश गावे, भक्तिभाव उर में उपजावे।
तारौ तारौ कैसी देर ॥ ३

भजन ४१

दीजे प्रभु दान अपनी हमें भक्ती का।

हम आये शरण तुम्हारी, तुम रक्षा करो हमारी ।
होय सब का कल्यान ॥ अपनी० ॥

मत करो नाथ अब देरी । हो नष्ट अविद्या मेरी ।
मिटै सारा अज्ञान ॥ अपनी० ॥

भारत की दशा सुधारो । सब के दुःखो को टारो ।
होय अनन्द महान ॥ अपनी० ॥

कहे वासुदेव करजोरी । इक विन्ती सुनियो मोरी ।
न होने पावे हान ॥ अपनी० ॥

भजन ४२

भवसागर से नैया पार उतार ।

मुझे काम क्रोध ने घेरा, मँझधार पड़ा है बेड़ा ।
किस विध उतरूं पार ॥ भव० ॥

मेरी नाव बही जाती है, यहां कोई नहीं साथी है ।
सब मतलब के यार ॥ भव० ॥

सुत मात पिता अरुभ्राता, अब कोई नज़रनहींआता ।
सहायक प्रिय परिवार ॥ भव० ॥

मेरा लोभ और मोह हटाओ, अपनी भक्ती सिखलाओ ।
जिससे होजाऊं पार ॥ भव० ॥

बल वासुदेव को दीजे, यह विनय मेरी सुन लीजे ।
तुम्हीं को रहा पुकार ॥ भव० ॥

भजन ४३

अबतो तज माया मोह भजन हरि कीजे ।

क्यो सुख की नींद सोता है, जग पाप बीज बोता है ।
अनमोल समय खोता है, फिर अन्त समय रोता है ॥

इस भांति करो तदबीर, मिटे भवपीर, हिये धर धीर,
शरण प्रभु लीजै ॥ अबतो० ॥

जौलो अरोग तन तेरा, निर्बलता ने नहिं घेरा ।
करलो सुमिरन प्रभु केरा, मिले अन्त में सुक्ख घनेरा ॥

फिर होत न जप तप ध्यान, मिटत सब ज्ञान, कहालो मान,
ध्यान चित दीजे ॥ अबतो० ॥

यक रोज़ काल खावेगा, कुछ साथ नहीं जावेगा ।
कर मल मल पछतावेगा, कृत कर्म का फल पावेगा ॥

कर भक्ति सुबह अरु शाम, जपो हरिनाम, मिलेआराम,
यतन कुछ कीजे ॥ अबतो० ॥

यह मात पिता सुत दारा, नहिं होवेगा कोई तुम्हारा ।
तन हूँ है है जरि छारा, जिसका घमंड है सारा ॥

यक धर्म रहेगा साथ, न अरु कुछ तात, मित्रकी बात,
ध्यान धरि लीजे ॥ अबतो० ॥

पूर्वी ४४

पाप से नाथ भरी मोरी नैया, डूब रही मँझधार रे।
नदिया अमित अपार बहत है, उमड़ रही जल धार रे॥
भ्रमर भयानक उठत अनेकन, तापर चलत बयार रे॥ १॥
छाय रह्यो चहूँदिशि अँधियारो, सूझे न हाथ पसार रे।
गरजत घन अरु दमकत दामिन, वर्षत मूसलधार रे॥ २॥
प्रबल ग्राह भक्षण हित मोकहं चहुँदिशि रहे निहार रे।
झांझर गुन विहीन है नैया, टूट गयो पतवार रे॥ ३॥
शिवनारायण काह करूँ अब, कोऊ न खेवनहार रे।
पाहि! पाहि! प्रभुशरण तिहारी, अब मोहिं लेहु उबाररे॥४॥

पूर्वी ४५

आनन्द झूला चहे जो झूलन, पैंग विचार बढ़ाय रे।
दया धर्म्म के खम्भे गाड़े, ज्ञान की डोर लगाय रे।
सत्य की पटली पै बैठि प्रेम सों, ध्यान की पैंग लगाय रे॥१॥
है एकाग्र शुद्ध चित झूले, बनिता वृत्ति पिठाय रे।
दृढ़ आसन सों बैठि धैर्य अवलम्ब न छूटन पाय रे॥ २॥
प्रेम सहित विज्ञान डोर गहि, सतगुरु जबहि झुलाय रे।
भूमि गिरन के शोक अरु भयते, निश्चय तब छुट जायरे॥३॥
शिवनारायण यहि बिधि झूलत, ऊर्ध्व पैंग जब जाय रे।
सुन्दर अमर नगर की गलियाँ, तब कहुँ देखन पायरे॥ ४॥

ग़ज़ल ४६

विद्या का हम सबो को पिता दान दीजिये ।
हमरी विनय ज़रासी है यह ध्यान दीजिये ॥
पशुवत् हमारी आज कल जो होरही गती ।
जिसका है यह नतीजा इसे जान लीजिये ॥
शिक्षा में अपने पुत्रो के हों इस कदर यतन ।
क्या हम नहीं हैं बेटी जरा कान कीजिये ॥
सत् शास्त्र और वेदो में देखो है क्या लिखा ।
समदृष्टि राख सब का पिता मान कीजिये ॥
सोना न रूपा मोती न कुछ मांगती हैं हम ।
ज़ेवर हमें विद्याही फ़क़त दान दीजिये ॥
लीलावती सुमित्रा सा बनना है क्या कठिन ।
सम्भव है सभी इससे हां अनुमान कीजिये ॥
सुलभा ने जनक की जो परीक्षा वेदान्त ली ।
कारण वह कौन था अनुसन्धान कीजिये ॥
ज्ञानी पती अपने की चुडैला ने जो किया ।
बस विद्याही की महिमा थी यह जान लीजिये ॥
कन्यो की पाठशाला यहां ठौर ठौर हो ।
उपकार हो सुधार हो प्रमाण कीजिये ॥
पढ़ने से ज्ञात होता है सीता के ज्ञान का ।
विद्यावती बनाओ हमें ज्ञान दीजिये ॥

स्वीकार निर्बलो की सदा से हुई पुकार।
विद्या की देदो औषधि बलवान कीजिये॥

भजन ४७

दोहा–जिस घर मे होता नहीं, नारिन का सत्कार।
नरक तुल्य वह भवन है, निष्फल सब व्यवहार॥
स्त्री शिक्षा का न हो, जब तक मित्र प्रचार।
करो हजारो यत्न पर, हरगिज हो न सुधार॥

टेक—मित्रो कैसे हो कल्याण, जब तक नहिं पुत्री बढ़ाओ।

ईश्वर ने दिया अधिकार बराबर सब को।
जल वायु अग्नि आहार बराबर सब को॥
ऋतु सर्दी गर्मी बाहार बराबर सब को।
ऐसेही विद्या भण्डार बराबर सब को॥

जितने ही नरनारी है सब विद्या अधिकारी है।
जब प्रभू न्यायकारी है, सबके ही हितकारी है॥

पर तुम ने किया अन्याय, शूद्र बतलाय, शोक है हाय, बनाया उनको पशू समान॥ जब तक० १॥

गाड़ी के तुल्य सब ने यह गृहस्थ बताया।
स्त्री पुरुषो को दोनो धुरे ठहराया॥
बस दोनो धुरो को जिसने सम बनवाया।
इस गृहस्थी रूप गाड़ी को उसने चलाया॥

जहां स्त्रियें आदर पावें, वह भवन स्वर्ग बन जावें।
सत्विद्या पढ़ें पढ़ावें, सब साधन सुख वहां आवें॥

हों धुरे बराबर जहां, सुक्ख हो तहां, किया है बयां,
शास्त्र मनु वेदों का प्रमाण ॥ जब तक० २ ॥

हा! एक समय वह था कि देशकी नारी।
थीं पढ़ी लिखी विद्वान पण्डिता सारी॥
देखो उपनिषद् उठा कर ज़रा विचारी।
सुलभा आदि ने शास्त्रार्थ किये भारी॥

छन्द

दमयन्ती सीता गार्गी लीलावती विद्याधरी।
विद्योत्तमा मंदालसा थीं शास्त्रशिक्षा से भरी॥
कैसी विदुषी स्त्रियें भारत की भूषण होगईं।
धर्मव्रत छोड़ा नहीं गो जान अपनी खो गईं॥

इस कारण देश हमारा, था उन्नति करने हारा।
सब विद्या का भंडारा, गुरु कह कर सब ने पुकारा॥

वही आर्य्यावर्त्त अब देश, भोग रहा क्लेश, धर्म नहीं शेष,
क्योंकि नहीं स्त्रियों का सन्मान ॥ जब तक० ३ ॥

यदि माता पढ़ी होतीं तो हम को पढ़ातीं।
बचपन में हमें विद्या भूषण पहनातीं॥
ले गर्भाधान से सब संस्कार करातीं।
यज्ञोपवीत कर गुरुकुल में भिजावतीं॥

यह मातृमान कहलावें, शिक्षित सन्तान बनावें।
जो गुण माता में पावें, वही पुत्र पुत्री में आवें॥

जो माता हो विद्वान, सिखावे ज्ञान, करो तो ध्यान, तभी होवे उत्तम सन्तान॥ जब तक० ४॥

जो बीडा देश सुधार का मित्र उठाओ।
स्त्री शिक्षा का पहिले यत्न कराओ॥
यह रक्खो याद जबतक नहीं पुत्री पढ़ाओ।
तो देवासुर संग्राम घरो मे पाओ॥

झूलना

दिन भर मे काम कर पुरुष थके घर आवे।
घर आते ही सासु बहू में युद्ध हुआ पावें॥
यह दशा देखकर खडहीं भस्म हो जावे।
बस मित्रो! बिन शिक्षा के यह तकरार है॥
यदि चाहते मित्रो! सुधरे दशा हमारी।
तो वेद मनू की कर दो आज्ञा जारी॥
मनु कहते है जिस घर में पुजती है नारी।
वही घर सार सुखो का भण्डार है॥

विन स्त्रीशिक्षा भाई, नहीं किसी ने उन्नति पाई।
कहे बासुदेव समझाई, सृष्टी कम रहा बतलाई॥

यही विनय करूं कर जोड़, कीजिये गौर, पुत्रियों की ओर, बढ़ाओ अबलाओ का मान॥ जब तक० ५॥

भजन ४८

तुम सुनो पुकार कन्याओं की मिल कर।

जब होवें पुत्र तुम्हारे, बजें हर्ष के नित्य नक़ारे।
मना के जय जय कार ॥ १ ॥
यदि सुता हुई सुन पाओ, तब शोकातुर हो जाओ।
न कुछ भी करो विचार ॥ २ ॥
चाहो क्यों बुरा हमारा, द्वै भाव मिटाओ सारा।
हुआ है भारी बिगार ॥ ३ ॥
हम से सब चीज़ छुपाओ, मोटे कपड़े पहनाओ।
पुनि २ है धिक्कार ॥ ४ ॥
करो फ़र्ज़ सुता मर जावें, तो पुत्र कहां से आवें।
ज़रा तो करो विचार ॥ ५ ॥
हुआ दुर्लभ जग में जीना, विद्याधन हम से छीना।
कहा नहिं है अधिकार ॥ ६ ॥
जब तक नहीं हमहैं पढ़ाओ, पूरा सुख तुम नहीं पाओ।
भरोगे दुःख अपार ॥ ७ ॥
यह वासुदेव समझावे, क्यों नहीं ध्यान में आवे।
सुताओं का उपकार ॥ ८ ॥

भजन ४९

कन्या पढ़ें जासों खोलो पाठशाला ॥ टेक ॥
सुन्दर गुरुकुल कई खुले हैं, पहला गुजरांवाला।

दो यह सिकन्दराबाद कांगड़ी, चौथा बदायूं में भी तुमने ढंग डाला ॥ कन्या० १ ॥

विद्यावान पूर्ण ब्रह्मचारिन, शीघ्र बनाओ वाला।
पढ़ पढ़ाय कर दूजा आश्रम, जिसंस बनेगा मित्रो पूरे सुख वाला ॥ कन्या० २ ॥

नाड़ी[1] गण[2] अरु वर्ण[3] यथाविधि, मिले मित्र नाहि काला।
फिर स्वभाव गुण कर्म देख के वर कन्या का सम्बन्ध हो निराला ॥ कन्या० ३ ॥

बनें गार्गी सुलभा जैसी, यह तत्वज्ञ विशाला
पाठक को तब हो प्रसन्नता, जीतें सभायें काट डारें भ्रम-। जाला ॥ कन्या० ॥

होली ५०

क्यों बनी हो गँवारी पढ़ी नहीं विद्या भारी।

बिन विद्या के पावे न आदर, पुरुष होयँ या नारी।
विद्या से जो नहीं शोभित हो, समझें हैं उसको अनारी, सुनो तुम भारत नारी ॥ क्यों० १ ॥

सुख सम्पति जो जाहो जगत् में, रहो पति आज्ञाकारी।
सासु ससुर अरु ननँद जिठानी, उनकी करो सेवा भारी, मानो यह सीख हमारी ॥ क्यों० २ ॥

१ वायु पित्त, कफ। २ गण देवादि विद्या द्वारा। ३ वर्ण ब्राह्मणादि गुण कर्मानुसार

पति आज्ञा जो करे है उलंघन, जानो उन्हें व्यभिचारी। ऐसों की संगति जो बैठे हैं वह भी हों हत्यारी, हों कितनी ही रूप सँवारी ॥ क्यों० ३ ॥

पहली नारी देखो दुलारी, कैसी थी सीता नारी। पतिव्रता कहलाई जगत् में तज कर महल अटारी, चली बन जनक दुलारी ॥ क्यों० ४ ॥

श्यामसुन्दर कहे तुम्हरो हितैषी, कीजो शोच विचारी। प्राण जाय पर धर्म न छोड़ो, दुख हो कितना ही भारी, मरो चाहे खाय कटारी ॥ क्यों० ॥

सुहाग ५१

बहनों ! करलो सच्चा शृंगार।

जिस शृंगार से प्रभु मिल जावें, सब का प्राण अधार।
जिस भूषण में होवे न दूषण, करलो उसी से प्यार ॥ ब०१ ॥
सच्चा भूषण वह है विद्या, लूटे न चोर चकार।
नहिं वह टूटति नहिं वह घिसती, जिसका लगे न भार ॥ ब०२ ॥
पति के प्रेम की माला पहनो, सेवा समझ लो हार।
धर्म की चर्चा चूड़ी समझो, आर्मी तत्त्व विचार ॥ ब०३ ॥
पति आज्ञा को नथ एक समझो, भक्ति को कंगन जान।
व्याह से प्रथम हँसली सो हँसली, शीलको हँसली मान ॥
दया धर्म दो झुमके बना लो, टीका पर उपकार।
लौंग बुलाक़ है घर की सेवा, गहना यह क़ीमतदार ॥ ब०४ ॥

होय विछोवा ना सन्ध्या का, यह विछुवा दरकार।
विद्या धरम में कीरति होवे, झांझन की झनकार॥ ब०६॥

वेदी बन्दना कर स्वामी की, ज्ञान का, सुरमा डार।
मुकुन्द कहे सब सुख से रहोगी, मान करे संसार॥ ब०७॥

दादरा ५२

चेतोरी भारत नारी ओ भारत नारी। होगई बड़ी हानि॥ चे०॥
विद्या में तन मन देदो, हां तन मन देदो। करे यही कल्यान॥
विद्या का पढ़ना सीखो, हां पढ़ना सीखो। जिससे हो फिरमान॥
कीजो पति की सेवा, पति की सेवा। यही नियम व्रत दान॥
कब्रों पै जाना छोड़ो हां जाना छोड़ो। भ्रष्ट हुई सन्तान॥
निद्रा से अबतो जागो, हां अबतो जागो। कैसी सोई चादरतान॥
मूर्खों ने तुमको लूटा, हां तुमको लूटा। नहीं सूझे लाभ हानि॥
अब भी जो बचना चाहो, हां बचना चाहो। विद्या में दो दान॥
बहनो! धर्मव्रत धारो, धर्मव्रत धारो। करे मुकुन्द बयान॥ चे०॥

भजन ५३

मेरी प्यारी बहनो सोई हो बड़ी हां गाढ़ी नींद में॥ बड़ी०॥
पती की तो सेवा करना, बालको को शिक्षा देना।
तुम ने तो भुलाया गाढ़ी नींद में॥ मेरी०॥
अच्छी २ विद्या पढ़ना, धर्म का तो संग्रह करना।
साराही गँवाया गाढ़ी नींद में॥ मेरी०॥

ईश एक सच्चा तुम ने, सारी रचना की है जिस ने।
उसको भी भुलाया गाढ़ी नींद में ॥ मेरी० ॥
देवता हज़ारों माने, क़ब्र भूत मुल्ला स्याने।
तुमने स्वप्न देखा गाढ़ी नींद में ॥ मेरी० ॥
क्या बतावे पाठक आगे, अग्निहोत्र आदि त्यागे।
धर्म तो बिसारा गाढ़ी नींद में ॥ मेरी० ॥

भजन ५४

बिन विद्या नहीं टलेगी बहनो मूरखता जोई।
कोई गुरू कर कराठी पहने, कोई बहुत व्रत लगी रहने।
तुलसी ब्याह किये क्या कहने, गुड्डा रचे कोई ॥बिन०॥
तेंतिस कोटि देवता पूजे, मथुरा आदि तीर्थ रहे दूजे।
इनको छोड़ ताजिये सूझे, सब इज्ज़त खोई ॥ बिन० ॥
मीरा माने सैयद मुल्ला डोरी गराडे की हा हुल्ला।
भूत भवानी खुल्लमखुल्ला, कैसे मुक्ति होई ॥ बिन० ॥
कुछतो सोचो बहनो! मनमें, पति पूजा करलो यौवन में।
पाठक शील रखो निज तन में, पूजो क्या होई ॥बिन०॥

भजन ५५

बहनो ! है फ़रियाद सुनियो ज़रा हमारी ॥ सुनि० ॥
जब तुम से पढ़ना आवे, जैसे यह नीति सिखावे,
तभी सुधरे औलाद ॥ सुनि० ॥

तुम नहीं व्यवहार को जानो, बरताव नहीं पहचानो,
तभी होता है बिवाद ॥ सुनो० ॥
तुम सदा दुखी रहती हो, मालूम है क्यों सहती हो,
अविद्या करे फ़िसाद ॥ सुनि० ॥
विद्या ही दुःख मिटावे, मन माना नर सुख पावे,
करो तन मन से याद ॥ सुनि० ॥

भजन ५६

ख्याल ।

अपना पतिव्रत धर्म स्त्री जो जग बीच निभाती है ।
रहे सदा आज्ञा में वही मनवन्ती नारि कहाती है ॥
चाहे बुरा गुणहीन पती हो उसको शीश नवाती है ।
निर्धन रोगी क्रोधी से वह मन में नहिं दुख पाती है ॥
यज्ञ नियम व्रत धर्म समझ सेवा में चित्त लगाती है ।
मन बानी काया से प्रेम पद में वह खुशी मनाती है ॥
अपने पती का ध्यान ग़ैर का सुपने में भी नहीं लाती है ।
निस्सन्देह छूट वह दुख से शर्मा सुख को पाती है ॥

टेक–एक पतिव्रत धर्म निबाहलो, जो चाहो मुक्तिपद लहना ।
कीजे नित्य पती की सेवा, दोनो लोको में सुख देवा ।
सब से उत्तम है यह मेवा, बड़ी रुचि से खायलो ।
मत वञ्चित इससे रहना ॥ १ ॥

झूठे सब शृंगार छोड़िये, राग ईर्षा मन से तोड़िये।
विद्या से एक रिश्ता जोड़िये, सारा अंग सजायलो ॥
है सब से उत्तम गहना ॥ २ ॥
सासुससुर अरु ननँद जिठानी, भाभी होंवा है हो देवरानी।
इन से कटु मत बोलो बानी, सब से प्रेम बढ़ायलो ॥
जो कहें करो वही कहना ॥ ३ ॥
रहो पती की आज्ञाकारी, मिलें तुम्हें सुख सम्पति सारी।
आशा पूरण होय तुम्हारी, मन चाहा फल पायलो ॥
शर्मा कहें तुम से बहना ॥ ४ ॥

दादरा ५७

पति अपने में राखो ध्यान, बढ़कर धर्म नहीं।
तन भी दीजे मन भी दीजे, अर्पण कीजे प्रान ॥ बढ़० ॥
जो पति की आज्ञा शिर धारो, सुन्दर हो सन्तान ॥ बढ़० ॥
ऋषि मुनि गावें, वेद बतावें, सुख हो बे परमान ॥ बढ़० ॥
सम्पति पाओ दुख बिसराओ, पाओ पद निर्वान ॥ बढ़० ॥
संध्या करलो ओ३म सुमिरलो, भरलो मन में ज्ञान ॥ बढ़० ॥
जो पति की आज्ञा नहीं मानो, तो हो नरक निदान ॥ बढ़० ॥
सुख की निधि जो चाहो बहनो, मेरा कहा लो मान ॥ बढ़० ॥

भजन ५८

सीता की ओर निहार लो, जो थीं सतवन्ती नारी ॥
गई संग में पति के बन को, छोड़ सभी सुख सम्पति धन को।

कष्ट दिया अति अपने तनको, उसका चरित विचार लो ॥
सब छोड़े महल अटारी ॥ जो थीं० १ ॥
रहती थीं जो रंग महल में, रही टहलनी जिनकी टहल में ।
नंगे पैर गई पति की गैल में, ऐसा ही ब्रत धार लो ॥
जो धारा जनेक दुलारी ॥ जो थीं० २ ॥
हुई कान्ती दुगनी मुख की, जिन परवाह करी नहीं दुख की ।
सभी लालसा अपने सुख की, पति पै तादृश वार लो ॥
रही सदा जो आज्ञाकारी ॥ जो थी० ॥
पति सेवा में चित हित दीजै, आज्ञा भंग कभी नहिं कीजै ।
मेरा कहा मान अब लीजै, अवगुण सभी विसार लो ॥
बहनो यह कहे मुरारी ॥ जो थीं० ॥

भजन ५६

पति को पूजलोरी, है वह असली देव तुम्हारा ।
बाल अवस्था मात पिता ने पालन किया तुम्हारा ।
यौवन काल पाय पति रक्षक मन में क्यों न विचारा ॥१॥
पाणिग्रहण समय आपस में कौल हुये थे भारी ।
उनका कर स्मरण पतिब्रत नियम निभाओ प्यारी ॥२॥
हाय अविद्या वश जीवन को मत कुनिन्द्य ठहराओ ।
उन्नति समय धार्मिक जग मे सती भाव दरशाओ ॥३॥

असली धर्म भजन के द्वारा रामचन्द्र ने गाया।
मानो कही पतिव्रत धारो शुभ अवसर है आया ॥४॥

ठुमरी जिला ६०

सखि सोइ सुन्दरी पिय की पियारी।
जाकी सुरति एक पल स्वप्नेहु होत न पिय से न्यारी ॥१॥
अपनो परम धर्म पति सेवा जानै हृदय विचारी।
तीरथ की इच्छा जो होवे पीवे चरण पखारी ॥२॥
और पुरुष को पति करि जाने सो नारी कुलटारी।
अपने पति को जो तिय सेवै सोई पति वरतारी ॥४॥

ठुमरी जिला ६१

सखि मैं धन्य सुहागिन नारी।

मेरो पति पूरण परमातम अजर अमर अविकारी ॥१॥
औरनके पति एकदिन बिछुरत तजि निज सुन्दरि प्यारी।
मेरे प्राणनाथ मोहिं एक छिन करत न उर से न्यारी ॥२॥
जाकी खोज करत निशिवासर बड़े बड़े तप धारी।
चकित होत बरनत श्रुति गुण जेहि नेति नेति कहि हारी ॥३॥
संयम नियम शृंगार है मेरो श्रद्धा सहित सँवारी।
पहरो विविध विवेक के भूषण ज्ञान को अंजन सारी ॥४॥
ओ३म् नाम कूकू का टीका मस्तक पर सुखकारी।
श्रुति के वचन कान में मोती तिनको बहु शोभारी ॥५॥

इन्द्रमती निज पति के चरनन तन मन धन सब वारी ।
आओ सखि तुमहूँ या जग में बनि जाओ गुण वारी ॥६॥

दादरा ६२

बहिनो सुनना दया कर के मेरा कथन ।

जैसी थी सीता पतिव्रता नारी, ऐसा बना लो अपना चलन । महलों का रहना त्याग कर उनने, पती संग जा कष्ट भोगा था वन ॥ छोडकर वस्त्र रेशमी जोडे, वृक्षों के पत्तों का पहिनना आदृन । बहुत तरह के जिन कष्ट भोगे, पर नहीं छोड़ा पती का पूजन ॥ माता सीता ने ये यो कष्ट भोगे, लागी पती से थी उनकी लगन । तुम भी पति अपने की आज्ञा पालो, जैसी सीता, बना लो तुम अपना चलन । निर्लज्ज गान विवाहों के छोड़ो, गाओ हरी के सुहाने भजन ॥ बहिनो० ॥

भजन ६३

दोहा–अब तो चेतो नींद से, प्रिय भगिनी और माय ।
तुम्हरी ग़फ़लत नींद से, भारत उजरा जाय ॥
टेक–अरज ये बहनों हमारी है उठो बैरिन अविद्या को त्यागो ॥
तुमने फंस के अविद्या में प्यारी, गृह आश्रम की करदी ख्वारी ।
हुई भारत की संतति अनारी, फिरत दर बदर दुखारी है ॥ अ०१ ।
तुम्हें अविद्या ने यह दिन दिखाया, गुण गौरव भी सारा गँवाया ।
कोई सुझै न अपना पराया, न कुछ रही इज्जत तुम्हारी है ॥ अ० २॥

कुल लज्जा तुम्हारा धर्म है, उसे तजना ही खोटा कर्म है।
गाली गाते न तुमको शर्म है, लोग सब कहते गँवारी है ॥अ०३॥
पढ़ो विद्या धर्म को सँभारो, और सन्तान अपनी सुधारो।
मत आलस में समय गुज़ारो, उठो सुधि बुधि क्यों बिसारी है॥४॥
सती सीता की ओर निहारो, सावित्री की करनी विचारो।
दमयन्ती न दुख सहा भारी, धर्म अपने से न हारी है ॥ ५ ॥
तजो मेले मदारो का जाना, है इस में धर्म का गँवाना।
निज प्रीतम से प्रीति लगाना, पथ्य यह कल्याणकारी है ॥ ६ ॥
तजो नशे की चीजों का खाना, बल बुद्धी का नित्य बढ़ाना।
मत धूर्तों के फन्दे में आना, कुशल इन में ही तुम्हारी है ॥७॥
तजो पर घरका सोना और खाना, तजो आपस का लड़ना लड़ाना।
कहै बलदेव यह नाज़ुक ज़माना, समझ कर रहना हुशियारी है।८।

भजन ६४

नर पैदा हों ऋषि मुनि नारियों से।
गौतम ऋषि जिसने न्याय बनाया, पातंजलि जिसने योग दिखाया।
दुग्ध पिये महनारियों से ॥ नर० ॥
कपिलदेव जो सांख्य के कर्त्ता, जैमिनिजी मीमांसा रचयिता।
पाई शिक्षा महनारियों से ॥ नर० ॥
हुये कणाद वैशेषिक वारे, व्यास वेदान्त के रचने हारे।
पाले माताओं ने झाड़ियों में ॥ नर० ॥
मित्रो तुम इनका आदर सत्कार करो, जो चाहें सो ला के सामने धरो।
कडुवा न बोलो विचारियों से ॥ नर० ॥

सुन्दर उपदेश दै कुसंग छुड़ाओ, विद्या में जप तपमें लगाओ।
रक्खो सम्बन्ध सत्कारियों से ॥ नर० ॥
पाठक जो अपना चाहो भलातुम,मातायें शिक्षक अपनी बनाओतुम।
बच जाय भ्रम की बीमारियो से ॥ नर० ॥

भजन ६५

नींद क्यो ऐसी है छाई मेरी बहनो! खोलो आंख।
सीता रुक्मिण कुन्ती प्यारी, अनसुइया मन्दोदरि नारी।
विद्योत्तमा द्रौपदी सारी, कीरति जग पाई ॥ १ ॥
लीलावती भोज की नारी, जिसकी महिमा जाय न जानी।
कैसी बड़ी गणितज्ञ बखानी, चकृत कविराई ॥ २ ॥
विद्याधरी गार्गी तारा, ऋषि पत्नी बहु जगत मॅझारा।
जिन का गावे यश संसारा, सुन सुन पण्डिताई ॥ ३ ॥
विद्या बिना पशू है जैसा, तिन को कहा शास्त्र में ऐसा।
यह क्या जाने धर्म है कैसा, पाठक समझाई ॥ ४ ॥

दादरा ६६

गिरी हुई है दशा ये सुधारो री, गिरी हुई है ॥ टेक ॥
पहिली थीं विदुषी वेदों की ज्ञाता।
तुम ने तो पढ़ना बिसारो री ॥ गिरी हुई० ॥

रोगो में वैद्यो को वे थीं बुलातीं।
तुमने तो स्याना पुकारोरी ॥ गिरी हुई० ॥
वे तो विवाहो में सुन्दर गीत गाती।
तुम तो सीठने प्रचारोरी ॥ गिरी हुई० ॥
वे तो हवन से पवन थीं सुधारें।
धूनी से तुम तो बिगारोरी ॥ गिरी हुई० ॥
आग लगा घर सब कुछ लुटाओ।
तुम तो उतार उतारोरी ॥ गिरी हुई० ॥
नजर हुई जान मिर्चें जलाओ।
टुटके करो हो हज़ारोंरी ॥ गिरी हुई० ॥
दान दिखाओ चामुण्डा पै जाओ।
मुर्गों को नाहक मे मारोरी ॥ गिरी हुई० ॥
ज्ञानी बनो शिक्षा दो सब को सुन्दर।
पाठक हित् है तुम्हारोरी ॥ गिरी हुई० ॥

भजन ६७

टेक-पत्थर पूजो पति छोड़ के, तुम क्यों नहीं शर्माती हो।
पति के सँग फेरे पड़े प्यारी, क़ौलोक़रार हुये थे भारी ॥
सदा टहलनी रहूँगी तुम्हारी, उस से नाता तोड़ के।
जल ईंटों पै छिड़काती हो ॥ तुम क्यों० १ ॥

सब नारी आओ घरघर से, देखो ईंट उठाकर कर से।
इस में देवी घुसीं किधर से, देखो इस को तोड़ के।
अब क्यो दहशत खाती हो ॥ तुम क्यो० २ ॥
धोबी धीमर नीच बरण है, जिनकी तुमने लई शरण है।
तुम को तो नहीं जरा शरम है, दोनो ही कर जोड़ के।
झट पैरो पड जाती हो ॥ तुम क्यो० ३ ॥
तेजसिंह माता वोही है, वर्णों गीले मे सोई है।
तुमने बुद्धि कहां खोई है, उस माता को छोड़ के।
अब क्यो धक्के खाता हो ॥ तुम क्यो० ४ ॥

दादरा ६८

करो पति पूजा बनो पिया प्यारी।
पति अतिरिक्त पूज्य नहीं कोई, मानो मत् श्रुति रहन पुकारी ॥ करो० ॥
मत तुम फिरो वृथा झख मारत, बड़ पीपल जड़ पूजत भारी ॥ करो० ॥
इन बातन से धर्म नशत है, पूजा करहुँ मत पीर मदारी ॥ करो० ॥
भूतन पै नहीं पुत मिलत कहूँ, बिगड़ गई कैसी अकल तुम्हारी ॥ करो० ॥
विद्या पढ़ मूरखता मेटो, फिर मन में जग देखो विचारी ॥ करो० ॥

भई पूर्व भारत में विदुषी। शुभ गुण खानि अनेकन नारी ॥ करो० ॥
पशुवत् भई यहां तुम सुभगे, अपनो पतिव्रत धर्म विसारी ॥ करो० ॥
अजहूँ त्याग बलदेव मूर्खता, लेहु शीघ्र निज धर्म सँभारी ॥ करो० ॥

दादरा ६९

मेरी बहनो! अकल कहां गँवाय दई ॥
पीरों फ़क़ीरों के पावों में लागी। अपने पती की सेवा भुलाय दई ॥ मेरी० ॥
मीरा मुहर्रम व गाज़ी मियां की। खीलों बताशों से कबरें भराय दई ॥ मेरी० ॥
आप ही मरे क्या जिलावे किसी को। क्या समझ के तू बहिनी वहां गई ॥ मेरी० ॥
झाड़ों को वृक्षों को पत्थरों को पूजो। चेतन बताकर हाय देवी बताय दई ॥ मेरी० ॥
गाली बको बुरी ब्याह के समय में। हा! हा! अविद्या यह किसने सिखाय दई ॥ मेरी० ॥
ग्रह के फलों को बड़ा सच्चा मानो। झूठों ने अपनी माया फैलाय दई ॥ मेरी० ॥
पाठक है मन से हितैषी तुम्हारा। उसने तुम्हें चुन के शिक्षा बताय दई ॥ मेरी० ॥

भजन ७०

लो पतिव्रत धार है यह धर्म तुम्हारा ।
पति की आज्ञा शिर धारो, सारे मत बाद विसारो ।
कहें सत्पुरुष विचार ॥ १ ॥
गृह काज मे दक्ष कहाओ, अज्ञान अनीति मिटाओ ।
गावे यश संसार ॥ २ ॥
पर पुरुष बन्धु सम जानो, निज पति ही को पतिमानो ।
शास्त्र के मत अनुसार ॥ ३ ॥
जग में जीवन है थोडा, जो नियम धर्म व्रत तोड़ा ।
तो मुर्ती धिकार ॥ ४ ॥

भजन ७१

कम उमर के व्याह ने मिट्टी मे मुल्क मिला दिया ।
बुद्धि बल बीरज इसी कम्बख्त ने भुगता दिया ॥
देश का दुश्मन जो काशीनाथ इक ऐसा सुआ ।
शीघ्र बोध बना के जिसने शीघ्र नाश करा दिया ॥
मनुस्मृति और वेद से होकर मुखालिफ मूर्ख ने ।
अष्टवर्षाभवेत् गौरी कह के सब को डुबा दिया ॥
चल बसी कुव्वत दिमाग़ी मिस्ल हवां हो गये ।
फिर वह कर सके हैं क्या जिन अक्ल को ही गवा दिया ॥
मर गये थोड़ी उमर में घर में बेवा रोरही ।
बलदेव इन की आह ने वीरान मुल्क बना दिया ॥

भजन ७२

क्यों बालविवाह रचाय के बल वीर्य्य का नाश किया है ।
हे मतिमन्द ! समझ नहीं आई । बाली कन्या ब्याह बिठाई ॥
कुछ तो सोचो समझो भाई । उस को रांड़ बिठाय के ।
क्यों शिर पर पाप लिया है ॥ ब० १ ॥

सोलह वर्ष की उमर जब आवे । ब्रह्मचर्य पूरा होजावे ।
तभी कन्या का ब्याह रचावे । गुण औ कर्म मिलाय के ॥
वेदों ने सुझा दिया है ॥ ब० २ ॥

ब्याह का तुमने अर्थ भुलाया । खेल लौंडियों का ठहराया ।
जो चाहा सोइ नाच नचाया । पाप जाल फैलाय के ॥
यह कैसा नशा पिया है ॥ ब० ३ ॥

अब भी यदि तरक्की चाहो । बालविवाह को दूरभगाओ ।
ब्रह्मचर्य्य की रीति चलाओ । मन चंचल ठहराय के ॥
शर्म्मा नहिं लानत जिया है ॥ ब० ४ ॥

गजल ७३

सुख मूल ब्रह्मचारी, आश्रम को जो हैं खोते ।
पूर्णायु दुख में पड़कर, किस्मत को अपनी रोते ॥१॥
पहिला क़दम ही रखते, खन्दक में गिर गया जो ।
फिर कोई काम उस के, हर्गिज़ सफल न होते ॥२॥
अन्मोल रत्न वीर्य्य, ज़ाया वृथा जो करते ।

अमृत की काट जड़ को, विष का है बीज बोते ॥३॥
सञ्चय इसी का करके, निर्बल बली हैं होते।
दुश्मन का भय न करके, सुख नींद हैं वह सोते॥४॥
बायस जो ज़िन्दगी है, उसकी क़दर करो तुम।
खाओगे मित्र वर्ना, दुख सिंधु माहिं गोते ॥५॥

गजल ७४

कहो बचपन की शादी में, नफ़ा क्या तुमने पाई है।
ज़रा आंखो के सुख की तेग़, पुत्रों पर चलाई है ॥१॥
बरस सोलह तलक लड़की, बरस पच्चीस तक लड़का।
कम अज़ कम इतने दिन, ब्रह्मचर्य की आज्ञा बताई है ॥२॥
मगर तुम हाय! काशी नाथ के, फन्दे में फंस कर के।
बिला सोचे मनू और वेद की, आज्ञा भुलाई है ॥३॥
जनम भर के लिये सुख दुख में, जिनका साथ करते हो।
नहीं वह जानते इतना, कहैं किस को सगाई है ॥४॥
जहां पति और पत्नी मिल, करें इक़रार थे बाहम।
वहां पर प्रोहितों ने मिल, वकालत अब चलाई है ॥५॥
उमर जो वीर्य रक्षा कर के, विद्या के थी पढ़ने की।
बल औ वीरज की बरबादी को, हा शादी रचाई है ॥६॥
नहीं पढ़ पाता है विद्या, कोई बिन वीर्य रक्षा के।
यही कारण है फैली चारसू, अब मूर्खताई है ॥७॥
नहीं उगता है कच्चा बीज, चाहे लाख कोशिश हो।

मनाती देव देवी पुत्र हित, फिरती लुगाई है ॥ ८ ॥
गरज़ हमने बहुत सोचा, हज़ारों हानि है इस में ।
मिटा दो हानिप्रद यह रस्म, क्यो देरी लगाई है ॥ ६ ॥

लावनी ७५

शेर ।

जब से बाल विवाह भारत में बहुत होने लगे ।
तबसे ही भारत निवासी आयु बल खोने लगे ॥
है रीति हानिप्रद छोड़ो इस को भाई ।
लो ब्रह्मचर्य की शरण जो है सुखदाई ॥ टेक ॥
क्यो स्वयं शत्रु सन्तान के अपनी होते ।
जो वीर्य से अनुपम रत्नको उनके खोते ॥
तुम विषय सिन्धु में उनको हाय डुबाते ।
जिसमें वह पड़कर खाये दुख के गोते ॥
बल बुद्धि वीर्य इन सब से हाथ वो धोते ।
और यावत जीवन फेर तुम्हीं को रोते ॥
इस में क्या देखी तुम ने उनकी भलाई । लो ब्रह्म० ॥
हा ! मनुके वाक्य को भी तुमने बिसराया ।
जो बोधशून्य बच्चों का ब्याह कराया ॥
छत्तीस बार जब ऋतु स्त्री को आया ।
वह समय ब्याह का मनूने शुभबताया ॥

और वैद्यक में भी लिखा यही हम पाया ।
पच्चीस वर्ष में पुरुष बीर्य गुण लाया ॥
और सोलह वर्ष की स्त्री इस योग्य बताई । लो ब्रह्म०॥
पूर्वोक्त अवधि लों ब्रह्मचर्य सधवाओ ।
और मोहत्यागकर गुरुकुल में भिजवाओ ॥
जब होवें पूर्ण विद्वान तब उनको लाओ ।
और समान उनके नारी उन्हे दिलाओ ॥
प्राचीन स्वयंवर रीति से ब्याह रचाओ ।
गुण कर्म समान हो उनका योग मिलाओ ॥
आनन्द गृहस्थ का तबही देय दिखाई ।
इस बाल विवाहका करो शीघ्र मुँह काला ।
जिसने उन्नति पर डाला तुम्हारी पाला ॥
है बलन्द इस से विधवाओं का नाला ।
लाखों ही पड़ी हैं देश में विधवा बाला ॥
व्यभिचार का भी रस्ता है इसीने निकाला ।
और गर्भ सैकड़ों को भी इसी ने डाला ॥
कहे शर्मा अब इस रीति को शीघ्र मिटाई । लो ब्रह्म०॥

भजन ७६

दोहा–भारत में होने लगे, जब से बाल विवाह ।
बल विद्या बुद्धी घटी, हो गया देश तबाह ॥
टेक–मित्रो ! तुम इस को टारियो है बाल व्याह दुखदाई ।
आठ वर्ष में व्याह कराया, विधवा कर घर में बिठलाया ।

फिर कर्मों का दोष बताया, मन में ज़रा विचारियो ॥
क्यों करी अधर्म कमाई ॥ है० १ ॥

जिस दिन युवा अवस्था आवे, बिना ज्ञान के रहा न जावे ।
आख़िर को निज धर्म गँवावे, उसकी ओर निहारियो ॥
ये कैसी इज्जत पाई ॥ है० २ ॥

जब मर जाय पुरुष की नारी, दूजे व्याह की हो तैयारी ।
विधवा रोवें दीन विचारी, इनके संकट टारियो ॥
क्यों बने हो तुम अन्याई ॥ है० ३ ॥

अबतो बालविवाह को टालो, शीघ्रबोधपर मिट्टी डालो ।
वेद मनू की आज्ञा पालो, विधवा भार उतारियो ॥
दो पुनर्विवाह कराई ॥ है० ४ ॥

जब से बालविवाह हुआ जारी, बलविद्या बुद्धीगई मारी ।
ब्रह्मचर्य्य की रीति बिसारी, अब तो इसे सँभारियो ॥
कहे बासुदेव समझाई ॥ है० ५ ॥

भजन ७७

बच्चों का विवाह क्यों करते हो भाइयो ।
नहीं पुरुष नारि को जाने । नारि न पति को पहँचाने ॥
बहाया पाप प्रवाह ॥ १ ॥

जब बाल पुरुष मरजावे । बस नाम पती धर जावे ॥
तब हो कैसे निवाह ॥ २ ॥

वह शिर धुनि २ पछतावे । निशिवासर शोक मनावे ॥
न देखा दगभर नाह[१] ॥३॥
यह जिसके पास जाती है । अप शब्द वहां पाती है ॥
जिगर में लगती दाह ॥ ४ ॥
कोई पास नहीं बिठलाता । इन्हें भूमि भार बतलाता ॥
हुई यह क़ौम तबाह ॥ ५ ॥
जब काम बाण खाती हैं । व्यभिचारिन हो जाती है ॥
और न पातीं राह ॥ ६ ॥
चाहे मुसल्मान होजावें । चाहे गर्भ पात करवावें ॥
होय पर बाल विवाह ॥७॥
यह बाल विवाह मिटाओ । प्राचीन राह पर आओ ॥
शास्त्र दे रहे सलाह ॥ ८ ॥
पछताओगे तब मानोगे । जब इसका भेद जानोगे ॥
हठ है खाहमखाह ॥ ९ ॥
शर्मा यह सीख सुनाओ । मिल सभी कुरीति मिटाओ ॥
काम हो खातिरखाह ॥१०॥

गजल ७८

कहां तक चुप रहें यारों, नहीं अब चुप रहा जाता ।
मुसीबत देख विधवों की, कलेजा मुँह को है आता ॥१॥
बरस छै सात की बच्ची, बना कर रांड़ बिठलाई ।

१ मालिक–पति ।

कटे कैसे उमर उसकी, नहीं कोई यह बतलाता ॥२॥
बरस अस्सी में भी बीबी, किसी की गर है मरजाती ।
बिला परिणाम सोचे झट, है शादी अपनी करलाता ॥३॥
कहो क्या खांय कुछ तालीम भी तुमने न दी इनको ।
फ़क़त खाने को यक ग़म, दूसरे गाली पिता भ्राता ॥४॥
सिर्फ़ कूड़ा व कर्कट, चौका बर्तन रोटी औ पानी ।
कला कौशल सिवा इसके, न कोई और सिखलाता ॥५॥
हज़ारों कोशिशों से रोकने विधवों की शादी को ।
मगर क़ानून कुदरत को, न कोई रोक है पाता ॥६॥
नहीं करते हैं शादी भ्रूणहत्या नित्य होती हैं ।
एवज़ में एक के होता है, पैदा लाख से नाता ॥७॥
कहो इन बेकसों की दास्तां, ग़म कौन सुनता है ।
सदा ज़िंदा नहीं रहते, किसी के भी पिता माता ॥८॥
दया कर मित्र हर लो, वेगिही अब दुःख विधवों के ।
तुम्हारे बिन नहीं कोई, जगत में और सुख दाता ॥९॥

गजल ७९

दुख दर्द अपना किस को सुनायें कहां कहां ।
ये दाग़ दिलका किसको दिखायें कहां कहां ॥
फैली कुरीति धर्म के विपरीत हिन्द में ।
मुश्किल मुसीबतों से बचायें कहां कहां ॥
होते हैं बेकसों पै सितम नित नये नये ।
ज़ख्मी जिगर को किसपै सिलायें कहां कहां ॥

होते हैं ज़ुल्म दुख़्तरो जोरुओं पै शबो रोज़।
पुरग़म पुकार किस को सुनायें कहां कहां॥
करते विवाह अपने बुढ़ापे लों चार चार।
ये बाली उमर कैसे गवायें कहां कहां॥
करते है आप भोग हमें योग सिखायें।
अन्याय इन के और बतायें कहां कहां॥
किस भांति मनको मार इन्द्रियों को जीतकर।
अबला अजान अलख जगायें कहां कहां॥
रो रो तमाम उम्र कब तलक बसर करें।
चश्मों से नदी ख़ूं की बहायें कहां कहां॥
बलदेव ग़मज़दों की तुम्हीं अबतो लो ख़बर।
सोते हो सुध बिसार के शाहे कहां कहां॥

गजल ८०

सदमों की चोट सीने पै खाई नहीं जाती।
ताउम्र ये तकलीफ़ उठाई नहीं जाती॥
रोना ये शबोरोज़ का रोयें कहां तलक।
चश्मों से नदी ख़ूं की बहाई नहीं जाती॥
ख़ुदग़र्ज़ होगया है ज़माना ये इस क़दर।
इनसाफ़ की बू तक यहां पाई नहीं जाती॥
होता है ज़ुल्म रात दिन हम औरतों पै हाय।
तिस पर भी ज़ुबां हम से हिलाई नहीं जाती॥

करते हैं व्याह नाई ब्राह्मणों की राय पर।
बाहम की शक्लो सिफ्त मिलाई नहीं जाती॥
बचपन में ब्याह देते हैं नालायक़ों के साथ।
विद्या तलक भी हमको पढ़ाई नहीं जाती॥
हम नारी गँवारी है वह शौहर पढ़े हुये।
कितनाही मिलो दिल की जुदाई नहीं जाती॥
सुधलीजिये बलदेव हम अबलाओंकी अबतो।
तुम से मरम की पीर छुपाई नहीं जाती॥

गज़ल ८१

अब्तर आंसू बहाना कोई हम से सीख जाय।
बेगुनाहही मार खाना कोई हम से सीख जाय॥
आह निकलती है जिगर से और है हालत तबाह।
हर घड़ी जी का जलाना कोई हम से सीख जाय॥
बेवा को पर्दा रखें औ शक करें हैं हर घड़ी।
उम्र रो रो कर गँवाना कोई हम से सीख जाय॥
सासु मा भाभी ननँद सब की सहारें झिड़कियां।
होंठ पर टांका लगाना कोई हम से सीख जाय॥
ख्वाहिशे दुनियां का ग़म हमको सतावे हर घड़ी।
ग़म में दम अपना घुटाना कोई हम से सीख जाय।
मिस्ल हवां साथ जिसके चाहे वह करदे हमें।
चुपके चुपके साथ जाना कोई हमसे सीख जाय॥

दुल्हन नहा धोके बैठी है अभी कंगन पहिन करके।
तू मत आ सामने उसके अभी मेहँदी लगाई है॥
तेरा क्या काम है क्यों बदसगूनी है करी आकर।
चली जा तू यहां से सामने नाहक को आई है॥
बजुज़ आहे जिगरउस वक्त क्या मुँहसे निकलता है।
कहें दर्द अपना किससे किसको अपनी मित्रताई है॥
हमारे रंजो ग़मकी दास्तां को कौन सुनता है।
मुख़ालिफ़ बाप है और दुश्मनेजां अपना भाई है॥
मदनपीड़ा करी है दिल में है रंजो अलम अज़हद।
कभी है बिस्तरे ग़मगाह टूटी चारपाई है॥
करें दो चार और हैसात तक तो अपनी सबशादी।
किसी के आज तक यह बात भी बस दिलमें आई है॥
किइन बेचारी अबला बेवोंका क्या हाल है अबतर।
है इनकी क्या ख़ता इनपर जो यह ऐसी तबाही है॥
स्वयंवर होता था पहले यहां शादी के मौके पर।
जो उम्दा रस्म थी एक लख्त वह तुमने मिटाई है॥
बजाये इस के की जारी रसमातं क़बीहा को।
न सोचा कुछ कि ख़ुदग़र्ज़ों ने यह रीती चलाई है॥
हुआ था मुश्फ़िक़ो ग़मख्वार अपना एक यहां पैदा।
ग़ज़ब देखो कि उसने भी करी हमसे जुदाई है॥
अहो! वह वेद का ज्ञाता परम ज्ञानी परम कोविद।
कहां है जिसने हम को वेद की आज्ञा बताई है॥

दया थी नाम में आनन्द था उपदेश में जिस के।
हमारी हेतु अपनी जान तक जिसने गँवाई है॥
मनु और वेद में जब आज्ञा है अक्दसानी की।
तो फिर करने में तुम ने देर अब कैसी लगाई है॥
हज़ारों साल तो रोई तुम अब भी क्या रुलाओगे।
बताओ तो सही क्या कुछ तुम्हारे मन समाई है॥
जो खारिजअक्ल हैं उनका न तुम हर्गिज़ सुनो कहना।
हिये के अन्धे हैं आंखों में चरबी उन के छाई है॥
अकारण ही नहीं इस मुल्क की हालत हुई अबतर।
हमारी आह से इस हिन्द पर आई तबाही है॥
जवानी की लहर उठती है ज्यों मौजे बहरे आज़म।
हया बहजाती है होती किनारे पारसाई है॥
सती होना ही अच्छा था हमारे रांड़ होने से।
कहां जायें कहें किस से प्रभो! तेरी दुहाई है॥
हमारी ये जवानी और ये है पैरहन खाकी।
लिबासे सुर्ख की जा हैफ़! ये धूनी रमाई है॥
करें आनन्द सब अखतर शुमारी हमको हो हासिल।
ये क्या इन्साफ़ है और यह तेरी कैसी खुदाई है॥
खिलाते हमको बालेपन में हैं मा बाप गुड़ियों से।
जवानी में उन्हों ने हमको कर रँड़िया बिठाई है॥
ज़ईफ़ी में कहें किस से कि हम पर ये मुसीबत है॥
बजुज़ ईश्वर न सास अपनी न अपनी मा की जाई है।

सिवा अपने पती या पुत्र के होता है कौन अपना।
जो आड़े वक्त काम आये अजब मुशकिल बनाई है॥
खिला दो ज़हर या दो तुम मुसीबत से छुड़ा हमको।
खुदा के वास्ते क्यों तुमने ये आफ़त मचाई है॥
किये पहिले जनम में क्या बुरे आमाल थे हमने।
जो हमको क़ैद बेजा से नहीं होती रिहाई है॥
सदा दिन एकसां रहते किसी के हैं नहीं हर्गिज़।
उठाया जिसने दुख उसने कभी राहत भी पाई है॥
वही काटेंगे बस इस रस्म बद को तेरा हिम्मत से॥
जिन्हों ने दे दिलासा धीर कुछ अपनी बँधाई है॥
जो आली हौसला है वह नहीं डरते हैं जोहला से।
बस अब अय आर्य भाइयो! हमें मुशकिल कुशाई है॥
मदद मज़्लूम वाजिब है यही है फ़र्ज़ इन्सानी।
बहुत सों ने रिफ़ाहे क़ौम में जां तक गँवाई है॥
तुही है सबका एक इश्वर तेराही नाम जगदीश्वर।
दयालू और दयासागर तुही सब का सहाई है॥
रहीमा आदला बन्दा निवाज़ा नाम है तेरा।
तु कर बख़शिश सज़ा आमाल अज़हद हमने पाई है॥
दिले नाशाद क्योंकर शाद हों तेरी कृपा के बिन।
बिलाशक नालये बेदाद की तुझ तक रसाई है॥

भजन ८४

विधवा अनाथ विचारी, हा! सिसक २ रोती हैं॥ टेक॥

कठिन हृदय कैसा कर लीना, दया धर्म सबही तज दीना।
पहाड़ दुख का ढकेल दीना, विधवा कर मन भारी॥
दबि पड़ी जान खोती है॥ हा० १॥

उठ उद्धार करो क्यों न इनका, लिखा देखलो मनु वेदन का।
तज खटका स्वार्थी दुर्जन का, महाकष्ट दो टारी॥
वह अँसुवन मुख धोती है॥ हा० २॥

तुम तो जब रँडुवे हो जाओ, पुनर्विवाह कर चैन उड़ाओ।
कभी जियत शिर लाय बिठाओ, तुम सौतिन हत्यारी॥
यह जान अधिर होती है॥ हा० ३॥

खुदगर्जन की सुन गाथायें, जो हानी भई तुम्हें बतायें।
कई करोड़ बिलखें विधवायें, देके शाप अति भारी॥
आखिर इज्जत खोती है॥ हा० ४॥

दादरा ८५

टेक—मत विधवायें बाली रुलाओ जी॥

दो दो बरस कहीं चार २ बरस की। कोई बरस दस खेलें हँस हँस। विधवा हैं नहिं जाने कुछ बस॥ हा! मत० १॥

ऐसी २ कन्या जो फेरो की चोर हैं। तरस तो खाओ ब्याह रचाओ। उनका कुछ अपराध बताओ॥ हा! मत० २॥

कितनी गई संग नीचों के धन ले। गर्भ गिराये ज़हर दिलाये। कितनों ने योंही प्राण गँवाये॥ हा! मत० ३॥

कितनी बाज़ारों में बैठी हैं देखो। बनी हैं बेश्या, कर रहीं पेशा। हा! तुम को पर नहीं अन्देशा ॥ ॥ हा! मत० ४ ॥

पाठक कहै मित्रो! इज्जत बचाओ। होश में आओ, जहां तक पाओ। इनके पुनः संस्कार कराओ ॥ हा! मत० ५ ॥

भजन ८६

मा बाप बाल बिधवन के, भर भर आंसू रोते हैं ॥ टेक ॥

चिट्ठी में जब खबर ये आई, चेंचक में मर गये जमाई।
तन मनकी सुध बुध बिसराई, विकल हो शिर धुन धुन के ॥
दिल टूक टूक होते हैं ॥ भ० १ ॥

पीट २ शिर भरें गिलानी, हा! बेटी तू अभी अयानी।
कैसे कटेगी हाय! जवानी, खेले खेल बालपन के ॥
यों कह कह मुख जोते हैं ॥ भ० २ ॥

जब तेरी टीपना दिखाते, हाय! तुझे सुख बड़ा बताते।
दान ब्रत कुछ काम न आते, मंगी हुये सब धन के ॥
हम दुख में खायें ग़ोते हैं ॥ भ० ३ ॥

क्यों अम्मा तू चूरी फोरे, भर २ नैन क्यों आवें तेरे।
क्या कहूं फूटे भाग हैं मोरे, रोवें सभी सुन सुन के ॥
सुख दुनियां का खोते हैं ॥ भ० ४ ॥

सुन २ दुख किसकी है छाती, टूक २ हो २ नहीं जाती।
पाठक को यही रीति सुहाती, करो ब्याह भाई इन के ॥
क्यों पाप बीज बोते हैं ॥ भ० ५ ॥

भजन ८७

कह रोई विधवा बाल, उमर मेरी कैसे कटे बाली ।
ना जानो कब हुई सगाई, ना जानो कब जोर मिलाई ।
ना मैं दुनियां देखी भाली, चाल चली जाली ॥क०॥
हरा बाग फूल ले आया, बिन जलहें अब तो मुर्झाया ।
सूख चले पत्ते अरु डाली, छोड़ गया माली ॥क०॥
एक तो थी मैं कर्म की हारी, दूजे विपता पड़गई भारी ।
तीजे चर्खा कात के खाऊं, चौथे गोद खाली ॥क०॥
किससे कहूं विपत मैं तनकी, जाने कौन पराये मनकी ।
कठिन है पीड़ा बालेपन की, सही न जाय आली ॥क०॥
किसपर मेंहदी हाथ रचाऊं, किसपर रूप औरंग बनाऊं ।
किसपर पहिनूं अनवट बिछुवे, किसपर नथ बाली ॥क०॥
मात पिताने कौन बिचारी, जन्मतही मोहिं क्यों ना मारी ।
नवलसिंह कहे ईश्वर तू है सब का वाली ॥क०॥

भजन ८८

विधवन की भारी भीर, भरगई भारत में ।
जो सुहागकी सार न जाने, केवल पीहर को पहचाने ।
ऐसी रांड़ घनी घर घर में, उपजावति है पीर ॥ १ ॥
इनमें आंट रहेगी कबलों, जबलों ये बारी हैं तबलो ।
जा दिन आवेगी तरुणाई, कोई न धरैगी धीर ॥ २ ॥

मन मनोज पर प्यार करेंगे, नयना लाज उतार धरेंगे ।
रस विलास वन में विहरेंगे, सबके रसिक शरीर ॥३॥
जब तुम रोक रोक हारोगे, गिन गिन गर्भन को मारोगे।
हा तब शंकर कौन बनेगो, पंचन में कुल वीर ॥ ४ ॥

भजन ८६

दो०–विधवा नारिन के जहां, धर्म कहें तेहि योग ।
बहुत बताये भी कहां आपतधर्म नियोग ॥
तापर पोप समाज जो, नूतन वचन बनाय ।
ढाँपन चाहत उन्हीं से, रजकहिं चन्द्र छिपाय ॥

जो आपद्धर्म बनाया, उस पर हम तुम करें विचार ॥ टेक ॥

अहल्या द्रौपदी तारा, कुन्ती मन्दोदरी तथा ।
पंचकन्याः स्मरन्नित्यं, महापातक नाशनम् ॥

मन्दोदरी द्रौपदी तारा, कुन्ती और अहल्या दारा ।
सुमिरे नित्य होय निस्तारा, पातक देवे टार ॥ जो० ॥
इनमें की मन्दोदरी नारी, रही विभीषण के घर प्यारी ।
पांच पती में रही विचारी, एक द्रौपदी नार ॥ जो० ॥
रामचन्द्र जब मारा बाली, सो नारी सुग्रीव सँभाली ।
तारा नाम कहाने वाली, किया नियोग प्रचार ॥ जो० ॥
वीर्य दान कुन्ती ने लीना, तीन देवतन से सँग कीना ।
पातक योंहीं नाश कर दीना, भारत लेहु विचार ॥ जो० ॥

नाम अहल्या जिसका आया, इन्द्रादिक सँग गमन बतलाया।
फिर पीछे कन्या ठहराया, धन २ बुद्धि तुम्हारी ॥ जो० ॥
दिव्या देवी थी यक नारी, इक्किस पति की भई पियारी।
देखो पद्मपुराण सँभारी फिर कैसी तकरार ॥ जो० ॥
एक नारि ग्यारह भरतारा, ऐसा भजन बनाकर मारा।
अब तक भी वह नहीं संभारा, अब तो देहु बिसार ॥ जो० ॥
एक पुरुष सँग एकही नारी, इससे अधिक न कहीं उचारी।
आर्य सभा समझाने हारी, समझावे कर प्यार ॥ जो० ॥
न्याय तुलापर तौलो प्यारा, हठधर्मी से करो किनारा।
पाठक कहे ये हिंदू तुम्हारा, तजो असत् व्यवहार ॥ जो० ॥

भजन ९०

इस से रहना हुशियार तुम व्यभिचार बुरी बीमारी ॥
वीर्य एक अनमोल चीज है, जवांमर्द बिन इसके हीज़ हैं।
इस बिन सारा तन मरीज़ है आब उतर जाय सारी ॥ व्य०१ ॥
सुज़ाक आतिशकका यह घर है, छीन प्रमेहका इसमें डर है।
आलस हरदम चहरे पर है, तन रहता है भारी ॥ व्य०२।
फिक्र सदा दिलपर रहतीहै, आंख नाक अकसर बहती है।
देह सदा पीड़ा सहती है, अक्ल जाय सब मारी ॥व्य०३ ॥
धन खोकर दारिद्री होना, पाप कमाना इज्जत खोना।
जब औलाद न हो तब रोना, बनना भ्रष्टाचारी ॥व्य०४॥
घर की नारि नहीं मनभावै, भुतनी और चुड़ैल कहावै।

बाहर वाली अधिक सुहावे, देवे लाखों गारी ॥व्य०५॥
वृथा वीर्य अपना मत खोओ, खेतमें औरोंके मत बोओ।
सेज पराई पर मत सोओ, नहीं होयगी ख्वारी ॥व्य०६॥
ब्रह्मचर्यसा व्रत जगमाहीं, शीतलप्रसाद और कोई नहीं।
जो या व्रतहि ओर निबाहीं, सोई स्वर्ग अधिकारी ॥व्य०७॥

भजन ९१

दोहा–कर २ वेश्या गमन को, बिगड़ जात सब काज।
डूब मेर ना कुयें में, खोके कुल की लाज॥

ख्याल

खोके कुल की लाज अधरमी रंडीबाजी करते हैं।
वेदशास्त्र अरु न्याय नीति तज ईश्वरसे नहीं डरते॥
नंग फ़क़ीर होय धन खोकर दुर्गति होकर मरते हैं।
सेहू का चेला कहे घीसा ध्यान प्रभू का धरत हैं॥

टेक—लानत है रंडीबाजी आफत पड़ जाय आखीर में।

एक छोड़कर अनेक करना, वेश्या बन परधन को हरना।
खोटा कर्म होगया भरना, लिखा हुआ तकदीर में॥
चाहे पण्डित हो या काजी॥ ला०॥

गणिका की संगति पाते हैं, सो नर दोज़ख में जाते हैं।
धन यौवन खो पछताते हैं, व्यापे रोग शरीर में।
मानें ना कपटी पाजी॥ ला०॥

सब ऐबों से बुरी है रण्डी, धर्म हरन की धुरी है रंडी।
गल काटन को छुरी है रण्डी, जैसे धार शमशेर में।
कटने से होते राजी ॥ ला० ॥
जो गणिका से प्रीति करे हैं अपने कुलको दोष धरे हैं।
डूब कुवें में नहीं मरे हैं, बिंधे इश्क के तीर में।
घासा की कथना ताजी ॥ ला० ॥

लावनी ६२

व्याह आदि मंगल कामों में वेश्या बुला नचाते हैं।
धर्म्म कर्म्म जो नष्ट करे उसे मँगलामुखी बताते हैं॥
सन्तानोंको जो सजा २ कर महफ़िल में ले जाते हैं।
गोया बनकर गुरू आप उनको व्यभिचार सिखाते हैं॥
बच्चों के हाथों से द्रव्य वह रंडी को दिलवाते हैं॥
दान पुण्य में देते न कौड़ी वैसे लाखों लुटाते हैं॥
रंडी का सुनने को राग वह बड़ी खुशी से जाते हैं॥
कहे मुरारीलाल वेदवाणी से मुँह दबकाते हैं॥

भजन ६३

तज उत्तम घर की नारी, रण्डी से चित्त लगाते ॥ टेक
ऐसे पापी बहुत अधर्मी, छाई इन पर क्या बेशर्मी।
धन दे मोल खरीदें गर्मी, हयादार बीमारी॥
फिरें टहनी नीम हिलाते ॥ रण्डी० १ ॥

निज घर में जावें गुर्राते, रण्डी के घर सजकर जाते।
लाखों उनकी गाली खाते, फिर भी ताबेदारी॥
करें ज़रा नहीं शर्माते॥ रण्डी० २॥
घर त्रिया को दिया न धेला, रंडी के घर सभी ढकेला।
विषय भोग कर हो गया पाला, आई मरने की बारी॥
फिर दवा मँगाकर खाते॥ रण्डी० ३॥
है धिक्कार ऐसेपुरुषों पर, जिनकी रहतीं ना रिदुखी घर।
पैदा होते ही गए न क्यों मर, कहता यही मुरारी॥
आगे को दुःख न पाते॥ रण्डी० ४॥

भजन ६४

होता बर्बाद घर रण्डीबाजी से॥ टेक॥
अपनी नारी को छोड़ा, रण्डी से नाता जोड़ा।
घर में किया फ़िसाद॥ घर०॥
कैसे थे बड़े तुम्हारे, इन पापों से बचेन हारे।
जिनकी हो औलाद॥ घर०॥
क्यों उनका नाम डुबोया, नारी इज्जत को खोया।
तजी कुल की मर्याद॥ घर०॥
लाखों की बिके जिमीदारी, फिरते हैं दर दर मारे।
नहीं जिनकी तादाद॥ घर०॥
पहिले तो माल धन सारा, रण्डी के ऊपर वारा।
रोवे फिर कर २ याद॥ घर०॥

जब माया दौलत छीनी, बदले में आतशक दीनी।
लो देखो इसका स्वाद ॥ घर० ॥
रण्डी ने मज़ा चखाया, गर्मी ने आन दबाया।
निकलने लगा मवाद ॥ घर० ॥
कहे वासुदेव यह रण्डी, है महादुखों की मण्डी।
करें कहां तक बकवाद ॥ घर० ॥

भजन ६५

सारी इज्ज़त मिलगई धूल में, नर हो गये वेश्यागामी ॥
कल जो घर हाथी नशीन थे, घोड़ों पर सोने के ज़ीन थे।
जर्क बर्क जिनके कमीन थे, वह भी फँसे तावूत में।
ज़र घर की करके तमामी ॥ नर० १ ॥

वेश्या का जब मान बढ़ाया, घर से पतिव्रत धर्म नशाया।
राज बुरे रोगों का आया, इस वेश्या की करतूत से ॥
नामी घर होगये बामी ॥ नर० २ ॥

विद्याहीन विप्र हुये सारे, निर्धन वैश्य बहुत कर डारे।
क्षत्रिय तो बिल्कुलही बिगारे, तेज नहीं कलबूत में ॥
सिंहों ने करी गुलामी ॥ नर० ३ ॥

वेश्या से जब प्रीति लगाई, लोक लाज सब खोय गँवाई।
ज्यों श्वानों बिच श्वानी आई, यह गति बाप और पूत में ॥
होगई औलाद हरामी ॥ नर० ४ ॥

भजन ६६

इस वेश्या बिष की बेल ने, सारा सुख सम्पति खोया है ॥
ज़रा सुनो लगाकर कान हाल कहूँ सारा।
इस वेश्या से जितना कुछ हरज तुम्हारा ॥
उठे जब तबले की घोर बजे है नकारा।
सुन सारंगी की लहर शहर आये सारा ॥
जब छम छम कदम उठावे, चले कदम कदम बल खावे।
जब तिरछी नज़र घुमावे, सब की सुध बुध बिसरावे ॥

झूलना।

सब की सुध बुध बिसरावे, महफ़िल कामरूप हो जावे।
फिर घरबार ज़रा नहीं भावे, सुन सुन पायल की झनकार है ॥
है जोबन बांका नई उमर का, है पोशाक जड़ाऊ जर की।
जिसकी पेशानी पर सुर्खी, सुर्खी मायल दो रुख़सार है ॥
सुर्खी मायल दो रुखसार, जड़ाऊ हार, बना सिंगार। केश तर करके तेल फुलेल से। व्यभिचार बीज बोया है ॥ सा० १ ॥
जब लगे तान की गांसी सुध बिसरावे।
तज कर्म्म धर्म्म वेश्या की शरणमें आवे ॥
जैबें नैनों के बानों से जिगर छिद जावे।
फिर निज नारी से प्रीति जरा नहीं भावे ॥
जा वेश्या के घर सोवे, तन मन धन तीनों खोवे।
यह बीज दुखों का बोवे, तन सड़ जाय है फिर रोवे ॥

झूलना

अब तन सड़ा लुटा घर सारा, मूरख फिरता मारा मारा।
वह भी करगई आज किनारा, तेरा जिस रंडी से प्यार है॥
जो कोई देखे दुख पावे, न सुत मित्र पास बिठलावे।
रोवे शर्म ज़रा नहिं आवे, ऐसे जीने पर धिक्कार है॥

ऐसे जीने पर धिक्कार, है बारम्बार, अरे बदकार। बता दे इस रंडी के मेल से, कितने दिन सुख सोया है॥ सा० २॥

सुन निज नारी का हाल नित्य रोती है।
मुखड़े को आंसू बहा बहा धोती है॥
जब उठे विरह की आग प्राण खोती है।
या उसी विरह में रंडी जा होती है॥

तब तिरिया खास तुम्हारी, थी जो प्राणों से प्यारी।
बन बैठी हैं बाजारी, तज लाज धर्म हा सारी॥

झूलना

इससे क्या शोक तमाम, करती हैं यह बदकार हराम।
हुये फिर उससे अहिले हराम, तुम्हारा दुश्मन जो खूंख्वार है॥
हमको एक अचरज है भारा, रंडी से पैदा होने हारा।
यह सब खेत और बीज तुम्हारा, तुमको खाने को तैयार है॥

तुम्हें खाने को तैयार, है बारम्बार, ये हैं बदख्वार। फिर इन के दुखदायक जेल से, को बचै दुःख ढोया है॥ सा० ३॥

मैं किस विधि इस दुखड़े का हाल सुनाऊँ।
है मद्दा विपत की खान कहां तक गाऊँ॥
कर जोड़ २ के मित्र! तुम्हें समझाऊँ।
तजो इस वेश्या की रीति प्रीति समझाऊँ॥
मत वेश्या नाच कराओ, जो ऋषि सन्तान कहाओ।
अब तो इस से बच जाओ, मत गौ हिंसा करवाओ॥

झूलना

धन तुम्हारा वह लेजावै, फिर उस धन से गऊ मँगावै।
लाके कुर्बानी करवावै, फौरन देती छुरी चलाय है॥
तुम्हें ज़रा रहिम नहीं आवे, वह तो हाय २ डरकावे।
तुमको ज़रा शर्म नहिं आवै, अरे रंडी बिन कैसा ब्याह है॥
करो अब भी जरा विचार, सभी नर नार, होचुका ख्वार।
तेजसिंह भारत इस बदफेल से, भर २ आंसू रोया है॥ सा० ४॥

ग़ज़ल ६७

हया और शर्म तजि रण्डी सरे महफिल नचाई है।
न समझो इस में कुछ इज्जत सरासर बेहयाई है॥१॥
निगाहे बद से देखें बाप बेटा और भाई सब।
कहो यह मा हुई भाभी बहू अथवा लुगाई है॥२॥
दिखाकर नाच औ रुपया नज़र उन से दिला कर के।
अरे अन्याइयो बच्चों को क्या शिक्षा दिलाई है॥३॥
लखें कोठों झरोखों से तुम्हारे घर की सब नारी।

असर क्या नेक उन के दिल में पैदा होता भाई है ॥४॥
ये खातिर देख उसकी सब के दिल में आग लगती है।
हैं आपस में ये कहती वाह क्या उम्दा कमाई है ॥५॥
कभी बिछुवे न नथ बाली हमें स्वामी ने बनवाई।
मगर इस बेवफ़ा औरत को दी सारी कमाई है ॥६॥
करें हम रात दिन घर के हज़ारों काम तिस पर भी।
बिना बिगड़े हुये कुछ काम जूती लात खाई हैं ॥७॥
हुई खातिर कभी ऐसी न जैसी इस की होती है।
बनी बेग़म पड़ी दिन रात तोड़े चारपाई है ॥८॥
किया है ध्यान मन में कुछ ? कि जो धन इस को देते हैं।
कटेंगी इस से गो माता यह धन लेता क़साई है ॥९॥
अरज़ यह शिवनारायण जोड़ के कर तुमसे करता है।
कुरीती छोड़ दो प्यारो ! इसी में अब भलाई है ॥१०॥

भजन ६८

मत पढ़ो कोई जन फार्सी, बाणी है जालसाज़ी की।

लिखो शब्द यद्यपि फिकवाना, पढ़ा जाय वहही फुकवाना।
फ़र्क़ सीन से स्वाद न जाना। तर्ज़ दग़ाबाज़ी की ॥ बा० ॥
नहीं भेद क़सबी क़िश्ती में, और बहिश्ती औ भिश्ती में।
मुश्किल है बस्ती पस्ती में, दखल इस्तयाज़ी की ॥ बा० ॥
बर पर तर को लौट बदल के चाहे पढ़लो लाख शकल के।
मानस मांस समझ गुल गिलके, अक्ल न है क़ाज़ी की ॥ बा० ॥

दाद नागरी को सब दीजो, बाबू की अर्ज़ी सुन लीजो।
अदालतों में कोशिश कीजो, इसके सर्फ़राज़ी की ॥ बा० ॥

भजन ६६

फ़ारसी ज़ुबान पढ़कर धर्म बिगाड़ा।
तज शुद्ध संस्कृत बानी, पढ़ क़िस्से और कहानी।
बिगड़ गई ऋषि सन्तान ॥ पढ़० ॥
क्यों अपनी रीति बिगाड़ी, मारी निज हाथ कुल्हाड़ी।
स्वयं कर बैठे हानि ॥ पढ़० ॥
जबसे यह फ़ार्सी आई, हुये यवन करोड़ों भाई।
वेद तज पढ़े कुरान ॥ पढ़० ॥
सब धर्म और कर्म बिसारे, हुये उलटे आचरण सारे।
हाथ खोदिया ईमान ॥ पढ़० ॥
उर्दू में जाल बने हैं, झगड़ा हो युद्ध ठने हैं।
कुछ का कुछ करें बयान ॥ पढ़० ॥
जो आर्य्यवर्त्त कहलाया, उर्दू पढ़ भ्रष्ट बनाया।
कहन लगे हिन्दुस्तान ॥ पढ़० ॥
सुख वासुदेव जब पाओ, वेदों को पढ़ो पढ़ाओ।
जिस में है ईश्वरी ज्ञान ॥ पढ़० ॥

भजन १००

छोड़ा वेदों का पढ़ना, कैसे होवेगा उद्धार ॥
ज़रा ग़ौर करो तो खबर पड़े अब भाई।

क्या काम रहे कर मुसल्मीन ईसाई ॥
कितनी भाषा में बाइबिल कुरान छपाई।
दूर जगह पर अपना मज़हब दिया फैलाई ॥
बच्चों को रोज़ पढ़ावें, नहीं भाषा और सिखावें।
कुरान को हिफ्ज़ करावें, यही ईसाइयों में पावें ॥
पर तुम्हें ज़रा नहीं ध्यान, हुई क्या हान, कहालो मान।
देखिये अब तो आंख पसार ॥ छोड़ा० १ ॥

किसी नामी ग्रामी पण्डित के घर जाओ।
मुश्किल से एक दो पत्रे वेद के पाओ ॥
नहीं पढ़ो पढ़ाओ वेद न सुनो सुनाओ।
तज परम धर्म को कैसे आर्य कहलाओ ॥
जिस धर्म की गति हो ऐसी, है वेद धर्म की जैसी।
फिर उस की तरक्की कैसी. जिसपर कहलाओ हितैषी ॥
हो अंग्रेज़ी पर ज़ोर, करो हो शोर, धर्म को छोड़।
मिटाते वेदों का विस्तार ॥ छोड़० २ ॥

मुल्कों मुल्कों में बजे वेद का डंका।
क्या यूरुप औ पाताल अरब क्या लंका ॥
इस देश से होवे दूर अविद्या खंका।
तो मिले फेर सुख चैन मिटे सब शंका ॥
इस लिये समाज बनाय, स्वामी ने दुःख उठाये।
डूबे थे हमें बचाये, अद्भुत उपदेश सुनाये ॥
उनका था यही उद्देश, सुधर जाय देश, फैले उपदेश।
वेदों को माने सब संसार ॥ छोड़ा० ३ ॥

अब तो है भरोसा सब को मित्र तुम्हारा।
बने जहां तक तुम से दीजे आप सहारा॥
फैले दुनिया में धर्म मिटे दुख सारा।
दुष्टों का हो अपमान जाय मुख मारा॥
बच्चों को वेद पढ़ाओ, करना उपदेश सिखाओ।
चन्दे से ट्रैक्ट छपाओ, घर घर उनको पहुँचाओ॥
सब वैर भाव तज दीजे, तरक्क़ी कीजे, विनय सुन लीजे।
मुरारी सब से कहे पुकार॥ छोड़ा० ४॥

भजन १०१

कल्याणरूप जो वाणी, हर जगह उसे पहुँचाओ॥
किस ग़फ़लत में तुम पड़े हो जागो जागो।
इस घोर नींद को अब तो त्यागो त्यागो॥
करो धर्म पाप से मित्रो! भागो भागो।
पर उपकारी कर्मों में लागो लागो॥
यह है कर्त्तव्य तुम्हारा, मत इस से करो किनारा।
इस ने सब देश सुधारा, इस बिन नहीं होय गुज़ारा॥
दो सब के कानों में डाल, अभी फ़िलहाल, करो मतटाल।
हुक्म लासानी। जो ऋषि सन्तान कहाओ॥ हर० १॥
वेदों के प्रचार में अपना तन मन देदो।
जो बने बांट के धन में से धन देदो॥
चारों पन में से आप एक पन देदो।

जीवन इस के लिये संन्यासी बन देदो ॥
मुल्कों मुल्कों में जाकर, सच्चे उपदेश सुनाकर।
पड़े भ्रम में जो समझाकर, उन्हें ईश्वर भक्त बनाकर ॥
बनो यश के तुम भण्डार, करो उपकार, मन में लो धार।
समझें सब प्राणी, वैदिक सिद्धान्त सुझाओ ॥ दूर० २ ॥

छिपा विद्या का प्रकाश मिटा उजियाला।
हर एक ने अपना चिराग अलहिदा बाला ॥
चोरों ने भी फिर चोरी का ढंग डाला।
घर फोड़ फोड़ के मित्रो माल निकाला ॥

छिपा सूरज हुआ अन्धेरा, भारत चहुँ दिशि से घेरा।
कोई कहे ये मत है मेरा, सच्चा है झूठा तेरा ॥
फिर करी ईश्वर ने दया, ऋषी एक भया, ज्ञान दे गया।
बड़ा वह दानी, मिलकर उसके गुण गाओ ॥ दूर० ३ ॥

जो ईश्वर ..। आज्ञा है उसी को पालो।
दो और काम सब छोड़ न इस को टालो ॥
सब मनुष्यमात्र के हृदय में इसको डालो।
सच्चा है वैदिक धर्म और झूठ निकालो ॥
सब को उपदेश सुनादो, सीधा मारग बतलादो।
दुनिया में धूम मचा दो, और सब के भरम मिटादो ॥
लीजे जीवन का सार, करो अख्त्यार, वेद संचार। बनाओ
सानी, फिर मन माना सुख पाओ ॥ दूर० ४ ॥

भजन १०२

ब्रह्मचारी जगत में आवें तो बेड़ा पार हो। पापों और तापों पन्थों के जाल को, तोड़ डालें तो बेड़ा पार हो॥ ब्र०॥

देखो हा हा अविद्या पापों का यहां पर ज़ोर है। पापों का जोर है, दुखों का शोर है, आवें तो बेड़ा पार हो॥ ब्र०॥

झूठे चले जो पन्थ हज़ारों इसी जगत में। पन्थों ने डाले रोले, सच्ची न कोई बोले, आवें तो बेड़ा पार हो॥ ब्र०॥

कैसे अर्जुन वा भीष्म योधा हुये यहां भारी। अर्जुन से योधा भारी, भीष्म से तप धारी, आवें तो बेड़ा पार हो॥ ब्र०॥

कैसे गौतम कणाद और व्यास हुये यहां दाना। ऐसे दिमाग़ होवें, भारत के दाग़ धोवें, आवें तो बेड़ा पार हो॥ ब्र०॥

छोड़ो झूठी मुहब्बत भजो तुम वच्चे गुरुकुल। जीते काम क्रोध अहंकार लोभ मोह को, आवें तो बेड़ा पार हो॥ ब्र०॥

मारा लक्ष्मण सेही ब्रह्मचारी ने योधा मेघनाद। जितेन्द्रिय ब्रह्मचारी, विद्वान पर उपकारी, आवें तो बेड़ा पार हो॥ ब्र०॥

भजन १०३

(लावनी)

वर्णाश्रम धर्मों के सारे अभिज्ञान हों गुरुकुल से।
चार वेद के ज्ञाता पण्डित ज्ञानवान हों गुरुकुल से॥
वीर्यवान पूरण वलिष्ठ सुन्दर सुजान हों गुरुकुल से।

आर्य्य धर्म्म तत्त्वज्ञ सर्वगुण में प्रधान हों गुरुकुल से ॥
स्वामी के कथनानुसार जग का सुधार हो गुरुकुल से ।
आप्त ग्रन्थ जो लुप्त हुए तिनका उद्धार हो गुरुकुल से ॥
ऋषियों के कर्त्तव्य धर्मका भी प्रचार हो गुरुकुल से ।
यथातथ्य या मुक्ति द्वार संसार पार हो गुरुकुल से ॥
टेक-बिन गुरुकुल कैसे भाइयो ! सुधरे सन्तान तुम्हारी ॥
गुरुकुल ही ने बना कणाद गौतम दीने ।
गुरुकुल ही ने ऋषि कपिल जैमिनी कीने ॥
गुरुकुल ही से बन विप्र सुयश जग लीने ।
गुरुकुल ही से बने विप्र जो थे कुछ हीने ॥
गुरुकुल ने देश किया नामी, गुरुकुल ने हुरमत थामी ।
बिन गुरुकुल हो गये कामी, खो यश लीनी बदनामी ॥
थी जो कि धर्म की डोर, वह दीनी तोड़, लिया मुख मोड़, भूले चतुराई । बन बैठे आप अनारी ॥ सुधरे० १ ॥
गुरुकुल ही से पढ़ ऋषी मुनी कहलाये ।
गुरुकुल ही से पढ़ अनुपम शास्त्र बनाये ॥
गुरुकुल ही से बड़े उच्च २ पद पाये ।
दुनिया में जिन के नाम जाते हैं गाये ॥
गुरुकुल में चित्त लगाओ, मत हटो आग बढ़ जाओ ।
बच्चों को वेद पढ़ाओ, जो सच्चे आर्य कहलाओ ॥
लेलो भारत की खबर, बांधकर कमर, काम नहीं ज़बर । सुनो तुम भाई, पूरण हो आश हमारी ॥ सुधरे० २ ॥

बिन गुरुकुल पूरी हुई देश की हानी।
ऋषि मुनियों की सन्तान बनी अज्ञानी॥
जो विद्या का भण्डार संस्कृत बानी।
उसे छोड़ पढ़ाओ किस्से और कहानी॥
भारत का नर्मीबा फूटा, गुरुकुल का जाना छूटा।
जब नियम ब्रह्मचर्य टूटा, तब अधर्म ने आ लूटा॥
हुए बल बुद्धी से हीन, आयु से क्षीन, काम नहिं लीन।
ये आफत आई, नहीं रहा कोई ब्रह्मचारी॥ सुधरे० ३॥
तुम मन में कोशिश करो बनाओ गुरुकुल।
सब विद्या का भण्डार लखाओ गुरुकुल॥
हो दूर अविद्या फिर खुलवाओ गुरुकुल।
धन खर्च देकर आप चलाओ गुरुकुल॥
ज़रा देर न इस में कीजै, घड़ी पल २ छिन २ छीजै।
सब दूर अविद्या कीजै, ऊँचा जीवन कर लीजै॥
पहला या होवे ध्यान, सुधरे सन्तान, देके कुछ दान।
करो मन मानी, करता अर्दास मुरारी॥ सुधरे० ४॥

भजन १०४

कन्या गुरुकुल विषय।

कन्या गुरुकुल करो क्यों न जारी।
देखो इसकी ज़रूरत है भारी॥टेक॥
पढ़कर निकलेंगे जब ब्रह्मचारी, होवें गृहस्थ के अधिकारी
जी। चाहिये ब्याहन को वैसी कुमारी॥ दे० १॥

बनते पुत्र हैं जब तत्त्वज्ञानी, बस न्याय यही है बुद्धिमानी जी। होवें विदुषी भी पुत्री तुम्हारी ॥ दे० २ ॥

सुन्दर जन्मे सन्तान तुम्हारी, धर्म्मात्मा आदि गुणधारी जी। फैले जग में आनन्द अपारी ॥ दे० ३ ॥

समय सत्ययुग जैसा बनाओ, ढूंढ़ो तो भी अज्ञान न पाओ जी। होवें देवता देवी नर नारी ॥ दे० ४ ॥

जावे धन कितना व्यर्थ तुम्हारा, हा! हा!! बाद अशान्ति मँझारा जी। वहां से रोको बनो उपकारी ॥ दे० ५ ॥

पाठक ग़फलत की नींद बिसारो, अपना तन मन धन सब वारो जी। देवो ऋषि ऋण शीघ्र उतारी ॥ दे० ६ ॥

भजन १०५

छोड़ो न तुम धरम को चाहे जान तन से निकले।
सच्चा सखुन हो लेकिन शीरीं दहन से निकले॥
पाया है उच्च जीवन इस की विचारो क़ीमत।
ऐसा प्रयत्न करिये अविचार मन से निकले॥
संगति सुजन जनों की करनी सदा भली है।
जिस से कुवासना-मल, अन्तःकरण से निकले॥
उपकार ऐसा करिये संसार कीर्ति गावे।
स्वार्थन्धता अलहदी मन से वचन से निकले॥
रहना नहीं किसी को इस लोक में सदा है।
कर्त्तव्य की सभी त्रुटि राधा शरण से निकले॥

राजगीत १०६

मरते २ मर गये लेकिन न छोड़ा आन को।
आके देखो दोस्तो! इस राजपूती शान को॥
सैकड़ों झेली मुसीबत रंजोगम लाखो सहे।
जान तक देदी बचाया लेकिन दीन ईमान को॥
खाक से पैदा हुये और खाक ही में मिलगये।
धर्मपर क़ायम रहे समझा नहीं कुछ जानको॥
राम गौतम कृष्ण का क्यों नाम है विरदज़बां।
धर्म की खातिर था छोड़ा राज के सामानको॥
याद रक्खा दोस्तो! हर्गिज भुलाना मत कभी।
दर्द दिल के वास्ते पैदा किया इन्सान को॥
लेक्चरों से मजलिसों से लम्बी चौड़ी बात से।
दिलको नफरत होगई नफरत है इनसे कानको॥
कर दिखाओ कुछ अगर है हिम्मतो मर्दानगी।
जंगजू कब छोड़ते हैं जंग के मैदान को॥
है अबस इस चन्दरोजा जिन्दगानी का गरूर।
मरते दम तक खूबही क़ायम रखो ईमान को॥

भजन १०७

सीस जिनके धरम पै चढ़े हैं, झण्डे दुनिया में उनके गड़े हैं।
यक लड़का हकीकत नामी, सार जिसने धरम की जानी॥

जगमें अबतक है जिसकी निशानी, सीस कटवानेको खुश खड़े हैं॥
बादशाह ने कहा सब तुम्हारे, राज दौलत खज़ाने हमारे।
सुन हक़ीक़त यों बोले विचारे, हम तो इन से किनारे खड़े हैं॥
यह हक़ीक़त की दौलत न भाई, बल्कि आखीर को दुःखदाई।
क़ारूं जैसे ने परबत बढ़ाई जा नरक में वो आखिर पड़े हैं॥
सब को दुनिया से है कूंच करना, बाल बुड्ढा जवां सबको मरना।
मरना जब है तो क्या इस से डरना, हमतो गर्दन झुकाये खड़े हैं॥
पूरण भक्त ने कष्ट उठाये, कारण धर्म के अंग कटाये।
रहे सत् पै नहीं घबड़ाये, हाथ कटवाये कुयें में पड़े हैं॥
गुरू तेग बहादुर प्यारा, सीस जिस ने धर्म पै दे डारा।
सीस कटवाया धर्म न हारा, नहीं मरने से कुछ भी डरे हैं॥
गुरु गोविन्द के थे दो प्यारे, गये रणभूमि में वो भी मारे।
और छोटे वह थे जो दो प्यारे, ज़िन्दा दीवार में वह गड़े हैं॥
महर्षी दयानन्द प्यारे, धर्म कारण ज़हर खा सिधारे।
सुन के हिल जाते थे दिल हमारे, ओ३म् जपते वो आगे बढ़े हैं॥
लेखराम धर्म का प्यारा, जिसने धर्म पै तन मन वारा।
खाया जिस्म पै तेग कटारा, उठ "धर्म" तू यहां क्या करे है॥

भजन १०८

हुये यह कैसे उपकारी।

मोरध्वज का शिर चिरवाना, दाहिन अंग सिंह को खिलवाना॥ आंसू उन का एक न आना। कैसा दृढ़ धारी॥

शिवि का कपोत पै दया दिखलाना, तन अपने का मांस कटाना ॥ काट काट कर तुला पै चढ़ाना । कैसा दयाकारी ॥
ऋषि दधीचि का तन चटवाना । जांघ की अपनी हड्डी दिलाना ॥ उस ही के कारण देह छुड़ाना । दे शिक्षा भारी ॥
स्वामी दयानन्द का विष खाना । लेखराम का पेट फड़ाना ॥ सच्चा धर्म उपकार जताना । पाठक हैं भारी ॥ हुये० ॥

प्रभाती १०६

तजि तजि निज धर्म मित्र एते दुख पाये ।
जब लग निज धर्म जलनि, अग्नि है बनाये ।
हाथी अरु सिंह नरन, सन्मुख नहिं आये ॥ १ ॥
दाह शक्ति त्यागि जबहिं, खेह नाम पाय ।
तनिक भी पिपीलिकाहु, रौंदि शीश जाये ॥ २ ॥
ब्राह्मण निज धर्म पालि, ऋषि मुनि कहलाये ।
महाराव राजन ने सादर शिर नाये ॥ ३ ॥
पदवी जो मिलत आज, कहत लाज आये ।
पीर और बबर्ची खर, भिश्ती बनलाये ॥ ४ ॥
क्षात्र धर्म जब लग थे, क्षत्रिय मन भाये ।
आवत समरांगन मे, कालहु भय खाये ॥ ५ ॥
धर्म विमुख ह्वैके अब, दर दर मुँह बाये ।
सिंह नाम पाय, स्यार सन्मुख घबराये ॥ ६ ॥
बनिज करि विदेश, बनिक बहुत धन कमाये ।

गूलर कृमि भये ! बनत कछु ना बनाये ॥ ७ ॥
आदर तजि द्विजन, शूद्र जबनें निदराये ।
सेवा तजि मित्र, भय जात हैं पराये ॥ ८ ॥

दादरा ११०

प्रभु वह लामकान है, सच्चा वेदों ही ने गाया ॥ टेक ॥

क्षीर समन्दर में सोते प्रभु, ऐसा कहैं पुरानी । अर्श हफ्त पर लिये फ़रिश्ते, ऐसा कहैं कुरानी ॥ प्रभु० १ ॥

पुराण कहैं जहँ चार हाथ, वहँ कुरां में यों फ़रमाया । मिट्टी गूंदी खुदा ने खुदही, जब आदम बन पाया ॥ प्रभु० २ ॥

स्वर्ग नर्क दोज़ख बेहिश्त का, फन्दा वेढब जान । कर्मों का फल ज़रूर देगा, हूर न दें गिलमान ॥ प्रभु० ३ ॥

दिलमें आया हवास में नहिं, वेद ये उसका ज्ञान । आसमान से वही आई, यों हुआ ज़हूर कुरान ॥ प्रभु० ४ ॥

मूरख क्यों है फिरे भरमता, क्या पढ़ रहा कहानी । पाठक कहे अब शरणागत हो, मान २ रे प्रानी ॥ प्रभु० ५ ॥

ग़ज़ल १११

हम से धरम का राज़ छुपाया नहीं जाता ।
जो सच है उसे झूठ बताया नहीं जाता ॥
गिरिराज जी के क़िस्से का आता नहीं यक़ीन ।
उँगली पै एक पहाड़ उठाया नहीं जाता ॥

मरियम के पेट से हुआ पैदा ईसु मसीह।
हम से खुदा का बेटा बताया नहीं जाता॥
लिक्खा कुरां में क़त्ल करो काफ़िरों को तुम।
वहशीपने पै दिल को जमाया नहीं जाता॥
राज़िक को क़र्ज़ लेने का इलज़ाम लगा कर।
इज्ज़त को उसकी हम से घटाया नहीं जाता॥
अपने शिकम के वास्ते ग़ैरों की रूह को।
बिस्मिल्ला करके हम से सताया नहीं जाता॥
ईदुज्जुहा के रोज़ उम्मीदे सवाब पर।
बकरों के सर को तन से कटाया नहीं जाता॥
धोके में फंस लोगो के हर्गिज़ न आइयो।
वैदिक धरम को शर्म्मा गँवाया नहीं जाता॥

ग़ज़ल ११२

हर एक ने फ़िरक़े बना लिये हैं, किताबें झूठी बना बनाकर।
फँसाया फन्दे में सैकड़ों को, करामत अपनी दिखा दिखाकर॥
कोई कहे मन्दिरों में आओ, कोई कहे मसजिदों में जाओ।
खुदा की होती है यों इबादत, खुदा खुदा कर खुदा खुदाकर॥
किसीने सूरज लिखा निगलना, किसीने शशि के किये दो टुकड़े।
खुदा की बातें फिर बताते, फ़िसाने झूठे सुना सुना कर॥
कहीं पिलावें हैं आब ज़मज़म, कहीं करावें तवाफ़ेकाबा।
खुदापरस्ती से है डिगाते, वह बुतपरस्ती सिखा सिखा कर॥

कहीं हदीस और कहीं सिपारा, कहीं पै कुरआं का दे हवाला।
जिहाद से करते कुश्त और खूं, हैं दीं बढ़ाते लड़ा लड़ाकर ॥
बता कहीं पर ज़मीं बिछौना, कहीं फ़लक को है छत बताया।
फँसाते हैं दीन ईसवी में, ईसू को सूली चढ़ा चढ़ा कर ॥
कहीं पै ईसा कहीं मुहम्मद, कहीं पै मूसा कहीं पै गौतम।
किया है गुमराह सब ने शर्मा, हज़ारों घातें लगा लगा कर ॥

दादरा ११३

आर्यों की चलन मुझे प्यारी है।

कहिं प्रद्युम्न सुत माता यशोदा, इधर न प्रभु संसारी है ॥आ०॥
दोस्त मुहम्मद कहीं ईसू है बेटा, बेटा न यहां महतारी है ॥आ०॥
उधर गुनाहोंमें चलती सिफ़ारिश, इधरतो प्रभुन्यायकारीहै ॥आ०॥
मुर्दों को गाड़ें उधर वायु बिगाड़ें, इधर हवनसे सुधारीहै ॥आ०॥
उधर दया तज पशुओं को मारें, इधर दया बड़ी प्यारी है ॥आ०॥
उधर उपकारकानकांई भीज़रिया, इधर अनाथरक्षा जारीहै ॥आ०॥
पाठक कहै सब वेदों को मानो, यही तो रीति सुखारी है ॥आ०॥

गजल ११४

मरें यह दीन जाने हैं बचा लोगे तो क्या होगा।
ये बोझा अपने सर पै गर उठा लोगे तो क्या होगा ॥ १ ॥
तुम्हारे ही तो बच्चे हैं ऋषी सन्तान के खूं हैं।
अगर इन को कलेजे से लगा लोगे तो क्या होगा ॥ २ ॥

न पितु माता कोई सर पर न भाई बन्धु चाचा है।
रहम इन ग़मज़दों पर तुम बढ़ा लोगे तो क्या होगा ॥ ३ ॥
हा! दुश्मन क़हतसाली ने है इनको तंग कर डाला।
यवन ईसाई होने से हटा लोगे तो क्या होगा ॥ ४ ॥
ये गौहर लाल अपनी क़ौम के लुटते चले जाते।
निगाहे मिहर से इनको रखा लोगे तो क्या होगा ॥ ५ ॥
रगों में खून ऋषियों का अगर रखते हो कुछ बाक़ी।
तो पालक बेकसों के तुम कहा लोगे तो क्या होगा ॥ ६ ॥
न भोजन खाने को मिलता न कपड़ा तन पै कुछबाक़ी।
दया मासूम बच्चों पर जमा लोगे तो क्या होगा ॥ ७ ॥
बिनय ये है बटोही की मदद अब कुछ तो कर दीजे।
पतित जब धर्म में इनको करा लोगे तो क्या होगा ॥ ८ ॥

ग़ज़ल ११५

ऋषी मुनियों के बालक दीनो हैरां होते जाते हैं
दया जगदीश कर महराज के सामां होते जाते हैं ॥ १ ॥
न भोजन है न कपड़ा है न है अब गोद माता की।
यह कहते हाय अम्मां! हाय अम्मां! रोते जाते हैं ॥ २ ॥
गये मां बाप मर भूखों के मारे इन अनाथों के।
यह फ़ाक़ों से मसीही और मुसल्मां होते जाते हैं ॥ ३ ॥
हुए फ़ाक़ों से बेचारे नहीफ़ो नातवां ऐसे।
उठें उठ कर गिरें गिर कर ये बेजां होते जाते हैं ॥ ४ ॥

तेरी ये बेवफ़ाई क़ौम ! जिस दम याद करते हैं।
तेरा मुँह तकते जाते हैं हिरासां होते जाते हैं ॥ ५ ॥
संभल अय क़ौमहो होशियार अबतो ले ख़बरइनकी।
तेरे नूर नज़र नज़रों से पिन्हां होते जाते हैं ॥ ६ ॥
कभी व : भी ज़माना था कि यह ग़ैरों के मुहसिनथे।
अब इनपर ग़ैर क़ामों के यह अहसां होते जाते हैं ॥ ७ ॥
तरक्क़ी धर्म की क्या ख़ाक होगी उनसे ऐसे वक्त।
कि जिनके क़ौमी बच्चे भूख से जां खोते जाते हैं ॥ ८ ॥

भजन ११६

शैर–वेद के अनुयाइयो, भारत सपूतो सज्जनो !
है निवेदन आप को, सेवा में दिल देके सुनो ॥
आप के कितने ही भाई, आप से जो जुदा हुये।
उनको सीने से लगाओ जोकि तुम पर फ़िदा हुये ॥
क़हर के अय्याम में, जो कुछ हुआ सो हो गया।
रह गया उस को सँभालो, खो गया सो खो गया ॥
ग़ौर से सोचो तो कुछ भी है नहीं उन का क़सूर।
गर्दिशे अय्याम में आता है अक़्लों में फ़ितूर ॥
रह नहीं सक्ती है कुछ मर्याद आपत काल में।
फ़र्क़ हो जाता है कुल व्यवहार और सदाचार में ॥
अमन की हालत में उस को फिर सुधारा जाता है।
धर्म शास्त्रों से वह प्रायश्चित्त पुकारा जाता है ॥
उस के करने में न तुम को जी चुराना चाहिये।

कर्म वेद अनुकूल में अब दिल लगाना चाहिये ॥
अब उठो सोने में तुम को कई ज़माने हो गये ।
नींद ग़फ़लत में जो थे अपने बिगाने हो गये ॥
देखिये दुनिया में क्या २ हो रहा ज़रा ग़ौर से ।
लूटते रहज़न तुम्हारी क़ौम को चहुँ ओर से ॥
चूहड़े तक बन रहे कृश्चियन लाखों हिन्द में ।
क़हत में हो जाते हैं बेदीन लाखो हिन्द में ॥
तुम पड़ सोते हो लाखो छिन गये लख़ते जिगर ।
खोलदो आँखें तुम्हारा ख़्याल है मित्रो किधर ॥
बेख़बर तुम्हें देखकर दयानन्द तुम को जगा गये ।
धर्म की वेदी पै खञ्जर लेखराम भी खागये ॥
फिर भी इन वाक़ात से सीखा न कुछ तुमने सबक़ ।
सोते तुम कब तक रहोगे खोल दो अब तो पलक ॥

टेक-भाइयों के मेल मिलाप से, कहो कैसे धर्म जाता है ।
नहीं गया धर्म चीनी सफेद खाने से ।
नहीं गया धर्म कन्या के मरवाने से ॥
नहीं गया धर्म पर नारि के बहकाने से ।
व्यभिचार किये और हमलके गिरवाने से ॥

शेर-रण्डियों के इश्क में बदफेल क्या २ नहिं किया ।
लब से लब को मिलाय पानी थूक तक उनका पिया ॥
आतिशक भी फूट निकली खून तक गंदा किया ।
इतने कुकर्म सब किये पर धर्म अपना नहिं दिया ॥

लिया मद्य मांस भी खाई । और शफाखाने की दवाई ॥
दी झूठी लाखों गवाही । पर धर्म पै चोट न आई ॥

लिख दस्तावेज़ नित झूठे, लोग बहु लूट, जात से न छूटे।
पेट भरा नित पाप से, कैसा अन्धेर खाता है ॥ कहो० १ ॥

नहीं गया धर्म लड़की के बेच खाने से ।
नहीं गया धर्म पर धन को लूट लाने से ॥
चोरी जारी छल फरेब फैलाने से ।
नहीं गया धर्म गौओं के कटवाने से ॥

शव-पूजन मुर्दे मुसल्मानों के हिन्दू सैकड़ों ।
देते क़बरों को ज़कातें खाते हिन्दू सैकड़ों ॥
मौलवी मुल्लाओं क घर जाते हिन्दू सैकड़ों ।
बच्चों के मुँह में थुकाते हाय हिन्दू सैकड़ों ॥

पर जो कोई तुम्हारा भाई । किसी क़दर पेंच में आई ॥
हो गया यवन ईसाई । उसे लेंने से धर्म नशाई ॥

यह कैसे ग़ज़ब की बात, कही नहिं जात, सोचकर भ्रात ।
कहो इन्साफ से, गर धर्म से कुछ नाता है ॥ कहो० २ ॥

मैं कहता हूँ कर जोड़ सुनो सब भाई ।
इस मूरखता ने तुमरी कुगत करवाई ॥
इस ना समझी ने तुम्हारे लाखों भाई ।
किये तुम से जुदा और दुश्मन दिये बनाई ॥

शैर–देखिये अय मित्रो तवारीख़ हिन्दोस्तान की।
सल्तनत इसलाम में सब को पड़ी थी जान की॥
था ज़माना क़हर का किनको ख़बर थी ईमानकी।
दम लबो पर था न थी परवाह शौक़त शान की॥

लाखो ही आप के भाई। दिये जबरन यवन बनाई॥
वह गये वक्त दुखदाई। उन्हें अबतो लेहु मिलाई॥

उन्हें धर्म शास्त्र अनुसार, करो स्वीकार, ये बारम्बार। अर्ज़ है आप से, यही मारग सुखदाता है॥ कहो॰ ३॥

जो भाई पतित हो जावे शरण में आवे।
तो बिरादरी उसे शीघ्र ही शुद्ध करावे॥
गर धर्म सभा इस कर्म से हाथ उठावे।
तो सभा पतित हो जाय शास्त्र बतलावे॥

शैर–आप के भाई पतित गर शुद्ध नहीं किये जायेंगे।
क़ौम के दुश्मन बनेंगे तुम को खूब सतायेंगे॥
ग़ौर करके देखलो हम तुमको क्या समझायेंगे।
क़ौम की गर्दन पर उन के सारे पाप भी आयेंगे॥

इस मूरखता ने तुम्हारी। मुर्दार क़ौम कर डारी॥
अब हूं तो सोच विचारी। बिगड़ो को लेउ सुधारी॥

बलदेव कथन पर ध्यान, धरैं विद्वान, बड़ा नुक़सान। हुआ इस पाप से, दिन २ दुख दिखलाता है॥ कहो॰ ४॥

दादरा ११७

बिछुड़े भाइयों को अब तो लगाओ गले ।
एक दिन क़हर भारत पर आया, ज़ोर मुसलमानों का छाया ।
मार २ क़ल्मा पढ़ाया, लाखों बच्चे सत्याग्नियों के जिसमें जले ॥
लाखों बच्चे भूखों के मारे, हुये जायें ईसाई विचारे ।
हृदय न पिघले पत्थर तुम्हारे, गोद ग़ैरों के लाल तम्हारे पले ॥
अंग बहुत कट गया तुम्हारा, मुसलमान ईसाइयों द्वारा ।
अब भी न तुमने पलक उघारा, तुमसे ही लेकर के फूलेफले ॥
बिन अपराध प्रिय भाई तुम्हारे, विपता में तुमसे हुये न्यारे ।
हृदय लगाओ बनाओ प्यारे, कहे हरदत्त जबही ये नैयाचले ॥

भजन ११८

बिछुड़ों को गले लगाओ, नहिं पीछे पछताओगे ।
खाना खा पुत्र हुआ ईसाई, माता की छाती भरआई ।
रोटी खिलाती अलग बिठाई, क्यों न इलाज कराओ ॥
क्या पापी कहलाओगे ॥ नहिं० १ ॥
ख़र्च करो नहिं आमदनी हो, एक रोज़ बैठो निधनी हो ।
ग़लती तुम से यही घनी हो, शुद्धी सभा बनाओ ॥
धर्मज्ञ कहे जाओगे ॥ नहिं० २ ॥
कल तक थे जो तुम्हारे भाई, मुसलमान व यहां के ईसाई ।
आज आनकर जो मिल जाई, क्यों नहिं आर्य बनाओ ॥
कब तक सोये जाओगे ॥ नहिं० ३ ॥

भूले हुओं को राह बताओ, बिछुरे हैं जो उन्हें मिलाओ।
गिरे हुओं को शीघ्र उठाओ, पाठक मान बढ़ाओ॥
नहिं आगे दुख पाओगे॥ नहिं० ४॥

भजन ११९

एक भाई के लेने से हा! हा!! जाता है ईमान॥ टेक॥
सोचो ज़रा गौर कर भाई। खाओ हो बाज़ारी मिठाई॥
खांड दिसावर की डलवाई। हड्डी जिसकी जान॥ एक० १॥
सिगरट पीते है सुलगाई। पियो शफ़ाख़ानों की दवाई॥
जिसमें खरी शराब मिलाई। अक्कल है यहां हैरान॥ एक० २॥
रस गुड़ बूरा बताशा खाते। खील मखी पैरों की मँगाते॥
बिछुरे भाई क्यों न मिलाते। क्या छाया अज्ञान॥ एक० ३॥
एक रुपैया पूरी मिठाई। इतने पर दो झूठी गवाही॥
पाठक तजा धर्म हा! भाई। कैसी पड़ गई बान॥ एक० ४॥

भजन १२०

आओ मिल बैठें सारे, हम एक मार्ग करें स्वीकार।
वेदों में ईश ने आज्ञा यही प्रचारी।
सब मिलो परस्पर प्रीति युक्त नर नारी॥
जो धर्म बुद्धि पर तुले करो स्वीकारी।
जिससे सुख पावैं दुख न होय संसारी॥
कहिं मुहम्मदी ईसाई। जैनी हिन्दू समुदाई॥
लाखों मत लिये चलाई। वेदों से भिन्न दुखदाई॥

कह आर्यसमाज पुकार, उदधि संसार, धर्म मँझधार, शीघ्र ये नाव लगालो पार, तुम सब हो हितू हमारे ॥ आ० १ ॥

इसमें नहिं मित्रो कुछ अपराध तुम्हारा।
महाभारत के पश्चात् बढ़ा अँधियारा॥
विषयी क्षत्रिय हुये पैलाई धर्म प्रचारा।
विप्रों ने भी स्वार्थान्ध हृदय में धारा॥
इन्द्रिय लोलुप हुये नामी। हुये वही प्रचारक स्वामी।
हुये बौद्ध जैन फिर नामी। मूसा ईसा इसलामी॥

है वेद सनातन धर्म, जानकर मर्म, करो शुभकर्म, मित्रो! छल बल देहु बिसार, तुम हो सब भांति पियारे॥ आ० २॥

कहा ऋषि दयानन्द ऊँचे स्वर से जागो।
सच बोलो धीरज धारो हिंसा त्यागो॥
चोरी जारी को छोड़ धर्म में लागो।
वेदों को तज क्यों मृगतृष्णा में भागो॥
है यही मार्ग सुखदाई। षट शास्त्र पढ़ो चित लाई।
चौदह विद्या बतलाई। सारी इन में समुझाई॥

क्या अग्निवाण हथियार, रेल और तार, कलों के कार। वेद में बरने कर विस्तार, विद्या विमान नभ तारे॥ आ० ३॥

वेदों का गौरव देश देश में छाया।
सब ने इन को विद्या की खानि ठहराया॥
इसी लिये हो उत्सव अरु गुरुकुल बनवाया।
सब पढ़ो सुनो वर वेद समय शुभ आया॥

जितने नर मनुज कहावें। ये सब ईश्वर को ध्यावें॥
सब मिलकर प्रीति बढ़ावें। अपने को आर्य कहलावें॥
तज कर मिथ्या अभिमान, एक ना जान, सकल सुख खान,
सभों से पाठक कहे पुकार, छोड़ो मत प्यारे २॥ आ० ४॥

ग़ज़ल १२१

कौन कहता है कि ज़ालिम को सज़ा मिलती नहीं।
नेक कामों को कहो किस को जज़ा मिलती नहीं॥ १॥
ज़ुल्म करते हैं जो मसकीनों पै पाकर कुछ अरूज।
चन्दही दिन में वहां फिर वह हवा मिलती नहीं॥ २॥
ज़र पै हो मग़रूर गिन्ते हैं ज़माने को जो हेच।
एक दिन ऐसों को सूखी भी ग़िज़ा मिलती नहीं॥ ३॥
देख तकलीफ़ों में औरों का हँसा करते हैं जो।
पड़के सड़ते हैं उन्हें ढूँढे क़ज़ा मिलती नहीं॥ ४॥
सुख के पाने के लिये हो दास तू सब से हक़ीर।
इस से बढ़ के, और तुझे कोई दवा मिलती नहीं॥ ५॥

लावनी १२२

कहो क्या तुमने फल पाया, दीन पशु नाहक कटवाया।
दो०—आठ नरन पापी करत, यक नर मांसहि खाय।
धर्म शास्त्र पढ़ देखिये, मनू रहे बतलाय॥
पाप जग भर में फैलाया॥ दीन पशु० १॥

दो०-जिह्वा सों पानी पियत, जीव ! मांस जे खात।
होत नुकीले दंत नख, रैनहुं उन्हहिं लखात॥
प्राकृतिक नियम यही पाया॥ दीन पशु० २॥

दो०-मांसाहारी पशुन अस, नहिं शरीर तुव भ्रात।
बानर देह समानही, बन्यो तुम्हारो गात॥
मांस बानर ने कब खाया ?॥ दीन पशु० ३॥

दो०-सुख पहुंचावत नित तुम्हें, बकरी भेड़रु गाय।
ऐसे उपयोगी पशुन, को तुम डारत खाय॥
पेट से मरघट शर्माया॥ दीन पशु० ४॥

दो०-दूध घीव की जड़हि पर, यदि करिहौ तुम घात।
खाय कौनसी वस्तु को, स्थिर रखिहौ गात॥
मित्र ने ऐसा समझाया॥ दीन पशु० ५॥

लावनी १२३

वेदों में बलिदान बता झूठा इलज़ाम लगाते हैं।
ऋषियों के धर ज़िम्म पाप वह खास मज़े उड़ाते हैं॥
अपना सा नहीं समझो और को ज़रा तरस नहीं खाते हैं।
दुष्ट राक्षस जान उन्हें जो मांस बिराना खाते हैं॥
अपने सुई का ज़ख़्म होय तो बार २ चिल्लाते हैं।
पशु पर ले हथियार अधर्मी गला काटने जाते हैं॥
लाश तड़पती है उसकी वह उलटी खुशी मनाते हैं।
कहे मुरारीलाल अन्त में जाय नरक दुख पाते हैं॥

जो है सब जगकी माता, कैसे बच्चोंको खावे ॥ टेक ॥
जिसको दुर्गा कहैं भवानी, देवी चामुण्डा कर मानी ।
नहीं उसे कुछ आये गिलानी, ज़रा नहीं शर्मावे ॥
डाइन को तरस नहीं आता ॥ जो० ॥ १ ॥
मांगे भेंट बकरा और भैंसा, यह अपराध किया अब कैसा ।
माता को नहीं चाहिये ऐसा, गला जो वह कटवावे ॥
वह खड़ा २ डकराता ॥ जो० ॥ २ ॥
वाममार्ग का है यह झंडा, मारें क्षत्रिय खावें सण्डा ।
पुजा मूर्खों का है डंडा, क्यों न धर्म मिट जावे ॥
औरों का मांस जो खाता ॥ जो० ॥ ३ ॥
हिंसा पाप लिखा अति भारी, इससे बचो सभी नरनारी ।
मनुष्य वही जो कहे मुरारी, मन में दया जो लावे ॥
प्रानी को नहीं सताता ॥ जो० ॥ ४ ॥

भजन १२४

देखो कर ध्यान मांस के खानेवालो ॥ टेक ॥
हा ! मनुष्य कहलाते हो, फिर भी तो मांस खाते हो ।
न बस में हुई जुबान ॥ मां० ॥
गर तुम्हें मांस खाना था, पशु पक्षी बन जाना था ।
बने थे क्यो इन्सान ॥ मां० ॥
अनमोल देह नर पाई, तज दया बने हैं क़साई ।
मांस मदिरा लगे खाने ॥ मां० ॥

हा ! ज़रा रहिम नहिं आया, दीनों को मार के खाया।
पेट किया क़बरस्तान ॥ मां० ॥
जब कांटा लगे तुम्हारे, भरते हो तब सिसकारे।
कहो हा ! निकली जान ॥ मां० ॥
दीनों पर छुरी चलावे, वहां ठकुराई जतलावे।
शेर लख हों हैरान ॥ मां० ॥
कोइ अण्डे तक खा जावें, वह महा नीच कहलावें।
मूत्र मल लग गये खान ॥ मां० ॥
जो मनुज मांस खाते हैं, वह घातक कहलाते हैं।
मनू ने किया बयान ॥ मां० ॥

अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी ।
संस्कर्त्ता चोपहर्त्ता च खादकश्चेति घातकाः ॥मनु०॥

चौपाई

लिखे मनु ने आठ क़साई * मनुस्मृती में देखो भाई ॥
प्रथम सलाह का देनेहारा * दूसर वह जिसने पशुमारा ॥
तीजा अंग अलग कर देवे * चौथा वह है मोल जो लेवे ॥
पंचम मांस बचने हारा * छठा मांस बनावन हारा ॥
सप्तम मांस परोस खिलावे * अष्टम वहही दुष्टजो खावे ॥
बासुदेव कहे समझो भाई * क्यों राक्षस की पदवीपाई ॥
कहे बासुदेव सुनो प्यारे, गर बने रहे हत्यारे, मिलेगा नर्क महान ॥ मां० ॥

भजन १२५

अहिंसा परमो धर्मो अहिंसा परमं तपः ।
अहिंसा परमं ज्ञानमहिंसा परमं गतिः ॥

टेक-दीनों पै दया बिसराय के, क्यों यारो ! ग़ज़ब करते हो ।

खग, मृग, मीन, विहंग विचारे, हैं उस परमेश्वर के प्यारे ।
उन्हें मारि बनो क्यों हत्यारे, मांस पराया खाय के ॥
अपना तोंदा भरते हो ॥ क्यों० १ ॥

दूध दही घृत तुम्हें खिलावें, आप जाय वन में चरि आवें ।
मरे तो तुम्हें चाम दे जावें, उन पर छुरी चलाय के ॥
नहीं मालिक से डरते हो ॥ क्यों० २ ॥

थे पुरखा धर्मज्ञ तुम्हारे, धर्म अहिंसा पालन हारे ॥
तिन के तुम उपजे हत्यारे, पेट का क़बर बनाय के ॥
पशु मारि मारि भरते हो ॥ क्यों० ३ ॥

दया मनुष्य का परम धर्म है, उसे त्यागना दुष्ट कर्म है ।
ज़रा न तुम को इस की शर्म है, वृथा मनुष्य कहाय के ॥
राक्षस का रूप धरते हो ॥ क्यों० ४ ॥

अपने पुत्र की कुशल मनाओ, पूत पराये नित मरवाओ ।
कुछ तो खौफ़ मालिक का खाओ, किस धोके में आया के ॥
पशुओं के प्राण हरते हो ॥ क्यों० ५ ॥

जगदम्बा जिन को बतलाते, उनका पूत उस पर कटवाते।
खुश होते निज कुशल मनाते, ऐसे निपट बौराय के॥
फिर रो रो कर मरते हो॥ क्यों० ६॥

यह जग है ईश्वर का प्यारा, बेकसूर मत किसी को मारो।
शुभचिन्तक बलदेव तुम्हारा, उस को मित्र भुलाय के॥
बड़ी विपति बीच पड़ते हो॥ क्यों० ७॥

भजन १२६

दोहा–तुम्हरे जिह्वा स्वाद से, जात पशुन के प्रान।
कैसा होत अन्याय यह, समझो रूप्य सुजान॥

टेक–दीन पशुओं को यार, कब तक मरवाओगे॥

ये यौवन और जवानी, है दो दिन की महिमानी।
आओगे यहां से पधार, तब क्या इठलाओगे॥ दी०॥
दुनियां ये चंदरोज़ा है, करो ज़ुल्म सितम जो चाहे।
किया सन्तों ने विचार, करोगे सोई पाओगे॥ दी०॥
बहु न्याय की बातें बनाते, औरों पर छुरी चलाते।
बने फिरते हैं सरदार, क़ब्रों में घुस जाओगे॥ दी०॥
तजके घृत दूध मलाई, रहे हाड़ और मांस चबाई।
बुद्धि पर पड़े अँगार, यम की मार खाओगे॥ दी०॥
तुम मांस और का खाते, अरु अपना मांस बढ़ाते।
बने फिरते हुंश्यार, पीछे पछताओगे॥ दी०॥

बलदेव कहे सुनो भाई, कुछ करलो धर्म कमाई।
ज़िन्दगी है दिन चार, होश में कब आओगे ॥ टी० ॥

ग़ज़ल १२७

ख़ाना ख़राब कर दिया बिल्कुल शराब ने।
जो कुछ कि न देखा था दिखाया शराब ने ॥
इज्ज़त के बदले ज़िल्लतें इसके सबब मिलीं।
मुफ़लिस बने मरीज़ बनाया शराब ने ॥
बुलबुल की तरह बाग़ में लेते थे बूएगुल।
सरडास नालियों में गिराया शराब ने ॥
हम पीनेवाले शर्बते सन्दल थे दोस्तो!।
कुत्तों का मूत हमको पिलाया शराब ने ॥
मैदान जंग में थे कभी हम भी शह सवार।
कीचड़ में नालियों की गिराया शराब ने ॥

ख्याल १२८

त्यागन करो सकल नर नारी दुखदाई दुखदाई है।
भारत को ग़ारत कर डाला यह मदिरा हरजाई है ॥

चौक १

सतयुग में पीना शराब था शंखासुर अति बलकारी।
मारागया अधम अभिमानी भई बहुत उसकी ख्वारी ॥

हरनाकुश पीकर शराब फिर लगा जुल्म करने भारी ।
उसको भी यमपुर दिखलाया ऐसी शराब ये हत्यारी ॥

शेर ।

सुन इसी मदिरा ने हरनाकुश के तईं ग़ारत किया ।
मार त्रिपुरासुर को डाला रावना का जी लिया ॥
कंस को विध्वंस कर यदुकुल का जा छेदा हिया ।
बन गया सुर से असुर एक बूंद जिसने मद पिया ॥
मूल से कुल खोया लाखोंका घर घर डाइन छाई है । भा०॥

चौक २

जो कहते कालीने पिया मद्य बात न उनकी तुम मानों ।
भैरों को जो कहें शराबी उन को भी झूठा जानो ॥
ब्रह्मा ने पी विष्णु ने पी जो कहें चक्र उन पर तानो ।
धूलिमें उनको मिलादो मलकर सकल देवता बलवानो ॥

शेर ।

जो कहें शंकरने पी शराब बस वर्ण संकर हैं वही ।
पापियों के हैं गुरू मूढ़ों के अफसर हैं वही ॥
शत्रु सार जगत के और खल निशाचर हैं वही ।
धर्म के वह हैं विरोधी ईश मन्दिर है वही ॥
धिक २ उनके मारग को जिन ऐसी कथा सुनाई है । भा० ॥

चौक ३

वर्त्तमान का हाल सुनो इस शराब ने बेहाल किया।
खराब खस्ता कर लाखों को राजा से कंगाल किया॥
इस गंद पानी ने बिल्कुल नष्ट धर्म और माल किया।
मुर्दा कर डाला शराबने प्रजा को वह पायमाल किया॥

शेर।

अब सुनो उनकी हक़ीक़त जो फिरैं पीकर शराब।
गिरपड़े नाली में कुत्ते कर रहे मुँह में पेशाब॥
गालियां बकने लगे फिर आ पुलिस पहुँची शिताब।
ले गये मुर्दे को जैसे बहुत की मिट्टी खराब॥
लड़के ताली लगे बजाने देखन खिलक़त धाई है। भा०॥

चौक ४

जब पहुंचे थाने में शराबी लगे बोलने जैसे भूत।
खड़ेहुए गिरपड़े जमीपर निकल गया धोती में मूत॥
कुंडी करन लगे सिपाही लगे मारने सिर पर जूत।
घसीटन इसक़दर लगे जिस तरह घसीटें यमके दूत॥

शेर।

होगये फिर शिथिल खूबी लात जूते खाय के।
पड़े गये इस तौर ज्यों मुर्दा पड़े मुँह बाय के॥

कर दिया चालान फिर पहुँचे कचहरी आयके।
देके जुर्माना छुटे हाकिम के आगे आय के॥
इसपर भी नहिं शराब छोड़ी फिरबोतल मँगवाई है। भा०॥

चौक ५

और बढ़ इस युग में धार्मी अपना मत फैलाया है।
मांस मांस मदिरा शराब पीने में स्वर्ग बताया है॥
ऐसा इन कपटियोंने मिलकर कपटका जाल बिछाया है।
चारों वरण का धर्म भ्रष्टकर सब को नष्ट बताया है॥

शेर।

वमन अपने आप ये खाते नशे के बीच में।
शकल शूकर के ये बन जाते नशे के बीच में॥
बेहया बनकर न शर्माते नशे के बीच में।
मां बहिन को अंग दिखलाते नशे के बीच में॥
इस शराब ने कर खराब लाखों की मत बौराई है। भा० ॥

चौक ६

औगुन इस मदिरा में भारी पीते ही सीना तड़के।
और जिस विधि से वह सब जानत हैं बूढ़े लड़के॥
कुत्ते बिल्ली मक्खी मच्छड़ इस शराब में पड़ २ के।
अर्क इन्हीं सब का खिंचता है मिल जाते हैं सड़ २ के॥

शेर।

पसी गन्दी चीज़ पीते छोड़ के कुल-कान को।
शान को शौकत को खोते आबरू ईमान को॥
ज़र खरच करके फँसाते हैं बला में जान को।
पीगये बिस्तर और गहिना बेंच के मकान को॥
इस मदिरा ने मंद करी मति सम्पति सकल नशाई है। भा०॥

चौक ७

शराब पी जब चले शराबी नशे में आँखें करके लाल।
जाय पहुँचे फिर घर पातुर के गिरते पड़ते डगमग चाल॥
नशे में देखा जब पातुर ने लिया छीन पल्ले का माल।
फिर भँडुओं ने पकड़ के चोटी मार के जूते दिया निकाल॥

शेर।

मत पियो मय मत पियो मय है बुजुर्गों का क़लाम।
वेद में इंजील में लिक्खा कुरां में भी हराम॥
जो पिये हर रोज मदिरा जायगा खींचा वह चाम।
नर्क की अग्नी में डाले जांयगे चुन चुन तमाम॥
पियो दूध घी छोड़ो मदिरा नहिं जीवन कठिनाई है। भा०॥

चौक ८

विप्रों ने बिलकुल बोरी वह लगे बारुणी पान करन।
क्षत्रिय मुँह में लगा के इसको राज पाट खो बैठे धन॥

बन आई नहिं कुछ बनियों से उन्हों ने भी करली धारन।
त्यागन की शूद्रों ने मदिरा भक्त बने ले कर सुमिरन॥

शेर।

जिस तरह शूद्रों ने छोड़ी तुम भी लाना छोड़ दो।
रोज़ जांत हो तो मयखाने का जाना छोड़ दो॥
मिस्टर बिलाकट यो कहैं मदिरा मँगाना छोड़ दो।
देश हित चहते हो तो पीना पिलाना छोड़ दो॥
शराब पी होटल में खाते उलटी समझ बनाई है। भा०॥

भजन १२६

दोहा-ईश्वर ने बुद्धी करी, सब के लिये प्रदान।
पर मूरख जन खो रहे, कर २ मदिरा पान॥

टेक-मत पियो शराब पागल कर देती है।

कहीं पीटें कहीं पिटवावें, गाली दे गाली खावें।
इज़्ज़त होय ख़राब॥ पा० १॥
जब हँसे हँसे ही जाते हैं, पड़े ज़ोर से चिल्लाते हैं।
नहीं सुन सके जवाब॥ पा० २॥
कहीं बकें बके ही जाते हैं, या बेसुध हो सो जाते हैं।
कुत्ते चाहे करें पिशाब॥ पा० ३॥
मांगे कलाल धन आके, तुम चोखी पियो थे जाके।
अबतो मम करो हिसाब॥ पा० ४॥

कहीं आंख नशे में खोलें, रागडयों के चकले में डोलें।
बने फिर रहे नवाब ॥ पा० ५ ॥
बेहोश हुये फिरते हैं, कहीं नाली में गिरते हैं।
जहां उठ हे हुवाब॥ पा० ६ ॥
जब शराब पी चुकते हे, फिर कभी नहीं रुकते हैं।
जरूरी खांय कबाब ॥ पा० ७ ॥
जो धन शराब में खोयो, उसे धर्म क्षेत्र में बोओ।
जिस से होय सवाब ॥ पा० ८ ॥
कहे बासुदेव सुनो भाई, करूं कहां तक इसकी बुराई।
समझ लो तुम्हीं जनाब ॥ पा० ९ ॥

भजन १३०

जो चाहते हो खुशी मे रहना, नशा न पीना नशा न पीना।
बुरी बला ह यह जाम मीना, नशा न पीना नशा न पीना॥
शराब अफ़ीम चरस व गांजा, हर एक से बढ़के हे एक आला।
पुकार के कह रहा है बन्दा, नशा न पीना नशा न पीना॥
शराबियों की जो देखी हालत, किसी के कपड़े हे कैसे लतपत।
कोई कहे है बचश्म इबरत, नशा न पीना नशा न पीना॥
कोई तो नाली ही में पड़ा है, किसी का मुँह कुत्ता चाट रहा है।
कोई यह चिल्ला के कह रहा है, नशा न पीना नशा न पीना॥
अगर तुम्हारी है चश्म बीना, न चंडू पीना न भंग पीना।
डुबोयेगा यह तेरा सफ़ीना, नशा न पीना नशा न पीना॥

भजन १३१

लावनी–ज़रा गौर कर देखो भाई हुक्के के पीने वालो।
सबका धर्म छुड़ाया इसने, इसे यहां से अब टालो॥
दोनों काल की सन्ध्या हवन गायत्री को क्यों छोड़ दिया।
जो थी खास ईश्वर की आज्ञा उसका तुमने तोड़ दिया॥
जब से हुक्का चला जगत में शुद्धी से मुँह मोड़ दिया।
वासुदेव कहे क्यों दुख भोगो हुक्का क्यों नहिं तोड़ दिया॥

दोहा–हुक्के ने संसार में, करी बहुत सी हान।
शुद्धी जग से उठगई, लगे जूठ सब खान॥

टेक–अबतो हुक्के को छोड़ो क्यों इसे पिये जाते हो।

जबसे बीज हुक्के का बोया, अग्निहोत्र सन्ध्या को खोया।
धर्म कर्म सब योंही डुबोया, इस से नाता तोड़ दो॥
क्यों विष का फल खाते हो॥ क्यों० ॥१॥

जब हुक्के में करते पानी, दुर्गन्धि से होत गिलानी।
बुद्धी को पहुचावे हानी, सहित चिलम के फोड़दो॥
क्यों नाहक़ दुख पाते हो॥ क्यों० ॥२॥

जूठन मनु ने बुरी बताई, मत खाओ भाई की भाई।
इस हुक्के ने जूठ खिलाई, अब इस से मुख मोड़दो॥
तुम क्यों नहीं शर्माते हो॥ क्यों० ॥३॥

जो हुक्के से चित्त लगावे, योंही अपना समय गँवावे।
वासुदेव सब को समझावे, हवन मे नाता जोड़ दो॥
क्यों आलस मे आते हो॥ क्यों०॥४॥

भजन १३२

टेक–हुक्के से ध्यान लगाया, तज कर्म धर्म अब सारा।
प्रातःकाल उठ हुक्क नहलावें, सन्ध्या करें न होम रचावें।
भरें चिलम दम फेर लगावें, समझें सब से प्यारा॥
क्या है यह उलटी माया॥ हुक्के०॥१॥
हुक्क ध्यान और हुक्क ज्ञान है, हुक्क नियम और हुक्क दान है।
हुक्क परमपद लिया जान है, हुक्क मोक्ष का द्वारा॥
यह क्या अज्ञान समाया॥ हुक्के०॥२॥
हुक्क बग़ल और हुक्क हाथ में, हुक्क रहे हर जगह साथ में।
हुक्क सभा और हुक्क जान मे, करे यही निस्तारा॥
वेदों का हुक्म भुलाया॥ हुक्के०॥३॥
पियें हुक्क औरों को पिलावें, वह जाती में ऊँच कहावें।
शर्मा कहे नर्क को जावें, जिसने यह मन धारा॥
गौरव का धुआं उड़ाया॥ हुक्के०॥४॥

भजन १३३

टेक–ईश्वर की आज्ञा पालो, करो अग्निहोत्र सब भाई।

द्रव्य सुगन्धित पुष्टीकारण, औषध लीजे रोगनिवारक।
मन्त्र पढ़ो विज्ञान विधारक, मित्रो! आहुति डालो॥
वायू की करो सफाई॥ करो० १॥

सब से भारी यज्ञ दान है, जिस का वेदों में विधान है।
फल उसका मित्रो! महान है, कभी न इसको टालो॥
यह कर्म बड़ा सुखदाई॥ करो० २॥

यज्ञ शुद्ध वायू फैलावै, हलकी होकर ऊपर जावै।
वर्षा के सँग नीचे आवै, तब पूरे हरषालो॥
होवेगा अन्न अधिकाई॥ करो० ३॥

यही देवपूजा है भारी, जीवमात्र की जो हितकारी।
पत्थर पूजन छोड़ मुरारी, गौरवता दरशालो॥
बनो वेदधर्म अनुयाई॥ करो० ४॥

ग़ज़ल १३४

मुफ़स्सिल हाल पोपों का हमें सब को सुनाना है।
सुनो इस वास्ते इनका हुआ दुश्मन ज़माना है॥
दग़ा औ मक्र से धोखे से बातो से फ़रेबो से।
बता के राह मुक्ती की उदर अपना बढ़ाना है॥
इन्हीं के कहने सुनने से अक़्ल के अंधे भारत ने।
बिमारी खुजली और चेचक को माता करके माना है॥
कहीं चढ़यात हैं लड्डू कहीं पेड़े कहीं बर्फ़ी।
मुक़द्दम हर तरह रक्खा इन्होंने अपना खाना है॥

नहीं मालूम क्या पत्थर पड़े हैं अक़्ल पर इनकी।
रखा शिव नाम पत्थर का भला इसका ठिकाना है॥
है शिवजी नाम ईश्वर का नहीं मालूम पोपों को।
उसी को इन्द्र और अग्नी भी वेदों ने बखाना है॥
पढ़ाओ नारियों को तुम कहें इस बात को उत्मा।
अगर मंजूर भारत से अविद्या का मिटाना है॥
भगाओ आर्य भाई तुम फ़रेब और मक्र भारत से।
बिठाओ अपना सिक्का तुम जहां पापों का थाना है॥
तुम्हें उपदेश करना हर घड़ी मुश्त क़ लाज़िम है।
जो भारतवासियों को पोपलीला से बचाना है।

भजन १३५

टेक–पूज त्योहार, मना देव मन माने।
तिथि वार न छोड़ी खाली। कोई मास न बैठ खाली।
कहें किस भांति विचार॥ म० १॥
घी का कुछ छींटा दीना। कहीं दीपक जलवा लीना।
हवन का नजा प्रचार॥ म० २॥
अंगारी जलती पाओ। कहीं पेले सदा तुम आओ।
खुशी की नहीं शुमार॥ म० ३॥
तेंतिस हैं देवता भाई। जिन्हें वेद रहा बतलाई।
जो हैं सब सुख के द्वार॥ म० ४॥
तुम अजर अमर अविनाशी। ईश्वर अज विश्वप्रकाशी।
करो प्रभु शीघ्र सुधार॥ म० ५॥

जब दयानन्द आप आये । भाइयो ! सोतलभा जगाये ।
कहाँ पाठक यह सार ॥ म० ६ ॥

भजन १३६

टेक-ईश्वर से चित्त हटाय के, किस बुरे जाल में डाला ॥

कभी ऊत भूत पुजवाये कि ललिता माई ।
भीग का कराई हम से कभी कढ़ाई ॥
कभी धोबा दे जाहिर की रात जगवाई ।
कभी न सिर पांडे की दहिशत दिखलाई ॥

कभी कलकत्ते की काली, है जिन की जांति निराली ।
चढ़े मांस पिये मद प्याली, चौरासी घण्टे वाली ॥

कभी मठ समाधि अरु पीर, बनाकर बार, मिल्ला तदबीर हमें डरपाय के, पुजवाया सेहू लाला ॥ किस० १ ॥

कभी चण्डी देवी और कभी चामुण्डा ।
कभी बाबाजी का गले में डाला गण्डा ॥
कभी चौंसठ जोगिन और भुइयां का झण्डा ।
पुजवा २ के माल उड़ा गये सण्डा ॥

छप्पन कलुआ बतलाये, और बावन बीर गिनाये ।
बन्दर हनुमान पुजाये, वहां मोहनभोग उड़ाये ॥

कभी सत्ती और मशान, कभी स्थान, जान अज्ञान, समय को पाय के, पुजवाई हम से ज्वाला ॥ किस० २ ॥

कभी क्षेत्रपाल दिक्पाल लँगुर अगवानी ।
कभी सांप बांबी पुजवाई सुनाय कहानी ॥
कभी लोना चमारी और चुड़ैल मशानी ।
कभी बूढ़ा बाबू पर्वत पेड़ और पानी ॥
तालाब कभी तलैया, कभी भंगी संग जखैया ।
कभी चौराहे की मैया, चढ़ सूअर यही रवैया ॥
कभी ख्वाजा और मदार, भैरों सरदार, कहूँ हरबार, हमें बहकाय के, पुजवाया कुत्ता काला ॥ किस० ३ ॥

कभी हम से शंकिनी और डंकिनी घूरा ।
देवी का बाहन गधा पुजाया भूरा ॥
कभी नगरमन धोबी और डकसन सूरा ।
फिर भी पापों का पेट भरा नहीं पूरा ॥
भज्जू चमार बाराही, मित्रो ! हम से पुजवाई ।
भारत की सभी बड़ाई, दी खो और हँसी कराई ॥
यों कहे मुरारीलाल, करके अब ख्याल, छीन धनमाल, ऐसी भंग पिलाय के, किया देश सभी मतवाला ॥ किस० ४ ॥

भजन १३७

टेक—गणपति का रूप बनाय के, पीली मिट्टी पुजवाई ।
लम्बा पेट सूंड़ बतलावें, सुन्दर रूप भूतगण धावें ।
सदा कैथ और जामुन खावें, ऐसे वचन सुनाय के ।
ठग ठग के दुनियां खाई ॥ पीली० १ ॥

है गणेश अतुलित बलधारी, चूहे की वह करे सवारी।
फिर भी समझे नहीं अनारी, बैठे शीश झुकाय के।
कैसी मूरखता छाई ॥ पीली० २ ॥
मिट्टी के कहां पेट सूड़ है, कहां दांत और कहां मूड़ है।
जो तुम को इस में भी कूढ़ है, देखो डला उठाय के।
यहां खर्च होय ना पाई ॥ पीली० ३ ॥
मिट्टी पर हांटे लगवावें, चावल और मीठा चढ़वावें।
कहे पुराणी, गाल बजावें, अन्धे सभी बनाय के।
क्या अच्छी गप्प उड़ाई ॥ पीली० ४ ॥

भजन १३८

टेक–मत पढ़ो पुराण झूठी गप्प भरी है।
जब से पुराण हुए जारी, वेदों की रीति बिसारी।
जो थे विद्या की खानि ॥ झू० १ ॥
भागवत को हाथ में उठाओ, एक बार उसे पढ़जाओ।
दशम में लिखा बयान ॥ झू० २ ॥
श्रीकृष्ण को चोर बताया, स्त्रियों का चीर चुराया।
कदम पर चढ़ गये आन ॥ झू० ३ ॥
शिवपुराण पढ़ो तुम भाई, दिया बेहद लिंग बढ़ाई।
नहीं जिसका परमान ॥ झू० ४ ॥
सुनो गणेश की उत्पत्ती, तब शिव पर पड़ी बिपत्ती।
युद्ध यहां हुआ महान ॥ झू० ५ ॥

जब शिव की शादी कराई, वहां गणपति दिये पुजाई।
ये है कैसा अज्ञान ॥ झू० ६ ॥
ब्रह्मा को दोष लगाया, पुत्री सँग विषय कराया।
जो थे पूर्ण विद्वान ॥ झू० ७ ॥
विष्णू वृन्दा घर आये, कर विषय बहुत शर्माये।
कहैं जिनको भगवान ॥ झू० ८ ॥
मैं कहां तक तुम्हें बताऊं, पुराणों की पोल दिखाऊं।
मुफ़्त में हूं हैरान ॥ झू० ६ ॥
आये इन्द्र अहल्या द्वारे, मुर्गा बन चन्द्र पुकारे।
हुए छलिया तज ज्ञान ॥ झू० १० ॥
इसी भांति पुराण अठारह, रचे मिथ्या ग्रन्थ हज़ारा।
जिन्हें बैठे सच मान ॥ झू० ११ ॥
कहे बासुदेव सुनो भाई, वेदों को पढ़ो चित लाई।
तभी होगा कल्यान ॥ झू० १२ ॥

भजन १३६

टेक—पुराणों की गप्पें सुनाऊं, तुम सुनियो भारतवासी !।
पहिले तो तुम्हें भागवत का हाल सुनाऊँ।
जो दोष लगाया कृष्ण को वह बतलाऊं॥
एक रोज़ गोपियां नहाती थीं जल के अन्दर।
वह चीर उठा के चढ़े कदम के ऊपर॥
वह नंगी जल में न्हावें, बाहर आती शर्मावें।
कर जोड़ के यों चिल्लावें, हम कपड़े अपने पावें॥ (शेष०)

तब बोले कृष्ण महाराज, करो यह काज, तजो सब लाज।
तुम बाहिर नंगी आओ। यह कैसी उड़ाई हांसी ॥ तुम० १ ॥
एक रोज़ गेंद खेले थे कृष्ण सुखदाई।
एक सखी ने उनकी झटपट गेंद उठाई ॥
और लेके गेंद अँगिया में लीनी छुपाई।
दो कुचा पकड़ के बोले कृष्ण मुसकाई ॥
तुमने इकली गेंद चुराई, मैंने बदले में दो पाई।
कैसी दिल्लगी उड़ाई, तुम सुनियो कान दे भाई ॥
हो जिनके ऐसे कार, क्यों न हों ख़्वार, नहीं वह पार।
समझो उन्हें व्यभिचारी। उन्हें देनी चाहिये फांसी ॥ तुम० २ ॥
पोपों ने स्वांग बनाकर लीला दिखाई।
और ग्राम २ में फिर कर करी कमाई ॥
लीला में लड़कों ने आंख नाक मटकाई।
और बस्ती के लोगों से दिन भर करी कमाई ॥
उन्हें कैसे दोष लगाये, नहीं दिल में ज़रा शर्माये।
उन्हें राधा सहित नचाये, महामण्डल पाप कराये ॥
मथुरा में कराय रास, पोपों ने खास, किये सत्यानास।
महा दुराचार फैलाये, और कहलाये ब्रजवासी ॥ तुम० ३ ॥
बटमार चोर कुकर्मी उन्हें बतलाया।
ग्वालिनी पकड़ने का इलज़ाम लगाया ॥
पी लोटा भंग का नशा जब उनको आया।
झट बना गपोड़ा व्यास रचा बतलाया ॥

न थी कृष्ण में कोई बुराई, पढ़ देखो गीता भाई।
पोपजी ने यह कथा बनाई, उसे व्यास रची बतलाई॥
सुनो शंकरलाल की अर्ज़ी, छोड़ो खुदगर्ज़ी, कथा यह फ़र्ज़ी।
अब वेदों का सुप्रकाश है, किया दयानन्द आचार्य॥ तुम० ४॥

भजन १४०

दोहा—उत्तम कर्म बिसार के, छोड़ा दिया दान।
वृद्धों की शादी करें, हुये मूर्ख अज्ञान॥

टेक-कैसा छाया अज्ञान है, वृद्धों के विवाह कराये।
तुलसी को वधू बनाया, शालिग्राम पती ठहराया।
जड़ से जड़ का मेल बनाया, कैसा हुआ नादान है॥
क्या झूठे खेल खिलाये॥ वृद्धों० १॥
किसके पुत्र यह शालिग्राम है, कौन पिता माता क्या नाम है।
किस की तुलसी कौन धाम है, कहां इनका सुस्थान है॥
कोई सम्मुख आ बतलाये॥ वृद्धों० २॥
तुलसी को जगमाता बतावें, शालिग्राम पिता कहलावें।
मात पिता का ब्याह करावें, यह कैसी सन्मान है॥
जो बड़ों के फेरे डलायें॥ वृद्धों० ३॥
तुलसी माता पुत्री बनाई, शालिग्राम पुत्र हुए भाई।
यह कैसी अनरीति चलाई, ले लिया कन्यादान है॥
यह ज़रा नहीं शर्माये॥ वृद्धों० ४॥

तुलसी वृन्दा का ब्याह कराया, मूर्खों ने यह जाल फैलाया ।
ढोंग बनाकर लूटा खाया, करी धर्म की हानि है ॥
नर नारि सभी बहँकाये ॥ वृत्तों० ५॥

जिस धनको तुम यहां लुटाओ भंडे मुसंडों को खिलवाओ ।
उस से विद्यालय बनवाओ, जो सब से उत्तम दान है ॥
कर वासुदेव सुख पाये ॥ वृक्षों० ६॥

भजन १४१

साधो ! जग को को ? समुझावे ।

तज प्रत्यक्ष सतगुरु परमेश्वर, जड़ को पूजन जावे ॥१॥
जड़ पूजा के फल अदृष्ट हैं, कालान्तर मे पावे ।
दृष्ट अदृष्ट उभय फल दायक, सो पूजा नहिं भावे ॥२॥
ले पाषाण मूर्ति कर मे गढ़ि, बहु विधि रूप बनावे ।
विष्णु शंकर सूर्य गणपता, जो कछु मन में आवे ॥३॥
दधि घृत पय मधु ले पमाण मे, तामें खांड़ मिलावे ।
यहि विधि से करि पंचामृत नहि, मूरति पर ढरकावे ॥४॥
पुनि ले विमल वारि सुरसरि को, शुद्धस्नान करावे ।
धोय पोंछि चन्दन लगाय के, पट भूषण पहिरावे ॥५॥
करी प्रतिष्ठा वेदमन्त्र से, तामें प्राण बुलावे ।
जो वे मन्त्र सत्य करि मानें, निज पितु क्यों न जिवावे ॥६॥
भोग थार धरि ताके सन्मुख, घण्टा नाद बजावे ।
भोजन कौन ? करे बिन चेतन, उलटि आपही खावे ॥७॥

यहि बिधि करत करत जड़ पूजा, आपहु जड़ बनि जावे ।
कहैं कबीर ज्ञान सतगुरु का, कैसे हृदय समावे ॥८॥

भजन १४२

साधो ! मोहि कोई समुझावे ॥
जीव ब्रह्म दोउ एक कि न्यारे, याको भेद बतावे ॥१॥
एक कहे बहु शंका होवे, दो कहते बनि आवे ।
पृथक २ दोऊ गये माने, शंका शास्त्र घटावे ॥२॥
ब्रह्म अखण्ड अनादि निरन्तर, इमि श्रुति कहि गुहरावे ।
जीव सदा पावे गर्भाशय, सो किमि ब्रह्म कहावे ॥३॥
सर्व शक्तियुत वह अरु यह तो अल्प मे काम चलावे ।
वह सर्वज्ञ त्रिकाल को दर्शी, यह कछु लखि नहिं पावे ॥४॥
अस वितर्क सतगुरु बिन दूजा, को करि कृपा मिटावे ।
ब्रह्म स्वछन्द जीव माया वश, प्रकट कबीर दिखावे ॥५॥

भजन १४३

दोहा-टके सेर मुक्ती बिके, लो सब इसे खरीद ।
रजिस्टरी करवाय लो, देहैं पोप रसीद ॥

टेक-कुछ काम न जप तप ज्ञान से, लेलो सस्ती है मुक्ती ॥
जगन्नाथ जाने से मुक्ती, जूठा भात खाने से मुक्ती ।
अनन्त बँधवाने से मुक्ती, कहीं गङ्गा स्नान से ॥
क्या सहिल निकाली युक्ती ॥ लेलो० १॥

एकादशी रहने से मुक्ती, मरा २ कहने से मुक्ती।
पिण्डदान करने से मुक्ती, कभी चरणामृत पान से॥
कहते हैं कभी नहीं रुक्ती॥ लेलो० २॥
काशी में मरने से मुक्ती, चार धाम करने से मुक्ती।
ईश्वर के लड़ने से मुक्ती, जो है सिद्ध प्रमान से॥
उसकी नहीं करते भक्ती॥ लेलो० ३॥
रुद्राक्ष और तिलक छाप से, दशम भागवत के प्रताप से।
कभी होवे बं बं के जाप से, और पूजन पाषाण से॥
शर्मा सुन तबियत फुक्ती॥ लेलो० ४॥

भजन १४४

टेक–जग ठगने का व्यवहार है, जी चाहे जब अजमालो॥
मल मल कर स्नान कराओ, घिस २ चन्दन तिलक लगाओ।
चाहे जितने भोग लगाओ, करलो यतन हजार है॥
नहीं खाते उसे उठालो॥ जी चाहे० १॥
अजमाये को जो अजमाये, वह तो नामाकूल कहाये।
यह जड़ वस्तू पिये न खाये, वह पूरा मक्कार है॥
जो रोज कहे लो खालो॥ जी चाहे० २॥
क्यों इनकी करता भक्ती है, इनमें नहिं चेतन शक्ती है।
यह तो पत्थर की किश्ती है, हरगिज होय न पार है।
चाहे कितनी यतन बनालो॥ जी चाहे० ३॥
तेजसिंह चातुर है वोही, लिखा वेद में माने सो ही।

ईश्वर की नहीं प्रतिमा कोई, निराकार आधार है ॥
उस ही के तुम गुण गालो ॥ जी चाह० ४ ॥

भजन १४५

दोहा-पत्थर पूजे हरि मिलैं, तो मैं पूजूं पहार ।
इस से तो चक्की भली, पिसा खाय संसार ॥

टेक-करो चेतन ब्रह्म उपासना, मत करो जड़ों की सेवा ।

जड़ से जड़ हो जावे बुद्धी । ब्रह्मज्ञान की रहे न शुद्धी ।
प्रतिमा पूजे वेद विरुद्धी । जिन से कोई भी आशा ना ।
यों ही व्यर्थ मिठाई मेवा ॥ मत० १ ॥
सुनें न समझें हैं न चालें । जिन पर पुष्प और जल डालें ।
औरों के दुख कैसे टालें । अपनी ही मेटैं प्यास ना ॥
सुख कैसे दें दुख देवा ॥ मत० २ ॥
ऋषी मुनी सब यही सुनावें । पुराण भी कहीं नहीं बतावें ।
मूढ़ बुद्धि मन इन में लगावें । पर तुम को विश्वास ना ॥
खा पूरी खीर कलेवा ॥ मत० ३ ॥
पति की सेवा तज कर नारी । मन्दिर में जावें मति मारी ।
बुरी दृष्टि वहां लखैं पुजारी । परोपकार जहां बास ना ॥
है मुफ्त माल धन लेवा ॥ मत० ४ ॥
परमेश्वर है अपने मन में । फिरो ढूंढ़ने परदेशन में ।
भूले हुये फिरें मन बन में । प्रभु का खोज कयास ना ॥
कस्तूरी मृग सो सेवा ॥ मत० ५ ॥

भजन १४६

टेक—पूजन पाषाण कब तक नहीं छोड़ोगे।

प्रतिमा पूजा करवाई, ईश्वर भक्ती छुड़वाई।
बना दिया पशु समान ॥ कब० ॥

नाना पूजा चलीं जब से, जड़ बुद्धि होगई तब से।
रहा नहीं कुछ भी ज्ञान ॥ कब० ॥

क्यों वृथा द्रव्य खोते हो, कल्लर में बीज बोते हो।
मुफ्त में हो हैरान ॥ कब० ॥

कहीं जयपुर से मँगवाके, अरु नाक कान बनवाके।
छिपाते हैं अजान ॥ कब० ॥

दोहा—कारीगर सूरत गढ़ी, पैरों बीच दबाय।
जो कुछ सत होता वहां, जानो उस को खाय॥

फिर सभी वस्तु पहनाके, अरु मन्दिर में थपवाके।
कहा लो है भगवान ॥ कब० ॥

फिर बाजे दिये बजवाई, मन्त्रों की झड़ी लगाई।
कहा अब आगये प्रान ॥ कब० ॥

जब 'न तस्य प्रतिमा अस्ती' फिर है यह क्यों ज़बरदस्ती।
हुआ क्या है खफ़क़ान ॥ कब० ॥

सुनो भाइयों! कान लगाई, जिसने यह सृष्टि रचाई।
उसे लीजो पहचान ॥ कब० ॥

ठुमरी ध्वनि काफी १४७

पास खड़ा तेरे नज़र न आवे महबूब पियारावे।
घट २ व्यापक सबकी जाने रहै सबन से न्यारावे।
ढूँढ २ कोई खोज न पायो सब जग हारावे।
ध्यान धारणा योग समाधी नेम अचारावे।
जाके हेत करत सुर नर मुनि विविध प्रकारावे।
वेद वेदांग शास्त्र उपनिषदें बहुत विचारावे।
सभी अपार अगम्य अगोचर अलख पुकारावे।
छोड़िके जिन अज्ञान कल्पना कुमति निवारावे।
मिला कबीर तिन्हैं दिल अन्दर सिरजन हारावे॥

भजन १४८

दुनिया अजब दिवानी, मोरी कही एक नहिं मानी।
तजि प्रत्यक्ष सतगुरु परमेश्वर इत उत फिरत भुलानी॥
तीरथ मूरति पूजत डोले कंकर पत्थर पानी।
विषय वासना के फन्दे परि मोहजाल उरझानी॥
सुखको दुख, दुखको सुखमानै हित अनहित नहिंजानी।
औरन को मूरख ठहरावत आप बनत है सयानी॥
सांच कहों तो मारन धावै झूठे को पतियानी।
कहैं कबीर कहां लग बरनों अद्भुत खेल बखानी॥

गजल १४६

हमने नज़रों से बुतों को जो गिरा रक्खा है।
सर पै बुतखाने को पोपों ने उठा रक्खा है॥
बुतपरस्तों ने जो वेदो को छुपा रक्खा है।
जल्वये हक़ को तहे संग दबा रक्खा है॥
कह दो पोपों से कि अटका न करें आर्यों से।
वर्ना एक बात में सब भेद खुला रक्खा है॥
झांझ घड़ियाल से तुम किसको जगाते हो जी।
वाह क्या खूब खुदा तक को सुला रक्खा है॥
इस तरफ़ मजमये अग़ियार का है नाम समाज।
खेल तमाशों का वहां नाम सभा रक्खा है॥
खञ्जरे सिदक़ अगर म्यान से निकले बाहर।
सर बुतालत का अभी तन से जुदा रक्खा है॥
कावो दह कलेसा से हमें काम नहीं।
उस के शैदां है जहां जिस ने बना रक्खा है॥
सिदक़ इस फ़हिम के और अक़्लो खिरदके कुर्बान।
खुद तराशा है मगर नाम खुदा रक्खा है॥
वाह क्या कहना है शर्मा तेरी इन ग़ज़लों का।
तूने भी खूब ही दुश्मन को जला रक्खा है॥

भजन १५०

टेक—क्यों स्वारथ के वश होके, पोपजी किया धर्म का नाश।

बुड्ढों का लगन सुधा कर व्याह कराया।
उस अबला को बस तुमने ही रांड बिठाया॥
शास्त्रानुसार तुम ने अन्याय कमाया।
इस भारतीय बेड़े को खूब डुबाया॥
जो तुम नहीं फेरे फिराते, वह कन्या बेच नहीं खाते।
लाचार बैठे रह जाते, जा तुम उन्हें दण्ड दिलाते॥
करी तुमने देशका खवारी, तुम्हें धिक्कारी, हँसे नर नारी।
मिलादी बूढ़े से उसकी रास॥ क्यों० १॥

और मदरा मांस का तुमने प्रचार बढ़ाया।
श्लोक बना कर मनू वाक्य बतलाता॥
और मनुस्मृति में तुम ने उसे मिलाया।
और बांच २ कर तुम ने जग बहकाया॥
तुम्हें स्वारथ ने भरमाया, और देश का नाश कराया।
अपना ही मज़ा उड़ाया, ज़रा रहम न कन्या पै आया॥
तुमने स्वारथ के वश आय, गले कटवाय, नाश करवाय।
न आया तुम को ज़रा त्रास॥ क्यों० २॥

जो मांसाशियों का तुम भोजन न खाते।
हो विवश फेर वह मांस को न हलचाते॥
पर तुम तो श्राद्ध में खूब ही गप्फे उड़ाते।
खिलवा उनको और आप नहीं हो पाते॥
क्षत्रिय उनको बतलाया, और मांस मद्य खिलवाया।
कहीं बकरों को कटवाया, और देवी पर चढ़वाया॥

उन पर चलवा हथियार, करा फिन्नार, बने सर्दार।
जानो, जब लगे तुम्हारे फांस ॥ क्यों० ३ ॥

तुम धर्म के पक्के जभी यार कहलाओ।
अनुकूल स्मृति के तुम भी मांस जब खाओ॥
जब तुम नहीं खाओ मत उनको खिलवाओ।
जो वह न मानें मत न्योते उन्हें जिमाओ॥

तुम अब भी धर्म बचाओ, जग रहम देश पर खाओ।
प्रमान वेद बजा लाओ, रही रही को अबतो दबाओ॥

कहे शंकरलाल सुनो यार, बनो मत ख्वार, करो प्रचार।
हुआ है वेदों का सुप्रकाश ॥ क्यो० ४ ॥

लावनी १५१

अरी अविद्या पापिन तूने, भारत पर विपदा डारी।
कुमति फैला सब देश बिगाड़ा अबतो निकल जा हत्यारी॥
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र हा ! सब की तैं हर बुद्धि लई।
चलन लगे बहु कुचाल जग में धर्म कर्म की सुधि न रही॥
वेद शास्त्र हा सभी छुड़ाये रचदी रचना नई नई।
अरी कलंकिन लाज न आइ क्यों भारत पर कुपित भई॥
मात पिता निर्दयी हो गये बेचत हैं कन्या क्वांरी। अरी०॥
तेंतिस कोटि देवता पूजे निज देवन ना मन आने।
क़ब्र ताजिये जिन्न फ़रिश्ते लगे पूजने मन माने॥

कंकड़ पत्थर कछू न छोड़ा तनिक न मन में सकुचाने।
मन की दुविधा कहीं मिटी ना लगे कर्मकृत फल पाने।
पे बेदर्दिन ज़रा दया कर भारत पर संकट भारी। अरी० ॥
सन्ध्या हवन गायत्री छोड़ी जन्म गँवाया भटक भटक।
मूर्ति पूज के बने पुजारी दुनिया लूटी मटक मटक ॥
पापाण मूरती धोय २ जल लागे पीवन गटक गटक।
चेलन को दें लो चरणामृत पियो स्वर्ग नहीं रहे अटक ॥
क्या २ भाव दिखाये तूने देश विनाशिन कलहारी। अरी० ॥
देखो भाइयो ! ज़रा तो समझो इन पोपों के चारीतर।
आप लपालप माल उड़ावें ईश्वर बना रक्खें पत्थर ॥
आज मदनमोहन जी भूखे ओढ़न को न रहे बिस्तर।
ले गया कोई चुराय दुष्टजन ठाकुर जी के सब बस्तर ॥
भूषण लेते चोर आज हैं भूखे श्रीगिरिवरधारी। अरी० ॥
घर २ कर के विरोध कपटिन सुख की नींद अब तो सोई।
अनेक मत कर भरतखण्ड में विष की बेल दारुण बोई ॥
डाल फूट सब देश बिगाड़ा झूठ फैला भारत खोई।
पक्षपात ने सर्वस खोया न्याय करैया नहीं कोई ॥
वाम आदि कितने पाखण्ड मत भारत में कीन्हे जारी। अ० ॥
देखो भाइयो ! इस भारत में कैसी मूरखता छाई।
ब्रह्म सच्चिदानन्द छोड़ के पत्थर पूजा मन भाई ॥
सत्य बात को कहें सुनो मत करें पोपजी मनचाही।
जो पूछे उत्तर नहीं देवें करें मन्दमति युध [illegible]ई ॥

असत् बात जो धर्म विरोधी श्रीस्वामी मेटी सारी। अ०॥
आर्य कहें तो बुरा मानते हिन्दू नाम से हों राजी।
विद्याबल पुरुषारथ खोया न्योते खा. पूरी भाजी॥
भंग तम्बाकू अफ़ीम गांजा कहीं डटी चौसरबाजी।
आर्य धर्म को दे तिलांजली कथने लगे कथा ताजी॥
भाई बन्धु परिवार नारि सुत सब की है सम्मति न्यारी। अ०॥
ब्रह्मचर्य पूरा नहीं करते बालविवाह रचाते हैं।
विद्याध्ययन नियम खण्डित कर बल और वीर्य गँवाते हैं॥
विधवा दुख पर तनिक दया ना सारी उमर रुलाते हैं।
तोड़ वेद मर्याद मूर्ख हा! लाखों पाप कराते हैं॥
मिसरीलाल कहें वेदध्वनि भई अब तो तुव रहना ना, री!
अरी अविद्या पापिन तू ने भारत पर विपदा डारी॥

भजन १५२

टेक–किया धर्म का लोप, पापों ने नये २ मत फैलाय॥
तज वेद शास्त्र को झूठे पुराण बनाये।
कर ईश विमुख इन भूत प्रेत पुजवाये॥
कर २ मिथ्या उपदेश लोग बहँकाये।
कर दिया धर्म का नाश कुकर्म बढ़ाये॥
इन नाना देव पुजाई, दिया द्वेष भाव फैलाई।
इन अपनी तोंद फुलाई, दिया भारत देश डुबाई॥
करवाये खोटे काम, किया बदनाम, देश का नाम। धाम धन बैठे सभी गँवाय॥ किया० १॥

कर बाल विवाह दिया ब्रह्मचर्य छुटवाई ।
सब बुधिबल विद्या तहिस नहिस करवाई ॥
भयो वीर्य्य क्षाण जब गंगन करी चढ़ाई ।
नव मान भेष कर ग्रह की चाल बनाई ॥
तुम्हें खोटा मंगल आया, करो तुलादान फरमाया ।
कहीं राहु केतु बतलाया, दे धोखा माल उड़ाया ॥
लिया अपने जाल में फांस, देश का नाश, किया इन खास । दास लिये तनों वर्ण बनाय ॥ किया० २ ॥

मुर्दे का श्राद्ध कराय गया जिमवाया ।
वहां लिया इन्होंने माल लूट मन भाया ॥
कहीं काशी मथुरा मुक्तिधाम बतलाया ।
कहीं गयाश्राद्ध में छप्पन भान खिलवाया ॥
कहीं बलिदान बतलाते, बकरो के शीश कटाते ।
कहीं पंचमकार कराते, अरु मद्य मांस खिलवाते ॥
किया वृद्ध विवाह प्रचार, बढ़ा व्यभिचार । डार दिया बुधि बल वीर्य्य कराय ॥ किया० ३ ॥

इस कपट जाल को अब तो त्यागो भाई ।
करो वैदिक धर्म प्रचार परम सुखदाई ॥
करो यज्ञ हवन जो ऋषि मुनि सबने बताई ।
है सुखद सनातन यही रीति चलि आई ॥
करो अपने बड़ों की सेवा, है यही श्राद्ध सुख देवा ।
जिन्हें कर गया काल कलेवा, वह खायें न पूरी मेवा ॥

बलदेव कहे घबड़ाय, तेरे गुण गाय, शीश पुनि नाय।
धाय प्रभु अब तो करो सहाय॥ किया० ४॥

ग़ज़ल १५३

अरे पोपो हम्ही को तुम, सतालो जितना जी चाहे।
बना ईश्वर की जड़ मूरत पुजा लो जितना जी चाहे॥
ज़रा नहीं शर्म है तुम को हुए बेशर्म क्यों इतने।
बनाकर स्वांग ईश्वर का नचालो जितना जी चाहे॥
करो बदनाम मुर्दों को कराकर श्राद्ध तुम उनका।
कचौरी खीर और हलुआ उड़ालो जितना जी चाहे॥
सिखा कर काम खोटे तुम बुरा हमसे कराते हो।
पवज़ सत् के असत् हमको सुनालो जितना जी चाहे॥
करो कुछ खौफ़ ईश्वर का जगह दो रहम को दिल में।
सुफल नेकी का है नेकी कमालो जितना जी चाहे॥
ईसाई हो रहे हैं जो फ़क़त है आप की करनी।
ऐसे उपदेश को पोपो, सुनालो जितना जी चाहे॥
न मानेंगे कभी हम तो परख तुमको लिया दिल से।
कपट के जाल बेशक तुम बिछालो जितना जी चाहे॥
अब आंखें खोल देखो गौर से बेकस कहूं तुम से।
खुश होकर सत्य विद्या को फैलालो जितना जी चाहे॥

भजन १५४

टेक-क्यों अपना पेट भरा है, मुर्दों का बहाना करके।

जो माल तुम्हें मुर्दों के निमित्त खिलाया।
वह जुम्ला माल तुमने क्यों नहीं पहुँचाया॥
गर रसीद लाने में कुछ उज़्र बताया।
तो जुर्म खयानत ज़िम्मे तुम्हारे आया॥
जो माल पेट भर खाओ। उसे मुर्दों तक पहुँचाओ।
आकर सब हाल सुनाओ। किस योनि में हैं बतलाओ॥
सब कहो मुफ़स्सिल हाल, चलो मत चाल, खुल गया जाल। बाद मुद्दत के, जो कुछ कि तुमने गढ़ा है॥ क्यों० १॥

एक मकां के अन्दर तुम को बन्द करवाये।
अरु खाना पानी बिल्कुल दिया नहीं जाये॥
फिर तुम्हारे निमित्त एक ब्राह्मण देय जिमाये।
जो उस के खाने से तुम्हारी तृप्ति होजाये॥
जो भोजन ब्राह्मण खावे। वह तुम्हारे पेट में आवे।
सब को यक़ीन हो जावे। और भ्रम भी सब मिट जावे॥
नहीं तजो श्राद्ध की चाल, करो मतटाल, आप प्रतिपाल, सारी सृष्टि के, नाहक़ सर बोझ धरा है॥ क्यों० २॥

अध्याय दोम गीता में साफ़ लिखा है।
जिस समय देह से होता जीव जुदा है॥
कर्मानुसार तन और नया मिलता है।
कहो गीता है ग़लत या कि श्राद्ध बेजा है॥
अब सच २ हाल सुनाओ, मत माल मुफ़्त के खाओ।

क्यों जगमें हँसी कराओ, मुर्दों के कुली कहाओ ॥
नहीं आती तुमको शर्म, छोड़ षट कर्म, व कुलके धर्म।
भी त्यागन करके, ग्योंते पर चित्त धरा है ॥ क्यों० ३ ॥
जब लख चौरासी योनि शास्त्र बतलावे।
तो क्या है पता मर कौन योनि में जावे ॥
कर्मानुसार गर सूकर की योनी पावे।
तो खीर कचौरी कैसे सूकर फिर खावे ॥
पहिले योनि का पता बताओ, फिर उसके मुवाफ़िक़ खाओ।
क्यों नाहक शोर मचाओ, साबित करके दिखलाओ ॥
कहे शंकरलाल अब जागो, नींद को त्यागो, सुकर्मों में लागो।
वेद पढ़ २ के, जो स्वामी ने भाष्य करा है ॥ क्यों० ४ ॥

भजन १५५

टेक-मुर्दों का सराद, लिखा हमें दिखलाओ ॥
जिस वेद मन्त्र में पाओ, वह मन्त्र हमें दिखलाओ।
मत यों करो विवाद ॥ लिखा० १ ॥
जीतों पर तीर चलाओ, फिर मरों के पिण्ड भराओ।
बने कैसे औलाद ॥ लिखा० २ ॥
किस लिये तुम्हें पाला था, लाखों का घर घाला था।
करो उस दिन को याद ॥ लिखा० ३ ॥
जीवत ही श्राद्ध रचाओ, जो तीन पुश्त बतलाओ।
वेद की है मरियाद ॥ लिखा० ४ ॥

दादरा १५६

टेक-पोपलीला कहा ना जावे ॥ पोप० ॥

मरते बैतरनी सिसकति गइया। रोगी पर दानों का चन्दा लगावे ॥ पो० ॥ पिराडा की खातिर जौ का अद्वा। पराडो को पूरी कचौरी खिलावे ॥ पो० ॥ कुश पर लपेटे बालों के धागे। प्रेतों की देही का ढांचा बतावे ॥ पो० ॥ दशगात्र षोडशी एकादशी में। जीतों को बहुत सा नाच नचावे ॥ पो० ॥ घर में तो खाने को दाने भी नाहीं क्रिया करमको वह क़र्जा कढ़ावे ॥पो०॥ घर में तो सोवें खरी खटुलिया। पोपों को निजिया पलँगिया बिछावे ॥ पो० ॥ घर में तो रहने को छप्पर भी नाहीं। पोपों को छाता चँदनियां तनावे ॥ पो० ॥ शीतलप्रसाद लखि भारत की दुर्गति। रोवे हियरवा जिया अकुलावे ॥ पो० ॥

भजन १५७

टेक-ज्योतिष का जाल फैलाया लोगों ने ॥

ज्योतिषथी गणित की विद्या,उसेकरके फलित अविद्या।
भ्रम में दीना डाल ॥ फै० ॥
भूगोल खगोल न जानें, नहीं आर्य ग्रन्थ पहिचाने।
लिखा है क्या २ हाल ॥ फै० ॥
एक जन्मपत्र लिख लाये, नव ग्रहों के हाल सुनाये।
जन्म कुराडली निकाल ॥ फै० ॥
कहीं शनि की ढैया आई, कहीं साढ़ सती बतलाई।
कहा अब पड़ा बबाल ॥ फै० ॥

दशा मारकेश की आई, हैं राहुकेतु दुखदाई।
शायद हो जावे काल ॥ फै० ॥

जो मृत्यु से प्राण बचाओ। मृत्युञ्जय जाप कराओ।
ग्रह देवेंगे टाल ॥ फै० ॥

मंगल बुध दान बता के। चावल घृत गेहूँ मँगा के।
और लो कपड़ा लाल ॥ फै० ॥

चांदी का चन्द्र बनवाओ। सोने का सूर्य्य लेआओ।
दान करो पीली दाल ॥ फै० ॥

नहीं सूर्य्य सिद्धान्त पढ़े हैं। सब अपनी २ गढ़े हैं।
न जानें ग्रहोंकी चाल ॥ फै० ॥

कहे वासुदेव यह झूठे। ज्योतिष का नाम ले लूटें।
ठगा धोखा दे माल ॥ फै० ॥

भजन १५८

टेक–रहना हुशियार पापों के फंदे से।

यह ऐसा जाल बिछावें। धोखा दे तुम्हें फँसावें।
करें अपने इख्त्यार ॥ पो० ॥

महाराज ज्योतिषी आये। अँगुली गिन ग्रह बतलाये ॥
चढ़ा ढैया का भार ॥ पो० ॥

कहीं दिशाशूल बतलावें। कहीं योगिनीचक्र सुनावें ॥
बन्द कर दें व्यवहार ॥ पो० ॥

कोई खुदको ब्रह्म जतावे। सब कर्म धर्म छुड़वावे॥
कहै झूठा संसार ॥ पो० ॥

कोई बने गुरू मठधारी। पूजे हैं जिन्हें नर नारी॥
मंदिर में हो व्यभिचार ॥ पो० ॥

कपड़े रंग मूड़ मुड़ावें। और टुकड़े मांगकर खावें॥
निकाला है रुज़गार ॥ पो० ॥

कहे वासुदेव समझाई। स्वामी ने दिया जगाई॥
अब उठ बैठो यार ॥ पो० ॥

ग़ज़ल १५६

ऐसी क्या देखी ख़ता तुमने हमारी पोप जी।
हमको कर रक्खा जा तुमने जां से आरी पोपजी॥
कर रखा है तुमने क्यो पाख़ाना और पेशाव बन्द।
जो लगादी सायतों की क़ैद भारी पोपजी॥
सप्तवर्षा रोहिणी की छल के सानो में लगा।
पेट में औलाद के मारी कटारी पोपजी॥
वेदविद्या के हुए तुम ऐसे दुश्मन हाय! हाय!!।
करादिये रचकर अठारह पुराण जारी पोपजी॥
हरते २ दूसरों का धन कपट की राह से।
आपही तुमहोगए आखिर भिखारी पोपजी॥
क्या नशा तुमको चढ़ा था जाति के अभिमानका।
यह बुरी हालत उसी की है खुमारी पोपजी॥

मुर्दे भंगी राक्षस धानुक अहीरों के तमाम।
तुमने पुजवाई हमें लोना चमारी पोप जी॥
रात को तुमने दिवाली में खिला करके जुवा।
तुम ने ही हमको बनाया है जुवारी पोप जी॥
देवी और भूतों पै चढ़वा करके बकरं मुर्गियां।
तुमने ही सिखलाई हमको गोश्तख्वारी पाप जी॥
भैरवी चक्कर में ले जाकर किया हमको भ्रष्ट।
आर्यों से कर दिया हमको अनारी पोप जी॥
ईश पूजा छोड़ कर सब मूरती पूजक हुए।
छोड़ कर हाथी करी खर की सवारी पोप जी॥
नाक मूंदे गुदड़ी ओढ़े बैठे हो क्या सोच में।
अब तो फिर चलने लगी बाद्देबहारी पोप जी॥
मातृभाषा की अब तो क़दर फिर होने लगी।
पाठशाला जाबजा होते हैं जारी पोप जी॥
देश में अब हर तरफ़ उपदेश की भरमार है।
खुल रही है सब कपट की होशियारी पोपजी॥
देते हैं स्वामी दयानन्द को बड़ाही धन्यवाद।
जिसने क़लई खो दी सारी तुम्हारी पोपजी॥
क्याबताऊं तुमको गति पोपों की अबशोलप्रमाद।
है पुलिस आर्यासमाज औरइश्तिहारी पोपजी॥

दादरा १६०

टेक–देह धारे नहीं प्रभु प्यारे ॥ देही का पाना कर्मों का

फल है। ईश्वर हैं सारे कर्मों से न्यारे ॥ देह० १ ॥ ईश्वर तो सब के शरीरों को रचता । ईश्वर की देही को कौन सँवारे ॥ देह० २ ॥ गर्भों का रहना क्लेशों का सहना । मुक्ती के दाता ने कैसे सहारे ॥ देह० ३॥ व्यापक अनन्ता धारे शरीरा। बुद्धी से रीते हैं मस्तक तुम्हारे ॥ देह० ४ ॥ लोटे में सागर मुट्ठी में आकाश। शीतलप्रसाद कहां कितने भरारे ॥ देह० ५ ॥

दादरा १६१

टेक-मानो प्यारे पोपो! हमारी कही ॥ अब तुम्हरो कुछ बाक़ी नहीं। ठगई की देख लई खाता बही ॥ मानो० १ ॥ सूरज को मोती मंगल को मूंगा। चन्द्रा चुकाय दियो चावल दही ॥ मानो० २ ॥ दुर्गा का बकरा काली का भैंसा। लिंगों की पूजा से लज्जा रही ॥ मानो० ३ ॥ मुर्दे न खैहैं पूरी कचौरी। कैसे लगैहौ दोहरी नही ॥ मानो० ४ ॥ शीतलप्रसाद जड़ पूजा मिटाय दई। एकौ न राखी तुम्हारी सही ॥ मानो० ५ ॥

दादरा १६२

टेक-चाहे पोपों को सब घर देहिं, तो भी थोड़ा दिया ॥ मड़हा भी देवें, उसारा भी देवें, छानी को छप्पर देहिं ॥ तो० १ ॥ जन्मे पै देवै, बिवाहे पै देवै, मांदे मरे पर देहिं ॥ तो० २ ॥ मीरा पै देवें, मदारों पै देवें। क़बरों पै चादर देहिं ॥ तो० ३ ॥ स्त्री दान कर पोपों को देवें, अरु सब ज़ेवर देहिं ॥ तो० ४ ॥ पोपों को देवें उनकी स्त्री को देवें, लड़को को दुइसर देहिं ॥ तो० ५ ॥ शीतलप्रसाद राज सब देके, क़र्ज़ा काढ़ फिर देहिं ॥ तो० ६ ॥

दादरा १६३

टेक-प्यारे पोपो ! काहे उदास अब क्या बाक़ी रहा ॥ चेले भी कर लिये, चेली भी करलीं। कर लिये भोग विलास ॥ अब० १ ॥ वेदों को छोड़ा, पुराणों पै रीझे। भारत का कर दिया नाश ॥ अब० २ ॥ पत्थर पुजाये, मुर्दे जिमाये। बली का खिलाया मांस ॥ अब० ३ ॥ शीतलप्रसाद पर कृपा करो अब। बाक़ी रही कोई सांस ॥ अब० ४ ॥

दादरा १६४

इसी कारण से तुमको जगाय रहे हैं।

टेरैं विधवा अनाथ, कोई देता न साथ। वह रो करके हमको रुलाय रहे हैं ॥ इसी० १ ॥ धूर्त औ पाखण्डी, बनि योगी और दण्डी। मत वेद विरुद्ध चलाय रहेहैं ॥इसी०२॥ कहुँ पै किरानी कहूँ ठाढ़े हैं कुरानी। निज धर्म से मुक्ती बताय रहेहैं ॥ इसी०३॥ भेड़ें व बकरी व गाय, लाखों कटती हैं हाय। निज पेटों को कबरें बनाय रहेहैं ॥ इसी० ४ ॥ साधु और पण्डे, कहुँ चोर और गुण्डे। सब भारत में लूट मचाय रहे हैं ॥ इसी०५॥ जागे नेकहु न हाय ! गये केतेहु जगाय। अब तो सारे कारज नसाय रहे हैं॥ इसी कारण से तुमको जगाय रहे हैं ६ ॥

ग़ज़ल १६५

हँसी अपने बुज़ुर्गों की कराये जिसका जी चाहे।
कि बेतहक़ीक़ जड़ को सर झुकाये जिसका जी चाहे ॥

है वैदिक धर्म रूपी चश्मये आबे बक़ा जारी ।
पिये जल हाथ मुँह धोये नहाये जिसका जी चाहे ॥
दिखाई करके तहक़ीक़ात वैदिक मत की स्वामी ने ।
कि अपने को मज़ाहिब से बचाये जिसका जी चाहे ॥
नहीं है बहस करने में हमें कुछ उज़्र दम भर का ।
हरएक मज़हब के आलिम को बुलाये जिसका जी चाहे ॥
समाजों की न होगी भीमसेन आदी से कुछ हानी ।
खुशी सत् धर्म का दुश्मन मनाये जिसका जी चाहे ॥
नहीं मुमकिन है हो सकना फ़िदा अवतार ईश्वर का ।
अटल सिद्धान्त वेदों का मिटाये जिसका जी चाहे ॥

ग़ज़ल १६६

नक़ारा धर्म का बजता है आये जिसका जी चाहे ।
सदाक़त वेद अक़दस आज़माये जिसका जी चाहे ॥
भटकते फिरते जाहिल हैं भला अब किस लिये प्यारा ।
गया खुल धर्म का द्वारा है आये जिसका जी चाहे ॥
कलामुल्ला नहीं कोई सिवा एक वेद पुस्तक के ।
तनिक भी इसमें शक हो आज़माये जिसका जी चाहे ॥
लिखा यह वेद पुस्तक में कि एक जगदीश है सबका ।
बग़ैर इस के बुतों को सर झुकाये जिसका जी चाहे ॥
नहीं बैतुल मुक़द्दस में न काबा है मकां उसका ।
नहीं पूरब और उत्तर में समाये जिसका जी चाहे ॥

व्यापक सर्व थल में जो उसे एक देशी माने ये।
सरासर अक्ल को अंधा बनाये जिसका जी चाहे॥
जो पेली २ करता था न हक़ ने मददगारी की।
तो फिर खातिर पै उसके जां गँवाये जिसका ज चाहे॥
शिफ़ारिश नबी पीरों की वह हर्गिज़ है नहीं सुनता।
अबस इलज़ाम रिश्वत का लगाये जिसका जो चाहे॥
मनादी शहर में करदो पढ़ो तुम वेद पुस्तक को।
और हुंडी जाल की झूठी चलाये जिसका जी चाहे॥
मतों के जाल झूठे हैं फँसे इनमें रहो मत यो।
यही कहना है सेवक का भुलाये जिसका जी चाहे॥

दादरा १६७

हमतो सोते भारत को जगाये जायँगे।
पुरानी कुरानी जो चाहे सो करें॥हम०॥

काम क्रोध मद लोभ सबों को, भंग चरस मद्यादि नशों को।
लोगों से यह भी छुड़ाये जायँगे॥ हम० १॥

झूठे पुस्तक मिथ्या कहानी, अपस्वारथपन औ मनमानी।
सब के दिलों से हटाये जायँगे॥ हम० २॥

पूजा बुतों की क़ब्रपरस्ती, भेंट कुर्बानी नफ़सपरस्ती।
अब सब के मनों से मिटाये जायँगे॥ हम० ३॥

मुर्दों की सेवा खाना खिलाना, खावे जो कर धूर्त बहाना॥
इन पाखण्डों का भेद बताये जायँगे॥ हम० ४॥

गौ विधवों की आहों जारी, जिस से हुई दुर्गति भारी।
सब प्रकार सुनके सुनाये जायँगे ॥ हम० ५ ॥

पशुओंका निश वासर कटना, भेंटों का करना वायुका सड़ना॥
अब लोगों से बन्द कराये जायँगे ॥ हम० ६ ॥

भडुवा नचाना रंडी को गाना, रासें कराना धन का गँवाना।
लोगों से शुभ कृत्य कराये जायँगे ॥ हम० ७ ॥

भाई से देखो रूठा है भाई, बाहरा ओर कहीं घर ढाई॥
हम फिरसे इन सब को मिलाये जायँगे ॥ हम० ८ ॥

भारत की हुई अजब तबाही, लूटन लगे हमें यवन ईसाई।
हम तो भारत की व्यवस्था सुनाये जायँगे ॥ हम० ९ ॥

ऐसी अविद्या थी हमपर छाई, ईश्वरने दिया ऋषि प्रगटाई।
अब तो स्वामी के गुन सब गाये जायँगे ॥ हम० १० ॥

परम गायत्री सन्ध्या हवन अब, वेदोंके मन्त्र सुन्दर जो सब।
लोगों को अब यह सिखाये जायँगे ॥ हम० ११ ॥

ईश्वर के गुण मिलकर गाओ, बुरे कर्मों से मनको हटाओ॥
आरज फिर सब आनन्द पद पाये जायँगे ॥ हम० १२ ॥

भजन १६८

आहा स्वामी दयानन्द आये, भगे धूर्त पाखंडी भरररर।
भारत पर अनुकम्पा कीनी, ज्ञान रूप जिन वर्षा कीनी।
ठगिया मन में सोचन लागे, छलिया कांपे थररररर ॥ १ ॥
विद्यालय और यतीमखाने, खोल दिये जिन धर्म खज़ाने।
समय पाय भोउदयदिवाकर, तिमर गयो जैसे सररररर॥ २ ॥

नारिन को जो शूद्रा कहें थे, खुदग़र्ज़ी से पेट भरें थे।
कन्या शाला होगई जारी, उड़ा ख़याल यह फररररर ॥३॥
वेद रूप जिन बाण चलाये, भारतवासी आन जगाये।
गाये बटोही कहांतक महिमा, पोप जाल फटो चररररर॥४॥

ग़ज़ल १६६

धन्य है स्वामी दयानन्द जगाया तुमने।
घोर निद्रा से हमें आन उठाया तुमने ॥
महाभारत से अविद्या का अँधेरा छाया।
वेद प्रकाश से तम सारा हटाया तुमने ॥
नाना पन्थों में भटकते थे पटकते सर को।
'नान्यः पन्था'–यह सत् उपदेश सुनाया तुमने ॥
प्रभु को छोड़कर पूजी थीं क़बर तक हमने।
फिर से दो काल की संध्या में लगाया तुमने ॥
झांझ घड़ियाल बजा करके करें थे भक्ती।
योग कर मनको ठहराओ, यह बताया तुमने ॥
दीर्घ आयु के विवाह से जो डरें थे हम सब।
बन के ब्रह्मचारी ये आदर्श दिखाया तुमने ॥
अन्य पन्थों ने दबाया था बनाकर झूठा।
'सत्यमेव जयते' विजय नाद बजाया तुमने ॥
बेदा और दीन मुसलमान ईसाई होते।
इन के फन्दे से छुड़ा धर्म बचाया तुमने ॥

"स्त्री शूद्रौनाधीयाताम्" कहते थे सारे ।
"इमं मन्त्रं पत्नी पठेत" वाक्य सुझाया तुमने ॥
वेदों का नाम भी भूले थे कहते हैं किनको ।
वेदों की कुंजी ये सत्यार्थ बनाया तुमने ॥
करूं वर्णन मैं कहां तक लों तुम्हारी स्वामी ।
वासुदेव हिन्दू से दृढ़ आर्य बनाया तुमने ॥

ग़ज़ल १७०

ऋषी ही इन्सां बना गया है, कि देश भक्ती सिखा गया है ।
अधर्म से दिल हटा गया है, वह वेद विद्या पढ़ा गया है ॥
रियाज़भारत में गुल खिला था, वह तोहफ़ा कुदरत से एक मिला था।
खिज़ां के झोंके बुरा हो तेरा, तू आके उसको सुखा गया है ॥
ऋषी के प्रचार सोलह साला, ने हम को कैसा कहो संभाला ।
तिमिर के अन्दर किया उजाला, विचित्र दीपक जला गया है ॥
श्राद्ध के मानी हम थे भूले, जो यज्ञ का अर्थ हम थे चूके ।
जो भाष्य करने के थे तरीके, वह स्वामी हमको बता गया है ॥
ऋषी था उन्नीसवीं सदी का, बजाया हर सिम्त जिसने डंका ।
बताओ है और कौन ऐसा, जो ऐसी हलचल मचा गया है ॥
वह जैमिनी जी पै मरनेवाला, कपिल का सत्कार करनेवाला ।
वह धर्मयुध में न डरनेवाला, फ़िदा करश्मा दिखा गया है ॥

ग़ज़ल १७१

कहां है वह गुल जो देश भारत को, अजलसे नौ जिला गया है ।

खिज़ां का मौसम मिटा के यारो, बहार हरसू खिला गया है ॥
खज़ाना अपना जो लुटगया था, जो अपना विर्साहि गुमगया था।
जो अपना पूंजी भी छिनचुकी थी, हमारी हमको दिला गया है ॥
वह वेदविद्या जो गुम गई थी, वह लुटचुकी थी जो मातृभाषा।
वह उठगये थे जो वर्ण आश्रम, दोबारा उनको बिठागया है ॥
वह बुतपरस्ती की गुदड़ी जिस में, हज़ारों मत के लगे थे पैवन्द
उतारकर तन से वहदियत का, वह जामा हमको सिलागया है ॥
मिसाल मेंडक कमाल खुश थे, शरीर कीचड़ में सन रहा था।
बदन से आने लगी है खुशबू, इतर से हमको न्हिला गया है॥
जो सम्प्रदायो में मुनकिसम थे, था एक का एक जानी दुश्मन।
वह एक रस्ता बना के बिछुड़े, हुओं को बाहम मिला गया है॥
कोई था बदमस्त भंग को पीकर, कोई था पयारा धनको पाकर।
उतर गया सब नशा वह यारो! कि जामे अमृत पिला गया है॥
कमाल से अपनी इल्मियत के, जलाल से अपनी मार्फ़त के।
मुख़ालिफ़ों के भी दिलको एकदम वह मर्द मैदां हिला गया है॥
दया थी आँचल में जब कि उसके, तो पीछे आनन्द क्यों न होता।
दया से आनन्द कर के शर्मा, वह मोक्ष पद में खिला गया है॥

भजन १७२

उस योगी ने संसार का, कैसा उपकार किया है ॥ टेक ॥

गेह बिसार गही गुरु शिक्षा धार महाव्रत मांगी भिक्षा।
जीवन भर त्यागी न तितिक्षा, दुर्लभ ब्रह्म विचार का ॥
पीयूष पवित्र पिया है ॥ कैसा० १ ॥

कभी किसी को नहीं सताया, सब को सीधा पन्थ बताया।
धर्म कर्म का मर्म जताया, विद्या के परिवार का ॥
दरबार दिखाय दिया है ॥ कैसा० २ ॥

वैदिक मत का मान बढ़ाया, मिट गई महा मोह की माया।
पलट दई भारत की काया, ऐसे परम उदार का ॥
बल पाय सुधार जिया है ॥ कैसा० ३ ॥

अब हम लोग न पाप करेंगे, प्रभु शंकर का ध्यान धरेंगे।
भवसागर से क्यों न तरेंगे, संकट के संहार का ॥
शुभ साधन जान लिया है ॥ कैसा० ४ ॥

भजन १७३

टेक—होना दुशवार दयानन्द स्वामी सा।

जिन धर्म के कारण भाई, जीवन धन दिया लगाई।
वेद का किया प्रचार ॥ दया० १ ॥

विद्या का बल दिखलाया, काशी को जाय हिलाया।
सभी ने मानी हार ॥ दया० २ ॥

जितने भी थे मतवादी, सबकी ही पोल दिखादी।
उखाड़ी जड़ से दीवार ॥ दया० ३ ॥

मंझधार पड़ी थी नैया, नहीं था कोई और खिवैया।
महर्षि ही कर गए पार ॥ दया० ४ ॥

शर्म्मा कहै धर्म्म सँभालो, स्वामी की आज्ञा पालो।
ऋषी ऋण देवो उतार ॥ दया० ५ ॥

ग़ज़ल १७४

तुम्हीं पर मुन्सफ़ी ठहरी, श्री स्वामी को क्या कहिये।
ऋषि योगी गुणी ज्ञानी, मुनीश्वर देवता कहिये ॥१॥
बचाया झूंठे रस्ते से, दिखा कर सत्य का मारग।
पिता कहिये गुरू कहिये, जो कुछ कहिये बजा कहिये ॥२॥
किया वह काम है उसने, कि जिसकी अब ज़रूरत थी।
किया वेदों को भाषा में, उन्हीं का हौसिला कहिये ॥३॥
लगादी जान, झेलीं सख़्तियां संसार की ख़ातिर।
हितैषी जानमारा उसको हर एक इन्सांजां कहिये ॥४॥
हुई थीं कमसिनी की उम्र में कन्या जो विधवायें।
विवाह उनका न फिर होना, ज़ुल्म कहिये न क्या कहिये ॥५॥
हमें अपनी ही ग़फ़लत ने, डुबाया और डुबायेगी।
ख़ता अग़यार की क्या है, ये अपनी ही ख़ता कहिये ॥६॥

ग़ज़ल १७५

कभी हम बलन्द इक़बाल थे तुम्हें याद हो कि न याद हो।
हर फ़न में रखते कमाल थे तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥
पढ़ते थे जब हम वेद को जाने थे सब के भेद को।
रखते न अपनी मिसाल थे तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥
पाबन्द थे जब कर्म के माहिर थे अपने धर्म के।
दिल में ज़रूरी सवाल थे तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥
जब से जिहालत आ गई तारीकी हरसू छागई।

मुफ़लिस हैं जो खुशहाल थे तुम्हें याद हो कि न याद हो॥
हालत दिगरगूं हो गई क़िस्मत हमारी सो गई।
रोते हैं अब जो निहाल थे तुम्हें याद हो कि न याद हो॥

गजल १७६

भारत के वह दिन लौट कर, कभी आयेंगे कि न आयेंगे।
धन वीरता इल्मो हुनर, कभी आयेंगे कि न आयेंगे॥
कहां वेद विद्या के प्रदर्शक, अग्नि वायु वादिक ऋषी।
वह देखने में दृष्टि भर, कभी आयेंगे कि न आयेंगे॥
जन्मे अनेको ब्रह्मविद, ऋषि मुनि महा योगी यहां।
वह दया कर के इधर, कभी आयेंगे कि न आयेंगे॥
कहां धर्म धारी राम जैसे, और सीता सी सती।
महाराज दशरथ से पिदर, कभी आयेंगे कि न आयेंगे॥
कहां भीष्म द्रोणाचार्य, एवं कर्ण, अभिमन्यू बली।
अर्जुन से फिर यहां वीर वर, कभी आयेंगे कि न आयेंगे॥
कहां द्रौपदी रुक्मिणि सुभद्रा, गार्गि और सुलोचना।
उनके चरण इस भूमि पर, कभी आयेंगे कि न आयेंगे॥
श्री कृष्ण से योगी अहो! पैदा न हैं अवनी तले।
गौतम कपिल से मुनिप्रवर, कभी आयेंगे कि न आयेंगे॥
बुद्ध से हिंसा विरोधी, और शंकर से सुधी।
वह प्रेम से वपु धार कर, कभी आयेंगे कि न आयेंगे॥
दयानन्द जी से स्वामी वर, परमार्थ की चिन्ता बढ़ा।

सबको जगाने दर बदर, कभी आयंगे कि न आयंगे ॥
बलदेव भारत वर्ष की, हालत पै अश्क बहा रहा।
करने मदद वह शेर नर, कभी आयंगे कि न आयंगे ॥

भजन १७७

शैर–एक दिन भारत यह सब देशों का बस सरताज था।
जिस ज़माने में यहां पर वेदमत का रिवाज था ॥

टेक–भारत को सूना छोड़ के, वह कहां गये महाराजे ॥

गये राम लखण कहां शूर वीर बलधारी।
जिन के बल से पृथ्वी कांप थी सारी ॥
गये कहां युधिष्ठिर भीम भीष्म तपधारी।
कहां परशुराम अर्जुन से शस्त्र खिलारी ॥

कहां कर्ण गये अभिमानी, कहां गुरु गोविन्द लासानी।
परतापसिंह बलवानी, जिन की विख्यात कहानी ॥

किये काज उन्होंने बडे, न मन में डरे, युद्ध में लड़े, नहीं मुँह मोड़ के, रण अन्दर डरदम गाजे ॥ वह कहां० १ ॥

कहां गये वशिष्ठ और व्यास से ऋषि विद्याधर।
कहां कणाद गौतम कपिल जैमिनी मुनिवर ॥
कहां पातंजली से ऋषी और पाराशर।
जिन के प्रताप से विद्या फैली घर घर ॥

कहां गये पाणिनी भाई, जिन रची अष्टाध्यायी।
कहां गये कृष्ण सुखदाई, जो वेद धर्म अनुयायी॥
गये नारद ब्रह्मा कहां, करूं क्या बयां, रहे नहीं यहां, वह नाता तोड़ के, जाकर परलोक विराजे॥ वह कहां० २॥

कहां हरिश्चन्द्र से राजा गये सतवादी।
दिये पुत्र स्त्री त्याग और राज्यादी॥
कहां गये दशरथ और जनक धर्म अनुयाई।
जहां टरे वचन से प्यारी जान गँवाई॥

कहां शिवि दधीचि राजाबल, कहां मोरध्वज विक्रम शल।
कहां दिलीप अज रघु निरमल, रहे बल धर्म में निश्चल॥
अब क्या तदबीर बनायें, कहां से लायें, मुफ्त चिल्लायें, मरें शिर फोड़ के, सब होगये काज अकाजे॥ वह कहां० ३॥

क्षत्रिय कुल में होगये हैं वेश्यागामी।
दी डोर धर्म की छोड़ पाप की थामी॥
ब्राह्मण कुल जो थे ऋषि मुनियों के नामी।
वह होगये विद्याहीन और बहु वामी॥

संध्या गुरु मन्त्र विसारा, लगे अग्निहोत्र नहीं प्यारा।
यों भारत दीन पुकारा, कुल डूबा सभी हमारा॥
अब भी शोचो मतिहीन, बनो प्रवीण, मुरारी दीन, कहे कर जोड़ के, वेदों के बजाओ बाजे॥ वह कहां० ४॥

भजन १७८

टेक-भारत क्यों रुदन मचावे, सब दिन होत न एक समान ।

शैर ।

एक दिन वह था कि वक्त विद्या में हम भरपूर थे ।
और दौलतमन्द सब देशों में भी मशहूर थे ॥
सब हमें झुकते थे वा मानहन आप हजूर थे ।
जो वचन कहते थे मुख से हर तरह मंजूर थे ॥
एक दिन ऐसा होना था, हमें देख २ रोना था ।
गौरव सारा खोना था, पड़ गफ़लत में सोना था ॥

अब क्यों होते दिलगीर, बांधिये धीर, मानो तदबीर । ईश का मन में कीजे ध्यान ॥ भारत० १ ॥

शैर ।

कैसे २ शूर विद्यावान और दानी हुये ।
हमसरी क्या कर सकें कोई कि लासानी हुये ॥
जिन के वश में पवना तक अग्नि और पानी हुये ।
वह भी अफ़सोस में फंस गये कैसे दुखी मानी हुये ॥
हुये हरिश्चन्द्र सत धारी, बलि पै पड़ी विपता भारी ।
सीता सतवन्ती नारी, रही वह कुछ काल दुखारी ॥

तुम सोच फ़िकर दो टाल, देखो कर ख्याल, प्रबल है काल । चक्र में जिस के सभी जहान ॥ भारत० २ ॥

शेर ।

जिसके थे सौ पुत्र और भारी कुटुम्ब परिवार था।
राज्य था धन था उन्हें हर बात का अख़्तयार था॥
उनको भी एक दिन मुसीबत ने किया बेज़ार था।
कुछ न कहता था समय के चक्र से लाचार था॥
एक दिन वह था अयोध्या में बड़ी थी धूम धाम।
था यक़ीं सबको यही राजा बनेंगे कल को राम॥
एक दिन हुआ मगर वह शोकसागर में तमाम।
क्यों मरे जाते हो भाई और का अब है मुक़ाम॥
चले राज के बदले बनको, तज वस्त्र खाक मल तन को।
क्या मिला कहो रावन को, गया छोड़ यहीं सब धनको॥
यह है दुनियां का फेर, न आंसु गेर, दिल को रख शेर।
राम नगरी चढ़ चले विमान॥ भारत० ३॥

शेर।

धीर पुरुषों का यही है नियम धीरज धारना।
धर्म अपने मन में रखना और न हिम्मत हारना॥
सब्र करना और दशा बिगड़ी को नित्य सुधारना।
सत्य मारग से कभी मनको न अपने टारना॥
दो मित्र छोड़ घबराना, तुम भारत के हो दाना।
देखा है बड़ा ज़माना, फिर क्या तुमको समझाना॥

तुम जपो सच्चिदानन्द, कटें सब फन्द, मिले आनन्द, कहे शर्मा फिर होवे मान ॥ भारत० ४ ॥

ग़ज़ल १७२

ऐ बुतपरस्तो, बुतों के भक्तो! रहोगे सीना फ़िगार कब तक।
हमेशा खूने जिगर को पी पी रहोगे इश्क़ बीमार कब तक ॥
बनत हो जोक जने २ की भला बुरा कुछ न देखते हो।
फँसा के काकुल के पेंच में दिल करोगे ज़िन्दगी को ख़्वार कबतक ॥
कंचन को देकर के कांच लेत न होगी हरगिज़ मुराद हासिल।
तुम जिनपै मरते वह तुमसे अलग रहेंगी यारी ये यार कबतक ॥
तुम्हारे माशूक़ बेवफ़ा हैं तुम बेहया हो जो मरते उन पर।
खाते हो मुँह पर न बाज़ आते पिटोगे बीचो बज़ार कबतक ॥
हराम खोरों से दिल लगाते मज़ा न पाते हँसाते आलम।
गुनाहों चरड़ पर सर कराते बने रहोगे चमार कबतक ॥
न फ़र्ज़ अपने की कुछ ख़बर है न भूल साबिक़ पर ही नज़र है।
तुम्हारी अक़्लों पै क्या अबर है रहेगी शामत सवार कबतक ॥
दुनिया में आकर धक्के ही खाये धोबी के कुत्ते न घाट घर के।
यह भी न सोचे अक़िल के दुश्मन रहोगे मिट्टीमदार कबतक ॥
ये उम्दा मौक़ा मिला है तुमको आंखों से पर्दा उठा के देखो।
नशा य कैसा जमाया तुमने न जिसका उतरा खुमार अबतक ॥
ऐ पाकपरवर! ऐ सच्चेदिलवर! हो दीद अबतो तुम्हारा हासिल।
बलदेव आके शरण पड़ा है सुनोगे इसकी पुकार कबतक ॥

ग़ज़ल १८०

रहेगी मुख पर ये आब कबतक, रहेगा साहब शबाब कबतक।
यह नींद ग़फ़लत का ख़्वाब कबतक, बचोगे आख़िर जनाब क़बतक॥
यह शान शौक़त ग़ज़ब नज़ाकत, ये नाज़ नख़रे अजब क़यामत।
ये ज़ुल्म ज़ोरो सितम शरारत, बने रहोगे नवाब कबतक॥
है चन्दरोज़ा बहार गुलशन, न ये हमेशा रहे जवानी।
क़बाब देंदे पुलाव ज़र्दा पकेगा कोर्मा कबाब कब तक।
सताते हो बेगुनाह, नाहक़, किस घमंड में फिरते हो भले।
डरो न याने ग़ज़ब ख़ुदा से, करोगे लाखों अज़ाब कब तक॥
गत चले गये यहां से कितने, तुम्हीं अनोखे नहीं सितमगर।
खलोगे छुरा के दांव कब तक, चलेगा पट पर में नाव कबतक॥
झूठी हज़ारों बातें बनाते, बदी से अब तक न बाज़ आते।
लाखों गले पर छुरी चलाते, रहे यह क़ातिल ख़िताब कबतक॥
ग़रीबों का जब गला दबाते, तरस न दिल में ज़रा भी खाते।
हरामज़ादों को अर लुटाते, उड़े ये गुलगूँ शराब कब तक॥
क़ज़ा का पैग़ाम है आनेवाला, चलोगे आख़िर मुँह करके काला।
पूछेगा हाकिम इसका हवाला, न दोगे आख़िर जवाब कब तक॥
दुनियामें है ये दो दिनका मेला, हिल मिलके रहना है सबको लाज़िम
इन चार दिन की ही चांदनीमें, करोगे हम से हिजाब क़ुबतक॥
ये उम्दा मौक़ा मिले न हरदम, ऐ सोने वालो विचार देखो।
अब खोल आंखें दुनियाको देखो, रहेगा मुँह पर नक़ाब कबतक॥

बेदार होकर बलदव जल्दी, अब याद हकमें लगा ले दिल को।
पड़ा रहेगा बुतों के दर पर, बता दे ख़ाना ख़राब कब तक॥

ग़ज़ल १८१

किसे देख दिल तू हुआ है दिवाना।
नहीं तेरी इस ज़िन्दगी का ठिकाना॥
हजारों शहंशाह हुए इस ज़मी पर।
गये कूंच कर जिनको जाते न जाना॥
जो पैदा हुं नापैद होगा वह एक दिन।
फरा सो भरा और बरा सो बुताना॥
धरम एक हमराह केवल चलेगा।
रहेगा यहीं पर पड़ा सब खज़ाना॥
है धोखे की टट्टी जहां में पुलंदर।
समझ के चलो मुल्क है य बिगाना॥
करो याद उसको जो मालिक जहां का।
उसी की दया से मिटे आना जाना॥

भजन १८२

दोहा–विषय भोग संसार के, हैं सब दुख के मूल।
इन में फँसकर ईश को, मत मूरख तू भूल॥
टेक–पड़ लोभ मोह के जाल में, नर आयू क्यों खोता है॥
यह जग जान रैनका सपना, जिस को कहता अपना अपना।

भूल गया ईश्वर का जपना, फँसा हुआ धन माल में।
क्या सुख की नींद सोता है ॥ नर आयु० १ ॥
चले अकड़ बन छैल छबीला, अन्त समय सब होजाय ढीला।
काम न आये कुटुम्ब कबीला, भूला जिन के ख्याल में ॥
कोई साथी नहीं होता है ॥ नर आयु० २ ॥
अब क्यों शिर धुन २ पछतावै, रुदन करे और रौल मचावै।
कुछ नहीं तेरी पार बसावै, चूका पहली चाल में ॥
क्या खड़ा २ रोता है ॥ नर आयु० ३ ॥
समझ सोचकर कदम उठाना, मुशकिल मनुष जन्म है पाना।
कहे मुरारी जो हो दाना, भज हर को हर हाल में ॥
क्यों पाप बीज बोता है ॥ नर आयु० ४ ॥

भजन १८३

टेक—दौलत की हाय माया में, तैंने सारी उमर घुल ली ॥
गज तुरंग रथ ऊँट सवारी, बँगले कोठी महल अटारी।
बना छोड़ गये हफ्त हज़ारी, कोई साथ नहीं चाली ॥ दौ०१॥
जो कि शहंशाहों में कैसर, कहलाते थे ग़रीबपरवर।
रहा न उनका निशां यहां पर, मौत टली नहीं टाली ॥ दौ०२॥
लाखों क़त्ल बेगुनाह कराये, ज़र के लिये ज़ालिम कहलाये।
मरते वक्त वह भी पछताये, दोनों हाथ गये खाली ॥ दौ०३॥
कोई जान धन के लिये खोवे, कोई पृथ्वी को है रोवे।
सुख से शर्मा वह नर सोवे, इन पै खाक जिन डाली ॥ दौ०४॥

भजन १८४

टेक-तैंने प्रभू का नाम बिसारा, इस कारण बाजी हारा ॥
कामी क्रोधी पतित अभागी, बुरे कर्म में तेरी लौ लागी ।
पापी हठी सत्यपथ त्यागी, कैसे हो निस्तारा ॥ इस० १ ॥
छलिया कपटी लोभी ज्वारी, अधम पातकी औ व्यभिचारी।
हिंसक चोर कुटिल छल भारी, किसविधि होय गुज़ारा ॥इस०२॥
दम्भी गर्वी नमकहरामी, कृतघ्न अति डाकू ठग नामी ।
बगुला भक्त और वेश्यागामी, धर्म सभा से न्यारा ॥ इस० ३ ॥
अपस्वार्थी लवार अधर्मी, परनिन्दक निर्लज्ज कुकर्मी ।
छाई मुरारी क्या बेशर्मी, मन में नहीं विचारा ॥ इस० ४ ॥

भजन १८५

टेक-संग धर्म ही चलने हारा, कोई दम का रैन गुज़ारा ॥
करो होश लो अब भी जागो, ग़फ़लत की निंद्रिया त्यागो जी ।
रक्खो प्रभु प्रीतम का सहारा ॥ कोई० १ ॥
जब मृत्यु वारन्ट ले आवे, घड़ी पल नहीं टलने पावे जी ॥
रोवे जियरा हो दीन विचारा ॥ कोई० २ ॥
रोवे सब दिन माय तुम्हारी, छठे मांस बहनिया प्यारी जी ॥
प्रिया नयन दो दिन जल धारा ॥ कोई० ३ ॥
करो दान धर्म कुछ प्यारो, अपने अन्त समय को सुधारो जी ॥
चूका समय न बारम्बारा ॥ कोई० ४ ॥

हरिश्चन्द्र से सतव्रतधारी, बिके आप भी सँग सुत नारी जी ॥
पर धर्म से पग नहीं टारा ॥ कोई० ५ ॥
विद्यादान है सब सुखकारी, बढ़ गुरुकुल से को अधिकारी जी ॥
पाठक तन मन धन क्यों न वारा ॥ कोई० ६ ॥

भजन १८६

टेक–इस काल बली ने हाय, एक दिन सब को खाया है ॥

ज़रा आंखे तो खोलो अभिमानी, क्यों पड़ा बुद्धि पर पानी । मत काम करे शैतानी, समझ मन क्यों गर्वाया है ॥ इस काल० १ ॥

चाहे राजा हो चाहे बलधारी, चाहे निर्बल हो चाहे भिखारी । चले अपनी २ बारी, बार जिस किसी का आया है ॥ इस काल० २ ॥

डाक्टर व वैद्य बेचारे, लुकमान आदि हुये मारे । अकबर से बढ़ कर हारे । मौत का नुसखा न पाया है ॥ इस काल० ३ ॥

चले काल चक्र की आरी, कटती जाय आयु सारी । कुछ मन में समझ अनारी, तेजसिंह ने यह गाया है ॥ इस काल०४॥

भजन १८७

दोहा–चेत चेत नर बावले, समय चलो सब जात ।
काल रह्यो मुँह बाय तोहि, अब कोई दम में खात ॥
टेक–अब तो सुरत सँभाल, काल तेरे शिर पर पहुँचा आय ॥

हुए पहलवान गुणवान और धन वारे।
सब लिये खाय रणधीर वीर व धारे॥
हुए यती सती योगी संन्यासी भारे।
कोई बचे न इस ने सारे शूर संहारे॥

चौपाई।

या जग में जन्म जो आई। सबही लिये काल ने खाई॥
बड़े बड़े योधा बलदाई। याने काहू की न बिसाई॥

शेर।

बांध कर मट्ठी तेरा दुनियां में जब आना हुआ।
आनकर फिर मोह के फन्दे में फंस जाना हुआ॥
धर्म संचय नहि किया नहि ईश गुण गाना हुआ।
जन्म पूंजी हार खाली हाथ फिर जाना हुआ॥

तैंने दुनियां में आई, नहीं कीन्हीं नेक कमाई।
तैंने विषयन में लिपटाई, दिया जन्म अमूल्य गंवाई॥

नहीं तजा कपट अभिमान, अरे नादान, निकल गये प्रान।
ज्ञान बिन इन्हों जन्म गँवाय॥ अब नो० १॥

जो निराकार निर्विकार और अविनाशी।
धर उसका ध्यान जो है घट २ का बासी॥
क्यों वृथा भटकता फिर अयोध्या काशी।
रम रहा तेरे हृदय में सकल सुखराशी॥

चौपाई ।

जैसे अगिन काठ के माहीं । है व्यापक पै दीखत नाहीं ॥
ऐसेहि प्रभु व्यापक सब ठाहीं । सर्व काल दिशि बसत सदाहीं ॥

शेर ।

नेको बद आमाल तेरे देखता सब काल है ।
याद रख हरदम उसे जो न्यायकारी दयाल है ॥
मत किसी पर ज़ुलम कर हर वक्त वह तेरे नाल है ।
ज़ालिमी कर देख तो होता बुरा क्या हाल है ॥

कर दिलमें तनिक विचारा, कहां रावण कंस सिधारा ।
महमूद व नादिर दारा, गये छोड़ माल ज़र सारा ॥

कर धर्म कर्म निष्काम, वही सुखधाम, होत अब शाम ।
धाम सुत करें न कोई सहाय ॥ अब तो० २ ॥

तू कर नाना छल कपट जो द्रव्य कमावे ।
खुश हो २ कर २ प्यार कुटुम्ब सब खावे ॥
वह पाप अन्त में तुझे नरक भुगतावे ।
फिर कुटुम्ब कबीला कोई काम ना आवे ॥

चौपाई ।

जिनके हित तैंने पाप कमाया । सब ही तुझको सौंग दिखाया ।
खोई व्यर्थ मनुज की काया । परमेश्वर का नाम भुलाया ॥

शेर ।

पाय ऐसा जन्म गर शुभ कर्म तैंने नहिं किया ।
सख्त नादानी करी जो खोय विषयों में दिया ॥
मुक्तिका दर छोड़के क्यों दुःखका रास्ता लिया ।
पेट पाला पापसे तन मन दिया तो क्या जिया ॥
जब पकड़ नरक में डाला, दिया ठून हिये में भाला ।
तैं बहुतों का घर घाला, ले उस का एवज़ लाला ॥
लाला के उड़ गये होश, हुये खामोश, करै अफ़सोस । दोष दे कर्मों को पछताय ॥ अब तो० ३ ॥

भज परमेश्वर को चाहे अगर भलाई ।
लौ लगा उसी से प्रान पवन ठहराई ॥
कर सत्य चित्त से भजन शुद्ध हो जाई ।
तब हो प्रभु दर्शन कटे कर्म की काई ॥

चौपाई ।

ईर्षा द्वेष कपट कुटिलाई । काम क्रोध मद मोह बिहाई ॥
सब जीवों के बनो सुखदाई । हिंसा द्रोह सकल बिसराई ॥

शेर ।

चाहता सबका भला उसका भला होगा ज़रूर ।
दिल जलाना और का उसका जला होगा ज़रूर ॥
जो दिया औरों को उस को भी मिला होगा ज़रूर ।
नेको बद का एक दिन फल बरमला होगा ज़रूर ॥

जो है दुनियां का न्याई, वह सब की करे सहाई।
वहां रिशवत लगे न पाई, हो धर्म से सबकी सफाई॥
बलदेव सुमिरि ओंकार, करे तुहिं पार, पतित उद्धार। प्यारे कर ले गो कण्ठ लगाय॥ अब तो० ४॥

क़व्वाली १८८

नर तन को पाके मूरख, खोता फ़जूल क्यों है।
सुत मित्र बंधु दारा, समझे तू किस को प्यारा।
मतलब की है ये दुनियां, रोता फ़जूल क्यों है॥ नर०॥
किस से तू यारी करता, कुर्बान हो हो मरता।
अश्कों से अपने मुँह को, धोता फ़जूल क्यों है॥ नर०॥
यहां यार हैं बहु रंगी, दो दिन के तेरे संगी।
उलफ़त का बीज दिल में बोता खज़ूल क्यों है॥ नर०॥
क्यों बनता है दीवाना, जग है मुसाफ़िर खाना।
बेदार हो बेहूदे, सोता फ़जूल क्यों है॥ नर०॥
बलदेव समझ सौदाई, सुध बुध सभी बिसराई।
रुशवा बुतो के पीछे, होता फ़जूल क्यों है॥ नर०॥

कव्वाली १८९

भाइयो! जगत में आकर, नाहक़ हुआ है जीना।
मुश्किल से अय बुजुर्गो! पाया मनुष का चोला॥
अफ़सोस फिर भी तुमने! कुछ भी धरम न कीना॥ भा०॥

इन्द्रियों के वश में होकर, मनका गुलाम बन कर।
विषयों में फँस के पापी, तन मन व धन है दीना ॥ भा० ॥
आया था किस लिये तू, कुछ भी खबर नहीं है।
बेहोश होरहा है, अय मूर्ख बुद्धि हीना! ॥ भा० ॥
बे मोल तेरा जीवन, क्षण क्षण में जा रहा है।
हा! शोक है तो यह है, शुभ कर्म कुछ न कीना ॥ भा० ॥
अय वासुदेव! उट्टो, ग़फ़लत में क्यों पड़े हो।
समझो सराय दुनियां, यहां पर नशा न पीना ॥ भा० ॥

दादरा १६०

टेक—नर तन पाके उमर क्यों गँवाई।

लखि चौरासी योनि भुगतकर। मुश्किल से यह मनुष देह पाई ॥
नर तन० ॥

बाल अवस्था खेल में खोई। विषयन में बीती तरुणाई ॥
नर तन० ॥

वृद्ध हुआ देह कांपन लागी। करनी सभी थकित होआई ॥
नर तन० ॥

ग्रसित किया रोगों ने आकर। रोवे हाहाकार मचाई ॥
नर तन० ॥

काल आन अब सिर पर गर्जा। काम न देवे एक दवाई ॥
नर तन० ॥

इकला लाद चला बनजारा । छोड़ सकल सुख सम्पति भाई ॥
नर तन० ॥

भाई बन्धु माता सुत नारी । रोते कर सब दत दुहाई ॥
नर तन० ॥

यह शरीर जो सब से प्यारा । जल भुन जाय चितामें भाई ॥
नर तन० ॥

बना संग तैं किस का लीना । धर्म बिना हो कौन सहाई ॥
नर तन० ॥

बांध लई पापों की गठरी । दुनिया से ले चला है बुराई ॥
नर तन० ॥

हाय शोक योंही जीवन खोया । रोव कर मल २ पछाई ॥
नर तन० ॥

जो चाहो तुम जन्मसफल हो । वासुदेव करो नेक कमाई ॥
नर तन० ॥

भजन १६१

दोहा—सदा धर्म करते रहो, जब लग घट में प्रान ।
धर्मशास्त्र में दश लिखे, उसके खास निशान ॥

धृतिःक्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥

टेक—दश चिन्ह धर्म के भाई, महाराज मनु बतलाते ॥
पहले तुम धीरज को धारो, दूजे सब के वचन सहारो।
तीजे मन अपने को मारो, यही उपदेश सुनाते ॥ महा० ॥
चौथे तज चोरी का पेशा, मिटें सकल नर तेरे कलेशा।
रहो पांचवें शुद्ध हमेशा, यों सब ऋषि मुनि गाते ॥ महा० ॥
छठे इन्द्रियां वश में करना, सप्तम चित्त विचार में धरना।
अष्टम विद्या मनमें भरना, जो तुम मनुज कहाते ॥ महा० ॥
नवें सत्य को धारण कीजे, दशवें क्रोध नाश कर दीजे।
प्रभु को सुमिर मुरारी लीजे, क्यों हो जन्म गँवाते ॥ महा० ॥

ग़ज़ल १६२

मचा दी धूम दुनियां में शेर नर हो तो ऐसा हो।
दिखाया सत्य मारग को जो रहबर हो तो ऐसा हो ॥ १ ॥
श्री स्वामी दयनान्द ने जो सब पाखराड को तोड़ा।
विचारो गौर कर भाई तपेश्वर हो तो ऐसा हो ॥ २ ॥
पुरानो और कुरानी क्या किरानी जो कोई आया।
घटाया बहिस से सब को सखुनवर हो तो ऐसा हो ॥ ३ ॥
नहीं मरने से घबराया धर्म सत् जग में फैलाया।
पोल सब खोल दिखलाया सनावर हो तो ऐसा हो ॥ ४ ॥
किया ब्रह्मचर्य का पालन जगतका स्वाद सब त्यागन।
यह फल है वीर्य रक्षाका जो जौहर हो तो ऐसा हो ॥ ५ ॥
जगाया देश भारत को पड़ा सोता था ग़फ़लत में।
गया हुआ धर्म फिर पाया मुक़द्दर हो तो ऐसा हो ॥ ६ ॥

पड़ी सब देशमें हलचल नहीं चलता किसीका छल ।
गई शेखी सभी की ढल तग़ैयुर हो तो ऐसा हो ॥ ७ ॥
जो झूठी मज़हबी बातें दलीलो अक़्ल से बाहर ।
दिखाया खींचकर नक़्शा मुसव्विर हो तो ऐसा हो ॥ ८ ॥
मिटाया सर्व अँधियारा दिवाकर वेद का लाकर ।
बिहारीलाल जो माह मुनव्वर हो तो ऐसा हो ॥ ९ ॥

ग़ज़ल १६३

अग्नी मतान्तरों की, जो यहां पै जल रही थी ।
वैदिक धर्म से उसकी कुदरत बदल रही थी ॥ १ ॥
ज़ालिम हकूमतों की, ताक़त के मेटने को ।
एक कम्पनी ग़रब से, मशरिक़ को चल रही थी ॥ २ ॥
भारत में हर तरफ़ था, छाया हुआ अन्धेरा ।
धीमी सी एक बत्ती, मथुरा में जल रही थी ॥ ३ ॥
माता कौशल्या जी, गुजरात में थी जन्मी ।
मुक्तात्मा एक उसकी, गोदी में पल रही थी ॥ ४ ॥
जिस विधि से यहां गौतम, पातञ्जली पले थे ।
यह आत्मा भी उस ही, सांचे में ढल रही थी ॥ ५ ॥
हिमालय की गुफा वह और नर्मदा के तट पर ।
कर योग उसके चित की वृत्ती सम्भल रही थी ॥ ६ ॥
दुनियां के मोह मद की, जो थीं चटाने भारी ।

क़दमों के उसके नीचे, वह सब फिसल रही थी ॥ ७ ॥
बैराग्य देख उसका, हसरत से आह भर भर ।
दुनियां की कामचेष्टा, कर अपने मल रही थी ॥ ८ ॥
शिक्षा से उस ऋषी की, आगी हुई नसल है ।
सदियों से जो यहां पर, घुटनों से चल रही थी ॥ ९ ॥
विद्या के बल से उसने, ढीली करी वह ताक़त ।
जो हिन्दुओं को चुन २ साबित निगल रही थी ॥१०॥
गो ज़ोर पर यहां थे, अद्वैत बाम मार्गी ।
इनके प्रताप द्वारा, जड़ उनकी गल रही थी ॥११॥
विद्या के बल से उसने, शंका समस्त खोई ।
जो तालिबाने हक़ के, मन में उगल रही थी ॥१२॥
पुरुषार्थ से उसी के, सुख मूल वायु फिर वह ।
चलने लगी यहां जो, सतयुग में चल रही थी ॥१३॥
दुर्गाप्रसाद तू भी था, खुश नसीब इन्सां ।
आर्यसभा की सेवा, जो तुझ को मिल रही थी ॥१४॥

भजन १६४

टेक—क्या अब भी नहीं जागोगे, सूर्य वैदिक निकला भाई ॥

उठो २ गफ़लत को त्यागो, उम्र गुज़र गई अब तो जागो ।
खो बैठे सर्वस्व अभागो, कैसी नींद छाई ॥ क्या० १ ॥

जग जाना इक़बाल तुम्हारा, हा! हा! मिला ख़ाक में सारा ।
कहते सीना फटे हमारा, सुना नहीं जाई ॥ क्या० २ ॥

इष्ट मित्र जिन के सुत नारी, प्राण प्रिया सन्तान तुम्हारी। होती जावे बारी २, यवन और ईसाई ॥ क्या० ३ ॥

आंखें मलकर मुँह धो डालो, सत्य ज्ञान के जल में न्हालो। पुरुषारथ का खड्ग सँभालो, शर्मा समझाई ॥ क्या० ४ ॥

गजल १९५

भलाई कर चलो जग में तुम्हारा भी भला होगा।
किया जो काम नेकी बद वह एक दिन बरमला होगा ॥
सताते हो ग़रीबों को न खाते खौफ़ मालिक का।
कभी कोइ जुल्मगर देखा जो फूला और फला होगा ॥
खुदा के हैं सभी बन्दे बनो मत खून के प्यासे।
छुरी जल्लाद के नीचे तुम्हारा खुद गला होगा ॥
समझ कर जान अपनीसी दुखाओ मत किसीका दिल।
जलायेगा तुम्हें बेशक जो खुद तुमसे जला होगा ॥
फ़रायज़ अपने को हरदम अदा करते रहो फ़ौरन।
मज़ा बलदेव विषयो का तुम्हें एक दिन बला होगा ॥

भजन १९६

बुड्ढे छैला का व्याह रचाया, हा! हा! अविद्या धन्य है तुझे ॥
घोड़ी चढ़िआई, ज़रा सुन लेना भाई।
लाओ भाभी को और काजर गेरन को ॥
जिससे विकसे बुढ़ापे की काया ॥ बुड्ढे० १ ॥

भाभी कहां से आवे, सारी पूतबहू कहलावे।
अशर्फी की दादी को, जल्दी बुलवालो।
उसका भाभी का रिश्ता बताया ॥ बूढ़े० २ ॥
हिलता छैला का सर, कांपे बुढ़िया के कर।
झट से काजल गेरन को, देर हो घोड़ी चढ़न को।
एक आंख में नाखून चुभाया ॥ बूढ़े० ३ ॥
नारी जो २ आई, रहीं हँसी उड़ाई।
कह रहीं सेहरा गावन को, वह उसको वह उसको।
एक चतुरा ने सेहरा यह गाया ॥ बूढ़े० ४ ॥

सेहरा।

चिरंजीवे महाराज मेरा हरियाला बनरा।
मूंछ कटाय के छोटी करलई, दाढ़ी दई मुड़ाय ॥ मे० ॥
तन बन्ने के अतलस का बागा, लटक रही सब खाल ॥ मे० ॥
कमर बन्ने के गुजराती पटका, चले डगमगी चाल ॥ मे० ॥
सर बन्ने के सोने का सेहरा, सर के धौले बाल ॥ मे० ॥
मुख बन्ने के पानों का बीड़ा, जैसे ऊंट चबात ॥ मे० ॥
क्या छबि बरनू मैं मुखड़े की, मुख में नहीं एको दांत ॥ मे० ॥
आठ वर्ष की कन्या कुमारी, बूढ़े को दी दया बिसारी ॥ मे० ॥
विचारी अस्सी बरस के ने, और बूढ़े छैला ने।
रुपया देकर के ब्याह कराया ॥ बूढ़े छैला० ५ ॥
आठवर्ष की रांड़ होजावे, कैसे मित्रों उम्र बितावे।

डाले गर्भ को, फैलावे हिंसा को ।
इन्हीं पापोंने भारत यह डुबाया ॥ बूढ़े छैला० ६ ॥
पाप यहां आये, सब धर्म कर्म गँवाये ।
रामप्रसाद कर ईश्वर को याद ॥
दुखड़ा भारत का कहां लों जाय सुनाया ॥ बूढ़े छैला० ७ ॥

होली १६७

स्वामी दयानन्द भाई, हमें अच्छी होली बताई ।
चंदन धूप कपूर सुगंधित, सकल आर्य गण लाई ।
कुण्ड खोद मण्डप सजवाकर, सुन्दर चौक पुराई ।
होम ठानो सुखदाई ॥ स्वामी० १ ॥

वेद के मन्त्र पढ़े कर स्वाहा, केसर माथे लगाई ।
होतागण घृत आहुति देवें, धूम सुगंधित छाई ।
चहुँदिशि पूरहि जाई ॥ स्वामी० २ ॥

शुद्ध होय जल याही धूम से, जो बरसे क्षिति आई ।
ताहि पान कर होत निरोगी, जीव जगत समुदाई ।
सुफल जीवन को मनाई ॥ स्वामी० ३ ॥

कूड़ा करकट छप्पर छानी, नहीं डारो तुम लाई ।
इस से बदबू जगत में फैले, वायु देत नशाई ।
महारोगन फैलाई ॥ स्वामी० ४ ॥

पूर्वकाल में ऋषि मुनियों ने, इस को होली बताई ।

इनको नित कर मोक्षधाम गये, इतिहासन बहु गाई।
चाहे पढ़ देखो भाई ॥ स्वामी० ५ ॥

अयोध्याप्रसाद विनय करते हैं, सुनिया ध्यान लगाई।
प्रचलित वाममार्ग कृत होली, शीघ्रही देहु बहाई ॥
सभी उलटी दिखलाई ॥ स्वामी० ६ ॥

होली १६८

आर्यों ने ऐसी होली मचाई ॥

चहुँ दिशि से सज्जन सब आये, बैठे समाज बनाई।
गावत वेद तान अति नीकी, ध्यावत यश अगराई।
अगम गति जाकी है भाई ॥ आर्यो० १ ॥

खेलत फाग सुलभ शुचि संयम, सत् पिचकारी बनाई।
प्रेम का रंग है भरि २ मारत, ज्ञान गुलाल सुहाई।
रँगे सब सज्जन आई ॥ आर्यो० २ ॥

जप तप दान गान वेदन को, हिय उत्साह बढ़ाई।
मिलत परस्पर प्रेम से सज्जन, द्रोह कपट बिसराई।
करत हैं जगत भलाई ॥ आर्यो० ३ ॥

विधवा अनाथ विपति गौवों की, तापर दृष्टि चलाई।
करत प्रबन्ध अहर्निश विधिसों, तन मन धन से सदाई।
दुःख निज पर अधिकाई ॥ आर्यो० ४ ॥

सत्य प्रचार सुधार जगत् को, ऐसो फाग सुखदाई।

खेलहु खेलहु परहित कारक, देहु अविद्या नशाई
गणेशी बलि २ जाई ॥ आर्यो० ५ ॥

होली १९९

होली खेलहु समझ करे भाइ, वृथा क्यों धूरि उड़ाई ।
पर सन्ताप ताप अरु तामस, देहु होलिका लगाई ।
वाहि जलाय भस्म कर दीजै, शुद्ध चित्त ह्वै जाई ।
करो कुछ देश भलाई ॥ होली० १ ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह जे, करत सदा कुटिलाई ।
कारो मुख कर इनहिं निकालो, ऐसो स्वांग सुखदाई ।
शोभा जग २ अधिकाई ॥ होली० २ ॥
धीर क्षमा ममता आराधन, अगम ईश श्रुति गाई ।
ताके ध्यान में मतवाले हुये, तन की सुधि बिसराई ।
मद्य ऐसी फलदाई ॥ होली० ३ ॥
ज्ञान ध्यान सनमान सुजन को, रंग सुरंग बनाई ।
प्रेम प्रतीति प्रीति पिचकारी, मारो जिया हुलसाई ।
धूम चहुँ दिशि में छाई ॥ होली० ४ ॥
हे जगदीश अनादि अनूपम, निराधार जगराई ।
होय कृपा अब तेरी गणेशी, भारत विपति नशाई ।
फाग तब होय सदाई ॥ होली० ५ ॥

होली २००

जागो २ हो भाई विपति चहुं दिशि घिर आई ।

सोवत भारत दीन दशा में, तन की सुधि बिसराई।
भारत भानु ने आनि जगायो, उठहु आर्यगण भाई।
अविद्या जगत में छाई ॥ जागो० १ ॥

चौंक पड़े सब इत उत देखत, कपट जाल बहुताई।
विनय करत कर जोड़ २ पुनि शरण शरण जगराई।
करो अब आनि सहाई ॥ जागो० २ ॥

देश हितैषी धीरज दीन्हो, वेदभाष्य दिखलाई।
अब मिलि साज समाज को कीजो, पढ़ो वेद हरषाई।
दशा बिगड़ी बनि जाई ॥ जागो० ३ ॥

पुनि उपदेश सत्य को कीन्हो, सन्ध्यादिक बतलाई।
नियम दिये दश जग उपकारी, जासे देश भलाई।
कुमति अब धोय बहाई ॥ जागो० ४ ॥

देश विनाशक निजहित साधक, बहुतक गाल फुलाई।
अष्टादश पुराण ले दौड़े, ऋषि ने धोय बहाई।
छिपे सब इत उत जाई ॥ जागो० ५ ॥

कर देशाटन देश २ में, विजय कीन्ह सब ठाईं।
मतवादी जे धर्म विदूषक, पोल खोल दिखलाई।
जगत जिन लूट के खाई ॥ जागो० ६ ॥

कर सुधार संसार भरे को, चलि दिये डंका बजाई।
शोक अधिक भारत पै गणेशी, को हमें सत्य सिखाई।
बिना ऐसे ऋषिराई ॥ जागो० ७ ॥

होली २०१

होली खेलत आर्य भाई ॥
सत्य को रंग धर्म पिचकारी, उन्नति अँबिर बनाई।
खेलत हिल मिल वेदप्रचारक, धर्म ध्वजा फहराई।
तिमिर सब जात नशाई ॥ होली० १ ॥
वेद मन्त्र से हवन करत हैं, सुगंधि रही जग छाई।
करि ललाट लेपन केसर को, शोभा बरणि न जाई।
जय ध्वनि बजत बधाई ॥ होली० २ ॥
अतुल प्रीति सब आर्य भ्रातृ की, मिलत हिया लपटाई।
कोटि २ धन्यवाद है तुमको, जो यह वृक्ष लगाई।
जगत को है फलदाई ॥ होली० ३ ॥
खेलत फाग राग वेद ध्वनि, कहत गणेशो बुझाई।
पुलकि गात हरषात आर्य मिलि, खेलो फाग सुखदाई।
रचो यह फाग सदाई ॥ होली० ४ ॥

भजन २०२

शरण प्रभू की आवोरे, शुभ समय मिला है ॥
भ्रातृभाव से मिलो परस्पर, मत विरोध फैलावोरे ॥ शुभ० ॥
ईर्षा द्वेष कपट को त्यागो, सबका भला मनावोरे ॥ शुभ० ॥
मक्र फ़रेब झूठ को त्यागो, सत से चित्त लगावोरे ॥ शुभ० ॥
उदय हुआ है ओ३म् का भानू, आवो दर्शन पावोरे ॥ शुभ० ॥
पान करो इस अमृत रस को, उत्तम पदवी पावोरे ॥ शुभ० ॥

हरि की भक्ति बिना नहीं मुक्ती, दृढ़ विश्वास जमावोरे ॥ शुभ० ॥
मानुषजन्म अमूल्य पायकर, वृथा न इसे गँवावोरे ॥ शुभ० ॥
करलो एक हरी का सुमिरण, अन्त को नहिं पछतावोरे ॥ शुभ० ॥
धन्य दयामय जो सबको पाले, मत उसको बिसरावोरे ॥ शुभ० ॥
छोटे बड़े सब मिल के खुशी से, प्रेम भाव दर्शावोरे ॥ शुभ० ॥

भजन २०३

धन्य वीर वर पतद्देशी, मिलकर दशा सुधार रहे हैं। टेक,

सामाजिक बल बढ़ा रहे हैं, सन्तानों को पढ़ा रहे हैं।
गृहोपासना में चित देकर, सबका भला विचार रहे हैं ॥
धन्य वीर वर पतद्देशी० ॥१॥

कला कुशलता दिखा रहे हैं, नीति-निपुणता सिखा रहे हैं।
मानों मातृ-भूमि के ऊपर, अपना सर्वसु वार रहे हैं ॥
धन्य वीर वर पतद्देशी० ॥२॥

'कर्म प्रधान विश्व कर राखा, जो जस करे सो तस फल चाखा'।
रामायण में इसको पढ़कर, अघ समूह को जार रहे हैं ॥
धन्य वीर वर पतद्देशी० ॥३॥

'जासु प्राण-प्रिय प्रजा दुखारी, सो नृप अवशि नर्क अधिकारी'।
यों कह कर कवि कर्ण सुवक्ता, शिर का भार उतार रहे हैं ॥
धन्य वीर वर पतद्देशी० ॥४॥

भजन २०४

अबतो अबुध आलसी जागो।
उदित भयो विज्ञान दिवाकर मन्द मोह तम भागो।
डूबगयो दुर्जन तारागण वृन्द विषय रस पागो ॥ १ ॥
साहस सर में कर्म कमल वन अब फिर फूलन लागो।
प्रेम पराग हेतु सज्जन कुल भृंग यूथ अनुरागो ॥ २ ॥
सुख सम्पति चकवा चकई न मिल वियोग दुखत्यागो।
जाय दुरो आलस उजाड़ में दैव उलूक अभागो ॥ ३ ॥
सकल कला कौशल चिड़ियों न राग करण प्रिय रागो।
हिल मिल गैल गहो उद्यम की पीछो तको न आगो ॥४॥

आरती २०५

जय जगदीश हरे,
भक्त जनन के संकट, क्षण में दूर करे ॥ १ ॥
जो ध्यावे फल पावे, दुख विनशे मनका।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तनका ॥ २ ॥
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी।
तुम बिन और न कोई, आश करूं जिसकी ॥ ३ ॥
तुम पूरण परमातम, तुम अन्तर्यामी।
परब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी ॥ ४ ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्त्ता।

मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्त्ता ॥ ५ ॥
तुम हो एक अगोचर, सब के प्राणपती ।
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमती ॥ ६ ॥
दीनबन्धु दुख हर्त्ता, तुम रक्षक मेरे ।
करुणाहस्त बढ़ाओ, शरण पड़ा तेरे ॥ ७ ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सुजनों की सेवा ॥ ८ ॥

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

——:*०*:——



भागवत् समीक्षा ।≈)
नियोग निर्णय ≈)
ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक,
माण्डूक्य उपनिषद् १)
शान्ता ॥)
लक्ष्मी ।)
उपदेशमंजरी नागरी यानी
श्री स्वामी दयानन्द जी के
पूनावाले १५ व्याख्यान ॥)
पुरातत्त्वप्रकाश ३ भा० १॥।–)
आर्य्य धर्मेन्द्र जीवन १॥)
सरस्वतीन्द्र जीवन १≈)
स्त्री सुबोधनी पांचों भाग १।)
तथा सजिल्द १॥)
सीताचरित्र पांचों भाग १॥।≈)
तथा उर्दू ४ भाग १।)
नारायणी शिक्षा १।)
तथा सजिल्द १॥)
* नारीधर्मविचार प्र०भा० ॥)
तथा द्वितीय भाग १)
भारत वर्ष की वीर तथा
विदुषी स्त्रियों के जीवन
चरित्र प्रथम भाग ॥)
तथा द्वितीय भाग =)॥
स्त्रीज्ञान प्रकाश =)॥
* स्त्रीज्ञानमाला २ भाग –)॥
मनोहर सच्ची कहानियां ॥)

सच्ची देवियां ।≈)
वीर मातायें ॥≡)
स्त्री हितोपदेश ।≈)
* काव्य कुसुमोद्यान ॥)
* संगीतरत्नप्रकाश
प्रथम भाग ना० ≡) उर्दू ≈)
द्वितीय भाग ना० –)॥ उर्दू –)॥
तृतीय भा० ना० –)॥ उर्दू –)॥
चतुर्थ भा०ना० –)॥ उर्दू –)॥
पंचम भा० ना० ≈)। उर्दू ≈)।
पांचो भाग सजिल्द ॥।)
* भजनपचासा नागरी –)
मनआनन्दभजनावली ≈)
* स्वस्तिवाचनशान्ति पाठ
मन्त्र भाषानुवाद सहित –)
सत्यनारायण की असली
कथा –)॥
वीर्य्यरक्षा ≈)
गर्भाधान विधि ≈)
वेश्यानाटक नागरी ≡)
सर्जीवनबूटी आल्हा ना० ।)
पंचयज्ञपद्धति)। सौ प्रति १)
ब्रह्मकुलवर्तमान दशा दर्पण
मुसद्दस)। सौ प्रति १)
सत्य दर्पण ।–)
मुहम्मद जीवन चरित्र ना० ॥≈)
संध्या उर्दू)। सौ प्रति १)

॥ ओ३म् ॥

* मोहिनि-मन्त्र-प्रकाश *

अर्थात्

* द्वितीय भाग *

[illegible]

संग्रहकर्त्ता और प्रकाशक

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

नवमवार	सन् १९१३	मूल्य
८०००		-)॥

❋ सूचीपत्र संगीतरत्नप्रकाश ❋

पूर्वार्द्ध द्वितीय भाग ।



* ओ३म् *

संगीत-रत्न-प्रकाश ।

पूर्वार्द्ध

* द्वितीय-भाग *

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम् । कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥ यजु० अ० ४० मं० ८ ॥

भजन १

किया जिसने पैदा जहान है, वह महान से भी महान है ।
न वह बाल वृद्ध जवान है, वह प्राण का भी प्राण है ॥१॥
न जन्म धरे न वह दुख भरे, न हो रोगी न वह कभी मरे ।
उसे ढूंढो जहां वह वहीं मिले, न रहने का खास मकान है ॥२॥
कोई उस का रंग न रूप है, वह सदा ही ज्ञान स्वरूप है ।
वही एक सब से अनूप है, नहि कोई उस के समान है ॥३॥
वह अजर अमर और है अभेद, वह पूर्ण ब्रह्म और है अछेद ।
उस का न कहा जावे विभेद, वह हुआ न अब तक भान है ॥४॥

नहिं खाली उससे कोई ठौर, कर खूब देखा हम ने गौर।
वह है सभी के सिर का मौर, उस तीनो काल का ज्ञान है ॥५॥
वह हर एक ऋतु में है रमा, मन को न तू उस से भ्रमा।
उस में ही निज को ले जमा, वही सारे विश्व की जानहै ॥६॥

भजन २

तेरी अज अविकार, महिमा अपार, नहिं पाया पार, गये कितने हार, वर बुद्धिमान कर कर विचार।

तू है अजर अमर, तुझे किसी का न डर, सब से बरतर, तू है ईश्वर, सर्व विश्व का पूरण अधार ॥ १ ॥

सर्व शक्तिमान, करुणा निधान, सब को हर आन, तू ही देता दान, हर वक्त खुला तेरा भण्डार ॥ २ ॥

तू है शाहों का शाह, सब तेरे ग-ा, अदना आला, तेरे दरपे खड़ा, बरणी न जाय लीला अपार ॥ ३ ॥

तू आनन्द घन, तू पतित पावन, ले तेरी शरण, सब तन मन धन, करे खन्नादास तुझ पर निसार ॥ ४ ॥

क़व्वाली ग़ज़ल ३

मशहूर हो रहा है खलकत में नाम तेरा ॥
तू है सभी का अफसर, साहिब ग़रीब परवर।
मामूर हो रहा है, कुदरत कलाम तेरा ॥१॥
जल थल के जीव सारे, सूरज व चांद तारे।
मशकूर हो रहा है, आलम तमाम तेरा ॥२॥

आलम में तूही तू है, गुल में ब मिस्ल बू है।
भरपूर हो रहा है, सब में मुक़ाम तेरा ॥३॥
सुन ले पुकार मेरी, करता है अब क्यों देरी।
मजबूर हो रहा है, ग़म से गुलाम तेरा ॥४॥
करुणा निधान तेरा, बलदेव जैसा चेरा।
मखमूर हो रहा है, पीकर के जाम तेरा ॥५॥

क़व्वाली ग़ज़ल ४

जलवा दिखा रहा है मुझ को ज़हूर तेरा ॥
व्यापक है तू जहां में, हाज़िर हर एक जां में।
सब में समा रहा है, निर्मल है नूर तेरा ॥ १ ॥
रचना है तेरी सुन्दर, बलिहारी जिस पै मुनिवर।
अमृत चखा रहा है, मुझ को सरूर तेरा ॥ २ ॥
तेरा ही नाम प्यारा, जपता जहान सारा।
गुण तेरे गा रहा है, जन है ज़रूर तेरा ॥ ३ ॥
बलदेव दुःख दल से, बचने को नर्क थल से।
ख़िदमत में आ रहा है, बन्दा हुज़ूर तेरा ॥ ४ ॥

ग़ज़ल ५

तेरा नूर सब में समाया हुआ है।
कुल आलम तेरा ही बनाया हुआ है ॥ १ ॥
रमा है तू हर गुल में मानिन्द बू के।
जगत् में तुही जगमगाया हुआ है ॥ २ ॥

चमकते हैं दुनिया में जो चांद सूरज।
उजियाला तुझ से ही पाया हुआ है ॥ ३ ॥
बदो नेक आमाल देखे तू सब के।
नहीं छिपता तुझ से छिपाया हुआ है ॥ ४ ॥
सज़ा ओ जज़ा तूही देता है सब को।
भरेगा जो जिसने कमाया हुआ है ॥ ५ ॥
शिफ़ारिश न झूठी चलेगी किसी की।
यह वेदों में सब को बताया हुआ है ॥ ६ ॥
तू है सब का मालिक ग़रीबों का परवर।
जहां कुल तेरा ही बसाया हुआ है ॥ ७ ॥
तेरी सिफ्ते क़ुदरत पै क़ुर्बान हूँ मैं।
दिलो जां तुझ से लड़ाया हुआ है ॥ ८ ॥
ख़बर लेलो बलदेव की अब तो साहब।
तुम्हारी ही खिदमत में आया हुआ है ॥ ९ ॥

भजन ६

परम पिता के प्रीति से यश गाओ सदा।

परम पिता के जग रचता के प्रीति से यश गाओ सदा। हम को इंसान किया, अशरफ़े जहान किया, पैदा जो सामान किया, सब हमको प्रदान किया। है हैरानी, पर यह प्रानी, कर नादानी कुछ नहिं मानी, रह हक्कानी छोड़। ऐसी मत कर ओ नादान, प्रति दिन अति प्रीति से चित धर गाओ ॥ सदा० ॥

दो०–वह दाता करतार है, सब का पालन हार।
पर हम कुछ नहिं जानते, हैं मति हीन गँवार॥
दिल में विचार करो, पर उपकार करो, ईश्वर से प्यार करो, खन्ने दिल निसार करो॥ गाओ सदा०॥

ग़ज़ल ७

हुई है हालत बुरी हमारी बचाओ स्वामिन् बचाओ स्वामिन्
कुकर्म हमने किये हैं भारी, बचाओ स्वामिन् बचाओ स्वामिन्
न ध्यान हमको भले का आया, वृथाही सारा समय गँवाया।
जगत् में फँसकर तुम्हें भुलाया किया जो हमने वह आगे आया॥
इसीसे धुनते हैं सरको भारी, बचाओ स्वामिन् बचाओ स्वामिन्॥१॥
न कर्म कोई भला किया है, सर्वस्व अपना लुटा दिया है।
किसी की कुछभी नहीं खता है, कुसूर अपनाही सर्वथा है॥
तुम्हारे आगे है शर्मसारी, बचाओ स्वामिन् बचाओ स्वामिन्॥२॥
न यत्न भी तो किया उमर भर, भजाभी यकदम न तुमको ईश्वर।
हुई भलाई न नेक जिस पर, कि हमको होवे फ़ख़ तरुब्बुर॥
दया तुम्हारीपै आसा भारी, बचाओ स्वामिन् बचाओ स्वामिन्॥३॥
किये पै अपने नज़र जो डालें, तो शर्मसारी से मुँह छिपालें।
सदा से उलटी चली हैं चालें, बताओ कैसे सुनम पालें॥
जीती बाज़ी सभी है हारे, बचाओ स्वामिन् बचाओ स्वामिन्॥४॥
लगा रखी है तुम्हीं से आशा, पिलाओ अमृत मिटे निराशा।
न कोई तुमसे मिला है बेहतर, हुआ ये हमको अभी है ज़ाहिर॥
करें परस्तिश सदा तुम्हारी, बचाओ स्वामिन् बचाओ स्वामिन्॥५॥

गज़ल ८

हुये हैं अपराध हमसे भारी, दशा सुधारो हमारी भगवन्।
अजब तरह की है शर्मसारी, दशा सुधारो हमारी भगवन्॥
बुरे हैं आमाल जिस क़दर हैं, खराब अफ़आल सर बसर हैं।
ज़मीम है आदतें हमारी, दशा सुधारो० १
सितम है खिफ़्फ़त व रंज व निदामत, निपटही रुसवाई व ख़िज़ालत।
है अपने हाथों यह अपनी ख़्वारी, दशा सुधारो० २
कभी हैं गिर्जा में हम भटकते, कभी हैं मसजिद में सर पटकते।
बने हैं मन्दिर में गर पुजारी, दशा सुधारो० ३
दया बिसारी व न्याय छोड़ा, नियम जो धारण किया वह तोड़ा।
हुये हैं सब नेकियों से आरी, दशा सुधारो० ४
हैं बन्दे हम नफ़्से परवरी के, गुलाम है हुस्ने ज़ाहरी के।
हैं ग़फ़लते बातिनों में तारी, दशा सुधारो० ५
कभी हैं देते किसी को धोका, नहीं हृदय को बदी से रोका।
हिमाक़तों ने है अक़्ल मारी, दशा सुधारो० ६
शआर बद हमको ऐसा भाया, कि अपना कर्त्तव्य तक भुलाया।
न ज़िक्र हक़ है न हम्द बारी, दशा सुधारो० ७
प्रभू तुम्हीं से विनय है अबतो, शरण में अपनी क़बूलो अबतो।
रहें सुनाते क्या आहो ज़ारी, दशा सुधारो० ८

गज़ल ९

बहुत आश तुझसे लगाई हुई है।
न क्यों मेरी अब तक सुनाई हुई है॥

सुना था कि तुमने बहुत पापी तारे।
जभी से मैंने लौ लगाई हुई है॥
ग़रीबन निवाजीकी सुनकरके शुहरत।
तबीयत मेरी तुझपै आई हुई है॥
ज़हूरा है प्यारे तेरा कुल जहां में।
तेरी ज्योति घट घट समाई हुई है॥
तू साहब है सबका व नाचीज़ हूँ मैं।
शरण ली तो मैं, क्या बुराई हुई है॥
किये पतित उद्धार तुमने हज़ारों।
मेरी बार क्यों नींद आई हुई है॥
तेरे दरपै बल्देव अबतो पड़ा है।
कहो नाथ क्यों देर लाई हुई है॥

भजन १०

मेरी सुनियो नाथ पुकार, सबके हितू कहाने वाले।
यहां थी पहले धर्म बहार, अबही सब ने हिम्मत हार
होगा तुमसे ईश सुधार, सबके धीर बँधाने वाले १
पहले यहां पर थे ब्रह्मचारी, उनकी जगह हुये व्यभिचारी
वेश्या लगतीं जिनको प्यारी, ऐसे पाप कमाने वाले २
है फिर तुमसे ईश पुकार, नैया करो हमारी पार
यह तो डोले है मँझधार, बेड़ा पार लगाने वाले ३
कहता रामप्रसाद है टेर, मेरी दशा लीजिये हेर
नेक न होवे इस में देर, तुमने बड़े २ काज सँभाले ४

भजन ११

एजी प्रभु पार उतारो, धर्म की नाव पड़ी मँझधार।
मतवादी ही मगरमच्छ हैं, रहे जो टक्कर मार॥ ध०१॥
अन्धकार इंजील कुरां का, सूझे वार न पार।
पौराणिक चट्टान राह में, पाप हैं भाटा ज्वार॥ ध०२॥
मज़ी दशा की आंधी आई, झूठ की बरस धार।
विषय भोग का जल चढ़ आया, किश्ती डूबन हार॥ ध०३॥
कर से छूट गई श्रुति बल्ली, कैसे होवें पार।
सत्य का सूर्य घटा में छुप गया, छाया है अँधकार॥ ध०४॥
ब्राह्मण जो मल्लाह थे इसके, सो गये पैर पसार।
विनय यही बाबू की ईश्वर, करो वेगि उद्धार॥ ध०५॥

भजन १२

तुमहीं अब नाथ उबारो, भारत दुखसागर में डूबता।
अति आरत भारत नर नारी, कहां लग सहें विपति अति भारी।
देख रहे अब ओर तुम्हारी, हितू न कोई सूझता॥ तुम० १॥
दशा भई है दीन हमारी, क्षमा करो सब चूक बिसारी।
तुम सर्वज्ञ सकल दुखहारी, करो क्षमा की पूरता॥ तुम० २॥
भारत सुतन फूट फल खाया, याते दुसह रोग बढ़ि आया।
बढ़त जात नहिं घटत घटाया, हठधर्मी अरु मूढ़ता॥ तुम ३॥
जो जो कुछ हम यतन विचारे, झूठे पड़े मनोरथ सारे।
तभी तुम्हारी शरण सिधारे, भूल गये निज शूरता॥ तुम० ४॥

भारत की अब दशा सुधारो, करुणामय करुणा कर डारो।
सब प्रकार बलदेव तुम्हारो, क्षमिये इसकी क्रूरता ॥ तुम० ५ ॥

ग़ज़ल १३

तेरी शरण में आन के सर को झुकाते हैं।
ईश्वर तुझी को जान के आनन्द पाते हैं॥
दुनियां में तुझ से ज्यादा कोई दीखता नहीं।
सब से हटा के दिल को तुझी से लगाते हैं॥
मुद्दत हुई भटकते हुए खाक छानते।
दे ज्ञान हमको तुझ पै हम विश्वास लाते हैं॥
माता पिता अजीज़ो अक़ारिब कोई नहीं।
यह हमने खूब जान लिया झूंठे नाते हैं॥
अफ़सोस का मुक़ाम है हम सोचते नहीं।
इकजाई तुझ को मान के क़ाबा में जाते हैं॥
मूरखपने से लोभ के फन्दे में आन कर।
तुझ को नचा के रास में पैसे उघाते हैं॥
शर्मा ज़मीं क पर्दे में करदो यह मुश्तहर।
वैदिक धरम को छोड़ के हम दुख उठाते हैं॥

ग़ज़ल १४

ईश्वर को छोड़ और से क्यों दिल लगायेंगे।
ईश्वर परस्त होके क्यों काबा में जायेंगे॥
माने हैं उसकी ज़ातको जब वाहिदहूलाशरीक।

हम साथ मुहम्मद को न कलमा में लायेंगे ॥
अफ़सोस का मुक़ाम है हम सोचते नहीं।
इनसां परस्त होके क्या इनसां कहायेंगे ॥
इंजील और कुरान का ज़रिया नहीं बिहतर।
वैदिक धरम को मान कर ईश्वर को पायेंगे ॥
लेवेंगे काम अक़्ल से जब हर कसो नाक़िस।
शर्मा उधर से छोड़ कर इधर को आयेंगे ॥

ग़ज़ल १५

आप में जब तक कि कोई ईश को पाता नहीं।
मंज़िले मक़सूद तक हरगिज़ क़दम जाता नहीं ॥
ईसवी वो मूसवी हैं सब जिहालत के गढ़े।
धर्म वैदिक के विना मुक्ती कोई पता नहीं ॥
लाख जायें तीर्थों में लाख हज्जों में फिरे।
ब्रह्म को जानें न जब तक ज्ञान तो आता नहीं ॥
क्यों लगा कर भोग बुत को उम्र खोवें रायगां।
साफ़ ज़ाहिर है कि पत्थर पूड़ियां खाता नहीं ॥
शीतला बच्चों को जो कि मारती है जान से।
यह हक़ीक़त में तुम्हारी दोस्त माता नहीं ॥
ख़्वाहिशों में हूर गिलमों को किये ईमां खराब।
हैं मुक़ामे हैफ़ ज़ाहिद दिल में शर्माता नहीं ॥
कुँवारी लड़की के तवल्लुद हज़रते ईसा हुए।
लाख समझाओ मगर यह ध्यान में आता नहीं ॥

ऐसे भी इस देश में पैदा हुये हैं आदमी।
जो यह कहते हैं कोई कर्मों का फल दाता नहीं ॥
जब कि सारे मज़हबों को देखता हूं गौर से।
धर्म वैदिक के सिवा शर्मा कोई भाता नहीं ॥

भजन १६

उसके जीवन पर धूल है, जिन ओ३म् का नाम लिया ना।
तैंने नाम रटा किस किसका, बतला फल पाया क्या इसका।
तेज चमकता है यह जिसका, सब का आदी मूल है ॥
उसका तो नाम लिया ना ॥ जिन ओ३म्० १ ॥
राम कृष्ण राधा और सीता, रटने रटते जीवन बीता।
सफल हुआ नहिं मन का चीता, समझ यह तेरी भूल है ॥
अमृत रस ज़रा पिया ना ॥ जिन ओ३म्० २ ॥
मनु अध्याय दूसरा भाई, इक्यासी से चित्त लगाई।
पढ़ो श्लोक जहां ओं बड़ाई, जो कि वेद अनुकूल है ॥
टुक तैंने ध्यान दिया ना ॥ जिन ओ३म्० ३ ॥
ईशोपनिषद् यजु का लीजे, ध्यान मन्त्र पन्द्रह पर दीजे।
फिर तो सुमिरन ओं का कीजे, मिटैं तेरे दुख शूल हैं ॥
शर्मा बिन ओं जिया ना ॥ जिन ओ३म्० ४ ॥

भजन १७

ईश्वर करो दूर हमारी, सब बुरी वासना मनकी।
यह चंचल पापी नहिं रुकता, ज्ञान ध्यान की ओर न झुकता।

तुझसे हा ! फिरता है लुकता, बड़ा दुष्ट है भारी ॥
कुछ भय नहीं वेद वचन की ॥ सब बुरी बासना० १ ॥
संध्या करने में नहिं लगता, कर्म धर्म से कोसों भगता।
विषय भोग में दूना जमता, खोई आयू सारी ॥
इच्छा नहीं करी भजन की ॥ सब बुरी बासना० २ ॥
अनित्य वस्तू से हित कीना, योग आदि का नाम न लीना।
ज़हर पिया अमृत तज दीना, माना नहीं अनारी ॥
रही सदा लालसा धन की ॥ सब बुरी बासना० ३ ॥
कभी नहीं तेरा गुण गाया, राग द्वेष में समय गँवाया।
उच्च दशा से मुझे गिराया, अब है शरण मुरारी ॥
काटो बेड़ी बन्धन की ॥ सब बुरी बासना० ४ ॥

भजन १८

दोहा–भाई तू जो लोक में, चाहै निज कल्याण।
तो भज उसको प्रेम से, जो तुझ में रमभाण ॥
टेक–प्राणी जप ईश्वर का नाम, किस ग़फ़लत में तू सोवे।
चलना है रहना न यहां पर, क्यों सोया होकर तू बेडर।
काल का धौंसा बजै शीश पर, मत होना बदनाम ॥
करले जो कुछ भी होवे ॥ किस ग़फ़लत० १ ॥
विषय भोग में समय गँवाया, नहीं ध्यान ईश्वर का लाया।
काल ने जिसदम आन दबाया, कोई न आवे काम ॥
कर मल २ के फिर रोवे ॥ किस ग़फ़लत० २ ॥
करके पाप तू द्रव्य कमावे, कुटुम सभी खुश होकर खावे।

सज़ा अकेला तूही पावे, अक़ल हुई क्यों ख़ाम ॥
अनमोल समय को खोवे ॥ किस ग़फ़लत० ३ ॥
आलस तज भक्ती कर प्यारे, क्यों तू अपना जन्म बिगारे ।
शङ्कर मनको क्यों नहिं मारे, करके प्राणायाम ॥
आनन्द तभी कुछ होवे ॥ किस ग़फ़लत० ४ ॥

ग़ज़ल १६

जगदीश ! शान्ति शीलता मुझ में बढ़ाइये ।
अपनी कृपा की पूर्णता कर यों दिखाइये ॥
होकरके साक्षात् मेरे मन में आइये ।
और आके यहां फिर कभी बाहर न जाइये ॥
अन्तःकरण को ज्ञान से भरपूर कीजिये ।
सब भाँति से अज्ञानता मेरी मिटाइये ॥
लौलीन आपमें रहे भागा फिरे न मन ।
इसके लिये विवेक का पहरा बिठाइये ॥
दुनियां के जमघटों से अलग करके रातदिन ।
अपनाही प्रेम मन में मेरे खुद बढ़ाइये ॥
बेखुद मुझे हमेशा रखे आपकी लगन ।
प्याला मुझे निज प्रेम का आकर पिलाइये ॥
भूला फिरूं हूं खाता हूं पग २ पै ठोकरें ।
जल्दी से मुझको रास्ता सीधा बताइये ॥
अनुकूल सारी ज़िन्दगी अपनी बनाऊं मैं ।
अदृकाम वेद कानों में मेरे सुनाइये ॥

भारी प्रलोभनों ने है घेरा हुआ मुझे।
निष्कर्म के आधिक्य से बरियत कराइये ॥
पापों की वासना से मेरे मन में इन दिनों।
फैली हुई अनुताप मय अगिनी बुझाइये ॥
भिक्षा में मांगता हूं तेरे दर पै प्रेम से।
हृदभूमि में आनन्द की गंगा बहाइये ॥
बस आप का भरोसा है हूं आपकी शरण।
जीवन मरण के रोग से मुझको बचाइये ॥
केवल है प्राप्ति आपकी करना सुखों का हेतु।
इस कार्य की शुभ कामना पैदा कराइये ॥

भजन २०

मुझे भवसागर से लीजिये, करुणा निधि वेगि उबारी।
बीच भँवर में पड़ी नाव है, कैसे निकले नहीं ताब है।
मिटगया मेरा सभी दाव है, कर निस्तारा दीजिये ॥
विपता है सिर पै भारी ॥ करुणा निधि० १ ॥
अलख निरंजन हे अविनाशी, पार ब्रह्म घट २ के बासी।
सकल सृष्टि कर्त्ता सुखराशी, भारी करुणा कीजिये ॥
सुधबुध खोदी है सारी ॥ करुणा निधि० २ ॥
हमने बहुतक कष्ट उठाया, नहीं कभी किंचित् सुखपाया।
अबतो तुम से ध्यान लगाया, अपने जान पसीजिये ॥
करते हैं भक्ति तुम्हारी ॥ करुणा निधि० ३ ॥

दीनों को तुम पार लगाते, करुणा का नहिं भाव मिटाते।
सोहन लाल सदा गुण गाते, पार हमें भी कीजिये॥
हम दीनों की है बारी॥ करुणा निधि० ४॥

भजन २१

प्रभु रक्षक मेरा, प्रभु रक्षक मेरा, मुझको सदा है सहारा तेरा।
जल थल में तूही व्यापक है हे प्रभु सर्वाधार।
ऋषि मुनि ज्ञानी ध्यानी भी तो पावें न तेरापार॥ प्रभु० १॥
अगम अथाह तुही सर्वोत्तम जग का पालन हार।
आदि अन्त तेरा नहिं स्वामी तुही करे संहार॥ प्रभु० २॥
मूर्ख लोग तेरा बतलावें जग होना औतार।
कहां से आवे सब में है जब छोड़ा हाय विचार॥ प्रभु० ३॥
तेरी सत्ता सब में फैली रचना है संसार।
शरण रहूँ मैं तेरी स्वामी जल्दी से दे तार॥ प्रभु० ४॥
कर्त्ता धर्त्ता जीव मात्र का तुझ को कर स्वीकार।
पाठक उर आनन्द मनाता सहित कुटुँब परिवार॥ प्रभु० ५॥

भजन २२

जगत् पिता हम तेरी ही नित आशा करें।
जगत् पिता हम अज्ञानी जन तेरी ही नित आशा करें॥
तूने अपना ज्ञान दिया, सूर्य द्युतिमान दिया।
आवश्यक सामान दिया, बुद्धि का फिर दान दिया॥
मट्टी पानी वायु अग्नी, लाखों प्राणी हैं लासानी।

ज्ञानी ध्यानी जान, सदा करते तेरा ध्यान, हम निर्गुण औगुन वारे तेरी शरण परें ॥ जगत् पि० १ ॥
दोहा—तू घट घट के बीच है, व्यापक सर्वाधार।
पै हम मूढ़ कुबुद्धि वश, तुझ को रहे विसार ॥
सुधार, पालन हार ! तू निर्धार ! दुःखटार ! हो संसार पार, पाठक जन आनन्द भरें ॥ जगत् पि० २ ॥

ग़ज़ल २३

अब तो प्रभु दया करो आया हूं मैं तेरी शरण।
तुमहीं हो सबके आत्मा क्लेशों को टारो दुःख हरण ॥
भूला हुआ फिरा बहुत मथुरा प्रयाग देखता।
तूही बसा है घट मेरे तुझ से मेरी लगी लगन ॥
मुझ को मिले जो पादड़ी ईसू बताया सुत तेरा।
कैसे भरोसा होसके तुम हो प्रभू अनिर्वचन ॥
ऐसे ही मौलवी मिले कहते रसूल मित्र है।
सोचा कि न्यायकारी हो विषयों में क्यो करे रमन ॥
जैनी कबीर पन्थिये लाखों ने घेरा था मुझे।
तेरी कृपा से पै प्रभू मेरे कटे वे सब विघन ॥
तुमहीं तो न्यायकारी हो तुमहो अजर अमर अभय।
पाठक अधम कृतघ्न है बनता न इस से कुछ यतन ॥

ग़ज़ल २४

दया करो जन पै मेरे स्वामी, तुम्हारा हमने लिया सहारा।

तुम्हीं हो कर्त्ता तुम्हीं हो भर्त्ता, तुम्हीं हो रक्षक हे सर्वाधारा ॥
हो सबके घटमें बसने वाले, न कोई तुम से अलहदा किंचित् ।
न होगा वह जन कभी सुखारी, कि जिसने तुमको नहीं विचारा ॥
हे सच्चिदानन्द ! सर्व सुखमय, ये सारी खलक़त रचाई तुमने ।
हमारी हालत सुधारो स्वामी, जगत् के भ्रम में तुम्हें बिसारा ॥
हे न्यायकारी ! हे ज्ञान सिन्धो ! पिता हमारे हे प्राण दाता ।
विचारा अच्छी तरह तुम्हारा, न कोई बेटा न कोई दारा ॥
अजर अमर हो अभय अनूपम, तथा अगोचर अनादि अविचल ।
नियम में स्थिर हैं सूर्य पृथ्वी, आकाश के लोक चन्द्र तारा ॥
तुम्हारी सत्ता बड़ी अनोखी, कथा हम से जन उस का पार पावें ।
ऋषी ऋषीश्वर मुनी मुनीश्वर, बनाते पाके समाधि द्वारा ॥
है इच्छा पाठक की ऐ प्रभू जी, तुम्हें न दिल से कभी बिसारें ।
रहें भलाई में नित्य तत्पर, लिया है आश्रय तभी तुम्हारा ॥

भजन २५

सत्ता तुम्हारी बुद्धि हमारी ये क्या विचारी पाती है ।
हे न्यायकारी ! हे निर्विकारी ! ये आयू सारी जाती है ॥
आगम अपारी रचन तिहारी आत्म हमारी भाती है ।
तुही प्रभु अब अपनी दया कर ज्ञान दे हमको तिमिर मिटाकर ।
मोह घटा को शीघ्र हटा यह क्रोध घटा दुख दाई बटा ॥
है लोभ डटा तुझे नहीं रटा जिससे पांव प्रकाशी छटा १ सत्ता

भजन २६

जीना दिन चार कारे मन मूर्ख फिरे मस्ताना ।

मन्दिर महिल अटारी बँगले नक़दी माल खज़ाना ।
जिस दिन कूंच करेगा मूरख सब कुछ हो बेगाना ॥ जी० १ ॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी बन बैठा धनवान ।
साथ न जावे फूटी कौड़ी निकल जायँ जब प्रान ॥ जी० २ ॥
अपने आप को बड़ा जान कर क्यों करता अभिमान ।
तेरे जैसे लाखों चले गये तू किस का महिमान ॥ जी० ३ ॥
राम गये और रावण चले गये बाली अरु हनुमान ।
राव युधिष्ठिर दुर्योधन और भीमसेन बलवान ॥ जी० ४ ॥
मान ले शिक्षा खन्नादास की जो चाहे कल्यान ।
परमारथ और नित्य कर्म कर, दे दीनों को दान ॥ जी० ५ ॥

दादरा २७

कर्मों का फल पाना होगा ।

क्यों न अरे तू चेत में आवे, सभी ठाठ तज जाना होगा ॥१॥
विषय भोग से सभी तरह बच, बचा न तो दुख पाना होगा ॥२॥
अन्त समय को ऐ मन मूरख, जंगल तेरा ठिकाना होगा ॥३॥
कुछ इस जग में धर्म्म कमाले, साथ उसे ले जाना होगा ॥४॥
जैसा जैसा कर्म करेगा, वैसा ही फल पाना होगा ॥५॥
अब तो चेत तू मनुआ मूरख, अन्त काल पछताना होगा ॥६॥

दादरा २८

अब तो त्यागो तनक नादानी ॥

घूमि घूमि चौरासी लाख में, बहुत खाक दुनियां में छानी ॥अ०॥

अगणित रोग भोग बहु भोगे, तहूँ तनक तृष्णा न बुझानी ॥अ०॥
कबहूँ बने श्वान कबहूँ शूकर, कबहूं रंक राजा और रानी ॥अ०॥
जन्मत मरत बहुत दिन बीते, अबहूं न छोड़ी समझ शैतानी॥अ॥
अबकी बार बलदेव जो चूके, हुइहै पीछे बहुत हैरानी ॥अ०॥

दादरा २६

अब नहिं सोवो जगो मेरे भाई ॥

आंख खोल संसार को देखो, समय दशा पै नज़र घुमाई ॥१॥
बदलत रंग ढंग छिन २ में, देह दशा देखो चित लाई ॥२॥
पहले देखो दया ईश्वर कीं, फिर देखो ज़रा अपनी कमाई ॥३॥
फिर कुछ शर्म करो निज मनमें, काहे करावत लोग हँसाई ॥४॥
होश करो बलदेव तनक अब, नाहीं तो रह जैहो पछताई ॥५॥

दादरा ३०

करले सौदा समझि सौदाई ॥

इस दुनियां की विकट हाट में, बड़े २ चातुर गये हैं ठगाई ॥१॥
द्रोह दलाल दुष्ट संग लगि के, देत अवश्य गांठि कटवाई ॥२॥
कुटिल काम क़ज़्ज़ाक कठिन है, बहुतन की याने धूलि उड़ाई ॥३॥
भारत लोभ पिलाय मोह मद, कामिनि कनक जाल फैलाई ॥४॥
हैं अतिरिक्त और इनहु के, प्रबल शत्रु तेरे दुखदाई ॥५॥
बचे रहो बलदेव खलन स, हुइहै तबहीं सौदा सुखदाई ॥६॥

दादरा ३१

झूठी देखी जगत की यारी ॥

अपने स्वारथ के सब साथी, मात पिता भगिनी सुत नारी ॥१॥
मिथ्या मोह जताय कुटुम्ब सब, देत अमोलक जन्म बिगारी ॥२॥
बने बने के सब कोई संगी, विपति परे फिरि को हितकारी ॥३॥
या जग में अपना नहिं कोई, देख लीन हम आंखि पसारी ॥४॥
मोह फांस में फँसत जीव जो, फिर शिर धुन पछतात पिछारी॥५॥
अपनो धर्म विसारि जगत में, दुख भोगत बहु भांति अनारी॥६॥
छोड़ो प्रीति बलदेव जगत् से, भज प्रभु भव भंजन भयहारी॥७॥

भजन ३२

प्रभु गुण में हो लीन तभी जग में सुख पावेगा ।
माता पिता बंधु सुत नारी, जिन के अर्थ लई पाप कटारी ।
धन जोड़े है व्यर्थ अन्त कोई काम न आवेगा । प्रभु०१॥
गर्वित है जिस बल के ऊपर, है क्षण भंगुर तन जग भीतर ।
अन्तसमय जब होय साथ, एक धर्म ही जावेगा॥प्रभु०२॥
जिन के ऊंचे ऊंचे मन्दिर, ओढ़े पीत रेशमी अम्बर ।
पूछो जाकर दशा बड़ा ही, क्लेश सुनावेगा ॥प्रभु० ३॥
चढ़ने को सुन्दर असवारी, सेवक लाखों आज्ञाकारी ।
बाहर दीखे सुखी पै अन्दर, चोट दिखावेगा ॥प्रभु० ४॥
सच्चा बन तू शुद्धाचारी, हो जा भाई पर उपकारी ।

इस काया के चाम की क्या, जूती बनावेगा ॥ प्रभु० ५ ॥
करले अब भी धर्म कमाई, इसको ज़रा समझ ले भाई ।
मुट्ठी बांधे आया खोले, यहां से जावेगा ॥ प्रभु० ६ ॥
ममता मोह न रक्खे जो नर, ईश भजन में रहे नित तत्पर ।
पाठक होवे मुक्ति जभी, सच्चा सुख पावेगा ॥ प्रभु० ७ ॥

भजन ३३

भजो जी भजो प्रभु दुःख निवारण हारे ।
दुष्टन के मारन हारे, श्रेष्ठन के पालन हारे, दुःखन के टारन हारे,
सृष्टी के पालक पोषक रक्षक और संहारन हारे ॥ भजोजी० १ ॥
ऐसे प्रभु को हे भाइयो काहे बिसराया ।
ईश्वर को नहीं ध्यान में है काहे लाया ॥
फिरते हो मारे मारे, दुनियां में भटके सारे, ज्ञान से पर हो प्यारे ।
क्या नादानी, है लासानी, धन दौलत लुटवावनहारे ॥ भजोजी० २ ॥

भजन ३४

क्याकोई गावे क्या सुनावे, प्रभुमहिमा तेरी लखि किसी से न जावेरे
ऋषी ऋषीश्वर मुनी मुनीश्वर तपी तपीश्वर हज़ार ।
लखि २ के हारे, व सारे विचारे, न पाया वार तेरापार ॥ क्या० १ ॥
तेरी वेद हैं वाणी, कहें ऋषी ज्ञानी, है प्राणी का जिससे उद्धार ।
जो पढ़ें पढ़ावें, अमल करावें, हो भवसागर से पार ॥ क्या० २ ॥
तुही सृष्टि कर्ता, सकल दुःख हर्ता, तू संतन का प्रतिपाल ।
मुझेकाम क्रोधसे, खुदीलोभ मोहसे, बचाओ हरितत्काल ॥ क्या० ३

तुहीहै भंडारी, मैं तेरा भिखारी, मागूं यही बरदान।
मैं तुझकोहीध्याऊं,तेरी महिमा गाऊं,कहे दासखन्ना नादानक्या०

भजन ३५

भाई धर्म बचालो, बिगड़ी बनालो, होश सँभालो,
जीना है दिन चार १ ॥
डूब चली है नाव धर्म की बीच भँवर मँझधार।
प्राणों से प्यारा धर्म हमारा हम को छोड़ चला ॥ भाई धर्म०२ ॥
देखो प्यारो समझ लो तुम अब भी करलो सुधार।
धर्म मरा तो जानलो यह तुमको भी देगा मार ॥ भाई धर्म० ३ ॥
धर्म बचाओ भाइयो तुम अपना भला जो चाहो।
सब जग धन्धे झूंठे हैं इनमें न दिलको फँसाओ ॥ भाई धर्म० ४ ॥

भजन ३६

छोड़ो झूंठे सब व्यवहार, जो तुम कुशल मनाना चाहो।
सदा न रहना जग में यार, यही लो अपने मन में धार।
करो तुम सच्चे ही व्यापार, जो तुम धर्म कमाना चाहो ।छो०॥
है यह मतलब का परिवार, जिससे बढ़ा रहे हो प्यार।
हो संग न अन्त की बार, इससे चित्त हटाना चाहो ॥ छो० ॥
जब हो नाव बीच मँझधार, तब को उसे लगावे पार।
धर्मही सच्चा खेवनहार, इसको क्यों न बढ़ाना चाहो ॥ छो० ॥

ग़ज़ल ३७

वैदिक धरम का बोध घटाना नहीं अच्छा ।
ईश्वर से अपना चित्त हटाना नहीं अच्छा ॥
शिव वर्त और एकादशी सब वाहियात हैं ।
भ्रष्टों के कहने सुनने में आना नहीं अच्छा ॥
मिट्टी में डोरा बांध कर पूजा कराते हैं ।
गणपति के झूंठ स्वांग पै जाना नहीं अच्छा ॥
झूंठे ग्रहों के फन्दे में लोगों को डाल कर ।
मुफ़्ती किसी से माल उड़ाना नहीं अच्छा ॥
भूत और प्रेत जिन्न का आलम कोई नहीं ।
हीले से दूध पेड़ो का खाना नहीं अच्छा ॥
पत्थर को राज़ी करते है पशुओं को मार कर ।
है बेज़बां का खून बहाना नहीं अच्छा ॥
शर्मा ग़ज़ल से टपके तेरे इश्क़ हक़ीक़ी ।
बेहूदा राग रागनी गाना नहीं अच्छा ॥

भजन ३८

यह काया की रेल रेल से अजब निराली है ।
मन का इंजिन बुद्धि ड्राइवर कलं नसों के बंधन जिनपर ।
रज का जल और वीर्य अग्नि मिल भाप निकाली है ॥ यह०१॥
इंद्रियों के रच के स्टेशन अंतःकरण का बना जंकशन ।
शम संतोष विराग ज्ञान की लैन निकाली है ॥ यह०२॥

घटटी विवेक श्वास की सीटी, नाड़ी तार ध्वनि लागत नीकी।
जीव है सेकेंड गार्ड वस्त्र पंखा रखवाली है ॥ यह० ३ ॥
उत्तम मध्यम आदि अधम तन मेन पसैंजर लोकल मेकिन।
टिकट कर्म के बटे धर्म की खेप लदाली है ॥ यह काया० ४ ॥
काम क्रोध मद लोभ उचक्के दाव घात के जो बड़े पक्के।
धर्म अर्थ अरु काम मोक्ष की लूट मचाली है ॥ यह काया० ५ ॥
गार्ड वही प्रभु टिकट कलक्टर योग ध्यान का है लेन कलीयर।
सेकेंड गार्ड गाड़ी में गार्ड से मिलता खाली है ॥ यह काया० ६ ॥
मात पिता सुत आदि यहां पर झंडी मोह की सब्ज़ दिखाकर।
प्रीति का सिगल गिरा वहीं बस गाड़ी थमाली है ॥ यह० ७ ॥
जबकि गार्ड रहे नहीं ड्रैवर खाली पड़ा है इंजिन वहां पर।
पाठक फिर नहीं चले शोक की वृथा प्रणाली है ॥ यह० ८ ॥

भजन ३६

चर्खा काया रूप प्रभू ने अजब बनाया है।
गर्भ क्षेत्र में पिंडा गढ़ कर, हाड़ मांस के पंखड़ मढ़ कर।
इन्द्रिय खूंटे लगा कैसे तन, तनसा बढ़ाया है ॥ चर्खा० १ ॥
रग पुट्ठों की मढ़ अँदवाइन, बुद्धिमान बनलाये साधन।
मन का तकला डाल मास नौ, में दर्शाया है ॥ चर्खा० २ ॥
चित्त रूप हथकीरथ सुन्दर, कर संकल्प रूप प्रेर पर।
कर्म रुई का तार जीव, कातन बैठाया है ॥ चर्खा० ३ ॥
शुभ और अशुभ तार कई भांती, ज्ञान ईशमें रहे सब पांती।
जैसे काते तार वैसा, चर्खा कतवाया है ॥ चर्खा० ४ ॥

यह चर्खें हैं लख चौरासी, नियम पूर्वक कोई मिल जासी।
उत्तम मनुज शरीर बड़ी, मुश्किल से पाया है ॥ चर्खा० ५ ॥
जब निष्काय तार बन जावे, तब कुछ दिन चर्खा छुट जावे।
इस छुटने की आश ने तुम को यहां बुलाया है ॥ चर्खा० ६ ॥
परिमित चाल अवधि भी परिमित, मूल घुमाते हो हा जित तित।
पाठक समझो सार इसे कब, किसने गढ़ाया है ॥ चर्खा० ७ ॥

दादरा ४०

काहे खोवे उमरिया अनारी रे।

ममता माया के वश होकर, गरवित है तू कुटुम्ब के ऊपर।
नाम न लीना उसका छिनभर, प्रभु बिन रहेगा दुखारी रे ॥काहे०१॥
रूप घृणित लखि मोहित होवे, जो काया विकार मय होवे।
तन मन धन हा उसपे खोवे, अब भी दशा ले सुधारी रे ॥काहे०२॥
सन्ध्या हवन तू ने बिसराया, पितृयज्ञ का ध्यान न आया।
छल से तू ने द्रव्य कमाया, क्या होसके सुखारी रे ॥ काहे० ३ ॥
काल तुझे नित आन जगावे, घंटा अपनी गूंज सुनावे।
क्यों नहीं चेते समय बितावे, भक्तिका बनजा भिखारी रे ॥ काहे०४॥
अजर अमर जो है सर्वोपरि जिस से तेरी रही रुची फिरि।
पाठक वह तेरा मातृ पितृ वर, रखले भरोसा भारी रे ॥ काहे० ५॥

भजन ४१

कहे दश मनु महाराज चिन्ह धर्म के भाई।
पहले तुम धीरज धारो, दूजे कटु वचन सहारो।
सिद्ध हों सारे काज ॥ चिन्ह० १ ॥

तीजे निज मन को मारो। चौथे स्तेय बिसारो।
सुहबत भली विराज ॥ चिन्ह० २ ॥
पंचम परिशुद्ध कहाओ, छठवें इन्द्री वश लाओ।
बड़ाई करे समाज ॥ चिन्ह० ३ ॥
सातवें विचार बढ़ाओ, अष्टम विद्या फैलाओ।
बनो सब के सिरताज ॥ चिन्ह० ४ ॥
नववें सतका है धारन, दशवें कर क्रोध निवारन।
साजो सुन्दर साज ॥ चिन्ह० ५ ॥

भजन ४२

वेदों का पढ़ना छोड़ दिया, हाय ग़ज़ब सितम ग़ज़ब।
पंचयज्ञ का करना छोड़ दिया, हाय ग़ज़ब सितम ग़ज़ब ॥१॥
पढ़ते थे जब हम वेदों को, जाने थे सब के भेदों को।
वेदों से मुख मोड़ लिया ॥ हाय ग़ज़ब० २ ॥
कृष्ण से योगी भारी थे, अर्जुन से शस्त्र खिलारी थे।
रामचन्द्र से आज्ञाकारी थे ॥ हाय ग़ज़ब० ३ ॥
बुजुर्ग हमारे लासानी थे, दुनियाँ में वह तो मानी थे।
ज़रा न वह अज्ञानी थे ॥ हाय ग़ज़ब० ४ ॥
वह ब्रह्मचर्य्य कमाते थे, गृहस्थ में फिर आते थे।
वानप्रस्थ फिर पद पाते थे ॥ हाय ग़ज़ब० ५ ॥
संन्यास पद फिर पाते थे, लोगों को सत्य बताते थे।
ईश्वर भक्ती कमाते थे ॥ हाय ग़ज़ब० ६ ॥

शूरवीर रण पै चढ़ते थे, नहीं शत्रुओं से वह डरते थे।
अधर्म से नहीं लड़ते थे ॥ हाय ग़ज़ब० ७ ॥
वह पांच यज्ञ नित करते थे, और वेदों को ही पढ़ते थे।
ईश्वर से वह सब डरते थे ॥ हाय ग़ज़ब० ८ ॥
मची भारत में तबाही है, भाई से रूठा भाई है।
अविद्या हरसू छाई है ॥ हाय ग़ज़ब० ६ ॥
ऋषि दयानन्द ने आन जगाये है, गुरुदत्त ने प्राण बचाये हैं।
लेखराम ने प्राण गँवाये हैं ॥ हाय ग़ज़ब० १० ॥
वेदों को पढ़ो पढ़ाओ अब, ईश्वर की महिमा गाओ सब।
आर्य्य कहें जागोगे कब ॥ हाय ग़ज़ब० ११ ॥

दादरा ४३

मेरा वैदिक फुलवरिया को मन तरसे।
अंगों की सड़कें उप अंगों की रौंसें, उपनिषदों की क्यारी में गुल बरसे ॥ मेरा० १ ॥
कर्म उपासना ज्ञान ध्यान जहां, वहां जाने को विन्ती करूं हरि से।
यज्ञ हवन से हो पवन सुगन्धित, सींचे अइयो भक्ति जल से।
पुराणों ने कांटोंकी बाढ़ लगाई, मैं जाने न पाया इन्हीं के डर से।

भजन ४४

यह वही ऋषी सन्तान है, वेदों का जिसे घमण्ड था ॥
भूमण्डल में जिनकी कहानी, सुनी जाय इतिहास ज़ुबानी।
अब कैसी यह होगई हानी, जिन का नहीं निशान है ॥ वे० १ ॥

सब यहां के शागिर्द कहाये, इसी देश में पढ़ने आये।
जो सुख हैं सब यहां से पाये, गई कहां वह कान है ॥ वे० २ ॥
प्रभु तेरी है अद्भुत माया, वही देश हिन्दू कहलाया।
किया पाप सब आगे आया, नहीं किसी पर तान है ॥ वे० ३ ॥
वेद छोड़ रच लई कहानी, तलफ़ करी लाखों ज़िन्दगानी।
ज़िन्दा फूक सती कर मानी, इस से बड़ी क्या हान है ॥ वे० ४ ॥
बाल विवाह की रीति चलाई, करके रांड लाखों बिठलाई।
कितने गर्भ नित होयँ सफाई, क्या खूब अनोखा दान है ॥ वे०५॥
झंडूसिंह अब मत पछताना, फिर के आवे वही ज़माना।
प्रेमी कहे सब सुनियो दाना, जड़ गुरुकुल का स्थान है ॥ वे० ६॥

ग़ज़ल ४५

आज कल वैदिक धर्म झूठा फ़िसाना हो गया।
जिससे झूठ पोप जी का पुर खज़ाना हो गया।
पाप करते आप और कलियुग के हम ज़िम्मे रखें।
हाय भारत वर्ष तू बिलकुल दिवाना हो गया ॥
ऐसी पुस्तक से कहीं इन्सां की होती है निजात।
जो यह कहते हैं कि वह ईश्वर ज़नाना होगया ॥
उस दयामय ईश पर झूठी कथाएं जोड़ कर।
वेद मारग छोड़ कर पापी ज़माना हो गया ॥
अब अगर शर्मा न समझे यह हमारा है क़सूर।
सत्य का उपदेश कर स्वामी रवाना हो गया ॥

भजन ४६

वेदों की आज्ञा अब तो फैला दो देश २ में ॥
ब्रह्मचर्य पूरण धारौ, वेद पढ़ लो भाई चारौ।
ज्ञान को बढ़ा दो देश २ में ॥ वेदों० १ ॥
फिर गृहस्थ आश्रम लेना, धर्म में सदा चित हित देना।
सत्य पथ फैला दो देश २ में ॥ वेदों० २ ॥
फिर बनस्थ होना चहिये, चित हित में देते रहिये।
गुरुकुल बना दो देश २ में ॥ वेदों० ३ ॥
होय फिर संन्यासी स्वामी, सत्यमार्ग होना गामी।
धर्म को सुनादो देश २ में ॥ वेदों० ४ ॥
हिंसा झूंठ चोरी बाधक, तजके सत्य बोलो पाठक।
एक मत करादो देश २ में ॥ वेदों० ५ ॥

भजन ४७

उठ मुँह धो डालो बहुत ही सुलाया आलस नींद ने।
फूट मद्य पी अरु सोये, बुद्धि बल के सर्वस खोये॥
यवन मत दिखाया आलस नींद ने ॥ उठ० १ ॥
ग्रन्थ सत जलाये सारे, अरु जनेऊ तोड़े प्यारे।
हिन्दू पद दिलाया आलस नींद ने ॥ उठ० २ ॥
चमचमात असि दोधार, खून से सनाये गारे।
धर्म यों छुड़ाया आलस नींद ने ॥ उठ० ३ ॥

विन विवाही बेटी प्यारी, रोती अरु कलपती सारी ।
हम से किन छुड़ाया आलस नींद ने ॥ उठ० ४ ॥
थे गुलाम लौंडी कहां के, सोंवें रहने वाले यहां के ।
हा! हा! क्या कराया आलस नींद ने ॥ उठ० ५ ॥
नाना मत अन्धेरा भागा, वेद सूर्य चमकन लागा ।
हा! क्या फिर सुलाया आलस नींद ने ॥ उठ० ६ ॥
कमल ज्ञान विकसा पाठक, सकुचे धूर्त कैरव बाधक ।
जाने क्यों सुलाया आलस नींद ने ॥ उठ० ७ ॥

भजन ४८

भाई धर्म की नैया बचा लेनारे, डूबी जाती किनारे लगा देनारे ॥
मिल आपस में सब भाई बनो, एक दूजे के सबही सहाई बनो ।
पुरुषार्थ का बीड़ा उठा लेनारे ॥ डूबी० १ ॥
ये धर्म की नाव हमारी है, पड़ी बीच भँवर मँझधारी है ।
कोई ऐसी तदबीर बना लेनारे ॥ डूबी० २ ॥
कीन्हीं पापो ने नैया जो भारी है, हुई इस लिये बहुत लाचारी है ।
कर्म धर्म के चप्पे लगा देनारे ॥ डूबी० ३ ॥
छुट नैया से जो हैं जुदाई हुये, रोते खाखाके बहुत सौदाई हुये ।
बांह गह करके साथ मिला लेनारे ॥ डूबी० ४ ॥
स्वामी आये विरोधन के टारनको, संसार की दशा सुधारनको ।
तुम क़दम न पीछे हटा लेनारे ॥ डूबी० ५ ॥

भजन ४९

(लावनी)

सतयुग में सतव्रती हरिश्चन्द्र हो गये हैं ऐसे दानी ।
चन्द्र सूर्य चाहे टरें अटल व्रत रहे सभी जानें प्रानी ॥
विश्वामित्र मुनि आये मांगने उनकी प्रतिज्ञा दृढ़ जानी ।
राज पाट सारा ले मांगा सोना सौ मन दो, मानी ॥
आप बिके भंगी के घर पण्डित के बिकी उनकी रानी ।
संग बिका छोटा बालक, रोहिताश्व नाम का अज्ञानी ॥
एक रोज़ गया फूल तोड़ने, डसा सांप विष की खानी ।
पाठक मुर्दा लिये चली वह मरघट को शैब्या रानी ॥
टेक—रोहिताश्व लाश गोदी में, रानी रो रही जार बेजार ॥
मैदान घोर सुनसान, जहां श्मशान, शब्द सुने कान, अनेक भयंकर । पीपल के पेड़ के नीचे बैठी कातर ॥
कोई लाश पड़ी अधजली, कहीं सरनली, कोई सड़ी गली, देह दह दहके । कहीं चरबी चट २ चटक पटक मन ठहके ॥

चौपाई ।

बहुत रंग की उठ रही ज्वाला । गिद्ध कहीं कहिं फिर शृगाला ।
जहां तहां हाड़ श्वेत रतनारे । मांस रुधिर पड़े नदी किनारे ॥
शैर—रात का था वह समय वर्षा ऋतू थी घोर तर ।
धड़ धड़ात किनारे दहते शब्द से फाटे जिगर ॥

छोटे से आकार में रानी वह मुर्दा ले रही।
हा! विधाता लाल लूटा रो २ ऐसे कह रही॥

बारहमासा।

हे पुत्र मैया की सुध लेओ क्यो तुम ने अँखियां फेरली।
जीवे किस का देख मुखड़ा मैया मुख देखो चली॥
छूटे पती पर प्राण मेरे थे सहारे हा तेरे।
हा विपति में छोड़ के तुम भी चले प्यारे मेरे॥
दोहा–इतनी कह कर रानि वह, तुरतै भई अचेत।
बूंद वृक्ष से गिरी तन, जिस से कछुक सचेत॥
अब हीं तो सांझ लो खेले, कहा मा यह खिलौना लेले।
फूलो को गये आज्ञा ले, औचक आ हाथ मुख मेले॥
फिर इतना ही हा! कहा, नाग वहां रहा, अम्मा मुझे दहा।
कहां वह सांप मुझे डस मार ॥ रोहिताश्व० १॥
जो कभी मिले मेरे पती, वही सतव्रती, तेरी सुतगती, कैसे
बतलाऊं। हा! अपना मुख किस भांति उन्हें दिखलाऊं॥
उन सौपूं तू अज्ञान, बिछुड़े जिस आन, हे जीवन प्रान, दशा
मे ये कीन्हीं। हा! फूल चुनन की क्यों मैं आज्ञा दीन्हीं॥

चौपाई।

आओ प्राणपति इधर कृपाकर। देख लेओ मुख तनिक नैन भर।
हमें फांसि दे कष्ट निवारौ। सुनत क्यों नहीं न्याय सँभारौ॥

शैर-हाय ! बेटे ! माय रोती सुन पुकार न जागते।
अरे तुम तो इस दशा में भी हाय ! सुन्दर लागते ॥
इस प्रकार विलाप कर छाती लगाया उठायकर।
मुख निहारे मिट्टी लेती गोद बीच लिटाय कर ॥

बारहमासा ।

उस मरघट में टहलते देखें हरिश्चन्द्र दुःख सुने।
मन में कहते दुःख हमारा न्यून इस के है सामने ॥
हे विधाता दुःख दिया क्यों ऐसी नारी को बड़ा।
शौक है हा ! हमको अब इस से भी कर मांगन पड़ा ॥

दोहा-सतव्रती रोवें खड़े, देख देख उस बार।
विश्वामित्र हा यह सुना, समझे कहा करतार ॥
हा ! कैसे कहूं कर देना, जो मुझको पड़े है लेना।
इसके तो पास कुछ है ना, सुन रुदन को आंसू रुकैना ॥

कहे बेटा मुख बोल, आंख तो खोल, लुटा अनमोल, लाल गया छोड़ मुझे मँझधार ॥ रोहिताश्व० २ ॥

तुम्हें देख कहें मुनिराज, सभी सुख साज, होय महाराज, उम्र बड़ी पाये। हा ! उनके वाक्य सारे ही उलटे लखाये ॥

हैं तेरे पिता सतव्रती, जो हैं शुचि मती, प्रभू तेरी गती, लखी नहीं जाये। हा ! उनके शुद्ध संकल्प काम नहीं आये ॥

चौपाई ।

बालकपन में कफ़न न पायो। हाय ! न कुछ खेल्यो नहीं खायो ॥

बिकत समय तुम भूख सहारी। प्यास सही भोगे दुख भारी॥
शैर-हाय हा! यह क्या गई हो दशा तेरी पुत्रवर।
शोक से व्याकुल दुखारी माय को तुम छोड़कर॥
गये कहां हो आओ सचमुच मैं ही हूं अपराधिनी।
हाय! दुखिया माय को दिखला दो मुख मेरे धनी॥

बारहमासा।

यों रानी करती विलाप सुन २ काठ चिता को बनावती।
ढाढ़ मार के रोवती फिर लाश तेहि ढिग लावती॥
तबहिं वह राजा हरिश्चन्द्र आंसू रोक बढ़कर आवते।
थाम कर अपना कलेजा ऐसे वचन सुनावते॥
दोहा-बड़ा धीर हो दृढ़ रहे, रोये न सुन यह बात।
हरिश्चन्द्र जी जो कही, लगे करेजे घात॥
यहां जो कोई मुर्दा आवे, दे आधा कफ़न तो जलावे।
जबलों नहीं कर चुक जावे, तबलों नहीं फूँकने पावे॥
हे देवी यह सुन लेहु, शीघ्र कर देहु, न जाओ गेह।
यह आज्ञा स्वामी कहूं पुकार॥ रोहिताश्व० ३॥

तब रानी होय अधीर, कहे निज भीर, सही जे पीर, नाथ बिसराओ। लखि अपने सुत की दशा यह दुःख बढ़ाओ॥

हम लीन विधाता लूट, कर्म गया फूट, पुत्र गयो छूट, तभी समझायो। हे प्रिये! न छोड़ो धर्म कर्म फल पायो॥

चौपाई ।

देर करो मति अधिक न रोओ । भोर भयो औसर मत खोओ ॥
हमें कफ़न दे भौन सिधारो । हे प्यारी मत धैर्य्य बिसारो ॥

शैर–सुन कहा रानी ने यों रो २ पती के सामने ।
नाथ मेरे पास नहीं कोई वस्त्र जो मुझ से बने ॥
फाड़ अंचल देखो उसमें लपेट फूंकने लाई हूँ ।
हा ! हा ! इतनी दूर स्वामी बिना चादर आई हूँ ॥

बारहमासा ।

जो दूँ मैं कफ़न फाड़ तौ सब अंग देखो खुलत है ।
हाय चक्रवर्ती का सुत क्या विनाही कफ़न फुकत है ॥
राजा तब कहें क्या करें जब दास हैं हम ग़ैर के ।
फुँकने देंगे नहीं बिना कर कफ़न पाये हे प्रिये ॥

दोहा–धर्म रखथों मैं राज्य दे, यों नृप दिया उचार ।
एक टूक के कारने, क्यों खोवे प्रिय नार ॥

राजा की सुन कर वानी । लगी कफ़न फाड़ने रानी ।
तब विश्वामित्र मुनि ज्ञानी । आ औषधि दी लासानी ॥

यों उठ बैठे रोहिताश्व, मिटा सब त्रास, बिठाये पास, मिले फिर यों पाठक परिवार । रोहिताश्व लिये गोदी में रानी हरष चली इस बार ॥ ४ ॥

भजन ५०

चले खांड़े की धार, धर्मवीर बलधारी ।
जिन धर्मकी टेर सुनाई, उन प्यारी जान गँवाई ।
डरे नहीं हुये बलिहार ॥ धर्म० १ ॥

घनाक्षरी ।

हरिश्चन्द्र राजा भये भंगी के दास मरा पुत्र फूँका तब ही जब कर चुकाया सारा है । शिवि ने कपोत हित मांस तन से काट दिया, मोरध्वज ने देह पर आप खींचा आरा है ॥ देखो दधीचि जी ने गाय से चटाकर तन जांघ अस्थि दी औ खुद स्वर्ग को सिधारा है । शिवा जी अमीर गुरु गोविन्द अनेक भये प्राण प्यारे छोड़े पर धर्म ना बिसारा है ॥ २ ॥

कोलम्बस सुकरात अन्यदेशी भये देखो इतिहास कैसे २ दुखड़ा उठाये हैं । शंकर मुनीश ने अगर्चे विष पान किया जैन बौद्ध सारे परदेश को भगाये हैं । फांसी चढ़े ! भीतों चिने ! गारे सने ! खूनों के हैं बिन्दा हकीकत जैसे धर्मवीर जाये हैं । स्वामी दयानन्द वैसे लेखराम जी ने भी तो धर्म्म ही के ऊपर शरीर विनसाये हैं ॥ ३ ॥

जिन धर्म का पंथ सुधारा, गया इसी मार्ग में मारा ।
गड़े झंडे संसार ॥ धर्म० ४ ॥
भाइयो न शोक का स्थल, तुम भी रखते हो वह बल ।
वेद लो पैना कटार ॥ धर्म० ५ ॥

सुत मात पिता नहीं दारा, जग समझो धुंध पसारा ।
धर्मध्वज देहु पसार ॥ धर्म० ६ ॥
मारू भी धर्म बचाओ, रिपु झूठ को मार भगाओ ।
होय यश जग विस्तार ॥ धर्म० ७ ॥
है धन्यवाद उन जन को, जिन दिया धर्म में तन को ।
कहे पाठक निरधार ॥ धर्म० ८ ॥

भजन ५१

कीन्हा उपकार दयानन्द स्वामी ने ।
वेदों का भाष्य बनाया, सीधा मारग बतलाया ।
जहां मत खड़े हज़ार ॥ दया० १ ॥
कई विद्यालय बनवाये, कई दीनालय खुलवाये ।
किया विद्या का प्रचार ॥ दया० २ ॥
जाती अभिमान मिटाया, वर्णाश्रम ध्यान दिलाया ।
उठे सोते नर नार ॥ दया० ३ ॥
ऋषियों के यज्ञ बताये, हम को करने सिखलाये ।
दूर हुआ वायु विकार ॥ दया० ४ ॥
रिपु भी उपमा करते है, अब अर्थ लौट धरते हैं ।
खूब कर रहे विचार ॥ दया० ५ ॥
गोपी इन्द्रिय बतलावे, चीरों का हरन छिपावें ।
कृष्ण तो चोर न जार ॥ दया० ६ ॥
है धन्यवाद ऋषि तुम को, गये प्राणदान दे हम को ।
मोक्ष के पहुँचे द्वार ॥ दया० ७ ॥

भजन ५२

धन धन दयानन्द महराज, हमें ग़फ़लत से जगाने वाले ।
कर के निद्रा से हुशियार, कीन्हा वेदों का विस्तार ।
दीन्हीं बिगड़ी दशा सुधार, ऐ सत्यार्थ बनाने वाले ॥ धन० १ ॥
कर के सत्यासत्य की छान, मारा पाखण्डिन का मान !
किये वेदों से अलग पुरान, ऐ अज्ञान मिटाने वाले ॥ धन० २ ॥
होकर वेदों पर आरूढ़, खोले शब्द अर्थ सब गूढ़ ।
ख़ाली फिरन लगे बहु मूढ़, मुफ़्ती माल उड़ाने वाले ॥ धन० ३ ॥
भारत नैया थी मँझधार, तुमने आन लगाई पार ।
ऐसी कीन्हीं दया अपार, खेवा पार लगाने वाले ॥ धन० ४ ॥

ग़ज़ल ५३

शुकर स्वामी दयानन्द का बजा क्योंकर न लायें हम ।
किये उपकार जो हम पै भला गुण क्यों न गायें हम ॥ १ ॥
फँसे थे पोप जालों में बरी उन से कराया है ।
नसीहत ऐसे पुरुषों की भला क्योंकर भुलायें हम ॥ २ ॥
बना चेतन की जड़ मूरत कहा पोपो ने ईश्वर है ।
निरामय और चेतन को भला क्यों जड़ बनायें हम ॥ ३ ॥
छिपा कर वेद का सूरज बढ़ाई धुंध आंखों में ।
सहारे वेद सूरज के सुपथ में क्यों न आयें हम ॥ ४ ॥
भुला देना नहीं अच्छा किया उपकार स्वामी का ।
मुनासिब है यही उन की सुकीरति को बढ़ायें हम ॥ ६ ॥

भजन ५४

यह किसे खबर थी कोई बाल ब्रह्मचारी आवेगा।
वह करके वेद प्रचार हम्हें उपदेश सुनावेगा॥
मत भूल गये थे किरानी, अभिमानी हुये थे कुरानी।
यह क्या जाने थे पुरानी, भाष्य श्रुति का होजावेगा ॥यह०१॥
विद्या को छोड़ बैठे थे, यम नियम तोड़ बैठे थे।
मुंह सत से मोड़ बैठे थे जैसे कोई नहिं समझावेगा ॥ यह०२॥
मत फैल गये भारत में, ताक़त न रही जत सत में।
हा फँस गये थे स्वारथ में, कौन अब पढ़े पढ़ावेगा ॥यह०३॥
पढ़ विद्या दयानन्द आये, वेदों के डंके बजाये।
खुश उदय भानु होआये, लोक सब जगता जावेगा ॥यह०४॥

भजन ५५

यह किसे विदित था स्वामी दयानन्द आन जगावेगा।
वह करके फिर उद्धार हम्हें उपदेश सुनावेगा॥
सत धर्म छोड़ बैठे थे, मुँह सत से मोड़ बैठे थे।
विद्या निचोड़ बैठे थे, कौन अब पढ़े पढ़ावेगा ॥ यह० १ ॥
आपस में बैर था जारी, खो सुमति चुके थे सारी।
यह जाने था ब्रह्मचारी, समाजिक बेलि बढ़ावेगा ॥ यह० २॥
बचपन का विवाह मिटाया, ब्रह्मचर्य्य का अर्थ सुझाया।
श्रुति विद्या के पठनार्थ, गुरुकुल आन बनावेगा ॥ यह० ३ ॥
गौतम कणादि से मुनिवर, श्रीकृष्ण से योगी भूपर।

श्रीराम भरत से बन्धु, फेर आके दिखलावेगा ॥ यह० ४ ॥
सहदेव भीम बलधारी, अर्जुन से शस्त्र खिलारी।
दृढ़ भीष्म पितामह जैसे, महा योधा प्रकटावेगा ॥ यह०५ ॥
कन्या विद्यालय बनाये, गृह आश्रम कर्म सिखाये।
सब भ्रामक जाल मिटाये, सत्य पथ ज्ञान बतावेगा ॥यह०६॥
पापों से समाज बचाया, आमिष मद्यादि छुड़ाया।
दुष्कृति से दूर हटाया, बन्ध सारा छुट जावेगा ॥ यह०७ ॥
जो धींग पने से भाई, हुये मुसलमान ईसाई।
अब उन्हें प्रेम से विवश, कुटुँब सीने से लगावेगा ॥ यह० ८ ॥
वर्णाश्रम सुधर रहे हैं, सब ने सत्कर्म गहे हैं।
यज्ञो के स्रोत बहे हैं, धर्म अब उन्नति पावेगा ॥ यह० ९ ॥
धनिभाग दयानन्द आये, भारत के कष्ट मिटाये।
भूले भटके समझाये, फेर अब सत्युग आवेगा ॥ यह० १० ॥

ग़ज़ल ५६

ज़ुल्म करना छोड़ दे जालिम खुदा के वास्ते।
है यह हरकत नारवां अहले वफ़ा के वास्ते ॥
है बनाये सब उसी के जिसने तू पैदा किया।
क्यो सताता है किसी को दो दिना के वास्ते ॥
होगी खुदग़र्ज़ी भला इस से भी बढ़कर और क्या।
जान लेता और की अपने मज़ा के वास्ते ॥
काट कर औरों की गर्दन खैर अपनी मांगते।

दे जगह इंसाफ़ को दिल में खुदा के वास्ते ॥
चन्दरोज़ा ज़िन्दगी तन है ये पानी का बुलबुला।
खामखा बनता है क्यों मुजरिम सज़ा के वास्ते ॥
कर भला होगा भला नेकी का बदला नेक है।
मत किसी को तंग कर हाजत रफ़ा के वास्ते ॥
कर अदा अपने फ़रायज़ होने वाली शाम है।
मत मरे मरदूद अब नाज़ां अदा के वास्ते ॥
भूलकर मालिक को फिरता दरबदर बलदेव क्यों।
जान देता बेहया वस्ले बुतां के वास्ते ॥

ग़ज़ल ५७

ज़ुल्म कर करके ज़लीलों को जलाते न चलो।
छुरी गर्दन पै ग़रीबों के चलाते न चलो ॥
नहीं बहने का हमेशा है यह हुस्ने दरिया।
बदी की बाढ़ से बहुतों को बहाते न चलो ॥
दौर दौरा सदा रहता न किसी का साहब।
सितम शमशेर से आलम को सताते न चलो ॥
अक़्ल से काम लो खल्क़त है खुदा की इस में।
होके बेदर्द दिल दीनों का दुखाते न चलो ॥
चन्दरोज़ा है इस दुनिया में ज़िन्दगी जिस पर।
निशां नेकी का ज़माने से मिटाते न चलो ॥
खुदा का खौफ़ करो कुछ भी तो दिल में यारो।

रश्क से ख़ाक में बन्दों को मिलाते न चलो ॥
अता मालिक ने किया आप को हुस्नो दौलत ।
ग़ज़ब की चाल से गरदूं को हिलाते न चलो ॥
वक्त बलदेव अब जाता है कमा ले नेकी ।
ख़्वाहिशे नफ़्स में ज़िन्दगी को गँवाते न चलो ॥

ग़ज़ल ५८

क्या २ सितम हम पर सितम आरा नहीं करते ।
इस पर भी तो हम आह का नारा नहीं करते ॥
पहले तो जन्मते ही मारते थे माई बाप ।
अब ख़ौफ़ गवरमेंट से, मारा नहीं करते ॥
करते हैं मगर और सितम नये नये हम पर ।
दुख दर्द दूसरों का विचारा नहीं करते ॥
बूढ़े मरीज़ मूर्खों के साथ ब्याहते ।
तकलीफ़ का कुछ ख़्याल हमारा नहीं करते ॥
मौजूद एक नारि के करते हैं दूसरी ।
ख़ुदग़र्ज़ दिल में ख़ौफ़ ख़ुदारा नहीं करते ॥
इस सख़्त सँगदिली से रुलाते हैं उम्रभर ।
इकदम से सर को जिस्म से न्यारा नहीं करते ॥
अपने तो ब्याह करते बुढ़ापे लों चार चार ।
पर बेवा दुख़्तरों का दुबारा नहीं करते ॥
ख़ुदग़र्ज़ हो गये हैं यह बाशिन्दगान हिन्द ।
कोई भी ग़मज़दों का सहारा नहीं करते ॥

सुध लीजिये बल्देव अब अबलाओं की प्रभू।
दीनों को इस क़दर तो बिसारा नहीं करते॥

भजन ५६

बिधवों का संताप रातदिन सबको दहता है।
संबन्धी रोवे शिर धुन २, विकल हों इस अग्नी में भुन २।
हाय प्रभु हम्हें उठा पिता यों रो २ कहता है॥ बिधवों० १॥
गई विवाह में ताई के घर, जा २ असगुन होय यहांपर।
बुरा मान चाहे भला, अपना शुभ सब कोई चहता है॥बि०२॥
हा हा व्यथा नहीं कहने की, बारी है दुख में जलने की।
शिर पटके दीवार बहुत कुछ आंसू बहता है॥ बिधवों० ३॥
हैं हैं क्या है अम्मा बोली, क्यों रोती है मेरी भोली।
जो चाहे खा पहन, भाई यों आकर कहता है॥बि० ४॥
अम्मा मैं कहीं भी नहीं जाती, ताई के घर गई हर्षाती।
ललकारा मुझे हाय सब की दुरदुर तन सहता है॥ बि० ५॥
कहां रांड तू करती असगुन, अम्मा मुझ पर सहन न होतन।
मन्द भागिनी ऐसी हाय मेरा जाना दहता है॥ बि० ६॥
अवलों के हित दे तन मन धन, संस्कार पुनि करे यत्न सन।
पाठक जो हो वीर जगत में वही यश लहता है॥ बि० ७॥

भजन ६०

माय मेरी तुरियां चूं फोरे, मुझे नन्दा तरती हाय।

तू तो तहे थी बनेदी नौद्री, पत तुझे घड़वा दूं तिलदी।
आज उतारे है चूं सिंदरी, नथ बिछुये मोरे ॥ मुझे० १ ॥
तड़े छडे झांझन अरु बाली, झांवर लुइयां मेरी निताली।
हार पँचलड़ी भू में दाली, चों फेदे तोरे ॥ मुझे० २ ॥
हाय माय तू हो दई बैरिन, छोड़ मुझे मैं जाऊं हूं खेलन।
ताले तरोदे है चो हायन, हूं दोरे दोरे ॥ मुझ० ३ ॥
माता सुन २ खाय पछाड़े, खून बहे शिर दे दे मारे।
छिपे चंद्र नैनों के तारे, फूटे भाग तोरे ॥ मुझे० ४ ॥
हाय शोक दिल टुकड़े होवे, ज्यो वह विधवा कन्या रोवे।
पाठक खेले कूदे सोवे, झूले हिंडोरे ॥ मुझ० ४ ॥

भजन ६१

छोड़ दे अब मेरी मैया मेरा हाथ दुखने लदा।
छोतीं २ फूतीं सारी, अच्छी अब मत फोले प्यारी।
नई मँगा दई बन्दी वारी, लादे वा मैया ॥ मेरी० १ ॥
तुरियां तो सब फूतीं मेरी, छन कंगन तो सासू करी।
खन्दुये निकाले से मुँह वाले, दी संदयासी धैया ॥ मे०२ ॥
चूं अम्मा तू रोये जावे, चू तेरी अँखियां भर २ आवे।
भूख लदी रोती नहिं लावे, दे दे दे दैया ॥ मेरी० ३ ॥
हाय शोक यो रोवे बाला, कोई नहीं रहा समझानेवाला।
पाठक ईश्वर तू रखवाला, सब का रखवैया ॥ मेरी० ४ ॥

भजन ६२

तुम क्यों नहिं मित्र विचारते, बिधवा की विपति भारी को।
सासु ससुर देवर पितु माता, कोई इन्हें नहिं पास बिठाता।
कैसी करनी हुई विधाता, विष दे इनको मारते।
दुख में दुख दुखियारी को ॥ बिधवा० १ ॥

अपने हाथ खाना नाहिं खाया, बाली उम्र में व्याह रचाया।
जाने कौन पती कहलाया, विधवा उसे पुकारते। कुछ खबर न बेचारी को ॥ विधवा० २ ॥

रात दिना तुम ऐश उड़ाओ, नाना भोज्य पदारथ खाओ।
चंगों को तुम मुफ़्त खिलाओ, लेकिन नहीं निहारते। दुखिया की आहो जारी को ॥ बिधवा० ३ ॥

इन का रोना हंसी तुम्हारी, क्वारी में इज्ज़त है भारी।
लाखों रोज़ बने बाज़ारी, लेकिन नहीं सँभारते। शर्मा बिधवा नारी को ॥ बिधवा० ४ ॥

भजन ६३

विधवा लाचार, व्यथा सुने जिया धड़के।
गोदी ले फिराये फेरे, बालम मृत्यू ने घेरे।
नहीं कुछ जानी सार ॥ १ ॥
वह मात पिता की प्यारी, मांगे गहना नई सारी।
देख तीजो त्योहार ॥ १ ॥

बे सुध हो माता बोली, नहीं पहना करते भोली ।
बही नैनन जलधार ॥ ३ ॥
तूतो विधवा है बेटी, लिखी क़िस्मत जाय न मेटी ।
न कर सक्ती श्रृंगार ॥ ४ ॥
गई बीत उमर सब बाली, और उसने सुधि सँभारी ।
रोवे छुप २ घर बार ॥ ५ ॥
टेहले में चाची के जावे, गुस्से हो नाक चढ़ावे ।
सौ सौ दे ललकार ॥ ६ ॥
कोई आत्म घात करती है, कोई फांसी खा मरती है ।
कोई विष खाती नार ॥ ७ ॥
इतिहास पुराण स्मृती, श्रुति भी क्या आज्ञा करती ।
व्यवस्था लो नर नार ॥ ८ ॥
मत विधवा बाल रुलाओ, अब इनका दुःख मिटाओ ।
बढ़ाओ मत व्यभिचार ॥९॥
है कौन वीर बलधारी, जा इन्हें देय सुख भारी ।
हो पाठक तैयार ॥ १० ॥

भजन ६४

विधवा रोवे दे किलकारी, तुम सुनियो देश हितकारी ।
मात पिता कहें सत्यानाशिन, सास ससुर बतलावें डायिन ।
उन से ज्यादा है नारायण ! जग में कौन दुखारी ॥ तुम सु० १ ॥
शुभ अवसर में जब कहीं जावें, देख उन्हें सब माथा चढ़ावें ।
नहीं पास अपने बिठलावें, उन्हें सुहागिन नारी ॥ तुम० सु० २ ॥

गहना पाता उनसे छीना, फटा डुपट्टा दामन दीना।
उनका फिजूल समझे जीना, सासु ससुर महतारी॥ तुमसु०३॥
जब कि तरंग काम की आवे व्याकुल हो मन में बिलखावे।
उसकी दवा कहा से पावे, कहता यही मुरारी॥ तुमसु०४॥

दादरा ६५

विधवा रोवे है दीन विचारी रे।
बालेपन में रांड हुई हूं खाटी है क़िस्मत हमारी रे॥ १॥
मात पिता ने क्यों न विचारी जन्मत हो देते मारी रे॥ २॥
हमको तो कुछ खबर नहीं है कब हुई शादी हमारी रे॥ ३॥
फटा डुपट्टा हमको दीना हाय छिनगया चार हज़ारी रे॥ ४॥
करना कहै नियोग बुरा है हालत कैसी बिगारी रे॥ ५॥
पांडव जब नियोग से पैदा, फिर क्यों है इनकारी रे॥ ६॥
सती का होना बंद हुआ है हुक्म नहीं सरकारी रे॥ ७॥
कांजीमल यह बात बतावे इसने ही देश दुखारी रे॥ ८॥

लावनी ६६

सात सखी मिल कर के सूरत यो निज २ कथया सुना सारी।
कौन गाज यह उदय भये है कहा विरति हरि ने डारी॥
एक कहे सुनो सखी हमारी जिया फिकर दिनरात रहे।
देख २ पति मूरख अपना कष्ट मेरा तन सदा सहै॥
बैठ २ नीचो को संगत ओछी मति दिन रात गहे।

यदि कोई समझावे है तो रार करे कटु वचन कहे ॥
करें सभी अपमान हंस ठट्ठा दे दे कर नर नारी ॥ सा० १ ॥
भली सखी इक कहे दूसरी यदि बालम तेरा गुणहीन ।
विकल रहूं मैं सदा तड़पती जैसे प्यासी जल बिन मीन ॥
रोगी रहें सइयां नित मेरे सब प्रकार वह है तनु छीन ।
हार गये सब औषध करके वैद्य डाक्टर महा प्रवीन ॥
दूर न दुख हो हाय हमारा कहा करूं मैं दुखियारी ॥ सा० २ ॥
दृष्टि अगारी रहे तेरा पति धरो धीर या विधि प्यारी ।
कहे तीसरी विपति सुनावत आवे मोहि लज्जा भारी ॥
चसका इन्हे परो जूआ को हार गये सम्पति सारी ।
लगे करन चोरी तब इनकी भई पुलिस द्वारा ख्वारी ॥
आप पड़े दुखसागर मे और मोहि डुबाया मॅझधारी ॥ सा० ३ ॥
रोग धोग सब जाय सखीरी कहे चौथी यो खाके ताव ।
पीतम मेरे रहे नशे मे पियत सखी दिन रात शराब ॥
सुलफा गांजा और अफ़ीम की लत ने काया करी खराब ।
हाय कहा इनको यह सूझी खो बैठे सारी ही आब ॥
नालिश डिगरी नित होती है कहा करू मै दुखियारी ॥ सा० ४ ॥
कहे पांचवीं व्यथा पिया की, रोय रोय यो मृगनैनी ॥
लूट लियो धन माल जवानी, दिखा दिखा चितवन पैनी ।
नव युवती से फॅसे जाय कहीं, कहूं हकीकत क्या बहनी ॥
रोग अग्नि ज्वालादिक देके, गहा दई कर में टहनी ।
ले कटार लज्जा के वश हो मरूं हाय मैं तन मारी ॥ सा० ५ ॥

हाय हाय कर कहे छठी यों, मरियो मेरे माई बाप ।
भार में देखो डारि दई मैं, अलग भये धन लेकर आप ॥
कुछ पीछे सौ वर्ष के बालम, रहे सदा कफ़ खांसी ताप ।
घड़ी पलक में रांड बनावे, निशिदिन मोकूं पश्चाताप ॥
कहा करूं हा ! मैं मदमाती, त्याग देऊं इज़्ज़त प्यारी ॥ सा० ६ ॥
कहे सातवीं व्याह भयो कब, कैसे थे मेरे भरतार ।
सुना करूं मैं मात पिता से, रांड भई कूटी घर बार ॥
त्राहि त्राहि मैं किस विधि रोकूं, उमड़ रही है यौवन धार ।
धिक २ मेरो या जग जीवन, उठा लेहु अब तो करतार ॥
नाश जाय इन हत्यारन को बना दीन्ह मोहिं हत्यारी ॥ सा० ७ ॥
दीनानाथ सुध वेग लीजिये, हम अबला चिल्लाती हैं ।
या तो रक्षा करो नहीं तो, उठा लेहु दुख पाती हैं ॥
नयन लगे दुख हरो नाथ, हम सब तुमको ही ध्यानी हैं ।
देर न हो विशेष कर तुमको, ध्यान बीच हम लाती हैं ॥
ऐसी शिक्षा देहु नरों को, बन जावें तिय हितकारी ॥ सा० ८ ॥

दादरा ६७

टुक देखो तो आंख उघार भारत की दीन दशा ।
शैर-विलखती रोती हैं विधवायें ज़ार ज़ार खड़ी ।
यह कैसी हाय पड़ी इन पै मुसीबत है कड़ी ॥
शुमार करती हैं दिन रात ज़िन्दगी की घड़ी ।
तुम्हारे कान में आवाज़ क्या कभी है पड़ी ॥

कीन्हीं कितनी तुमसे पुकार ॥ भारत की दीन दशा ॥ १ ॥
शैर-अनाथ बच्चे विलखते हैं भूख के मारे।
मात पितु बन्धु नहीं कोई जिनके रखवारे ॥
पाल लेते हैं मुसल्मां ईसाई बेचारे।
इस तरह कितने बिछुड़ते हैं तुम्हारे प्यारे ॥
कभी कीन्हा है इनका शुमार ॥ भारत की दीन दशा ॥ २ ॥

शैर-एवज़ में घास के जिस मां का दूध तुम ने पिया।
ज़िन्दगी बख्श पिसर भी था तुझे जिसने दिया ॥
हा राज़व उसका न उपकार तुमने कुछभी किया।
दुर्दशा देख तुम्हारा कभी धड़का न हिया ॥
ऐसे जीने से मरना है सार ॥ भारत की दीन दशा ॥ ३ ॥

शैर-अब सुनायें तुम्हें कन्याओंके दुखका क्या हाल।
पैदा होते ही पिता मां को हुई गोया काल ॥
उमर भर कोई भी उनसे नहीं रहता है निहाल।
फिर पढ़ाने वा लिखाने का करे कौन ख़याल ॥
सभी रहती हैं मूर्खा गँवार ॥ भारत की० ४ ॥

शैर-थे जो द्विज वर्ण परम पूज्य और सदाचारी।
गौतमो व्यास कपिल मनु कणाद ब्रह्मचारी ॥
हाय! उस कुल में हुए मूर्ख और दुराचारी।
धर्म-पथ छोड़ सभी बैठे हैं नर और नारी ॥
इसी कारण हुये अब ख्वार ॥ भारत की० ५ ॥

शैर–हजारों रुपया बेकार ही लुटाते हैं।
अनाथ अन्धे अपाहिज न कौड़ी पाते हैं॥
किसी के द्वार अगर जा अड़ी लगाते हैं।
जबाब में कभी खाली न हाथ पाते हैं॥
चाहे सर को पटके हजार॥ भारत० ६॥
शैर–मन वचन कर्म से देशो धरम पै होके निसार।
सारे संसार में वेदों का करो तुम प्रचार॥
होकेदृढ़ यम व नियमका करो पालन नरनारि।
मित्र की तुमसे विनय अब है यही बारम्बार॥
मिलिहैं सुख तुम को अपार॥ भारत की० ७॥

दादरा ६८

हाय कैसा ये काम भूली हो अपना पतीव्रत।

अपने पतिको दो सौ २ गारी, स्यानं दिवानो को झुकर सलाम।
अपने ससुरजी को बनती न रोटी, पीरों फ़क़ीरों को बर्फ़ी बदाम॥
अड़ोसिन पड़ोसिनसेहिलमिलकेरहतींसासूसेलड़नेमेंसमझाहैनाम
अपने देवों की तो सार न जानी, भूतों प्रेतों को मानो तमाम।
अच्छी कथाओं से सौ कोस भागो, मेल तमाशोंमें चार२मुक़ाम॥
पाठक कहे देव पति जो तुम्हारा, उसके चरण धोवो सुबहशाम।

दादरा ६६

बहिनो करना विचार कैसी दशा है तुम्हारी।

माता भी प्यारी भैया जी भी प्यारे,
भाभी को देती हो ताने हज़ार।
अड़ोसिन भी प्यारी पड़ोसिन भी प्यारी,
दुश्मन है सासू का सब परिवार।
लड़ती तो सास नन्दों से तुम हो,
गुस्सा उतारो हो बच्चों को मार।
छुप २ सामग्री को बेचो हो घर की,
दो आने में देती आने हो चार॥
जाने पहचानों से घूंघट करो हो,
मेलों में जाती हो मुंह को उघार।
ईश्वर की भक्ती न सन्ध्या हो करती,
पाठक हा पुजो हो ज़ाहिर मदार॥

सुहाग ७०

बहनोरी करलो ऐसे शृंगार।
१ अंग शुचीकर २ फिर कर मंजन ३ वस्त्र अनूपम धार।
राग द्वेष को तन मन जल से विद्या बसन सँभार॥ १॥
केश ४ सँवारहु मेल परस्पर न्याय की मांग ५ निकार।
धीरज रूपी ६ महाउर धारहु यश हो ७ टीका ललार॥ २॥
क्षमा न व्यर्थ ऐसो ८ तिलधारो ९ मिस्सी पर उपकार।
लाज रूपी १० कज्जल नयननमें ज्ञान ११ आर्गजा चार॥३॥
१२ आभूषण यह तन में पहनो १३ शम सन्तोष विचार।
मेंहदी पुष्प १४ कलि सों कर शोभित दान सुभग आचार॥४॥

१५ बीड़ी विनय की रखना मुख में १६ गंध सुसंगति धार।
पिया तेरा देखत ही रीझे लखि सोरह शृंगार ॥ ५ ॥

ग़ज़ल ७१

दिल में सोचें यह ज़रा मांस के खाने वाले।
जीव हिंसा से बचें सुख के बढ़ाने वाले ॥
तुमने खाया है अगर मांस तो किन पशुओं का।
जो हैं तुम्हें दूध मलाई के खिलाने वाले ॥
तुमने मारी है अगर जान तो किन जीवों की।
जो सदा बोझ तुम्हारा हैं उठाने वाले ॥
तुमने शक्ती जो दिखाई तो दिखाई ऐसी।
कर दिये नष्ट पशू हल में चलाने वाले ॥
तुमने जानें हैं गँवाई तो गँवाई किन की।
आड़े वक्तों में जो हैं काम में आने वाले ॥
ऐसे जीवों को सदा मार गँवाया तुमने।
है जो दुनियां में ग़लाज़त को घटाने वाले ॥
हैं यह हक़ रखते सभी तेरी तरह जीने का।
जिनके हैं आप बने खून बहाने वाले ॥
जिनके जीने से हवा शुद्ध हो निर्मल पानी।
ऐसे जीवों के भी हो जान गँवाने वाले ॥
तुलसी उनको तो नहीं तुमने सताया हरगिज़।
जितने हिंसक हैं पशू तुमको सताने वाले ॥

ख्याल ७२

रो रो के कहती हैं गौवें सुन लो ऐ ज़ालिम सैयाद ।
ज़ुल्म करो हो तुम नहीं सुनते दीनों की दुखमय फ़र्याद ॥

चौक १

मुख में हर दम घास हमारे तुमसे विनती करती हैं ।
मरन बाद भी चमड़ा अपना भेंट तुम्हारे करती है ॥
तुमको नहीं सताती रहतीं जंगल में हम चरती हैं ।
दूध और घी नित दे तुमको फिर भी तुमसे डरती हैं ॥
जिनसे तुम नित अन्न कमाओ वह भी हमारी है औलाद । ज़ु० ॥

चौक २

अपने दुख का दुख नहिं हमको दुःख तुम्हारी हानी का ।
बिना हमारे कठिन काटना समय तुम्हें ज़िंदगानी का ॥
बेटे तुल्य प्यार है हमको रैयत राजा रानी का ।
कैसे बतावें ज्ञान नहीं है तुम्हें हमारी बानी का ॥
इस पर भी नहीं शर्म तुम्हें माता पुत्र से चाहे दाद । ज़ु० ॥

चौक ३

गऊ पै करते दया तो क्यों भारत से होता ग़ारत राज ।
गऊ हत्या ने नष्ट कराया है देहली का तख़्त और ताज ॥
इस दिन भारत से लण्डन को कनक के भर २ जायँ जहाज़ ।

गऊ न होंगी कहां से फिर खाओगे तुम उत्तम यह नाज ॥
राजा और क्या रैयत की भी भारत में गउयें हैं बुनियाद । जु० ॥

चौक ४

पुत्र हमारे काम तुम्हारे करें धूप हो चाहे सरदी ।
खावें तड़ातड़ मार किन्तु करते हैं तुम्हारी हमदरदी ॥
तुम ऐसे बेवफ़ा गिराकर गर्दन पर है छुरी धरदी ।
नहीं हिलाते कान देखिये तुम उनकी यह जा मरदी ॥
नवलसिंह कहे समझबूझलो नहिं हमको कुछ वादविवाद ।जु०४॥

भजन ७३

क्यों दूध दही को छोड़ के, मदिरा पै मन ललचाया ।
पी शराब आंखें लाल किये मतवाले ।
गिरते सड़कों पर फिरें खाक मुँह डाले ॥
सब तज के कुलकी लाज किये मुँह काले ।
इस मयख्वारी ने लाखों के घर घाले ॥
क्यों धन और माल गँवाया, किस काम तुम्हारे आया ।
लाखों का द्रव्य लुटाया, क्या नफ़ा बताओ पाया ॥
अब हो बैठ कंगाल, खोके धन माल, हुआ बे हाल । मरें
शिर फोड़ के, पर सब्र न दिल को आया ॥ मदिरा० १ ॥
सब द्रव्य लुटाकर रह गये निपट अनारी ।
अब बात न पूछी जाय हुई जग ख्वारी ॥

कोरे कुलांच भये अब नहीं बनत विछारी ।
किस विधि निदान हो असाध्य है बीमारी ॥

कहीं हुआ दर्द सरभारी, कहिं पड़ गया जुनू पिछारी ।
सूज़ाक ने की तैयारी, हुआ जीवन तक दुशवारी ॥

जब मद्यपान कर यार, चले बाज़ार, किया कुविचार । बस
रंडी को छोड़के, कुछ और न दिल में भाया ॥ मदिरा० २ ॥

उस दुखदाई ठगिनी की बात में आये ।
उन मीठी २ बात सुना बहँकाये ॥
जब हुआ इश्क का ज़ोर मस्त कहलाये ।
चाहे प्राण जायँ पर रूप देख ललचाये ॥

मुख से दुर्गन्धी लावे, दीवाना कहीं बनावे ।
जब लगे रोग पछतावे, फल में तू दुःख उठावे ॥

नहिं पहले किया कुछ ज्ञान, अरे नादान, करके मदिरा पान ।
चले मुँह मोड़ के, नाहक़ में मान घटाया ॥ मदिरा० ३ ॥

जब तलक रहा धन पास करी मय ख़्वारी ।
जब रहा नहीं चोरी को हुइ तैयारी ॥
कहिं लिया पुलिस ने पकड़ छूट हुई भारी ।
तब जाय क़ैद में हुआ भोग लाचारी ॥

कर मले रोय पछितावे, रो २ दिन रात गँवावे ।
तबियत को यों समझावे, क्यों किये का फल नहिं पावे ॥

अब कुछ नाहिं बनत उपाय, सोच नित खाय, दिल में घबराय, कहे कड़ी जा तोड़ के, दिल आख़िर यों समझाया ॥ मदिरा० ४ ॥

यह बुरी चीज़ है पियो न कोई भाई।
पहले कर कंगाल करावे हँसाई ॥
जिन मूर्खों ने है तबियत इस पर लाई।
ये बुरी दशा में पड़े भरें कठिनाई ॥

बदनामी यहां दिलावे, फिर अन्त नर्क पहुँचावे।
विषयों में मन लपटावे, दुष्मारग खूब सुझावे ॥

कहे जगन हरबार, बात यह सार, पियो मत यार, इस मय से नाक सिकोड़ के, सुख का मार्ग बताया ॥ मदिरा० ॥५॥

भजन ७४

दोहा-विषयों में रममाण हो, जीवन दिया गँवाय।
कटें न बासर पल घड़ी, रहे अधिक दुखपाय ॥
टेक-व्यभिचारी नर अज्ञान से अनमोल रतन खोते हैं।
सारा ही धन रंडी के घर पहुँचाया।
धन रहा न तब चोरी में ध्यान जमाया ॥
कहिं पकड़े गये तो मज़ा किये का पाया।
इस रंडीबाज़ी ने सब का मान घटाया ॥
सब धन और माल गँवावे, पर सब्र न दिल को आवे।
जब बढ़े रोग पछतावे, नहीं गया वक्त फिर पावे ॥

कहिं लिया पुलिस ने पकड़, बदन दिया जकड़, निकल गई अकड़, क़ैद में जाय के, मल २ के हाथ रोते हैं ॥ अन० ॥१॥

कहिं डाल बाल में तेल करी तैयारी।
रँग होठ पान से चल दिये निपट अनारी॥

ले हाथ छड़ी रूमाल गई मतिमारी।
गये रंडी के दरबार बात हुई जारी॥

वह हंस २ बात बनावे, यह फूला नहीं समावे।
वह ज्यो २ भौंह मटकावे, यह अहो भाग्य ठहरावे॥

सब तजी आबरू यार, हुये क्यो ख़्वार, छोड़ घरबार, मेरे बिलखाय के, यह पड़े यहा सोते हैं ॥ अनमो० ॥२॥

कहिं मद्यपान कर चले निपट मतवाले।
दो चार रुपय चल जेब मे डाले॥
रंडी के जाय दरबार किये मुंह काले।
निज लोक और परलोक नशावन वाले॥

सब कुल की लाज गँवाई, लइ ऐसी बेशरमाई।
लानत धिक्कार उठाई, नहिं डूब मरे अन्याई॥

नहि भय ईश्वर का करे, दिल मे ना डरे, मान सब हरे, यह इश्क लगाय के बदनाम बहुत होते हे ॥ अनमो० ॥३॥

रंडी के रूप पर जा तबियत लाते है।
धन यौवन खाकर अन्त नरक जाते हैं॥
जब हाय आतिशक दिल में पछताते हैं।

क्यों पछतावें अब किये का फल पाते हैं ॥

यह ऐब बड़ा है भारी, करते हैं जग में ख़्वारी ।
घर कहे रोय कर नारी, गई क़िसमत फूट हमारी ॥

है ज़रा देर आनन्द, मूर्ख मतिमन्द, भरे दुख द्वन्द, है वीर्य गँवाय के, आपत्ति बीज बोते हैं ॥ अनमो० ॥४॥

यह वेश्या है विष की बेल सुनों तुम भाई ।
बदनाम करे यहां अन्त नरक ले जाई ॥
कोई करो न कबहूं प्रीति इस से मनलाई ।
नहीं चन्द रोज़ में होवेगी लोग हँसाई ॥

यह सुन्दर रूप दिखावे, तन मन धन सब ले जावे ।
जो तबियत इनपर लावे, फिर हाथ मले पछतावे ॥

मत करियो इनसे प्यार, जगत हर बार, कहे करतार, को शीश नवाय के, यह काम बुरे होते हैं ॥ अनमो० ॥५॥

भजन ७५

वेश्या तो दुखकी मूल है भूलेसे पास न जाओ ।
धन बल वीर्य नशावे नर का, रस्ता यही भुलावे घर का ।
राग न कमती हो फिर सरका, मारी इज़्ज़त धूल है ॥
इस बला को दूर हटाओ ॥ भूले० १ ॥
सुन्दर रूप कुरूप बनावे, दिन २ दूना विषय बढ़ावे ।
ज्वारी चोर का लक़ब दिलावे, वेदशास्त्र प्रतिकूल है ॥
मत सत्य मार्ग बिसराओ ॥ भूले० २ ॥

पिता पुत्र गुरु शिष्य के नाते, पास २ बैठे दिखलाते।
बेशरमों का सबक़ पढ़ाते, इसका नाम फिजूल है।
मित्रो दिल में शरमाओ ॥ भूले० ३ ॥
जितने फायदे इसके जानो, वे सबही दुख मूल बखानो।
इतनी समझ नहीं दीवानो, क्या न तुम्हारो भूल है॥
शुभ औसर में बुलवाओ ॥ भूले० ४ ॥
नारि दुखे दुखी हो पितु माता, धर्म कर्म भी सब मिट जाता।
पाठक यह पूरी दुखदाता, मेरे जान तो शूल है॥
बस इस से प्राण बचाओ ॥ भूले० ५ ॥

भजन ७६

फायदे सुनों हजार, रंडी नचवाने के।
औलाद न बूढ़ी होवे, यौवन में छुट्टी होवे।
हो रोगन भरमार ॥ १ ॥
फिर चोर न डाकू आवें, आवें तो क्या ले जावें।
मित्रो करो विचार ॥ २ ॥
नाती पोते नहिं मरते, यानी जन्म न धारण करते।
होय कुल बंटाधार ॥ ३ ॥
स्त्रीगण शिक्षा पावें, अरु बाजारी हो जावें।
रहें फिर खुद मुख़्त्यार ॥४॥
वैद्यों को घर बुलवावें, उन्हें धन का लाभ करावें।
प्रमेहादिक विस्तार ॥५॥
पीरों को जाय मनावें, बकरे गो भेंट चढ़ावें॥
पीर हों खुशी अपार ॥६॥

जब वेश्या धन को पावे, बूचड़ फूल न समावें।
खुशी होत हैं कलार ॥ ७ ॥

कहता होके मतवाला, ऐसे वह बेटे वाला।
खर्चे नहीं बारम्बार ॥ ८ ॥

फिर क़र्ज़ ब्याह के भाई, सारी सम्पति मिलजाई।
गिना मत जड़यों हार ॥ ९ ॥

सुन जगन ये बात हमारी, लत वेश्या की है भारी।
बचा पाठक हर बार ॥ १० ॥

भजन ७७

सुनियो ज़रा ग़ौर से यार, दिल रंडी से लगाने वाले।
यहां थे ऐसे बड़े तुम्हार, जिन्होंने लखी न दूसर नार,
उन के ऐसे तुम औतार, धन रंडी पै लुटाने वाले ॥ १ ॥

जब तुम हो जाओ नाकार, रंडी नहिं करने की प्यार,
तुमको घरसे देगी लतार, जिस पर फिरतेहो मतवाले ॥ २ ॥

जब हो गरमी का आज़ार, रस्ता होजाय आर से पार।
रंडी तब होके बेज़ार, तेरी सूरत से नाक चढ़ाले ॥ ३ ॥

आखिर जाओ नारि के द्वार, उस पै क्रोध करोगे अपार,
मरहम करवाओ तैयार, मन में शर्म न लाने वाले ॥ ४ ॥

कहता रामप्रसाद पुकार, मत फैलाओ तुम व्यभिचार,
सहनी होगी दुखोकी मार, होंगे आखिरको मुंहकाले ॥५॥

भजन ७८

सूझत नहीं निपट अनारी को।
उलटे काम करे निशिवासर फिर ललचे सुख भारी को ॥ १ ॥
पीछे हटे सुजन संगति से नाच में बढ़त अगारी को ॥ २ ॥
दया धर्म को नाम न जानें करत रोज़ खूं ख़्वारी को ॥ ३ ॥
दुखी दीन को देत न कौड़ी मारन उठत भिखारी को ॥ ४ ॥
झारी भरि २ देयँ नाच में निज वेश्या महतारी को ॥ ५ ॥
व्याह काज में उसे बुलावें रथ भेजें असवारी को ॥ ६ ॥
अपढ़ पुरोहित हाज़िर कर दिये उसकी ख़िदमतगारी को ॥ ७ ॥
रंडी भड़वे खांय मलाई भुसी मिले घर वारी को ॥ ८ ॥
पतिब्रतन कौ धर्म बिगारे भरि २ स्वांग पुजारी को ॥ ९ ॥
बगुला भक्त बन्यो ऊपर से मन में चहत चमारी को ॥ १० ॥
धर्म्म सभा कौ बन्यो है सभासद तकत फिरै पर नारी को ॥ ११ ॥
मांस खाय और मदिरा पीवें धरि के वेश अचारी को ॥ १२ ॥
कुटिल कुकर्म करत निशिवासर बेटा बनो तिवारी को ॥ १३ ॥
पक्षपात में पगो रात दिन धरे मुकुट सरदारी को ॥ १४ ॥
बदलत समय रंग नित नये २ क्यों नहिं तजत खुमारी को ॥ १५ ॥
चौपट भयो जात यह भारत तहुँ न तजत बदकारी को ॥ १६ ॥
फेर बकत बलदेव बृथा क्यों सुनत न बात तुम्हारी को ॥ १७ ॥

ग़ज़ल ७९

होली में खाक धूल उड़ाओगे कब तलक।
इज्ज़तको अपनी दाग़ लगाओगे कब तलक ॥

औरत का भेष मर्द को करने में पाप है।
लौंडों का स्वांग भरके नचाओगे कब तलक ॥

पी करके भंग दूधिया बोतल शराब की।
ऋषियों का अपने नाम डुबाओगे कब तलक ॥

जूतों का हार डाल गधे पर सवार हो।
मुख काला करके भँडुआ कहाओगे कब तलक ॥

चण्डाल चौकड़ी में नचा करके रंडियां।
धन माल अपना मुफ़्त लुटाओगे कब तलक ॥

ढोलक गले में डाल के फिरते हो कूबकू।
इस तौर फ़ोश राग सुनाओगे कब तलक ॥

छप्पर पलंग वग़ैरह की कर करके चोरियां।
शर्मा हवन को त्याग जलाओगे कब तलक ॥

भजन ८०

मत वेश्या के फन्दे मे आओजी।

लाखों हज़ारों घर दीपक बुझे हैं, नालिश न्यारी, डिगरी जारी, गहने घर नीलाम की त्यारी हा ! ॥ १ ॥

लाखों हज़ारों घर रोगी पड़े हैं, नीम की टहनी, होगई लहनी, पूरी आफ़त पड़ती सहनी हा ! ॥ २ ॥

कितने तो गरमी से फुके पड़े हैं, तेल खटाई, मिर्च मिठाई, खावें तो कम्बख़्ती आई हा ! ॥ ३ ॥

कितनों के फूटे तालु होगये जुज़ामी, चाची ताई, बहना भाई, पास न आये घरकी लुगाई हा ! ॥ ४ ॥

घरकी वह नारी जिसने खाई सौ २ गारी, धो २ जख़्म, करती मरहम, शर्म नहीं पर करते हो तुम हा ! ॥ ५ ॥

तुम्हारे वीरज से वहां कन्या जो जन्मे, बनके वेश्या, करेगी पेशा, तुमको नहीं है तनक अंदेशा हा ! ॥ ६ ॥

पाठक कहे मित्र अब कुछ चेतो, धनको बचाओ, इज़्ज़त पाओ, भूल कभी वेश्या के न जाओ हा ! ॥ ७ ॥

भजन ८१

प्रभु प्रीतम नहीं पहुँचाना, निशिदिन खेलमें रे ।
पत्ते २ चमके महिमा उसको हाय न जाना ।
आफ़ताब सा छिपै जगत में नहिं समझे दीवाना ॥ नि० १ ॥
दुग्गी तिग्गी चौगी जीनी दहला और गुलाम ।
बीबी बादशाह जीतन में इक्का है सरनाम ॥ नि० २ ॥
इक्का सब में अफ़सर होवे जिसका मतलब मेल ।
तुम में फूट पड़ी आपस में कैसा खेलो खेल ॥ नि० ३ ॥
रंग बिरंगी बाज़ी जिसका नाम धरा है तास ।
वह न सृष्टि का कर्त्ता जाना जिसका जगत उजास ॥ नि० ४ ॥
पाठक की यह सीख मानले क्यों फिरता नादान ।
भूला २ फिरै भटकता भज प्रभु को धर ध्यान ॥ नि० ५ ॥

भजन ८२

जुआ परा है दुश्मन तुम्हारा।

चारों तरफ़ इसने अगिया लगादई, नक्की दुआ चौक औ तीया।
लाखों का गुल कर रहा दिया हा! ॥१॥
छके छुटे इसके पंजे में आये, यह पौ बारह सत्तरह अठारह।
गहना अब क्या छुटगई दारा हा! ॥२॥
लाखों हवेली गहने धरी है, मन में आया ताश उड़ाया।
काफ़नैन गंजिफ़ा जमाया हा! ॥३॥
लाखों ही इस ने गर्दन उड़ाई, चोरी जारी चुगली भारी।
इसने ही फैलाई सारी हा! ॥४॥
देखो युधिष्ठिर ने खेला था जुआ, पांचों भाई वन २ जाई।
बारह वर्ष तक भरी तबाही हा! ॥५॥
ऐसे ही राजा नल खेले थे इसको, दास कहाये दुःख उठाये।
बारह वर्ष तक घर नहिं आये हा! ॥६॥
पाठक कहै मित्रो इज्ज़त बचालो, मल वढ़ालो खड्ग उठालो।
इस दुशमन को जल्द निकालो हा! ॥७॥

भजन ८३

धन धर्म बचालो प्यारा, देखो लुट रहा देश तुम्हारा॥
पापिन फूट के दल आ छाये, ईर्षा द्वेषके बान चलाये जी।
चली क्रोध की तोप अपारा ॥ देखो० १ ॥

फैले धुंये अविद्या के भारी, हुई दिन से निशा अँधियारी जी !
चहुं ओर से मचे हाहाकारा ॥ देखो० २ ॥
चली बाल विवाह कटारी, जिसने लाखो की गर्दन मारी जी !
बही नदियां सी खून की धारा ॥ देखो० ३ ॥
नाना मतों की आग लगाई, नहिं नेक भी रत्ता पाई जी !
अब भी सँभलो क्यो नहि प्यारा ॥ देखो० ४ ॥
जल्दी मेल की फौज बनाओ, और प्रीति के बान चलाओ जी !
लेलो शांति की तोप हज़ारा ॥ देखो० ५ ॥
फैले ज्ञान का तेज तुम्हारा, चमके वेद धर्म रवि न्यारा जी !
तबही नाश हो वह अँधियारा ॥ देखो० ६ ॥
ब्रह्मचर्य्य का ले के कटारा, काटो शत्रु का वह दल सारा जी !
तबही बचजाय धर्म तुम्हारा ॥ देखो० ७ ॥
नाना पन्थों की अग्नि बुझाओ, उस पै श्रुति का जल वर्षाओ जी !
त्यागो ग़फ़लत की नींद अपारा ॥ देखो० ८ ॥
फूट शत्रु को पीछे हटाओ, बल्कि धूल मे जल्दी मिलाओ जी !
कहे पाठक लो प्रभु का सहारा ॥ देखो० ९ ॥

भजन ८४

जब से छोड़ी कला शिल्पकारी, तब से हो गया देश भिखारी ।
पहले विद्यालय थे जारी, ऋषि मुनि बनते ब्रह्मचारी ।
जब से बैरिन अविद्या पधारी ॥ तब से० १ ॥

नल नील शिल्पकर भारी, बांधा बन्ध समुद्र मँझारी जी।
जब से हुई निर्बुद्धि तुम्हारी ॥ तब से० २ ॥
जो थीं विद्यायें यहां जारी, उन्हे पढ़ते थे ब्रह्मचारी जी।
भूले नाम तलक नर नारी ॥ तब से० ३ ॥
योरुप वालोंने चुम्बक शक्ति पाई लिया कुतुबनुमाको बनाई जी
तुम पे सुस्ती ने मोहनी डारी ॥ तब से० ४ ॥
बल भाप के रेल चलाई, बिजली तार खबर पहुँचाई जी।
तुमने कोई न बात विचारी ॥ तब से० ५ ॥
फोटू फोनोग्राफ़ बनाये, खींची मूरति गाने सुनाये जी।
रवि चंद की लखि उजियारी ॥ तब से० ६ ॥
थर्मामीटर व बैरोमीटर, नापें गर्मी व दाब हवापर जी।
तुमको बैरिन निंदिया प्यारी ॥ तब से० ७ ॥
न तो प्राकृतिक उन्नति पाई, नहीं वर विद्या फैलाई जी।
छूटी रचनी विमान सवारी ॥ तब से० ८ ॥
लखो भारत के नर नारी, आलसी हुये हैं भारी जी।
जागें न चेत उर धारी ॥ तब से० ९ ॥
उठो अब भी आलस टारो, कौशलता उर में धारो जी।
कहे पाठक सुनो अनारी ॥ तब से० १० ॥

भजन ८५

सब देशों में मशहूर आर्य्यावर्त कहाता है।
पढ़लो इतिहास पुराना, जाने है सभी ज़माना।
चाहे अब कोई करो ग़रूर, गुरू यह समझाजाता है॥ सब० १ ॥

जितनी विद्या हैं सारी, हुई भूमंडल में जारी।
हुआ उनका यां से ज़हूर हमें इतिहास बताता है ॥ सब० २ ॥
क्या कहूँ अधिक हम भाई, करते अंगरेज़ बड़ाई।
मिल रही साक्षी भरपूर, यही सबकी गुरु माता है ॥ सब० ३ ॥
यूरुप के फिलासफर भारे, मरते यह शब्द उचारे।
प्रभु विनय करो मंजूर (हो आर्य्यवर्त में जन्म) मैक्समूलर फ़र्माता है ॥ सब दे० ४ ॥
अब वही देश है प्यारा, जिसे हिन्दुस्तान पुकारा।
सब इज़्ज़त मिलगई धूर, देखकर रोना आता है ॥ सब द० ५ ॥
उठो वासुदेव अय भाई, कुछ तो कर देश भलाई।
सब आलस कर दो दूर, ऋषी उपदेश सुनाता है ॥ सब० ६ ॥

भजन ८६

तूही है प्रभु नाथ हमारा, तूही दुख से छुड़ावन हारा।
तू सचिदानन्द अनूपम है, हम सारे अधमाधम । जी।
रखें तेरा ही एक सहारा ॥ तू ही० १ ॥
तुम सब कुछ जाननहारे, हम मोह में हैं मतवारे। जी।
तुम्हें सब विधि स्वामी विसारा ॥ तूही० २ ॥
तुम्हीं करुणासागर स्वामी, हम क्रोधी भी हैं अरु कामी। जी।
मैं तो न्याय पै तेरे बलिहारा ॥ तूही० ३ ॥
तुम्हें बुद्धी व मन और बानी, नहीं पावें साधारण ज्ञानी। जी।
तेरी महिमा है अपरम्पारा ॥ तूही० ४ ॥

यह धर्म की नाव हमारी, प्रभु डोलत है मँझधारी । जी ।
गहरी नदिया है दूर किनारा ॥ तूही० ५ ॥
हमने बन्धु भी सब अजमाये, अब तेरी शरण में आये । जी ।
कहे पाठक यह दास तुम्हारा ॥ तूही० ६ ॥

भजन ८७

तुमहीं करना इंसाफ़, धर्म सभा के मित्रो !
जिनको तुम कहो पुरानी, क्या नहिं निर्लज्ज कहानी ।
हमारा कुसूर मुआफ़ ॥ धर्म सभा० १ ॥

घनाक्षरी ।

देखो चार जारों के शिखामणी पुकारें विष्णु ब्रह्मा को सुनाया निज सुता पीछे धाये हैं । चन्द्रमा बताये गुरुपत्नी के भोगी और गाथा शिवलिंग की सुनाय न लजाय हैं ॥ पाराशर ऋषि मत्स्योदरी भोंजार करें गौतम की नारि पर इन्द्रहू लुभाये हैं । द्रौपदी के पांच पति पाण्डव से धर्म वीर, ऋषियों को दूषण पुराणों ने लगाये हैं ॥

प्रभु निराकार बतलाओ, साकार भी उलटा गाओ ।
अक्ल के इतना खिलाफ़ ॥ धर्म सभा० २ ॥
दया धर्म का अंग बताओ, बकरे बलि दे करवाओ ।
धर्म में देहु शिगाफ़ ॥ धर्म सभा० ३ ॥
जाते जब गंगा न्हाने, लगे दुष्ट कर्म करवाने ।
कहना पड़ता है साफ़ ॥ धर्म सभा० ४ ॥

घनाचरी ।

रण्डिन का नाच कहीं जूये की लगाई धुनि, गंगा की क़सम झूठी खायबे को पके है। भक्ति नहीं, ध्यान नहीं, साधु सतसंग नहीं, होम नहीं, दान नहीं, फिरें हके बके हैं ॥ कितनो के हाथ छूटे कितनों के पांव टूटे कितनों का लुट धन चोर औ उचके हैं। ईश्वर के भक्त ऋषि लोग जहां पाने न हों वहां जांय वही जिन्हे ज्यादा खाने धके है ॥

तुमको तो सनातनी सर्दी, प्रतिमाओं पै हो बेदर्दी ।
उढ़ाते क्यों न लिहाफ़ ॥ धर्म० ५ ॥
कहे पाठक परखो आओ, चतुर वेद रत्न यहां आओ ।
ज्ञान के बनो सराफ़ ॥ धर्म० ६ ॥

ग़ज़ल ८८

जो पत्थर पै ईमान लाये हुए हैं,
अविद्या में मन को फँसाये हुए हैं।
नदी नालों के तीर्थों में भटक कर,
जिहालत से मनको लुभाये हुए हैं।
नचा कृष्ण राधा को रासों के अन्दर,
वह योगी को कामी बनाये हुए हैं।
वह ब्रह्मा पै इलज़ाम दुस्तर लगाकर,
बुजुर्गी फ़ज़ीलत घटाये हुए हैं।
बताते जो औतार ख़ालिक़ का जग में,

वह ईश्वर पै धब्बा लगाये हुए हैं ॥
दयानन्द स्वामी ने हालत सँभाली,
वह समझे जो बुद्धी को पाये हुए हैं ॥
नहीं उनको आई कभी अक्ल शर्म्मा,
जो मुर्दों पे दिल को जमाये हुए हैं ॥

भजन ८६

हुआ साबित साफ़ पुराण से नहीं व्यास ने पुराण बनाये ।
विष्णु पुराण और पढ़ो भागवत भाई ।
दोनों में परस्पर द्वैत विरोध दिखाई ॥
जब दोनो पुस्तक व्यास ने खास बनाई ।
फिर किस कारण आपस मे होत लड़ाई ॥
लिखा भागवत में लखिलेना, श्री कृष्ण को ईश्वर कहना, ज़रा ध्यान पते पर देना । दिया दशम स्कंध बताय के ॥

झूलना ।

भागवत का दशवाँ स्कंध, देख अध्याय तीसवां ग्रंथ । हुआ फिर किस कारण मतिमन्द, वहां पर ऐसा किया बयान है । जगत में जितने हैं औतार, कला से हुए हैं बारम्बार । अलहदा है उनसे,निराकार, पर कृष्ण खास भगवान है ॥

यह दशमस्कंध की कथा, ठीक है पता, साफ़ दिया बता, देखो इसको ध्यान से । इस कारण चिन्ह बताये ॥ नहिं व्यास ने पुराण० १ ॥

इसके विरुद्ध विष्णु पुराण पढ़ो प्यारे।
लगे करने देव ईश्वर की स्तुति सारे॥
ईश्वर ने स्तुति सुनी दो बाल उखाड़े।
एक काला एक सफेद थे न्यारे न्यारे॥

काला औतार धरेगा, फिर कंस के प्राण हरेगा, दुष्टों का नाश करेगा, हरि छिपे हाल समझाय के॥

झूलना।

मित्र है विचार का स्थान, व्यास क्या थे ऐसे अज्ञान। पहले कहा कृष्ण खास भगवान, लिखा फिर उन्हें बाल भगवान का॥ लेंगे समझ वही जो दाना, कह कर खास बाल बतलाना। ऐसा उलटा क़लम चलाना, नहिं है काम किसी इनसान का॥

ज़रा करके देखो सैर, सब में भरा वैर, थे कोई ग़ैर। लिखा निज निज अभिमान में। औरों को तुच्छ बताये॥ नहिं० २॥

दोहा-पढ़ पुराण सब लीजिये, करके खूब विचार।
विरचे होते व्यास के, क्यों होती तक़रार॥
सब में सबही के लिये, गाली भरीं अपार।
अपने को अच्छा कहें, औरों को बदकार॥
पदमपुराण के उत्तर खण्ड का अध्याय अठत्तर,।
तज पक्षपात को मित्र विचारो पढ़कर॥
लिखा विष्णु को जो तजे मोह वश होकर।
करै पूजा और की पाखंडी है वह नर॥

जो और देवों पर जावे । चढ़ा उसका पदारथ खावे ॥
वह चाण्डाल हो जावे । रहा पद्म पुराण यों गायके ॥

झूलना ।

ऐसे पद्म पुराण कहता है, करोड़ों वर्ष नर्क रहता है ।
नर्क की अग्नी में दहता है, वहां पर होता दुःख अपार है ॥
शिव के अतिरिक्त और देवों को, गाली लिखा उनके भक्तों को ।
सुनाया सूक्ष्म हाल सभा को वहां पर बहुत हुआ विस्तार है ॥
यों कहता पद्म पुरान, विष्णु भगवान, करो यह ध्यान ।
और को मत पूजो अज्ञान से । यह वैष्णवी मत समझाये ॥
नहिं व्यास० ३ ॥

दोहा—खंडन पद्म पुराण का शिव पुराण के बीच ।
कहें विष्णु के भक्त को, चाण्डाल और नीच ॥
जो एक शिव छोड़कर, अन्य देव को ध्याय ।
वह और उसका पिता भी, महा नर्क में जाय ॥
अब इन पुराणों को देख यह निश्चय आया ।
आधुनिक सम्प्रदाओं ने यह झगड़ा ठाया ॥
कहें अन्य देव लघु अपना बड़ा बताया ।
इसी कारण सबने जुदा २ कथ गाया ॥

करूँ अर्ज़ ध्यान टुक दीजै । रचे व्यास के साबित कीजै ।
धर न्याय तुला पर लीजै । हठ धर्मी से चित्त हटायके ॥

झूलना।

हठ धर्मी से चित्त हटाओ, क्यों ऋषि व्यास के बने बताओ। मत यह ज़िक्र ज़ुबां पर लाओ, इनसे बहुत हुआ नुक़सान है। भाइयो करो वेद परचार, होगा मित्र तभी उद्धार। तेजसिंह कहे यह बारम्बार, खड़े इस जलसे के दरम्यान में ॥

अन्तिम विनती है यही, जो मैंने कही, ग़लत या सही, देखलो पुराणों के दर्मियान से। फिर क्यों नहीं निश्चय आये ॥ नहिं व्यास ने पुराण० ४ ॥

भजन ६०

(लावनी)

ऋषियों पर इलज़ाम लगाते पोप नहीं शरमाते हैं।
महादेव को कामी लिख दिया, कृष्ण को चोर बताते हैं ॥
स्वांग बनाकर कहें कृष्ण जी माखन दही चुराते हैं।
वस्त्र उठा न्हाती गोपिन के, वृक्ष पै वह चढ़ जाते हैं ॥
जल में से नंगी आने को कृष्ण जी फ़र्माते हैं।
जो नंगी नहीं आओगी तो कपड़े भी नहीं पाते हैं ॥
टेक–अति भ्रष्ट पुराण बनाय के, श्रेष्ठों को दोष लगाया।
विष्णू जालन्धर घर आया, वृन्दा का पतिव्रत डिगाया ॥
व्यभिचारी विष्णु ठहराया, शाप उसका पाय के।
वह शालिग्राम कहाया ॥ श्रेष्ठों० १ ॥

ब्रह्मा को कामी बतलाया, पुत्री गमन का दोष लगाया।
सूरज जब पृथ्वी पर आया, कुन्ती के घर जाय के।
क्वांरी के गर्भ ठहराया॥ श्रेष्ठों० २॥

इन्द्रदेव की लिखी बुराई, गौतम नारी भोगी जाई।
चन्द्र ने गुरु पत्नी सिगवाई, (वर) द्रौपदी पांच कराय के।
बामन से छल करवाया॥ श्रेष्ठों० ३॥

शिवजी की यह कथा बनाई ऋषिपत्नी लों वेरी जाई।
उनको लिखत शर्म न आई, कहें शंकर भरमाय के।
गुप्तेन्द्रिय को पुजवाया॥ श्रेष्ठों० ४॥

भजन ६१

क्यों पड़े भरम में भाई, सिख मानो मीत हमारी।
निराकार का ध्यान भुलाया, जड़ वस्तू से नेह लगाया।
कैसा दिल पर परदा छाया, अक़्ल गई बौराई।
वेदों की रीति विसारी॥ १॥

एक ईश्वर से नेहा जोड़ो, वैर भाव को दिल से छोड़ो।
वैदिक धर्म से मुँह मत मोड़ो, यही एक सुखदाई।
ज़रा दिल में लेहु विचारी॥ २॥

रचा उसीने जगत यह सारा, जो है सबमें सबसे न्यारा।
कोई न उसका है सुत दारा, लो शरण उसी की जाई।
नहीं होय अन्त को ख़्वारी॥ ३॥

मित्रो ईश्वर के गुण गाओ, मत अब भ्रम के बीच भ्रमाओ।
सोहनलाल तभी सुख पाओ, ईश्वर होय सहाई।
क्यों दर दर फिरो अनारी॥ सिख० ४॥

भजन ६२

फँसकर प्यारे अज्ञान में, क्यो मनुष जन्म खोता है।
कुछ करलो पर उपकार जो हो निस्तारा।
यह मनुष्य देह नहीं मिलती बारम्बारा॥
जिसने दिलमें गुण औगुण नहीं विचारा।
वह चौरासी में फिरता मारा मारा॥
कुछ नहीं मन में शरमावे। जड़ को ईश्वर बतलावे।
कैसे फिर आनन्द पावे। शुभ अवसर बीता जावे॥
ईश्वर से करले प्रीति, वही है मीत, कहे यह नीति, लाओ
अब ध्यान में सुख सुमिरन से होता है॥ क्यों० १॥
कहां शिवि दधीच और हरिश्चन्द्रसतधारी।
कहां मोरध्वज विक्रम से परउपकारी॥
कहां रामचन्द्र और परशुराम बलधारी।
नहीं रहे जगत में नाम है उनका जारी॥
कैसा मद तुझ पर छाया। जो ईश्वर को बिसराया॥
बहुबार तुझे समझाया। नहिं ध्यान में तेरे आया॥
अब भी कर सत्य व्यवहार, वही है सार, सब का भर्तार,
मिले वह ज्ञान में, नहिं सागर में सोता है॥ क्यों० २॥

बेहोश लोभ में पड़ा समझ नहीं आई।
घर की पूँजी को लेगये लोग चुराई॥
अब भी आलस को त्याग चेत कर भाई।
जो शेष रही है उसको लेव बचाई॥
जो देह मनुष्य की पाई। करले कुछ नेक कमाई।
भारत की चाहो भलाई। सत्य विद्या दो फैलाई॥
है उत्तम विद्यादान, कहा ले मान, अरे नादान, नहीं मिलता सुख अभिमान में। क्यों विष की बेल बोता है॥ क्यों० ३॥

दो धन्यवाद स्वामी जी को सब भाई।
हिन्दू से आर्य्य है जिसने दिया बनाई॥
करो मित्रो संध्या हवन रोज़ चित लाई।
छुट जावे सारे क्लेश मुक्ति हो जाई॥
चित सत्य काम में लाओ। जो ऋषिसन्तान कहाओ॥
ईश्वर से प्रीति लगाओ। फिर मन वांछित फल पाओ॥
कहे सोहन यही पुकार, लगावे पार, वही कर्त्तार, रमरहा वह सारे जहान में। क्यों इधर उधर जोहता है॥ क्यों० ४॥

भजन ६३

भूले जाते हो तुम हाय, भारतवर्ष के रहने वाले।
हम तुम उनकी हैं सन्तान, जो थे भूमी में विद्वान।
गौतम पातंजली महान, सब तत्वों को जानन वाले॥
थे श्री रामचन्द्र महाराज, पितु आज्ञा पर छोड़ा राज।

नहीं स्वीकारा पद युवराज, पुरुषोत्तम कहलावन वाले॥
अर्जुन भीष्म हुय बलवान, जिनके लख संहारी बान।
अब तज ब्रह्मचर्य की बान, हो बलहीन करावन वाले॥
करके जाती का अभिमान, निर्बल हो गये तुम बलवान।
देते नहीं दशा पर ध्यान, जड़ को चेतन मानन वाले॥
तुमहीं तो थे सब गुणखान, गाड़ी ये क्या रची विमान।
अब परदेशी भये धनवान, नई कल तार बनावन वाले॥
अब भी मानो बात हमार, मिलकर करलो वेद प्रचार।
पाठक तबही होय सुधार, हो जाओ मान बढ़ावन वाले॥

भजन ६४

तुम करो विचार हिन्दू आर्य दोऊ मत का।
यहां ईश्वर है जग कर्त्ता, वहां मनुष्य हाथ से गढ़ता।
किया अंधेर प्रचार॥ हिन्दू० १॥
यहां सब के बीच समाया, वहां मन्दिर बीच बिठाया।
बजे घंटे घड़ियाल॥ हिन्दू० २॥
यहां बिना ज्ञान नहीं मुक्ती, वहां खूब निकाली युक्ती।
कहीं गंगा के द्वार॥ हिन्दू० ३॥
यहां क्लेश रहित अविनाशी, वहां हुआ कहीं बनवासी।
कहीं चोरो कहीं जार॥ हिन्दू० ४॥
यहां ब्रह्मचर्य मन भाया, वहां बाल विवाह रचाया।
होय फिर कैसे सुधार॥ हिन्दू० ५॥
यहां सन्ध्या दो कालों की, वहां रहै पोल गालों की।

दई गर्भे भरमार ॥ हिन्दू० ६ ॥
यहां काम रहित है स्वामी, वहां कीन्हा होकर कामी ।
मास छः का अँधियार ॥ हिन्दू० ॥ ७ ॥
यहां भारी होम रचाया, वहाँ है बलिदान कराया ।
जाय देवी के द्वार ॥ हिन्दू० ८ ॥
यह ईश को दोष लगाया, क्यों कच्छ मच्छ बतलाया ।
कहीं शूकर अवतार ॥ हिन्दू० ६ ॥
बस सत्य मार्ग मे आओ, क्यो नाहक मन भटकाओ ।
जगन कहे बारम्बार ॥ हिंदू १० ॥

भजन ६५

टेक—भूले जाते हो क्यो यार हिंदू धर्म सनातन वाले ।
सच्चे मारग को विसराय, खोटे कर्मों में चित लाय ।
दुनिया दीनी है बहकाय, मूरत को प्रभु मानन वाले ॥१॥
बाली आयू में कर व्याह, विधवा करके देत बिठाय ।
फिर कर्म्मों का दोष बताय, दुःखका भार बढ़ावन वाले ॥२॥
देवी चंडी मिल बतलाय, बकरो भैसों को कटवाय ।
दिल में ज़रा तरस नहिं खाय, हिंसा पशु फैलावन वाले ॥३॥
कहिं २ बतला भूत मसान, करवाते हैं बहुतक दान ।
अपनी करते खूब दुकान, दुनिया को बहकावन वाले ॥४॥
कहिं २ गाली खूब सुनाय, हम पै गेह उपल बरसाय ।
झूठे को सच्चा बतलाय, अपनी कीर्ति बढ़ावन वाले ॥५॥
अब यह कहता जगन पुकार, सुनलो मित्रो बात हमार ।

करो तुम वैदिक धर्म्म प्रचार, तुमही हाथ कटावनवाले ॥६॥

भजन ६६

भला संसार, पोप जाल में पड़के।
कोई वस्तु न छोड़ी भाई, जिनमें नहिं बुद्धि लगाई।
गिनो देखो है हज़ार ॥ पोप० १ ॥

दण्डक छन्द ।

बेरी आक झांड़ी, झूंड़, कीकर औ पीपरादि, साल वट पाखर औ तुलसी को रूंच हैं। नदी और ताल कूप, माड़ी औ प्रेत भूत, चाकी औ चाकभीत, आंवा बाँबी पूजे हैं॥ काली ज्वाला पत्थर पै, भेरों युक्त कूकर पै, क़ब्र और ताज़ियों पें, जाय जाय जूझे है। धीवर कुम्हार काछी, खटिक चमार मांझी भाट भंगी पीर माली शीश इन्हें झुके हैं॥

जगदीश ध्यान नहिं कीन्हा, शुभ कर्मों में चित नहिं दीन्हा।
किया क्यों अत्याचार ॥ पोप० २ ॥
तुम ईश्वर में मन लाओ, मत तबियत को भटकाओ।
करेगा वहही पार ॥ पोप० ३ ॥
मत वृथा माल लुटाओ, शुभ कर्म में समय विताओ।
करो श्रुतिधर्म प्रचार ॥ पोप० ४ ॥
कहे तुम से जगन पुकारी, तुम सुनियो सब नरनारी।
भजो नित श्री ओंकार ॥ पोप० ५ ॥

भजन ६७

ओ करिये कृपाजी करतार मैंने तेरी आशा लई ।
मथुरा भी धाई, अयोध्या सिधाई, धाई मैं काशी के द्वार ॥ १ ॥
मन्दिर भी पूजे, शिवाले भी पूजे, पूजे मैं दशों अवतार ॥ २ ॥
यमुना भी नहाई, मैं सागर भी धाई, गंगा की नहाई मँझधार ॥ ३ ॥
जैनी भी जाँचे, कुरानी भी जाँचे, पुरानी का जाँचा विचार ॥ ४ ॥
जंगल भी छाने, मैं पर्वत घुमाने, छाना तीरथ हारेद्वार ॥ ५ ॥
क़िस्सो को लेखा, पुराणों को देखा, देखी मैं गप्पों की मार ॥ ६ ॥
सब कुछ अजमाया, स्वारथ को पाया है धिक् बिना ओंकार ॥ ७ ॥
भ्रमण कर हारी, मैं नाहक शिरमारी, कीजे जगत को पार ॥ ८ ॥

भजन ६८

है अग्निहोत्र सुखदाई, तुम क्यों नहिं मित्र विचारते ।
वायू बिन नहिं जीवन होई, श्वास बन्द कर देखो कोई ।
रोज़ मूत्र मल त्यागो सोई, उसको नित्य बिगारते ॥
पर करते नहीं सफ़ाई ॥ १ ॥
द्रव्य सुगंधित औषधि लीजै, मिष्ट आदि एकत्रितकीजै ।
तिनका हव्य अग्नि में दीजै, यह मिल वायु सुधारते ॥
घन वर्षहि मह्नि नियराई ॥ २ ॥
पूर्वज ऋषि वर्षा वर्षाते, अग्नि अधिक कर वायु चलाते ।
उससे बहुत से काम बनाते, व्याधि अनेक निवारते ॥
और अकाल भी मिटि जाई ॥ ३ ॥

जो प्रति गृह यह पृथा चलाओ, पूर्व समय का दर्शन पाओ।
पाठक सब उसके गुणगाओ, जिसे दयानन्द पुकारते ॥
जिन ऋषियों की रीति चलाई ॥ ४ ॥

भजन ९९

जबसे छोड़ी बान अग्निहोत्र की मित्रो।
दिनरात क़हत पड़ते हैं, लाखों प्राणी मरते हैं।
मुफ्त में देते जान ॥ अग्निहोत्र० १ ॥
कहिं हैं विषूचिका भारी, कहि प्लेग महा दुखकारी।
कांपते सुन २ प्रान ॥ अग्निहोत्र० २ ॥
वायु तो है बहुत ज़रूरी, बिन जल भी है मजबूरी।
दुहुँ दोषन की खान ॥ अग्निहोत्र० ३ ॥
नहीं अन्न स्वच्छ पाते हैं, हम रोगी हो जाते हैं।
व्याधि ने घेरे आन ॥ अग्निहोत्र० ४ ॥
अबभी यदि यज्ञ रचाओ, शुद्धान्न वायु जल पाओ।
नहीं दुःख होय निदान ॥ अग्निहोत्र० ५ ॥
है धन्यवाद स्वामी को, पाठक उसस्त नामी को।
जिसने किया विधान ॥ अग्निहोत्र० ६ ॥

भजन १००

अब हुआ सरदार, अग्निहोत्र पहिले था।
यज्ञ पात्र प्रात शुद्ध होते, अब नेचे आदि उठ धोते।
अग्नि करते तैयार ॥ अग्नि० १ ॥

यज्ञ धूम सुगन्धि फैलाते, जब कर्पूरादि जलाते।
तम्बाकू अब धुआँधार ॥ अग्नि० २ ॥
ध्वनि ओ३म् से हवन रचाते, अब गुण २ शब्द सुनाते।
पियें बहुत नरनार ॥ अग्नि० ३ ॥
यज्ञ धूम रोग को नाशे, हुक्का बहु व्याधि प्रकाशे।
करे खों २ से प्यार ॥ अग्नि० ४ ॥
जूठन को छूत बतावें, पर पीने नहीं शर्म्मावें।
लगी रहती है लार ॥ अग्नि० ५ ॥
शीरा अरु रेह मिलावे, मक्खी आदिक कुटजावें।
तम्बाकू जब हो तैयार ॥ अग्नि० ६ ॥
शिक्षा वेदन सुखकारी, सब होम करो नर नारी।
कहे पाठक निरधार ॥ अग्नि० ७ ॥

भजन १०१

काल तोहि औचक में घेरे, है बड़ा भयानक हाय।
अन्त समय नर धन बतलावे, उँगली का संकेत दिखावे।
टप टप टप आंसू टपकावे, पड़ा पड़ा हेरे ॥ है० १ ॥
दीखे पर देखा नहीं जावे, बोले है पर बोल न आवे।
यों फिर हाथ पांव पटकावे, महा दुःख मेरे ॥ है० २ ॥
मन विचारता रहा विचारा, बुद्धि यादने किया किनारा।
हुआ मूर्च्छा सँग वह न्यारा, जीव देह सेरे ॥ है० ३ ॥
पाठक करले जो करना है, तुझे भी एक दिन तो मरना है।
जाना तुझे चिता पर ना है, ओं २ टेरे ॥ है० ४ ॥

दादरा १०२

प्रभु रक्षा करो मेरी, पिताजी।
हित चिन्तक तुमसा नहीं कोई, सब सुखदाता, जन के त्राता।
माता तुम ही भ्राता ॥ प्र० १ ॥
न्याय तुम्हारा जग विस्तृत है, तुम्हीं विधाता, यों जग गाता।
नहीं किसी से नाता ॥ प्र० २ ॥
शांति न पावें तेरी शरण तजि, ऋषि प्रकटाता, मुनि दिखराता।
ज्ञान दिलाता धाता ॥ प्र० ३ ॥
पाठक भव दुःख में विकल है, इसे उबारो, शीघ्र सुधारो।
तुम हो मन के ज्ञाता ॥ प्र० ४ ॥

भजन १०३

श्याम ने माखन नहीं खाया,
इन ठगियों ने चोरी करना उनको बतलाया।
भले घरों का लाड़ला अच्छे घरों का पूत।
गीता उसकी देख लो कैसी है करतूत।
नाहक क्यों चोर ठहराया ॥ श्याम ने० १ ॥
बैठे सिंहासन पोप जी कथा में रहे सुनाय।
श्री कृष्ण महाराज को चोर जार बतलाय।
जिन्हों ने धन लूट २ खाया ॥ श्याम ने० २ ॥
यमुना जी के घाट पर कृष्ण रहे समुझाय।
नंगी इस में मत नहाइयो पातिव्रत घटजाय।

लिखा सुख सागर में पाया ॥ श्याम ने० ३ ॥
सोचें थे हम रात दिन नहीं मिला था पाथ ।
थे हम उसकी खोज में नहीं लगा था हाथ ।
ज्ञान स्वामी ने बतलाया ॥ श्याम ने० ४ ॥

ग़ज़ल १०४

प्रभु तुझ बे निशान का निशान क्यों करें ॥
तू है कुल मुहीत सर्व व्यापक अयां है ।
तू है सब का मालिक मगर लामकां है ।
तेरे रहने को इकजा मकान क्यों करें ॥ प्र० १ ॥
नहीं तेरे रंग है नहीं तेरी सूरत ।
बनावें क्यों जड़ता से पत्थर की मूरत ।
बुतें बेजा में तेरा गुमान क्यों करें ॥ प्र० २ ॥
न माना तुझे और इत उत ध्यावें ।
बली भेंट बकरे बुतों पर चढ़ावें ।
बढ़े दुख तो उलटा अहसान क्यों करें ॥ प्र० ३ ॥
न करतब को जाना लिया बुत सहारा ।
प्रारब्ध पर अपना जीवन विचारा ।
फिर छल और कपट की दूकान क्यों करें ॥ प्र० ४ ॥
धर्म और कर्म में न मन को लगाया ।
तुझे जीव हिंसा का मुलज़िम बनाया ।
पशू पत्ती तुझ पर कुर्बान क्यों करें ॥ प्र० ५ ॥
तू है लाशरीक और बाहद हू लासानी ।

नसीहत की सब को सुनावें कहानी ।
इबादत में दीगर मिलान क्यों करें ॥ प्र० ६ ॥
बने ब्रह्मयोगी गुसाईं संन्यासी ।
कहें हम तो हो गये वैकुण्ठ वासी ।
फिर दुनिया में, सौ २ एलान क्यों करें ॥ प्र० ७ ॥
ब्राह्मण क्षत्रिय महाजन कहावें ।
हज़ारो रुपये लेके बेटी पै खावें ।
बिकी कन्या का फेरो पै दान क्यों करें ॥ प्र० ८ ॥
कहे नन्दलाल प्रभु तेरा सहारा ।
तूही एक स्वामी है रक्षक हमारा ।
शिर्क करके ज़ाया ईमान क्यो करें ॥ प्र० ९ ॥

भजन १०५

तरेगा तो वह ही जाके हृदय में हर है ॥ गंगा के नहाने से जो पापी नर तर जायँ । मीन क्यों न तरे जाको जल ही में घर है ॥ तरे० १ ॥ जटा के बढ़ाने से जो पापी नर तर जायँ । मोर क्यों न तरे जाके लम्बे २ पर हैं ॥ तरे० २ ॥ मूड़ के मुड़ाने से जो पापी नर तर जायँ । भेड़ क्यों न तरी जाको मूड़े सब धर है ॥ तरे० ३ ॥ शंखके बजानेसे जो पापी नर तर जायँ । कुत्ता क्यों न तरे जाको शंख कैसो स्वर है ॥ तरे० ४ ॥ भस्म के रमाने से जो पापी नर तर जायँ । गदहा क्यों न तरे जो लोटे दिन भर है ॥ तरे० ५ ॥ अग्नि के तपाने से जो पापी नर तर

जायँ। भुरजी क्यों न तरे भाड़ झोंके दिन भर है ॥ तरे० ६ ॥ तिलक छाप के लगाने से जो पापी नर तर जायँ। हाथी क्यों न तरे जाके लगता सेंदुर है ॥ तरे० ७ ॥

भजन १०६

टेक-बिन वेद पता नहिं पाया, उस ईश्वर दीनदयाल का। पूछा जाके मैंने ब्राह्मण से, बोला मिलेगा शिव पूजन से ॥ पूजा करी मैंने लाख यतन से। नाश किया धन माल का ॥ जब शिव मन्दिर बनवाया। सोने का कलश चढ़ाया। पर कुछ भी हाथ न आया ॥ उस ई० १ ॥

फिर जो मिला दादू मत वाला। उसने कहा जपले नन्द लाला ॥ वही करें तेरा प्रतिपाला। भय मिट जावे काल का ॥ मैंने वैसाही अमल कराया। मन्दिर में ढोल बजाया। वृन्दा वन चक्र लगाया। उस ई० २ ॥

जोगी वैरागी सब मैंने छाने। कूड़ा पन्थिये औ मस्ताने ॥ जैनी कुरानी किरानी पहचाने। महरम हुआ सब हाल का ॥ अब जगन्नाथ उठ धाया। हैं जूठ भात वहां खाया। फिर आगे क़दम बढ़ाया ॥ उस ई० ३ ॥

फिर मैं द्वारका आया प्यारे। बद्रीनाथ कनखल हरद्वारे ॥ तन मल मल के गोते मारे। ना मिला जवाब सवाल का ॥ तब खाली लौट घर आया। फिर भी मेरा मन घबराया ॥ तब चक्र अक़्ल ने खाया ॥ उस ई० ४ ॥

फिर जाके पूछे मुल्ला क़ाज़ी । कहते हज्ज में अल्ला राज़ी ॥ पढ़े निमाज़ जो बने निमाजी । ख़तरा नहीं ज़वाल का ॥ हक़-ताला ने फ़रमाया । तब मसजिद को उठ धाया । वहां जाकर सिजदा बजाया ॥ उम्र ई० ५ ॥

तब भी मुझे शांति नहीं आई । फिर मुझ को मिल गया ईसाई ॥ उसने एक कहानी सुनाई । क़िस्सा मसीह के हाल का ॥ मेरे मनको भी भटकाया । गिरजे ले जा बिठलाया । कर करके वाज़ समझाया ॥ उम्र ई० ६ ॥

सारा जहां मैंने ढूंढा भाला । ढूंढ भाल हो गया मतवाला ॥ तत्व मतों का सभी निकाला । बँधा पहाड़ खयाल का ॥ जो दिल में किसी के आया । वही लिखकर ग्रन्थ बनाया । पर मुझको नहीं कुछ भाया ॥ उम्र ई० ७ ॥

मिला मुझे तब एक संन्यासी । ब्राह्मण वंश दक्षिण का बासी ॥ बात मेरी मत जाना हांसी । तोड़ा बन्द जंजाल का ॥ सन्ध्या करना सिखलाया । वेदों का ज्ञान बतलाया ॥ भक्ती का मार्ग दिखलाया ॥ उम्र ई० ८ ॥

झूलना ।

मित्रो यह वेही ब्रह्मचारी थे । प्रभु आज्ञा शिर धारी थे ॥
तपस्वी जग हितकारी थे । करूँ क्या वर्णन बारंबार मैं ॥
सुनो अब नाम बताता हूँ । ये जिनकी महिमा गाता हूँ ॥
श्रीमद्दयानन्द स्वामी । हुये भूमण्डल में नामी ॥
प्राण किये अर्पण देश सुधार में ॥

सुनो बात मेरी बुद्धिमानो । वह महाऋषि दयानन्द जानो ॥ कहे सिर्फ़ इक ईश्वर मानो । मालिक शाह औ कंगाल का ॥ कहे खन्ना यह उसकी माया । सारा ब्रह्मागड रचाया । घट २ में आप समाया ॥ उस ईश्वर० ६ ॥

भजन १०७

जब तजा वेद विद्या को तभी से होने लगी हानी ।
जिनके हम सन्तान, वह थे विद्वान, बड़े बलकारी ।
पच्चीस वर्ष तक रहत थे ब्रह्मचारी ॥
पच्चीस साल उपरांत, वह बनके कंत, ब्याहते नारी ।
पच्चीस साल फिर करते खानादारी ॥
फिर वानप्रस्थ में जाते । ईश्वर की भक्ति कमाते ॥
संन्यासी पद फिर पाते । सबको उपदेश सुनाते ॥
हरफ़न में थे उस्ताद, नेक बुनियाद, जिनकी औलाद, हुए हम मूरख अज्ञानी । जब तजा वेद० १ ॥
अर्जुन से क्षत्रिय बीर, बड़े रणधीर, युद्ध करते थे ।
वह शस्त्र के थे धनी नहीं डरते थे ॥
भीमसेन बलवान, लेतीरो कमान, जब कि चढ़ते थे ।
तब शत्रुदल के साथ कैसे लड़ते थे ॥
है तुमको याद लड़ाई । जब राम लक्ष्मण दो भाई ।
रावण पर करी चढ़ाई । लंका में मची दुहाई ॥
मन्तक रियाज़ी की कान, फ़लसफ़दान, वही विद्वान नजूमी ज्योतिष के बानी ॥ जब तजा० २ ॥

उन्हीं के हैं हम लाल, हमारा हाल, हुआ यह आकर।
ग़ाफिल होकर सो रहे सब माल लुटाकर ॥
ऐसे हुए ख़ामोश, जैसे बेहोश, धतूरा खाकर।
लुटगये सभी नहीं देखा आंख उठा कर ॥

यहां ऐसी मची तबाही । हमें लूटन लगे ईसाई ॥
तब ईश्वर हुए सहाई । इक ऋषि दिये प्रगटाई ॥

जिन विद्या का प्रकाश, अविद्या नाश, वेदों का भाष्य।
किया जो भगवत् की बानी ॥ जब० ३ ॥

वह महाऋषि दयानन्द, रैनके चन्द, करके उजियाला।
अज्ञान रूपी अन्धकार में हमें निकाला ॥
सब खोले मतों के भेद, तो चारों वेद का दीपकबाला।
उड़गया साया जिन्न भूत होके मतवाला ॥

अब उठो चुस्त होजाओ। मत वृथा वक्त गँवाओ ॥
वेदों को पढ़ो पढ़ाओ। फिर परम सुखों को पाओ ॥

कहे खन्ना बनो दिलेर, होजाओ शेर, सभी हो ज़ेर।
सफल हो आर्य ज़िंदगानी ॥ जब० ४ ॥

ग़ज़ल १०८

किसने यह बस्ती हिन्द को बरबाद कर दिया।
बतलाओ ऐ जवाना! वह क्या है शराब है ॥
ज़रदार के जो जेब में पाई नहीं रही।

मुफ़लिस के ओढ़ने को रज़ाई नहीं रही।
जिस दर्द की कि कोई दवाई नहीं रही॥ बतला०॥
बूढ़े जवान बच्चों के सब होश खो दिये।
बीज आके जिसने यहां पै तबाही के बो दिये॥
जिसके मुक़ाबिले में अक़्लमंद रो दिये।
पीरों को अपने जो सदा नाचा दिखाती है॥
दुनिया के बेवकूफ़ों को दावों में लाती है।
दावों में लाके अपने जो गर्दन दबाती है॥ बतला०॥
क्या चीज़ इस जहान में दुश्मन है जान की।
जो मूज़बे तबाही है हिंदोस्तान की॥
जिस चीज़ पै आजिज़ है लानत जहान की॥
बतलाओ ऐ जवानो! यह क्या है शराब है॥

भजन १०९

तूही प्रभु अविकारी। तूही परउपकारी। तूही देवन को देव कहावे स्वामी। मैं मूर्ख, मैं मूर्ख, मेरी टूटी सी नैया लगाओ स्वामी पार॥ तूही०॥ हम सबको प्रभु शरण में लेलो। अपना ज्ञान प्रभु हमको देदो। मुझे पापो से अब तो छुड़ाओ स्वामी॥ तू०॥ काम क्रोध ने मुझे दबाया। लोभ मोह के वश में आया॥ मुझे अपनी शरन में लेलो स्वामी॥ तूही०॥ विद्यादान हमें दो स्वामी। बुरे काम हरलो सब स्वामी॥ हमें विद्या का भूषण पहनाओ स्वामी॥ तूही०॥ विना ज्ञान मूरख हम स्वामी। तूही है प्रभु अन्तर्यामी॥ मेरी सारी अविद्या मिटाओ स्वामी॥तूही०॥

भजन ११०

दीनबन्धु दीनों के दुख टाल प्रभु करतार। हमारी, हमारी, तुझ से यही पुकार ॥ होकर व्याकुल शरण तेरी हम आये पालनहार। हरी, हरी, भवसिन्धु पार उतार ॥ मोह माया में मन लपटाया, छल और कपट का जाना प्यारा। धन संग्रह में समय गँवाया निष्फल जन्म गँवाया सारा॥ मानुष जन्म दियो तुम विषयों ने गन्दा कर दिया सारा। हो बेआस शरण तेरी आयो तुम बिन और न कोई सहारा ॥ तू यहां, तू वहां वे निशां, तू महा तुझे समान होवे ना ओंकार, दया, दया, हमपै करो दया ॥ दीन० ॥ दीनदयालु न तुम सम कोई चरण कमल में देवो वासा। नाम तेरा हरी, पतित उधारन भक्ती जल की लागी प्यासा। तू ईश्वर सब का प्रतिपालक, हम तेरे दासा अनुदासा नाम जपाओ जल्दी ईश्वर जीवन की है थोड़ी आशा। ओंकार अपरम्पार, निराकार, निराधार, श्रद्धा हो वेदो पर महान् दया, दया, अजिज़ पै करो दया ॥ दीन बन्धु० ॥

॥ शमित्योऽम् ॥



❀ विज्ञापन ❀

लक्ष्मी	।)	मुसलमान [illegible] की अदालत	
उपदेश रत्नावली	-)	और [illegible] का फैसला	[illegible]
विदुर-नीति	।=)	स्वर्गीय देवियां	।=)
श्वेताश्वतर उपनिषद्	।≡)	वीर माताएं	॥≡)
भागवत समीक्षा	।=)	सच्चा हितोपदेश	[illegible]
नियोग-निर्णय	=)	काव्य कुसुमोद्यान	॥)
उपदेशमंजरी अर्थात् [illegible]		सत्यार्थप्रकाश	
श्री स्वामी दयानन्द जी के		प्रथम भाग ना० [illegible] उर्दू [illegible]	
[illegible]	।)	द्वितीय भाग ना० -)॥ उर्दू -)॥	
पुराणतत्त्व प्रकाश [illegible] भा०	[illegible]	तृतीय भा० ना० -)॥ उर्दू -)॥	
आर्य्य [illegible]	[illegible]	चतुर्थ भा० ना० -)॥ उर्दू -)॥	
[illegible] जीवन	[illegible]	पंचम भा० ना० [illegible] उर्दू [illegible]	
दयानन्द चरित्र	।)	पांचों भाग सजिल्द	॥।)
स्त्रीसुबोधिनी पांचों भाग	[illegible]	[illegible]	-)
सीताचरित्र पांचों भाग	[illegible]	[illegible]	=)
तथा उर्दू के भाग	[illegible]	[illegible]	
नारायणी शिक्षा	[illegible]	[illegible] सहित	-)
नारीधर्मविचार प्र० भा०	॥)	सत्यनारायण की असली कथा	-)॥
तथा द्वितीय भाग	[illegible]	[illegible]	=)
भारत [illegible]		[illegible]	=)
विदुषी स्त्रियों के जीवन,		[illegible]	≡)
[illegible] प्रथम भाग	।)	[illegible]	।)
तथा द्वितीय भाग	[illegible]	[illegible] सौ प्रति	[illegible]
दीवान प्रकाश	[illegible]	[illegible]	
[illegible]	[illegible]	[illegible] सौ प्रति	[illegible]
		सत्य दर्पण	[illegible]
		[illegible] जीवन चरित्र ना०	॥=)
		[illegible] उर्दू) सौ प्रति	[illegible]

॥ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

संग्रहकर्ता और प्रकाशक

[illegible]

[illegible] बहादुरगंज, शाहजहाँपुर ।

प्रसिद्ध कवि "कमा" द्वारा संशोधित ।

प्रथमवार १००० | सन १९१३ | मूल्य -)||

❀ सूचीपत्र संगीतरत्नप्रकाश ❀

❀ पूर्वार्द्ध तृतीय भाग ❀





* ओ३म् *

संगीत-रत्न-प्रकाश

पूर्वार्द्ध

* तृतीय-भाग *

भजन १

तेरा ओ३म् नाम मुझे प्यारा, तू है सखा पिता माता।
सूर्य चन्द्र जल, थल, अकाश में, एहो करतार, अज अविकार।
तूही दीखे है अपरम्पारा ॥ तेरा ओ३म्० १ ॥
जीव चराचर गुण तेरे गावें, अय दीनानाथ कर के सनाथ।
मुझे कीजे दुखों से न्यारा ॥ तेरा ओ३म्० २ ॥
मैं लवलीन तुझी में रहता, दर्शन दीजे, दुख हर लीजे।
इस दीन को तेरा सहारा ॥ तेरा ओ३म्० ३ ॥
परदेशी बन जगत् हितैषी, तव गुण गाय, सब सुख पाय।
चाहे भव से सदा निस्तारा ॥ तेरा ओ३म्० ४ ॥

भजन २

सब कहो महाशय, ओ३म् ओ३म् ओ३म्।
सब नामों से है यह प्यारा, आदि काल से श्रुति उच्चारा।
मूल मंत्र महिमा है अपारा, इसे धारण करो सारी क़ौमें ॥ सब० १

अकार उकार मकार मिलाकर, विश्वरूप वैराट दिखाकर।
हों प्रसन्न नाना विधि गाकर, सहित हृदय और रोम ३॥ सब०२
काम क्रोध मद लोभ को हरता, शोक मोह सब हलके करता।
शुद्ध प्रकाश हिये में भरता, जैसे गगन में रवि सोम ३॥ सब०३
घीसा कहे भटीपुर वासी, मुक्ति देत ईश्वर अविनाशी।
आवागमन की मिट जाय फांसी, बढ़ै भक्ति का उरमें जोम३॥ सब०४

भजन ३

प्रभू को भजले प्रानी, होजा पार पार पार।

कुछ खबर नहीं यक पल की, जोड़ी है माया छल की।
सुन मूढ़ काल के दल की, पड़ेगी मार मार मार। प्रभू को० १॥
नहिं मात पिता कोई साथी, तिय बन्धु और सुत नाती।
सब मतलब के हैं संगाती, धर्म ही सार सार सार। प्रभू को० २॥
प्रभु अजर अमर अविनाशी, है सब घट घट के वासी।
काटेंगे दुखों की फांसी, दया उर धार धार धार। प्रभू को० ३॥
जो करे भजन ईश्वर का, वह शुद्ध अती अन्तर का।
हो प्यारा दुनिया भर का, तरे जग बार बार बार। प्रभू को० ४॥

भजन ४

सब ही बन जइयें-सो ओंकार धाये से।

अजर अमर अविनाशी अनुपम, उस के आगे सीस झुकाये से १
मात पिता गुरु भ्रात वही है, नित बालक को कंठ लगाये से २

इन्द्र वरुण और धनी वही है, अन्नदान और जल बरसाये से ३
काम क्रोध और लोभ मोह सब, छूट जांय सब गुणगण गाये से ४
प्राणोंका भी प्राण वही है, अन्तःकरण में ज्ञान ज्योति लाये से ५
दीननाथ भी नाम उसी का, भूमण्डल का भार उठाये से ६
जपत रहो मत भूलो भाई, मेधा बढ़ेगी ध्रुव ध्यान में समाये से ७

दादरा ५

दीनानाथ तुम्हारा सहारा हम्हें ।
यहां सूझे न कोई हमारा हम्हें ॥
अपने स्वारथ के सब साथी, नहीं दीखे कोई दिलदारा हम्हे १
पड़ी भँवर बिच नैया पुरानी, कीजै प्रभू अब पारा हम्हें २
पतित उधार कहाय जगत में, फिर क्यों हाय विसारा हम्हें ३
काम क्रोध और लोभ मोह ने, सब विधि नाथ बिगारा हम्हें ४
कुछ बल्देव और नहिं चाह, बस काफी तुम्हारा नजारा हम्हें ५

राग विष्णुपद ६

मेरा मन मातंग स्वामि हा ! नेक न वश में आता है ॥ टेक ॥
पापों पापी में ले जाता, सत्य मार्ग से दूर हटाता ।
सबसे निपट निराले ढँग का, दुर्मदान्ध कहलाता है ॥ मेरा० १ ॥
बढ़ने नहीं बोधबल देता, बुद्धि विचारी को हरलेता ।
सर्व प्रकार प्रबलता अपनी, सिद्धि हुई दरसाता है ॥ मेरा० २ ॥
कोसों की चक फेर लगाता, एकघड़ी विश्राम न पाता ।
मेरे जैसे दुर्बलांग का, या विधि हृदय जलाता है ॥ मेरा० ३ ॥

सामाधिक साधन विधि खोता, कर शुभ कर्म सचेत न होता।
हा तब कर्ण अमर हो कैसे, विषरस घोल पिलाता है ॥ मेरा०४ ॥

ग़ज़ल ७

दयामय छोड़कर तुझको शरण किसकी भला जाऊं।
तुम्हीं रक्षक तुम्हीं पोषक कहो पितु मात कहँ पाऊं ॥
पदारथ प्राकृतिक जेते न शान्ती दी न देवेंगे।
सभी कुछकरलिये अनुभव भलाफिर क्यों मैं अजमाऊं ॥
जहां दे बैठते उत्तर सखा संसार सम्बन्धी।
वहां तेरे भरोसे पर प्रभु निर्भय मैं कहलाऊं ॥
अंधेरी रात भयकारी जहां सुन सान जंगल हो।
घिरा हूं दुष्ट जीवों से वहां भी मैं न घबराऊं ॥
तुम्हीं स्वामी सुखद मेरे तुम्हीं प्राणों के प्यारे हो।
हो पाठक पर दया दृष्टी तेरा दिन रैन गुण गाऊं ॥

भजन ८

मेरी पड़ी भँवर मे नैया, नाथ इसे तारदे ३ ॥ टेक ॥
नहीं आवें नज़र किनारे, हम इसी से हिम्मत हारे।
हैं त्रिविध दुखों के मारे, कृपा कर इन्हें टारदे ३ ॥ मेरी०१ ॥
मेरेपांचो तो वैरीसँग मैं, नहिं बाहर भीतर इसीअँगमें।
कर दिया इन्होंने तँग मैं, नाथ इन्हें मारदे ३ ॥ मेरी०२ ॥
यह मनुष्य देह दुशवार है, यह मौक़ा न बारम्बार है।
हे ईश्वर! तू सर्वाधार है, जीवन का हमहैं सारदे ३ ॥ मेरी०३ ॥

जो तेरे दरपै आवै, वह मन इच्छा फल पावे।
पद तेजसिंह कथ गावै, हमहूँ भी फल चारदे ३ ॥ मेरी० ४ ॥

ग़ज़ल ९

जपो जगदीश को प्यारो वही एक मुक्ति दाता है।
वही सब सृष्टि का पालक वही सब का सँघाता है ॥
सिवा उसके न है कोई हितू इस जीव का जग में।
न सुत दारा न परिवार न बन्धू है न माता है ॥
करो अभिमान मत धन का यह है बादल की परछाई।
धरम का कीजिये संचय वही यक साथ जाता है ॥
पड़े ग़फ़लत में क्या सोते सहर अब होने वाली है।
सफ़र का बांधले सामाँ अभी वह काल आता है ॥
सताना बेगुनाहों का सुनो अच्छा नहीं हरगिज़।
सताया जायगा वह भी किसी को जो सताता है ॥
भजन बलदेव ईश्वर का हमेशा चाहिये करना।
वही सब का है पितु माता वही सब का विधाता है ॥

भजन काफ़ी १०

राखो २ प्रभु जन की लाज।

आयो शरन तुम्हारी कैसी तुम कैसी तुम देर लगाई।
करो हमरी सहाई, तुम जन सुखदाई, मेरी सुरत बिसारी ॥ राखो० १॥
दीजे प्रभु दीजे प्रभु, बल बुद्धि दान, राख लीजे मेरो मान।

तुम सर्व शक्तिमान, सदा दीन हितकारी ॥ राखो० २ ॥
विनती करत तेरो दास बलदेव, तुम देवन के देव, मेरी सुध
किन लेव, तुम दीन दुख हारी ॥ राखो० ३ ॥

ग़ज़ल ११

अरे मतिमन्द अज्ञानी जनम हरि भक्ति बिन खोया ।
बिगारा काम अपने को रहा ग़ाफ़िल सदा सोया ॥
पड़ा परदा जहालत का अक़्ल की आंख पर तेरे ।
सुधा के खेत में तैने ज़हर का बीज क्यों बोया ॥
विषय में होके मतवारा किया बरबाद नर तन को ।
विमुख निज ईश से होकर वृथा शिर भार ही ढोया ॥
भलाई खल्क़ की ख़ातिर तुझे भेजा था मालिक ने ।
मगर अफ़सोस उलटाही चला तू जानकर गोया ॥
जो करना फ़र्ज़ था तेरा किया उस को न क्यों मूरख ।
चला आख़िर को दुनिया से तो फिर बलदेव क्यों रोया ॥

ग़ज़ल १२

भजन भगवान का करले भरम में क्यों भटकता है ।
यहां तेरा नहीं कोई वृथा क्यों सर पटकता है ॥
भजन बिन ज़िन्दगी गर तू वृथा नादान खोवेगा ।
पड़े फिर गर्भ में जहां पर तू उलटाही लटकता है ॥
नहीं फल पायेगा जब तक पड़ा है कुफ़्र में काफ़िर ।
हृदय में काम का कंटक तेरे जब तक खटकता है ॥

लगा मन ब्रह्म से सम्यक् जो है कल्याण की ख्वाहिश।
नहीं तो काल अब तुझ को कोई दम में गटकता है॥
बसे बलदेव काया में वही सत् मित्र है तेरा।
हमेशा हर बुराई से वही सबको हटकता है॥

लावनी १३

तुम सुनों दीन के नाथ विनय यह मेरी।
कर गहो आपनो जानि करो ना देरी॥
यह दास आप ही की पनाह में आया।
रख लीजे लाज महाराज करिये अब दाया॥
तव नाम अनन्त अपार वेद में गाया।
गुण गावत शुक सनकादि पार नहिं पाया॥
मैं क्या वर्नन कर सकूं अल्प मति मेरी॥ कर० १॥
तुम निर्विकार निर्मल पवित्र हो स्वामी।
मैं महामलिन मतिमन्द कुटिल खल कामी॥
सच्चिदनन्द सर्वज्ञ सकल घट यामी।
मोहिं कीजे नाथ अब शुद्ध जानि अनुगामी॥
देवो आनँद पद में वास आस निरवेरी॥ कर० २॥
इस जगत् में जन्मत मरत महादुख पाया।
लख चौरासी में भ्रमत २ घबड़ाया॥
पाया जब भारी क्लेश समीप सिधाया।
करुणानिधान फिर क्यों न तर्स उर आया॥
काटो करुणामय कठिन कर्म की बेरी॥ कर० ३॥
मैं किसे सुनाऊं व्यथा नाथ निज मन की।

यहां अपना कोई नहीं आश करूं जिसकी ॥
निज स्वारथ को संसार आश करे धनकी ।
तुमही जानत सर्वज्ञ पीर निज जन की ॥
अति आरत है बलदेव कहत यह टेरी ॥ कर० ४ ॥

भजन १४

कीजे वेगि सहाय प्रभू मैं तो शरन में आया ।
अगम अगोचर नाम तिहारो, चारों वेद ने गाया हरी ॥ मैं० ॥
महिमा तेरी बरनी न जावे, अद्भुत जगत रचाया हरी ॥ मैं० ॥
ऋषि मुनि प्रभु तेरा ध्यान लगावें, अन्त तेरा नहीं पाया हरी॥ मैं० ॥
गंगाराम तेरा यश गावे, तुझ से ही ध्यान लगाया हरी ॥ मैं० ॥

भजन १५

धन्य बालब्रह्मचारी, हुआ जग उपकारी, तैंने कहा पुकारी, शुभ ओ३म् ओ३म् ओ३म् ॥ तू था बड़ा बलकारी, और भारत हितकारी, तूने अच्छी विचारी । कहा ओ३म् ओ३म् ओ३म् ॥ भ्रमण देश भारत में करके । हरदम पुकारे था ओ३म् ओ३म् ओ३म् ॥ धन्य० १ ॥ करी विद्या प्रकाश, किये वेदों के भाष्य, जिससे हुआ विश्वास । हमें ओ३म् ओ३म् ओ३म् ॥ तेरी भाषा थी प्यारी, तेरी युक्ती थी न्यारी, तैंने सब से कहा दिया ओ३म् ओ३म् ओ३म् ॥ किये कारज थे भारी, दुनिया जीती थी सारी, तैंने सब को बता दिया ओ३म् ओ३म् ओ३म् ॥

देवयज्ञ सब को बतलाये, और पूज्य बताया कहो ओ३म् ओ३म् ओ३म् ॥ धन्य० २ ॥ सत्य धर्म बताया, जो था हमने गँवाया, फिर आन कहाया, है ओ३म् ओ३म् ओ३म् ॥ धन्य स्वामी महाराज, किये क़ायम समाज, मिल गाते हैं हम सब ओ३म् ओ३म् ओ३म् धन ऐसा हो राज, जिस में आनन्द है आज, हुई कृपा है भारी, कहो ओ३म् ओ३म् ओ३म् ॥ ऐ परदेशी उसके गुण गाओ, जिस ने हम को सिखाया है ओ३म् ओ३म् ओ३म् ॥ अय आर्य दुलारो, ज़रा दिल में विचारो, और मिल के पुकारो, कहो ओ३म ओ३म ओ३म् ॥

दादरा १६

हमें आशा पिता है तुम्हारी ।

जननी जनक प्रभु तुमही हमारे । कुल परिवारा, निज सुत दारा, है सब स्वारथ का संसारा । हा ! हमें आशा० ॥ १ ॥

अनुपम दयालु दया दृष्टि कीजै । काम अरु क्रोधा, हैं बड़े योधा, करन देत नहीं सत्य का बोधा । हा ! हमें आशा० ॥२॥

निशदिन मुझे स्वामी आलस ने घेरा । वृद्धि आई दुख अधिकाई, होत नहीं अब कोई सहाई । हा ! हमें आशा० ॥ ३ ॥

बिगड़ी दशा को सुधारो दयामय । मदन मुरारी, कहत पुकारी, मेरे हेत क्यों करत अवारी । हा ! हमें आशा० ॥ ४ ॥

भजन १७

है विनती तुम से हमारी, प्रभु जी बार बार बार ।

हम आशा करें तुम्हारी, तुम हो सब के हितकारी।
करो पार यह नाव हमारी, जगदाधार धार धार ॥ है० १ ॥
है तुम्हारा हमें सहारा, नहीं और है कोई हमारा।
क्या भ्रात बन्धु सुत दारा, करे जो पार पार पार ॥ है० २ ॥
ऐसी है तुम्हारी प्रभुताई, पर्वत से कर दो राई।
वेदों ने प्रशंसा गाई सर्वाधार धार धार ॥ है० ३ ॥
प्रभु तुम दुःख मिटाओ, मेरा लोभ मोह विनशाओ।
सुखदायक भक्ति सिखाओ, हो जाऊं पार पार पार ॥ है० ४ ॥

भजन १८

कुछ नहीं है पास हमारे, प्रभु क्या तेरी भेंट करूं।
खाली हाथ यहां पर आया, नहीं साथ कुछ अपने लाया।
कोई भी न पदारथ पाया, सन्मुख जिसे धरूं ॥ कुछ० १ ॥
मूरख तुझ को भोग लगावें, जल देवें और पट पहनावें।
फिर अपना अहसान जतावें, कहते हुए डरूं ॥ कुछ० २ ॥
जीवन मूल पदारथ जो हैं, दिये हुए आप ही के सो हैं।
अपने कहे मूर्ख नर वो हैं, मैं तो शरण परूं ॥ कुछ० ३ ॥
बड़ा यहां पर धोखा खाया, अधम प्रकृति से चित्त लगाया।
शर्मा नहीं ईश गुण गाया, इस से दुःख भरूं ॥ कुछ० ४ ॥

भजन १९

चौताल।

तूही अज निर्विकार, तूही है जगदाधार।

ऋषि मुनि नहिं पावैं पार, भव रचि रचै संहार॥
तेरोही चन्द्र भान, पृथ्वी है विद्यमान।
वायु यह वेगवान, सूक्ष्म नाम निराकार॥
तूने रचे देश काल, ऋतु दिन क्या मास साल।
नद नदी सर गिरि विशाल, हमरे हित वेद्चार॥
तूही प्रभु है अनन्त, निर्गुण महाशक्तिवन्त।
आश्रित सब जीव जन्तु पाठक, पितु लो सँभार॥

भजन २०

पापी मन सोवे पड़ा, उठ जाग धर्म पहिचान।
मुशकिल से यह देह थी पाई, सो अब तूने सोय गँवाई।
तज ग़फ़लत नादान॥ पापी० १॥
वक्त गया फिर हाथ न आवे, पीछे से तू क्यों पछितावे।
मौत सिरे पर जान॥ पापी० २॥
अर्जुन भीम से योधा भारी, जिनसे कांपी थी भुवि सारी।
हैं कहां कर तू ध्यान॥ पापी० ३॥
मात पिता दारा सुत जोई, धन दौलत और लश्कर कोई।
इनका क्या अभिमान॥ पापी० ४॥
मनुष्य देह को नाव बनाले, कर्म धर्म का चप्पू लगा ले।
ओ जल्दी कर नादान॥ पापी० ५॥

भजन २१

मुखड़ा क्या देखे दर्पण में, तेरे दया धर्म नहीं मन में।

जब तक फूल रही फुलवारी, बास रही फूलन में।
यक दिन ऐसा होयगा प्रानी, खाक उड़ेगी तन में ॥ मुख० ॥
चन्दन अगर कुसुम्भी जामा, सोहत गोरे तन में।
भर यौवन डूंगर का पानी, उतर जाय यक छन में ॥ मुख० ॥
नदिया गहरी नाव पुरानी, उतर जाय यक छन में।
धर्मी २ पार उतर गये, पापी रहे अधभर में ॥ मुख० ॥
कौड़ी २ माया जोड़ी, सुरत लगी इस धन में।
दस दर्वाज़े बन्द भये जब, रहगई मनकी मन में ॥ मुख० ॥
पगड़ी बांधत पेच संभारत, तेल मलत अंगन में।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, यह क्या लड़ेंगे रनमें ॥ मुख० ॥

भजन २२

तू क्यों करता अभिमान, मौत आती एक पल में है।
आवे श्वास आवे या न आवे, खबर नहीं कब काल दबावे।
ऐसेही जीवन जान, बुलबुला जैसे जल में है ॥ तू० १ ॥
रावण कंस हुये अभिमानी, जिनकी गति मति गई न जानी ॥
पर वे भी नहीं रहे, घुसा जब काल बगल में है ॥ तू० २ ॥
क्या मन में सोचे बैठा है, क्या फिरता पैंठा पैंठा है।
कुछ तो समझ नादान, हुआ क्यों फ़ितूर अक़ल में है ॥ तू० ३ ॥
यह मन के संकल्प तुम्हारे, आखिर में रह जावें सारे।
जैसे भौंरा बन्द हुआ, एक फूल कमल में है ॥ तू० ४ ॥
या जीवन पर हो मदमाता, बासुदेव क्यों जन्म गँवाता।
कुछ तो कर ले धर्म, पड़ा क्यों ख्वाब अमल में है ॥ तू० ५ ॥

भजन २३

सिर पै है मौत सवार रे, जाने कब आय घेरे।
चलते बैठे सोते खाते, करते धरते या आते जाते।
मुंह खोले है तैयाररे ॥ जा० १ ॥
वृक्षमें जलमें अग्नि पवनमें, वन उपवन गिरिताल भवनमें।
कहां करे कैसे अहाररे ॥ जा० २ ॥
माताभी रोवे भगिनीभी रोवे, साराकुटुम्बमहाशोक में होवे।
कौन बचावन हाररे ॥ जा० ३ ॥
पाठक जो जीतो मौत को प्यारे, केवल ठहरो धर्म सहारे।
जप प्रभु को हरबाररे ॥ जा० ४ ॥

दादरा २४

इस थोड़े से जीवन पै मान क्यों करे।

लाखों हुये यहां दारा सिकन्दर। बोनापार्ट से कम्पात यूरप भर।
सोचो यूं दुख के सामान क्यों करे ॥ इस० १ ॥
महमूद तैमूर नादिर से आये। लाखों ही मासूम काटे कटाये।
ऐसे सितम हो इन्सान क्यों करे ॥ इस० २ ॥
दौलत के लाखों ने तूदे लगाये। कारूँ फिर औ जैसे आखिर
गिराये। उत्तम समय को वीरान क्यों करे ॥ इस० ३ ॥
रावण से थे यह बड़ेगर्ववारे। आखिर को एक दिन वह यहां से
सिधारे। धोखे की टट्टी की ऐवान क्यों करे ॥ इस० ४ ॥

ईश्वर नियन्ता है रक्षक हमारा। उस ही का पाठक तू रख ले सहारा। आनन्द में दुःखों का भान क्यों करे ॥ इस० ५ ॥

भजन २५

क्यों करता है भाई अभिमान, थोड़े से जीवन पर ॥
अर्जुन से हो गये बलकारी, रावण जैसे लंक मंझारी।
अरु कुबेर से मायाधारी, छोड़े सब समान ॥ थो० १ ॥
विद्योत्तमा सी राजदुलारी, सुलभा जैसी तत्व विचारी।
उभय भारती विदुषी नारी, हिरा गई विद्वान ॥ थो० २ ॥
हरिश्चन्द्र से सतव्रतधारी, जमदग्नी से मूल अहारी।
गौतम कपिल से ऋषि बड़े भारी, सुखदे गये हैं महान ॥ थो० ३ ॥
देश हितैषी हो गये भारे, महर्षि दयानन्द से सारे।
लेखराम से प्राण पियारे, वारे तन मन प्रान ॥ थो० ४ ॥
होगये बड़े २ चित्त उदासी, पाठक तुम भी बनो उपकारी।
ऋषि ऋण देवहु शीघ्र उतारी, सुख पाये ऋषि संतान ॥ थो० ५ ॥

दादरा २६

तूने सारी उमरिया गुजारी रे।

शैर-बालपन गया खेल में, खोई जवानी प्यार में।
नित्य प्रति कीन्हे कलह, बेड़ा है तेरा मँझधार में ॥
अब मरने की आई है बारी रे ॥ तू० १ ॥

शैर-खेल चौंसर हिंसा कीनी, दिन का सोना बढ़ गया।

दूसरों के दोष कह व्यसनों का झगड़ा गड़ गया ॥
फिर करते हो सुखकी तयारी रे ॥ तू० २ ॥
शैर–विषय रसका स्वाद लीना, नाना मृदु तानें सुनीं।
गीत सुन २ नाच देखा, फिर भी दीखे अनमनो।
वृथा घूमे पिये मदवारी रे ॥ तू० ३ ॥
शैर–चुग़ली कर वे काम कीन्हें, जो न करने चाहियें।
बिना कारण वैर करते, डाह कर २ दुख दिये।
पछताने की आई अब बारी रे ॥ तू० ४ ॥
शैर–चोरी की जुवा भी खेला, गारी देते दिन गये।
लड़ते भिड़ते सबसे थे, पर अबतो आयुध छिनगये।
काम क्रोध ये शत्रु हैं भारी रे ॥ तू० ५ ॥
शैर–ध्यान कर उस ईश का, जिस ने जगत पैदा किया।
अब तो चेतो नींद तज, जो पूर्ण सुख चाहो लिया।
तुम को पाठक यही सुखकारी रे ॥ तू० ६ ॥

भजन २७

भूला २ रे मुसाफिर कहां गठरी तू।

वायदा कर के आया जो गर्भ में, पृथ्वी बीच गिरा भूला तू ॥ भूला० १ ॥

ब्रह्मचर्य तूने नहीं धारा, मन अपने को तै नहीं मारा। कामदेव में भूला तू ॥ भूला० २ ॥

लोभ मोह के वश में हो कर, नियम धर्म सब अपना खो कर। धनको इकट्ठा कर भूला तू ॥ भूला० ३ ॥

रहो हुशियार भजन कर रब का, वह मालिक है सारे जग का। इन्द्रिय के वश भूला तू ॥ भूला० ४ ॥

ग़ज़ल २८

ज़रा तो सोच ऐ गाफ़िल, कि दम का क्या ठिकाना है।
निकल जब यह गया तनसे, तो सब अपना बिराना है॥
मुसाफिर तू है अरु दुनिया, सरा है भूल मत ग़ाफ़िल।
सुबह होते तयारी कर, तुझे परदेश जाना है॥
लगाता है अबस दौलत पे, क्यों तू दिलको अब नाहक़।
न जावे संग कुछ हरगिज़, यहीं सब छोड़ जाना है॥
न भाई बन्धु है कोई, न कोई आशना अपना।
बख़ूबी ग़ौर कर देखा, तो मतलब का ज़माना है॥
रहो नित याद में हक़ की, अगर अपनी शफ़ा चाहो।
अबस दुनिया के धन्धे में, हुआ तू क्यो दिवाना है॥

भजन २९

वेद पठन क्यो छोड़ दिया, तूने ॥ टेक ॥

हिंसा न छोड़ी चोरी न छोड़ी। होम करन क्यो छोड़ दिया रे ॥ वेद० १ ॥ मोह न छोड़ा मान न छोड़ा। इन्द्रिदमन क्यों छोड़ दिया रे ॥ वेद० २ ॥ ठगी न छोड़ी धोखा न छोड़ा, शास्त्र मनन क्यो छोड़ दियारे ॥ वेद० ३ ॥ धन के गर्व में फिरे

भुलाना। शुद्ध परन क्यों छोड़ दियारे ॥ वेद० ४ ॥ पाठक मिथ्या तजी न वासना। ईश भजन क्यों छोड़ दियारे ॥ वेद० ५ ॥

भजन ३०

नृत्य लखो ये अनोखा ही भाई।

शामियाना नभ भूमि चांदनी, दश दिश दिशा समुदाई। प० ॥
तारागण के झाड़ टँगे हैं, त्रिगुण की बेल सजाई। प० ॥
सूर्य चन्द्र दोऊ मशाल जली हैं, पंखे की वायु चलाई। प० ॥
मेघ गुलाबपाश बरसत जल, गर्ज के स्वरन मिलाई। प० ॥
कर्म्म जीव बँध नाच रहे हैं, आवागमन दिखराई। प० ॥
इन्द्रनाम का वह जगदीश्वर, जो रहा नृत्य कराई। प० ॥
फल दे अनेक अशुभ शुभ उन के, न्याय युक्त जगराई। प० ॥
पाठक त्यागो मिथ्या नाच को, आवागमन लो छुटाई। प० ॥

दादरा ३१

दुख पावें क्यों! भारतवासी। टेक ॥

कारण है इस का समय को न बाटें, प्रातः उठते, शौच न जाते। पहले गुड़ २ हुक्के बजाते। हा! दुख० ॥१॥
दूजा है कारण उमर को न बाटें, बने बनस्थी, नहिं संन्यस्ती। सारी उम्र ही रहें गृहस्थी। हा! दुख० ॥२॥
सन्ध्या स्नान करें बीते समय पै, पितृ ऋषी ऋण, बढ़ते दिन दिन। देवयज्ञ तक से भागें जन। हा! दुख० ॥३॥

पाठक कहे टाइमटेबिल बनाओ, नेम निभाओ, तब सुखपाओ।
उत्तम समय न व्यर्थ गँवाओ। हा! दुख० ॥४॥

दादरा ३२

अमली जीवन को क्यो ना! सँवारो ॥

माना कि तुम हो बड़ी अक्लवाले। दिगरा नसीहत, खुदरा फज़ीहत। देखी अन्दर है बुरी हालत। हा! अम० ॥१॥
माना कि तुम हो वकील और मुंसिफ। ये बुद्धिमानी, है हैरानी, बुरी न समझो रिश्वत सितानी। हा! अम० ॥२॥
माना कि देते हो लेक्चर सुहाने। प्रेम में पूरन, देश के भूषण। नाम पै मरते हो हा निशि दिन। हा! अम० ॥३॥
मित्रो! बुज़ुर्गो! नमूने बनाओ। सदआचारी, परहितकारी। पाठक हो सन्तान तुम्हारी। हा! अम० ॥४॥

दादरा ३३

दिन २ भारत गिरे है ये प्यारे सुजन।
वेदों की शिक्षा है प्रीति परस्पर,
वंशों में ग्रामो में देशो में भूपर।
छोड़ा है उन का हा! पाठन पठन ॥ दिन० ॥१॥
देखा है ये देश हमने बहुत सा,
जैसा है यह देश सबै देश वैसा।
ईर्षा की घर २ लगी है अगिन ॥ दिन० ॥२॥

रखड़ी से प्रीति शराब उड़ रही है,
कहीं मांस मछली ये हालत सही है।
देखा अमीरों का चाल और चलन ॥ दिन० ३ ॥
मामूली नौकर बड़े ठाठ बांधे,
धनवान मैले फटे वस्त्र कांधे।
रिश्वत लेवें इनके रूखे वचन ॥ दिन० ४ ॥
बजरी मिठाई में चर्बी है घी में,
अपना नफ़ा ! कुछ हो व्याधी सभी में।
बनियों को प्यारा है छलरूपी धन ॥ दिन० ५ ॥
रोजगार पर साख जाती रही है,
घर २ दिवालों की चर्चा वहां है।
सारी प्रजा अपनी धुन में मगन ॥ दिन० ६ ॥
अज्ञानी समझो हो जिन को सुहृद्वर,
पश्चों के कहने में है क़ौम धीवर।
उस में है मेल एकता का परम ॥ दिन० ७ ॥
तुम भी करो मेल छोड़ो अनीती,
तबही बढ़ेगी आपस में प्रीती।
पाठक सफल हो रहन और सहन ॥ दिन० ८ ॥

दादरा ३४

भारतवासी तुम कैसे उठोगे।

बजरी की खांड़ ने भारत विनाश किया, प्लेग फैलाया, हैज़ा आया। लाखों का गुल दिया कराया ॥ हा ! भारत० १ ॥

लावनी ।

गेहूँ मक्का ज्वार चुकन्दर शलजम गाजर ताड़ खजूर ।
मैपिल साबूदाना आलू नारजील छुहारा मशहूर ॥
तारकोल अरु दूध वगैरह से ये चीनी हो तैयार ।
पर गन्ने की शकर के सन्मुख इसका कुछ भी नहीं शुमार ॥
हड्डी लोहू आदि * सफ़ाई के हित इसमें पड़ते हैं ।
यही सबब है बने पदारथ इस के शीघ्रही सड़ते हैं ॥
है कितना अन्धेर जो अब भी शुगर बन्द नहिं करते हैं ।
जब कि इस से लाखों प्राणी रोज़ प्लेग में मरते हैं ॥
मिट्टी के तेल ने उमरें घटाई, अन्धा कीना, चुन्धा कीना ।
दिमाग़ का हा! बल हरलीना ॥ हा! भारत० २ ॥

भारत में हा! काल की जड़ जमी है । पीते डट डट, बत्ती सिगरट, बचे खुचे को करते चौपट ॥ हा! भारत० ३ ॥

पाठक ये कब का जगाता है तुमको । पीओ खाओ, काम में लाओ, जीवमात्र का हित सब चाहो ॥ हा! भारत० ४ ॥

भजन ३५

देखोरे भाइयो बिगड़ा है सारा ज़माना ।
महाभारत के घोर युद्ध से होगया अपना बिराना ॥

* डाक्टर यू. की. की डिक्शनरी पेज १२०५ में लिखा है कि १ टन खांड़ में २ टन राख हड्डी पड़ती है ।

आर्यवर्त्त था देश हमारा, सब देशों में दाना।
हिन्दू वहशी काला काफिर हाय उसे अब माना ॥ २ ॥
जगत गुरू ब्राह्मण होते थे जाने है सारा ज़माना।
पीर बबर्ची भिश्ती खर की पदवी उन्हें दिलाना ॥ ३ ॥
सिंह समान गर्जता था यह कभी राजपूताना।
आज नाम पर सिंह लगाकर क्षत्री वीर कहाना ॥ ४ ॥
प्राणी मात्र की रक्षा करना जग से पाप हटाना।
आज उन्होंने धर्म समझ लिया मद्य मांसका खाना ॥ ५ ॥
पशु रक्षा और खेती करना देश २ में जाना।
क.रें व्यवहार व्याज लें थोड़ा वह है वैश्य समाना ॥ ६ ॥
धोखेबाजी वैश्य करें अब हो गये शूद्र दिवाना।
वर्ण आश्रम सारे बिगड़े कुछ नहीं रहा ठिकाना ॥ ७ ॥
उदय भाग्य होगये देश के हुआ ऋषी का आना।
बासुदेव धन स्वामी जी को बार २ गुण गाना ॥ ८ ॥

भजन ३६

उठो अब नींद से जागो।

सोते २ उमर बिताई भैया। कैसी तुमको छः मासी आई भैया ॥ तन मन धन सब दिया है लुटाई भैया। अब तो नींद को त्यागो ॥ उठो अब० १ ॥ कैसे पुरुषा हुए हैं तुम्हारे भैया। कहलाये भारत के सितारे भैया ॥ उन के तुम ने नाम बिगारे भैया। शर्म करो अभागो ॥ उठो० २ ॥ रही सही को अब तो

बचाओ भैया। दुनिया में कुछ धर्म कमाओ भैया॥ मत हा योंही जन्म गँवाओ भैया। शुभ कर्मों में लागो॥ उ० ३॥ बासुदेव कहे चेत में आओ भैया। मत ऋषियों का नाम डुबाओ भैया॥ सच्चे आर्य वीर कहलाओ भैया। हिन्दूपन त्यागो॥ उठो अब० ४॥

भजन ३७

धम्म पथ फैलादो घर घर द्वार।
नगर नगर और ग्राम ग्राम में, वेदों का करो प्रचार १॥
द्वेष निकालो प्रीति बढ़ालो, मन में सद् गुण धार।
थोड़ा है जग जीवन प्यारे, लो अब याहि सुधार २॥
धर्म के कारण स्वामी दयानन्द, जीवन गये निसार।
आर्य मुसाफिर लेखराम भी, सर्वसु गये हैं वार ३॥
धर्म के कारण गुरुगोविंद सिंह, सह गये कष्ट अपार।
हटे न पीछे धर्मक्षेत्र से, उन के राज कुमार ४॥
धर्म के कारण राजा हरीचन्द, राज पाट गये टार।
रानी बिकी रुहिताश पुत्र संग, भूप श्वपच के द्वार ५॥
ग्यारह बरस का बाल हक़ीक़त, धर्म का अंकुर धार।
जान दे गया धर्म न छोड़ा, कहे इतिहास पुकार ६॥
भाई तारूसिंह सा होना जग में है दुशवार।
मारे गये धर्म नहीं छोड़ा लो मन माहिं विचार ७॥
ऐसे तुम भी बनो मित्रवर ! त्याग असत् व्यापार।
तन धन धरती धाम हैं झूठे, धर्म को जानो सार ८॥

ग़ज़ल ३८

कभी मत भूल ईश्वर को ज़माना ख़ाकसारी है।
न कोई भी रहा जीवित सभी खल्क़त सिधारी है॥
न हटना धर्म अपने से मुनासिब है कभी तुझ को।
भजन कर हर घड़ी उसका ये जिस की फूलवारी है॥
सुप्रण धारी हरीचन्द ने न छोड़ा धर्म अपने को।
बिके इतिहास और रानी कि जिनका नाम जारी है॥
हुये ऐसे हक़ीक़त भी कि जिसने धर्म नहिं छोड़ा।
क़तल हुआ धर्म के ऊपर उसी ने जान वारी है॥
सताना जीव का प्यारे नहीं कुछ भी तो अच्छा है।
अहिंसा धर्म का पालन कहा सुख मूल भारी है॥
कहे नत्थू सनातन का अमल इख्त्यार कर प्यारे।
मह्रा सुख मूल ज़िन्दगानी वृथा ही क्यों बिगारी है॥

भजन ३९

आओ मित्रो हम तुम मिल कर कुछ तो पर उपकार करें।
वेग अविद्या मार भगावें विद्या का विस्तार करें॥
भारत वासी त्याग उदासी हों मुतलाशी धर्म के।
आओ उन के जीवन जग का फिर भारी उद्धार करें॥
रंज जुदाई बहुत उठाई हमने अपनी भूल से।
नाना मत पन्थों को तजकर फिर आपस में प्यार करें॥

जिसकी बदौलत हुआ उजाला फिर से भारत वर्ष में।
दयानन्द था जगत हितैषी सब उसका सत्कार करें॥

भजन ४०

सीधे मारग पर आजाओ बुद्धि भ्रमाना छोड़ दो।
अमृत रस को पियो हमेशा विष बरसाना छोड़ दो॥
प्रतिमा पूजन मिथ्या जानो घण्टा बजाना छोड़ दो।
सन्ध्या करो एकान्त बैठ कर कूक मचाना छोड़ दो॥
कल्पित सारी गाथाओं का पढ़ना पढ़ाना छोड़ दो।
वेदों के प्रतिकूल मतों का मान बढ़ाना छोड़ दो॥
पर उपकार हृदय में धारो धर्म यही सुख मूल है।
तात्पर्य कहने का यह है स्वार्थ कमाना छोड़ दो॥
नहीं लुटाओ मुफ़त में दौलत अब तुम भारतवासियो।
पाप जान कर रंडी भड़वे सभी नचाना छोड़ दो॥
यम नियमों का पालन करना फर्ज़ ज़रूरी आपका।
लग जाओ इस तरफ़ देश का नाम लजाना छोड़ दो॥

भजन ४१

देखो आंख उघार रे तुम भारत के प्यारो।
गौ कन्या अनाथ और विधवा विनती करें पुकाररे।
इनके दुखों को टारो॥ देखो० १॥
दुख में पड़ी है उन की सन्तति जो थे ऋषी तुम्हार रे।
उनके चरित्र विचारो॥ देखो० २॥

जो भारत की चाहो भलाई, करो नित्य उपकार रे।
यही धर्म तिहारो ॥ देखो० ३ ॥
तन मन धन सब अर्पण करके, विद्या करो प्रचार रे।
तुम भारत के प्यारो ॥ देखो० ४ ॥
स्वामी दयानन्द देश के कारण, अपना सब गये वाररे।
उनकी शिक्षा धारो ॥ देखो० ५ ॥
कब तक रुदन करे परदेशी, अब तो करो विचाररे।
कहा मानो हमारो ॥ देखो० ६ ॥

भजन ४२

जो चाहते हो धर्म कमाना उठ कर पर उपकार करो।
तन मन धन सब अर्पण करके वेदों का विस्तार करो॥
बहुत कष्ट तुम उठा चुके हो वैदिक मारग छोड़ कर।
आओ भूले भटके भाइयो! उसको फिर अख़्त्यार करो॥
मत घबड़ाओ बहुत सतावें तुम को मूरख आदमी।
प्राणी मात्र की तुम सेवा से मत दिल को बेज़ार करो॥
कृष्ण व्यास आदिक ऋषियों को दोष लगाना छोड़ दो।
अपने बड़ों की इज्जत को अय प्यारो! मत अब ख़्वारकरो॥
विवाह वग़ैरह के मौक़ों पर नचा २ कर रंडियां।
मत अपनी सन्तानों को तुम उनका आशिकज़ार करो॥
बाली उमर में सन्तानों का कर विवाह और शादियां।
बल धीरज को उन के खोकर मत दुर्बल बीमार करो॥

दीन अनाथ अपाहिज जितने पाओ भारत देश में।
भोजन वस्त्र उन्हें नित देकर भारत का उद्धार करो ॥
अधोगती को पहुँच चुका है मित्रो! भारत देश अब।
इसको सँभालोतुम अयभाइयो! मिलकर यहशुभकारकरो॥
राग ईर्षा द्वेष वैर तज कर्म करो निष्काम सब।
धरमी प्रेमी परउपकारी पुरुषों का सत्कार करो ॥
बनो सहायक तुम गुरुकुल के तन मन धन से भाइयो।
कपिल कणादरु गौतम जैसे ब्रह्मचारी तैयार करो ॥
परमेश्वर के बनो उपासक जो चाहो सुखधाम को।
यज्ञ हवन से नित्य सुगन्धित तुम अपना घरबार करो ॥
एक ईश जगदीश ब्रह्म को अपने चित्त में धारलो।
किसी पैराम्बर पीर औलिया की मत पूजा यार करो ॥
बहुत दिनों से वैदिक नैया पड़ी भँवर के बीच में।
विनय करे परदेशी ईश्वर अब तो इसको पार करो ॥

भजन ४३

अब तो चेतियेरे तुम हो भारत राजदुलारे।
भारत जननी पर पड़ रहे हैं तरह २ के त्रास।
पर तुम करवट तक नहीं लेते हुआ देश का नाश ॥ १ ॥
ग़ज़नी ग़ोर तातर से थे आये मुहम्मद शाह।
लूट खसोट ले गये धन सब, कर गये देश तबाह ॥ २ ॥
जगह २ पर आर्यावर्त में हुये थे क़तले आम।

जला २ हा ! वेद मुक़द्दम कीन्हें गर्म हम्माम ॥ ३ ॥
दिखा २ तलवार की दहशत बहुत किये बेदीन ।
सदहा विचारे राजदुलारे लिये ज़ोर से छीन ॥ ४ ॥
प्यारा ! धर्म रत्ता निमित्त हुए यहां बहुत कुर्बान ।
गुरु गोविन्द के लाड़ के पाले पुत्र त्याग गये प्रान ॥ ५ ॥
नन्हा बालक वीर हक़ीक़त क्षत्री सुन बलवीर ।
धर्म न छोड़ा मर गया हक़पर खा करके शमशीर ॥ ६ ॥
और सैकड़ों के धरम के हित हुए कलेजा खाक ।
पद्मावत पतिव्रता धर्म पर जल कर होगई पाक ॥ ७ ॥
अब तो जागो निद्रा त्यागो दूर करो यह ख़्वाब ।
रही सही हालत को अपनी अब नहिं करो खराब ॥ ८ ॥
ऋषी दयानन्द तुम्हें जगा गया सहकर कष्ट महान ।
पर उठ करके सो गये फिर भी उलटी चादर तान ॥ ९ ॥
जो सज्जन जन रहे जगाते ऋषी का सुन उपदेश ।
उन्होने अब आपस में लड़कर पैदा किया कलेश ॥१०॥
परदेशी की विनती सुनलो कहता है कर जोर ।
पापिन फूट को दूर करो अब देखो देश की ओर ॥११॥

भजन ४४

अपने देश की रे अब तो बिगड़ी दशा सुधारो ॥
आंख खोलकर देखो भाइयो ! क्या है देश का हाल ।
कैसा था अब क्या हो गया है इस पर करो ख़्याल ॥ १ ॥

कभी देश यह आर्यवर्त्त था अब है हिन्दोस्तान।
हिन्दू काफ़िर काले वहशी हो रहे ऋषि सन्तान॥ २॥
किसी वक्त यह देश तुम्हारा था मुल्कों का सरताज।
अधर्म अविद्या के कारण है सब से नीचा आज॥ ३॥
वेद ईश्वरी ज्ञान को अब तो सारे बैठे छोड़।
जड़ क़बरों के बने उपासक ईश्वर से मुख मोड़॥ ४॥
नहीं ख़बर कुछ रही किसी को सत्य धर्म क्या चीज़।
बुरे भले की रही नहीं है बिलकुल हाय तमीज़॥ ५॥
वैदिक शिक्षा उठगई सारी रहा न धार्मिक ज्ञान।
सत्य धर्म को छोड़ बने अब सारे पशू समान॥ ६॥
यज्ञ हवन सब छुट गये हम से छूटा सत व्यवहार।
झूठ कपट छल बढ़गये सब में भ्रष्ट हुए आचार॥ ७॥
वर्ण आश्रम मिटगये ऐसे मिलता नहीं निशान।
मूरख सब से बड़े कहावें और छोटे विद्वान॥ ८॥
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र कुल हो गये हैं गुणहीन।
नहीं एक की एक को ममता हो गये तेरह तीन॥ ९॥
मस्त हुए सब ख़ुदग़र्ज़ी में नहीं देश से प्रेम।
विषय भोग में फँस परदेशी तोड़ा ईश्वरी नेम॥१०॥

ग़ज़ल ४५

भारत की हाय पहली सी हालत नहीं रही।
इसकी वह शान और वह शौक़त नहीं रही॥

इफ़लास और जुहल हैं बस इसके रफ़ीक़ दो।
अब और तीसरे से रिफ़ाक़त नहीं रही॥
आये यहां पर कोई क्यों बहरे हुसूल इल्म।
वह पहली इसकी इल्म में शुहरत नहीं रही॥
गौतम कपिल व्यास और पातंजली कणाद।
उनकी सी अब किसी में लियाक़त नहीं रही॥
कमज़ोरी नातवानी के ऐसे बने शिकार।
घुटनों के बल भी उठने की ताक़त नहीं रही॥
छोटी उमर में बच्चों के होने लगे विवाह।
ब्रह्मचर्य आश्रम की वह वक़अत नहीं रही॥
बद पतक़ादियों के सब बन गये गुलाम।
वैदिक धरम की हाय हुकूमत नहीं रही॥
क़हतो वबा प्लेग हैं पीछे पड़े हुए।
बचने की इनसे कोई भी सूरत नहीं रही॥
घर २ में जल रही है निफ़ाको हसद की आग।
आपस में मेल जोल मुहब्बत नहीं रही॥
दुनिया के मोह जाल में ऐसे फँसे हैं मूढ़।
शुभकार्यों के करने की रग़बत नहीं रही रही॥
रंडी के नाच स्वांग में रातें गुज़ारदीं।
लेकिन सभा में आने की फ़ुरसत नहीं रही॥
उलफ़त धरम की छोड़के विषयों में फँसगये।
परमात्मा के न्याय की दहशत नहीं रही॥

जो काम तुझको करना है परदेशी जल्द कर ।
ज्यादा यहां पर रहने की मोहलत नहीं रही ॥

भजन ४६

अबतो जागियोरे कैसे सोये भारतवासी ।
उठ जागो और निद्रा त्यागो देखो आंख उघार ।
धर्मकी नैया इस भारत की डूब रही मँझधार ॥ १ ॥
देखो हालत अपने देश की समय रहा बतलाय ।
तुमको क्या मालूम नहीं है भारत बिगड़ाजाय ॥ २ ॥
गऊकन्या अनाथ और विधवा करें तुम्हारी आश ।
हाहा करती नित दुख भरती दिन २ पाय निराश ॥ ३ ॥
बद रसमों में धनको लुटाओ खूब बढ़ाकर हाथ ।
तुम को कुञ्ज बढ़े खाने से भूखों मरें अनाथ ॥ ४ ॥
नाजुक हालत आर्यावर्त्तकी जिसकहम तुमवासी ।
इसकी खातिर प्राण गँवाये दयानन्द संन्यासी ॥ ५ ॥
इस भारतकी बुरी दशा का तुम को नहीं गुमान ।
तन मन धन से इस पर होगये गुरुदत्त कुर्बान ॥ ६ ॥
जिस बिरवे को सींच २ मरे लेखराम रणधीर ।
उस बिरवे को तुमभी सींचो कहलाकर कुलवीर ॥ ७ ॥
जिसमें इज़ाफ़त दूनी होवे घटता नहीं वह माल ।
वृद्धिकरो मिलकर स्वधर्मकी रखउन्नतिका ख्याल ॥ ८ ॥
जोकुछ असर हुआ तुमपरहै मरहूमोंकी शिक्षाका ।

अबसे अहेद करो सब दिल में भारत की रक्षा का ॥ ६ ॥
पहले थे इस आर्यवर्त्त में ऋषी मुनी गुणवाना ।
कहे परदेशी देखो उनका आगया वही ज़माना ॥१०॥

दादरा ४७

कैसी होगई हालत तुम्हारी रे ।
आर्यावर्त्त कभी शिरोमणि था, आज भारत की होगई ख्वारी रे ॥
कभी तो वेदों का डंका बजे था, आज मिथ्या पुराण हुए जारी रे ।
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य उच्च कुल, आर्यों से हो गये अनारी रे ॥
भीष्मपिता जैसे ब्रह्मचारी थे, आज घर २ हुए व्यभिचारी रे ।
ब्रह्मचर्य धर वेद पढ़े थे, अब बाल विवाह हुए जारी रे ॥
उपदेष्टा कभी संन्यासी थे, आज कपड़े रंग होगये भिखारी रे ।
कभी यहां वेदध्वनि होती थी, आज घर २ हैं रंडी पुकारी रे ॥
यहां कभी हवन होते थे, आज चरस की उड़े धुन्धकारी रे ।
धर्म अहिंसा छोड़ आज सब, मद्यपी और मांसाहारी रे ॥
वासुदेव कहां तक समझावे, इस कारण सब हुए दुखारी रे ॥

ग़ज़ल ४८

दुखो से ग्रस्त था भारत ज़रूरत थी ऋषी आये ।
ऋषी आये मुनी आये कोई धर्मात्मा आये ॥ १ ॥
महाभारत के होने से अविद्या देश में छाई ।
छिपा था वेद का भानू महा अन्धकार थे छाये ॥ २ ॥
तजा ईश्वर की आज्ञा को जो था उपदेश वेदों में ।
इसी कारण हज़ारों मत यहां पर ज़ोर है पाये ॥ ३ ॥

करोड़ो हो गये मित्रो! मुसलमां और ईसाई।
नही था दम किसी में भी जो इनको नीचा दिखलाय ॥ ४ ॥
एक तरफ़ पड़ रहा दुर्भिक्ष हाहाकार भारत में।
दूध पीते हुए बच्चो को माता बेंच कर खाये ॥ ५ ॥
करोड़ों बिक गये बच्चे मुसलमां और ईसाइयो को।
नहीं था कोई भी हमदर्द अनाथालय जो खुलवाये ॥ ६ ॥
एक तरफ़ रो रहीं विधवा गौ एक ओर चिल्लानीं।
इन्हीं की आह का नारा सुना हम से नहीं जाये ॥ ७ ॥
तजी ब्रह्मचर्य की विद्या विवाह बच्चो के थे जारी।
इसी से वर्ण और आश्रम सभी बिगड़े नजर आये ॥ ८ ॥
जिधर देखो उधर संसार हाहाकार से पूरित।
त्रिविध तापो की अग्नी का धुवां आकाश को जाये ॥ ९ ॥
प्रभू भारत हुआ गारत सुनो तुम टेर आरत की।
पुकारा एक स्वर हाकर पिता तुम बिन कहां जाये ॥१०॥
सुनी जब टेर ईश्वर ने दयामय ने दया करके।
ऋषी को प्रेरणा कीन्हीं दयानन्द सरस्वती आये ॥११॥
ऋषि ने बीड़ा जब उठाया दु:खो के दूर करने का।
किया तन मन व धन अर्पण इसी में आहुती पाये ।१२॥
प्रथम काशी विजय कीन्हीं वहां कई बार जाकरके।
यतन फिर दुख हटाने के लिये उपदेश बतलाये ॥१३॥
यही है प्राथना मेरी सभी भारत के भाइयो से।
ऋषी ऋण को उतारे जो ऋषी सन्तान कहलाये ॥१४॥

अगर है खून ऋषियों का तुम्हारे जिस्म में बाक़ी ।
उठो बांधो कमर जल्दी नहीं दिन आखिरी आये ॥१५॥
करो कुछ यत्न ऐ मित्रो ! तुम भारत के सुधरने का ।
नहीं तो दिन बदिन प्यारो अधोगति होती ही जाये ॥१६॥
न समझो मित्र यह गाना बल्कि यह एक रोना है ।
विनय करे वासुदेव शर्मा सभा में जो खड़ा गाये ॥१७॥

भजन ४६

देखो उपकार स्वामी जी का भाई ।
यह हवन हुआ जो भारी । है उन की सुझावन सारी ।
हृदय में करो विचार ॥ स्वा० १ ॥
मन्त्रों का हुआ उच्चारण । पड़ी औषधी रोग निवारण ।
ओ३म् को रहे पुकार ॥ स्वा० २ ॥
जल वायु शुद्ध होते हैं । सब रोगों को खोते हैं ।
देश का करें सुधार ॥ स्वा० ३ ॥
नित पंचयज्ञ का करना । श्री स्वामी जी ने वरना ।
यही जीवन का सार ॥ स्वा० ४ ॥
हवनों का करना छूटा । भारत का नसीबा फूटा ।
होते हैं दुःख अपार ॥ स्वा० ५ ॥
नहीं नित्य कर्म जाने थे । पत्थरों से मुक्ति माने थे ।
भ्रम में था संसार ॥ स्वा० ६ ॥
करो यज्ञ हवन चित लाई । सब ऋषि मुनि रहे बताई ।
मुक्ति का है यह द्वार ॥ स्वा० ७ ॥

यह वासुदेव गाता है । जड़ पूजा छुड़वाता है।
हवन का करो प्रचार ॥ स्वा० ८ ॥

भजन ५०

करोरे भाइयो ! वैदिक धर्म प्रचार।
दयानन्द भूषण कुल पूषण कह गये बारम्बार।

भूमण्डल के जो हैं मतवादी । सब माने हैं वेद अनादी । तुमने उस की याद भुलादी । बिना वेद पढ़े यह तुम मित्रो ! सब मानो हो हार ॥ करोरे० १ ॥

बिन विद्या ब्राह्मण हुये धूरत । क्षत्रिय हुये नपुंसक सूरत । वैश्य शूद्र हुये छल की मूरत । धर्म काम को करें कलंकित । करते हैं व्यभिचार ॥ करोरे० २ ॥

एक वेद पढ़ विप्र कहावे । दो पढ़ले ऋषि पदवी पावे । तीन पढ़े महर्षि कहावे । प्रजापती पद मिले, कहे ब्रह्मा जो पढ़ले चार ॥ करोरे० ३ ॥

ग़ज़ल ५१

दयानन्द देशहितकारी, तेरी हिम्मत की बलिहारी ॥ टेक ॥
अविद्या जग में छाई थी, नींद ग़फ़लत की आई थी।
तेरा आना था गुणकारी, तेरी हिम्मत० ॥ १ ॥
पतंजलि व्यास हो गुज़रे, भारत के दाग़ धो गुज़रे।
तेरे आने की थी बारी, तेरी हिम्मत० ॥ २ ॥
तू वेदों का प्यारा था, तू भारत का सितारा था।
तेरे दर्शन की बलिहारी, तेरी हिम्मत० ॥ ३ ॥

तेरे जो पास आते थे, दिली संशय मिटाते थे।
सभी भारत के नर नारी, तेरी हिम्मत० ॥ ४ ॥
तेरे तेजस्वी चेहरे से, तेरी ब्रह्मचर्य विद्या से।
डरे थी दुनिया तो सारी, तेरी हिम्मत० ॥ ५ ॥
चलाई ब्रह्म की पूजा, समाजें बन गईं दूर जा।
तेरा उपकार है भारी, तेरी हिम्मत० ॥ ६ ॥
भारत के भाग खोटे थे, हुआ स्वामी जुदा हम से।
हुआ गम सब को है भारी, तेरी हिम्मत० ॥ ७ ॥

भजन ५२

हुये उदय भाग भारत के दया की आने लगी बारी।
चहुँ ओर हुआ आनन्द दयानन्द आये ब्रह्मचारी ॥
अहो भाग ऋषी एक आया, जिन विद्या धन बरसाया।
हम सब ने लाभ उठाया, वेद के हो गये अधिकारी ॥
धन जगदीश्वर की माया, दी पलट देश की काया।
भारत का दुःख मिटाया, भेजकर आतम बलधारी ॥
दुखिया थे अनाथ विचारे, फिरते थे भूख के मारे।
अब उनके दुःख हटे सारे, हुये दीनालय हैं जारी ॥
थे विद्याहीन नर नारी, यों भारत हुआ दुखारी।
अब गुरुकुल होगये जारी, पढ़ें जहां विद्या ब्रह्मचारी ॥
हुये धर्म के रक्षक ऐसे, थे आर्य मुसाफ़िर जैसे।
नहीं डरे मौत भय से, प्राण तक दे गये शुभचारी ॥
इस आर्यावर्त के कारण, स्वामी ने योग किया धारण।

किये सबके शोक निवारण, बने भारत के हितकारी॥
अब भारत के नर नारी, बनो सच्चे वेद प्रचारी।
कन्या गुरुकुल करो जारी, करें परदेशी विनय भारी॥

भजन ५३

ईश्वर तू मंगल मूल है–ऐसा वेदों ने गाया।
तू सर्वज्ञ महा सुखदाता, सर्व शक्ति सम्पन्न विधाता।
तेरा शुद्ध ज्ञान साधक के, साधन तरु का मूल है॥
जिस में फल मुक्ति समाया ॥ ऐसा० १॥
तू अज अमित अनन्त कहावे, कभी न तुमको क्लेश सतावे।
तब तेरा अवतार बताना, मन्द मतों की भूल है॥
तू निर्गुण नित्य निकाया ॥ ऐसा० २॥
जिसने तुझे योग कर जाना, तेरा दिव्य रूप पहँचाना।
समझ लिया उस बड़भागी ने, सांसारिक सुख धूल है॥
तूने उसको अपनाया ॥ ऐसा० ३॥
भवसागर से तर जावेगा, फेर न कोई दुख पावेगा।
राम नरेश दास जो तेरी, आज्ञा के अनुकूल है॥
जिसके मन मोह न माया ॥ ऐसा० ४॥

भजन ५४

हा! क्यों कराओ बाल विवाह को प्यारे इज़्ज़त होती खराब।
रोती कलपती चिल्लाती हैं सारी, देखो यह कैसा हवाल।
कर्मों की मारी हैं विधवा बिचारी, होती फिरें हैं खराब॥

चश्मों से आंसू यों भर २ के रोतीं, करतीं पती को वह याद।
मुझे बाली अवस्था में छोड़ मरा, नहीं माल है कुछ असबाब॥
गले ऊँट के बकरी बांध दई, पर उनकी खबर कुछ भी न लई।
धन लेले के बेटी के ऊपर नर, बन बैठे हैं खासे नवाब॥
मत बाल विवाह रचाओ रे भाइयो! होता है देश तबाह।
कहे नत्थू समझ करो चेतो चेतो लेलो इन का सवाब॥

भजन ५५

बच्चेपन में करें विवाह, बाप मां खुशी मनानेवाले।
क्या है किसका ये सामान, जिसको खबर नहीं उसआन।
बालक नन्हा है नादान, ब्याहें जिसे गोद उठानेवाले॥
होवे बड़ी बहू धन भाग, लल्ला गलियों गावे राग।
रोटी मांगे सवेरे जाग, पपैये पीपी बजाने वाले॥
कितने भेंट शीतला माय, कितने डूब नदियों जाय।
रोवें शिर धुन २ पछताय, कुटुम्बी लाड़ लड़ानेवाले॥
जो कोई बचकर हुये जवान, उनसे निर्बल हों सन्तान।
जल्दी होजाय चिन्तावान, वैद्य घर स्याने बुलानेवाले॥
घर में बढ़ जावे तक़रार, चूल्हे हों फिर दो के चार।
सोंचें पांव कुल्हाड़ी मार, कुवां के बीच डुबानेवाले॥
पाठक होजाओ हुशियार, जल्दी कर लो देश सुधार।
देखो उठ कर नैन उघार, विदेशी हँसने हँसाने वाले॥

दादरा ५६

बनि के बन्ना उमर बाली में।
बुधि विद्या बल सकल बिगाड़ो, पड़े निपट खुआरी में॥ उ०॥

सुख शरीर को नेक न जान्यो, पड़े विपत भारी में ॥ उ० ॥
निर्बल भई प्रजा भारत की, भुगतत बीमारी में ॥ उ० ॥
दर दर फिरत न भरत पेट तहूँ, अब खिदमतगारी में ॥ उ० ॥
अति मति हीन मलीन दीन है, रहे पशु बनचारी में ॥ उ० ॥
दियो बोय विष स्वर्ग-भूमि सी, या अमृत की क्यारी में ॥ उ० ॥
ऐसे निर्लज्ज अजहूं नहीं चेतत, भूले सर्दारी में ॥ उ० ॥
होश करो बलदेव आगि दै, इस दुनियादारी में ॥ उ० ॥

दादरा ५७

बना बनिबे की बुढ़ापे में सूझी ।

होत महा अन्धेर देश में, कोई न बात सके बूझी ॥ बु० ॥
दशकी बधू साठ के बालम, भली विधि मिलाई गुरूजी ॥ बु० ॥
तिय भइ तरुणा वृद्ध भये बालम, अब नहीं बनत कछुजी ॥ बु० ॥
जब तिय और पुरुष तन चितवत, पति से राखत दूजी ॥ बु० ॥
लगी नारि घन धर्म बिगारन, झुरि २ मरत पशूजी ॥ बु० ॥
निशिदिन कलह कलेश करत जब, तियकी आश न पूजी ॥ बु० ॥
बाधा करत भोग में बुढ़वा, तब विष देत बहू जी ॥ बु० ॥
नरक भोग बलदेव अन्त में, मरत मौत बिन मूजी ॥ बु० ॥

दादरा ५८

बना बनिबे को बुढ़ापे में डोले ।

करत अनर्थ कोई नहीं बरजत, रस में विष मत घोले ॥ बु० ॥
करत अन्याय तरस नहीं खावे, पुण्य पाप नहीं तोले ॥ बु० ।
दो पन गये तहूं नहीं समझत, ज़ुल्म करत हिय खोले ॥ बु० ।

अब तो समझ वृथा मत खोवे, नरतन रत्न अमोले ॥ बु० ॥
करि २ विषय तनक नहीं धोप्यो, अब क्यों खाक खखोले ॥ बु० ॥
नौबत बजे मौत की शिर पर, अब तो हाथ ज़रा धोले ॥ बु० ॥
अजहुँ वेगि बलदेव सुमिर प्रभु, क्यों न नींद सुख सोले ॥ बु० ॥

भजन ५६

बुड्ढे बाबा करें विवाह, मौत के मुँह में जाने वाले।
थर २ कांपे ये है हाल, सारी लटक गई है खाल।
दोनों सूख गये हैं गाल, पोपले हलुवा खानेवाले ॥ १ ॥
मुड़ कर होगई कमर कमान, मुड़वा मूंछ बने हैं ज्वान।
बांधा मौर बैठ कर बान, बनगये नौशे कहानेवाले ॥ २ ॥
अंजन आंखों लीना सार, डाला गल फूलन का हार।
सिर पै पगड़ी गिर्त्तदार, सजगये हँसी करनेवाले ॥ ३ ॥
देखे जीने से लाचार, नारी तब करती व्यभिचार।
बढ़ते पाप है बेशुम्मार, नहीं दिल में शरमानेवाले ॥ ४ ॥
कितनी रोवें ज़ार बेज़ार, कितनी विष खाती है नार।
सुन २ बेटी के आचार, रोयें छुप २ धन खानेवाले ॥ ५ ॥
बढ़गई विधवों की तादाद, सुनता कोई नहीं फर्याद।
पाठक होवें वे बर्बाद, धनी जो व्याह रचानेवाले ॥ ६ ॥

भजन ६०

मेरे प्यारे मित्रो ! विधवा विवाह रचाना।
आत्मघात अरु बदनामी से इज्ज़त चहिये बचाना ॥
ब्राह्मण संग ब्राह्मणी व्याहो, क्षत्री अरु क्षत्राणी मिलाओ।

वैश्य और वैश्यानी लाओ, शूद्र और शूद्रानी सुन्दर।
ऐसे जोड़े मिलाना भाइयो ॥ वि० १ ॥
छै ही वर्ष की आयू माहीं, ब्याह भयो गौना भयो नाहीं।
कौन कहै वह कन्या ब्याही, पति गये परलोक उसे।
क्यो न कन्या पदवी दिलाना ॥ वि० २ ॥
जैसे एक काग़ज़ लिखवाया, उसे रजिस्ट्री जाय कराया।
नाजायज़ मुंसिफ ने पाया, लेन दन नहीं हुआ था।
उस को समझो चतुर सुजाना ॥ वि० ३ ॥
कितनी स्वतन्त्र आयु खोती है, कितनी आत्महत्या होती हैं।
कितनी हा ! प्रति घर रोती है, महा अनर्थ को देख के।
पाठक तुम को पड़ा जगाना ॥ वि० ४ ॥

भजन ६१

विधवा कह रहीं पुकार के, मेरा दुश्मन हुआ ज़माना।
प्रथम तो मेरा जननाही किसी को न भाया।
मेरे मा बापों ने पुत्र को होना चाहा ॥
हुआ रंज बहुत गर पुत्री हुई सुन पाया।
पर खर करी जो मुझे नहीं मरवाया ॥
कितनी मेरी संग सहेली, नहीं मां की गोद में खेली।
गले घुट २ चलीं अकेली, सुन ईश्वर सब के बेली ॥
यह हुये घोर अन्याय, गले घुटवाये, दया नहीं लाये, चले नियम सरकार के, जो मारे होय जेलखाना ॥ मेरा० १ ॥

मुझे उरे परे कर पांच वर्ष तक पाला।
बच्चों के खेल में समय मेरा सब घाला॥
गुड़ियों के विवाह का संस्कार यह डाला।
कर दिया बन्द विद्या पढ़ने का ताला॥
ब्राह्मण और नाई बुलाये, वर देखन को भिजवाये।
जहां घी और बूरे उड़ाये, झट वहीं तिलक कर आये॥
बूढ़ें या बच्चे सजन, मिली नहीं लगन, हुये फिरें मगन।
सभी घर बार के, जल्दी से विवाह रचाना॥ मेरा० २॥

पत्रा पांड़े ने आकर लगन सुझा दी।
कह मीन मेष दोनों की राशि मिलादी॥
सबने जुड़ मिल यही कहा जल्द करो शादी।
कर गुड़ियों कासा खेल मैं बाल विव्हादी॥

झूलना।

कुछ दिन में खबर ससुराल से जब यह आई।
मरगये पति सिर के सुहाग सुखदाई॥
मैं खेल रही थी मां ने लिया बुलाई।
लगी कहने बेटी फूटगया तेरा कर्म है॥ १॥
रोते २ हाथों की चुड़ियां तोड़ी।
पैरों में से काढ़ी बिछुओं की जोड़ी॥
मेरे माथे पर बिन्दी थी वह भी फोड़ी।
हाय मैंने ऐसा कौन किया कुकर्म है॥ २॥
अब सोचो तो सब भाई, कहां घुसड़ गई पण्डिताई।

यह कैसी लगन सुझाई, जो विधवा कर बिठलाई ॥
सब कहें फूट गया भाग, रहा न सुहाग, गई लग आग।
सब श्रृंगार उतार के, दे दिया फ़क़ीरी बाना ॥ मेरा० ३ ॥
पर जब तो मेरी उमर बहुत थी बाली।
जो खेल कूद में मां बापों ने टाली ॥
पर अब तो आने लगे फूल और डाली।
जभी छोड़ चला मैं करूं हाय ! क्या आली ॥

छन्द ।

कुछ तो कहो मैं क्या करूं जाता रहा सरताज है।
मेरे जी में थी हूँगी सती नहीं होने देता राज है ॥
मां बाप से कैसे कहूँ मुझे कहते आवे लाज है।
मै आप से गई जगत से गई इसका कौन इलाज है ॥
अब क्या करूं जाऊं कहां रो २ पड़ी आवाज़ है।
किससे कहूँ कोई ना सुने बिगड़ा मेरा सब काज है ॥
मैं काम अग्नि से जरूं, जी में आये मरूं, खुदकुशी करूं,
पुलिस से डरूं। बस बैठ रहूं मन मार के, या इस से शुभ मरजाना ॥ मे० ४ ॥

कुछ तो मेरा इन्साफ करो अब भाई।
क्या आर्यावर्त में सभी हुये अन्याई ॥
अब करो दया की दृष्टि बहुत दुख पाई।
मैं कैसे काटूं उमर रहा नहीं जाई ॥

छन्द।

दुनिया के सुख भोग वही जिनका जिये भर्त्तार है।
मेरा जन्म वृथा ही जारहा जानो नहीं कुछ सार है॥
मन की विथा किससे कहूं मतलब का सब संसार है।
मैं रात दिन तड़पूं पड़ी जीना हुआ दुशवार है॥
जब पुरुष की नारी मरे विवाह दूसरा तैयार है।
पर वेख़ता विधवा बिचारी को नहीं अधिकार है॥
अब तो यह कुरीति निकालो, बेख़ता न मारे डालो।
वेदों की आज्ञा पालो, मेरा जाता धर्म बचालो॥
मत वासुदेव अब डरो, पुनर्विवाह करो, इन के दुख हरो।
देखो स्मृति विचार के, सब ऋषि मुनियों ने माना॥ मे० ५॥

भजन ६२

विधवा रो २ करें पुकार भारत मान रखाने वाले।
पति दुख के कारन भाई, कितनी होगई हैं हर्जाई।
तुमको शर्म ज़रा नहीं आई, ऋषि सन्तान कहाने वाले॥ १॥
बाली आयू में कर ब्याह, विधवा करके देत बिठाय।
फिर कर्मों का दोष बताय, छुप छुप गर्भ गिराने वाले॥ २॥
क्यों तुम हत्या रहे कराय, हमतो कहते हैं शर्माय।
कुछ भी समझो दिल में भाय, ऐ व्यभिचार बढ़ाने वाले॥ ३॥
कहां गये व्यास कृष्ण भगवान, नारद ब्रह्मा मनू महान।
अर्जुन भीमसेन बलवान, पुनर्विवाह चलाने वाले॥ ४॥

मनुस्मृति को देखो जाय, महाभारत को लेवो उठाय।
अथर्व वेद पढ़ो चित लाय, कांड नवम बताने वाले ॥ ५ ॥
अर्जुन कीन्हा पुनर्विवाह, भीषम पर्व रहा बतलाय।
तुमने अब तक लखा न हाय, विधवा भार बढ़ाने वाले ॥ ६ ॥
बलदेव की यही पुकार, घर घर वीर होवो तैयार।
विधवन दीजो पार उतार, ये द्विज वर्ण कहाने वाले ॥ ७ ॥

भजन ६३

बहे नयन जलधार देख बाल विधवन को।
हाय कैसी चिट्ठी आई, चेचक में मरे जमाई।
हिये में लगे कटार ॥ देख० १ ॥
मां बाप भाई रोते हैं, आंसू से मुख धोते हैं।
बेटी क्या जाने सार ॥ देख० २ ॥
झट मां ने सुता बुलाई, लिया गोद उसे बिठलाई।
फोड़ी चुरियों की लार देख० ३ ॥
अनवट बिछुवे नथ वाली, सब रोते २ निकाली।
निकाला गले से हार ॥ देख० ४ ॥
सिर पीट मात रोती है, पर कन्या खुश होती है।
मांगे गुड़ियों की पिटार ॥ देख० ५ ॥
सिर का शृंगार उतारा, और गीला वस्त्र डाला।
बनादी विधवा नार ॥ देख० ६ ॥
मुझे बालेपन में व्याहा, सारा सुहाग हुआ स्वाहा।
नहीं देखा भर्त्तार ॥ देख० ७ ॥

कहे ऊधोराम समझाई, बनो वेदों के अनुयाई।
करो फिर से संस्कार ॥ देख० ८ ॥

ग़ज़ल ६४

दुखी रोती थीं विधवायें, ज़रूरत थी सभा होवे।
बचाना दुख के सागर से, ज़रूरी था नफ़ा होवे ॥
बहुत थीं चोर फेरों की, नहीं हो पाया था गौना।
न जाना हो पती कैसा, रहा दिन रात का रोना ॥
हज़ारों लेके धन घर का, गईं संग भाग नौजन के।
हज़ारों ने जगत से डर, गिराये गर्भ विधवन के ॥
हज़ारों नक़दी के ऊपर, बिकीं है बुड्ढे भारी को।
पड़ी बेज़ार रोती हैं, गया जब छोड़ नारी को ॥
हज़ारों खा गईं फांसी, कुओं में कितनी डूबी हैं।
ज़हर कितनों ने खाये हैं, ये सब क़िस्मत की खूबी है ॥
हज़ारों बस गये चकले, बढ़े व्यभिचार दल छाये।
हज़ारों बेगुनाह बच्चे, मरे रोने नहीं पाये ॥
बचाना चाहते हो गर, जो डूबा देश है भारत।
रचाना व्याह विधवों के, नहीं समझो हुआ ग़ारत ॥
प्रभू भगवन् की कृपा से, विवाह दिन रात होते हैं।
मगर अब भी बहुत सज्जन पड़े निद्रा में सोते हैं ॥
ये अबलाओं का हितचिन्तक, कहे पाठक खड़ा तुमसे।
न दुख दो बालविधवन को, छुड़ाओ जल्द इस ग़म से ॥

ग़ज़ल ६५

मर्दों को धर्म्म काम में डरना नहीं अच्छा।
नामर्द से उम्मेद का करना नहीं अच्छा॥
क्या ग़म प्रचार धर्म में गर जान भी जाये।
बदरस्म और बदकाम में मरना नहीं अच्छा॥
बढ़ना उसी का ठीक है जिस से हो फ़ैज़ आम।
ज़ालिम व मक्खीचूस का बढ़ना नहीं अच्छा॥
वादा न निबाहना है यह शैतान की हरकत।
इन्सां को ज़बां दे के मुकरना नहीं अच्छा॥
करने से पहले सोच लो हर काम का अंजाम।
आगे को क़दम धर के हटाना नहीं अच्छा॥
लड़ना किसी से ठीक नहीं इस जहान में।
पर ख़ास कर मा बाप से लड़ना नहीं अच्छा॥
महाराज रामचन्द्र ने कर के दिखा दिया।
भाई को भाइयों से झगड़ना नहीं अच्छा॥

भजन ६६

मानो २ नसीहत हमारी रे।
शेर—चाल कम उम्र की शादी की जग में फैलादी।
खेलते और कूदते, करके रांड बैठादी।
कैसे काटें उमरिया बेचारी रे॥ मानो० १॥
सच्चा जगदीश भूल गये, अवतार लिये मान।
प्राणायाम सन्ध्या छोड़कर, घण्टा लगे हिलान।

फिर स्वर्ग की करते तयारी रे ॥ मानो० २ ॥
खुशी व ब्याह काज में रण्डी नचाओ मत।
चित ध्यान करके देखलो लगती ये बुरी लत ॥
आखिर बिगड़े औलाद तुम्हारी रे ॥ मानो० ३ ॥
कहे जगन धर ध्यान वक्त अनमोल को न दीजिये।
छोड़ नाहक़ के बखेड़े शरण प्रभु की लीजिये ॥
आसान होवेगी मंज़िल तुम्हारी रे ॥ मानो० ४ ॥

दादरा ६७

हम वेदों के बाजे बजाये जायँगे।
दुनिया के दुख की नहीं चिन्ता है,
विद्या की बातें सुनाये जांयगे ॥ हम० ॥
रक्खो विश्वास प्रभू पास लगाओ तुम दिल।
सत्यमेव जयति सदा वेद पुकारे कामिल।
झूठ मग़लूब सदा जोड़ो न हरगिज़ तुम दिल।
उठो पाओगे फ़तह काम करो तुम हिल मिल।
आजिज़ वेदों के झंडे तब लहराये जायँगे ॥ ह० ॥

दादरा ६८

धर्मपथ वीरों को प्यारा।
अग्नी चाहे हो जाय शीतल, पर्वत भी चाहे जावें चल।
बालू में चाहे तेल जाय मिल, हो प्रलय अँधियारा ॥ १ ॥
धीर वीर हरिचन्द्र नृपतिवर, कैसे दृढ़ रहे अपने वचन पर।
मोरध्वज से धर्म वीर नर, चला गया है आरा ॥ २ ॥

पूर्व काल को छोड़ो प्यारो, इसी समय का दृश्य निहारो।
महर्षि दयानन्द भयो न्यारो, तन मन सब वारा ॥ ३ ॥
पंडित गुरुदत्त हुये उपकारी, लेखराम ने छुरी सहारी।
धीर वीर गये पन्थ सुधारी, चलने को न्यारा ॥ ४ ॥
मित्रो ! ज्ञान तराज़ू मँगाओ, जीवन धर्म तोल दिखलाओ।
धर्म का पल्ला भारी पाओ, पाठक हरवारा ॥ ५ ॥

भजन ६९

जिनकी धर्मपै हो कुर्बानी समझो उनकी सफल ज़िन्दगानी।
वही वीर सपूत कहाते, मरने से न कभी घबराते जी।
शिक्षा जीवन से दें सुख खानी ॥ स० १ ॥
क्या वे डरे कभी डरपाये, खड्गों से नहिं दहलाये जी।
वहँ हेच हैं जुल्म सितानी ॥ स० २ ॥
कितनो ने पिये विषप्याले, कितने झेले हैं तेग व भाले जी।
लाखो हैं मशहूर कहानी ॥ स० ३ ॥
मुर्दादिल से श्रेय न जीना, इससे ज़िन्दादिली से ही जीना जी।
पाठक ठहरे न सन्मुख मानी ॥ स० ४ ॥

भजन ७०

ये सुल्फ़ेबाज़ी छोड़ो, धन की छार छार छार।
आंखों से हो जांय चुन्धे, बाजे तो बिल्कुल अन्धे।
हों २ कर करते धन्धे, बहती लार लार लार ॥ ये० ॥
हुये सुल्फ़िया यार इकट्ठे, आपस में करते ठट्ठे।
गोली गोली के पट्ठे, करते मार मार मार ॥ ये० ॥

जिसने यों सब धन खोया, पछताया पीछे रोया ।
नाहक तन बोझा ढोया, न जानी सार सार सार ॥ ये० ॥
पाठक भजलो सर्वेश्वर, काया है ये क्षण भंगुर ।
क्यों विषयों में रहे दिन भर, होजा पार पार पार ॥ ये० ॥

दादरा ७१

छोड़ो २ मेरे भैया नशा पीना ।

शैर–नशे के पीने में तेरी जवानी खोई गई ।
आप तो खोये ये बेटी बिगानी खोई गई ॥
मरजाना ये मुँह है लानत जीना ॥ छोड़ो० १ ॥

नशे के पीने में कितनेही घरसे खोयेगये ।
इधरसे खोये तो खोये उधर से खोयेगये ॥
इस पीने पे तेरा धिक जीना ॥ छोड़ो० २ ॥

नशे में दून क्या मारी कि हम शहज़ादे थे ।
करूं बयान क्या जो मेरे बाप दादे थे ॥
जागीरदार थे रईस थे आज़ादे थे ।
इसी पीने ने तुझको वीरान कीना ॥ छोड़ो० ३ ॥

नशे के पीने में खाने खराब होते हैं ।
काला मुखड़ा गधे सवार देख होते हैं ॥
लेकिन हमजोलियों में जा जनाब होते हैं ।
अदू यह सुनकेसखुन लाजवाब होते हैं ॥
कहै बल्लू यह पीवे करमहीना ॥ छोड़ो० ४ ॥

भजन ७२

यही ख्वारी की जड़ है पैमाना रुसवा करे करे सदा।
कीकरकी छाल और गुड़का पसीना, ऐसी बुरी शै जानके पीना।
उसको थू है उसको थू है, जो हो अक़िल न मुँह को लगाना॥
मारे सियाह है खुदा गवाह है, इसी के हाथो हिन्द तबाह है।
करो तोबह करो तोबह कभी फन्दे में इस के न आना॥ यही०॥

ग़ज़ल ७३

क़ौल वेदों का कि जिसने नहीं माना होगा।
दीन दुनिया में न फिर उसका ठिकाना होगा॥
साफ़ कहदूंगा कि हूं मै वेद के मत का कायल।
हाल दिल जिसको मुझे अपना सुनाना होगा॥
जब मै जानूं कि हुई आज सफल यह मेहनत।
वेद के मत में जब यह सारा ज़माना होगा॥
आर्य बन जिसने तजा मोह न ईर्षा प्यारो।
मुफ्त मे वक्त उसे अपना गँवाना होगा॥
आर्य बनते हो मगर दिल में यह जाने रहना।
क्रोध भय लोभ को दरिया में डुबाना होगा॥
द्वेष तज करते हैं जो देश की उन्नति भाई।
ऐसे लोगों पै फ़िदा सारा जमाना होगा॥

भजन ७४

हिंसा देहु बिसार, नाश हुआ जाता है।

निर्बल को नहीं सताना, शूरों का है ये बाना।
बली पर करते वार ॥ नाश० १ ॥
जितने भी हैं पशु पत्ती, हैं मांस निबल के भक्षी।
डरें बलवान अगार ॥ नाश० २ ॥
जो नर हो मांस को खावे, क्यों नहिं वैस कहलावे।
जैसे कुत्ते अरु स्यार ॥ नाश० ३ ॥

घनाक्षरी।

भेड़िया बघेरा रीछ शर चीता तेंदुआ या लोमड़ी बिलाव नोला नाका बन जाना था। चील कौवा गिद्ध गंजा बाज़ बहरी शिकरा, उल्लू या उकाब ही में जाके जन्म पाना था ॥ बीजू बगला, धीवर नीलकण्ठ सांप बिच्छू कछुवा या गिरगिट कुछही कहाना था। मकड़ी मच्छर मक्खी मोरही बने थे क्यों ना! वीर होकर जो हा निर्बल मांस खाना था ॥

चप २ कर पीते पानी, जो मांस खायँ पशु प्रानी।
मित्र देखो निरधार ॥ नाश० ४ ॥
जब तुम मनुष्य कहलाओ, प्राकृतिक नेम तुड़वाओ।
महा छाया अन्धियार ॥ नाश० ५ ॥
पशु रूखा मांस खाते हैं, तुम्हें उलटी के पाते हैं।
करो फिर क्यों अखत्यार ॥ नाश० ६ ॥
बलवान से करो लड़ाई, निर्बल पर दया सदाई।
बनो ऐसे नर नार ॥ नाश० ७ ॥
तुम अबभी समझो भाई, तजो हिंसा समझ सुखदाई।
है पाठक धर्म तुम्हार ॥ नाश० ८ ॥

भजन ७५

मत जग में जीव सताय, ऐसे प्रभू मिलता है ॥ टेक ॥
भुनगे चींटी से लेकर छोटे, हाथी ह्वेल मछली से मोटे ।
अपनी मौज जहां चलें फिरें लोटें, किसी को मत तड़पाय । ऐ०॥
जब तेरे कांटा लगजावे, सी सी तुझ से शब्द करावे ।
शोक और पर हाथ उठावे, मत ये छुरियां चलाय ॥ऐ०॥
सब का मालिक पिता हमारा, जिसने रचा है यह संसारा ।
बड़ा दयालू सब से प्यारा, उसका ये गुण ले पाय ॥ऐ०॥
कुछदिन का विश्राम तुम्हारा, सत्य अहिंसा चित्त प्यारा ।
पाठक कहे ये हितू तुम्हारा, मूर्ख ले धर्म कमाय ॥ऐ०॥

भजन ७६

कहां गई ऋषियों की संतान, गऊ रात दिना चिल्लाती ।
भारत हुआ दया से खाली, जल गई वेद धर्म्म की डाली ।
अब ना रही ऋषी प्रणाली, किस पर रक्खूं मान ।
कोई नहीं विपत में साथी ॥ गऊ० १ ॥
जब से बसी मैं भारत देशा, ऋषि मुनि रहे रखपाल हमेशा ।
दुख का कभी न देखा लेशा, था मेरा सन्मान । करूं याद
फटे मेरी छाती ॥ गऊ० २ ॥
आर्य पुत्र सब हुये अनारी, वेश्यागामी मांसाहारी । मेरी
जान पर चले कटारी, तुम्हारे भनक ना कान । मेरी कुली
मेट हुई जाती ॥ गऊ० ३ ॥
यदि यह गफ़लत रही तुम्हारी, खेती होना है दुशवारी ।

दयासिंह यों कहे पुकारी, जोतें कहा किसान। हाय !! धर्म डाल कटी जाती ॥ गऊ० ४ ॥

भजन ७७

हम मित्रदृष्टि से देखें सब को बार बार बार।
ऐसी हो कृपा सर्वेश्वर, चलें न्याय धर्म के पथ पर।
तुम तो हो प्रभु करुणाकर, सर्वाधार धार धार ॥ हम० ॥
क्या मुहम्मदी ईसाई, हैं जितने मत अनुयाई।
सब ही हैं हमारे भाई, करें हम प्यार प्यार प्यार ॥ हम० ॥
फिर जितने जन्तु सारे, सब हमरे हों प्राण अधारे।
आज्ञा तेरी वेद मँझारे, सब का सार सार सार ॥ हम० ॥
हम बार बार तुझे ध्यावें, अरु मन इच्छा फल पावें।
पाठक शुभ मारग जावें, ऐ कर्त्तार तार तार ॥ हम० ॥

भजन ७८

हत्यार आठ क़साई, महाराज मनू बतलाते ॥ टेक ॥
प्रथम सलाह दे पशू कटावें। हाड़ मांस के स्वाद बतावें।
बन के नावते जीव मरावें। गूँगे पशू कटाते ॥ महा० ॥
दूजा कसाई वह कहलावे। हाड़ मांस जो काट गिरावे।
क़तल पशू की खाल छुड़ावे। खट २ छुरी चलाते ॥महा०॥
तीजा क़साई काटन वाला। और बलिदान चढ़ावन वाला।
पशूके प्राण निकालन वाला। कलमा पढ़ ज़िबह कराते ॥म०॥
चौथा मांस खरीदन वाला। सलाह कर पशू लाने वाला।
बधिकको पशू दिलाने वाला। बूचड़ की दल्लालीखाते ॥म०॥
मांस पांचवें तोलन वाला। मरण हेतु पशु देनेवाला।

बूढ़े चौपे बेचन वाला । क़साई के खूटा बँधाते ॥ महा० ॥
छठवां मांस पकाने वाला । देग में लाश जलानेवाला ।
चौका मरघट करने वाला । घरभीतर लाश जलाते ॥ महा० ॥
सप्तम मांस परोसन वाला । परसादी कह बांटन वाला ।
मोल बाज़ार से लाने वाला । मांस से तोंद फुलाते ॥महा०॥
अष्टम मांस निगने वाला । चौपा चौपा खाने वाला ।
शर्मा मुर्दा भखने वाला । पेट को क़बर बनाते ॥ महा० ॥

भजन ७९

है रंडी मांसाहारी, इन का नाच करादो बन्द ।

लाखों घर बिगड़े भाई । हां गई है धन की छाई ।
कितनों ने साख गँवाई । पैसा है फन्द फन्द फन्द ॥ है० ॥
कोई सुनकर बना तबलची । कोई जाकर हुआ चिलमची ।
दल्लाल बने है मशलची । कामी अन्ध अन्ध अन्ध ॥ है० ॥
वेश्या जो धन ले जावें । बकरे गौ आदि कटावें ।
फिर पीछे मद्य मँगावें । वे मतिमन्द मन्द मन्द ॥ है० ॥
कितने चकले में रोते । दुख में खाते हैं गोते ।
हा ! हा !! क्यों ग़ाफ़िल होते । पाठक वृन्द वृन्द वृन्द ॥ है० ॥

भजन ८०

ऐ जेंटिलमैनो ! देखो थेटर हाय ! हाय !! हाय !!! ॥
तुमको कुछ खबर नहीं है । क्या हानी पहुंच रही है ।
लाखों घर खाक़ भये हैं । देखो जाय जाय जाय ॥

वहँ लौंडे नाचन आवें । अरु जब बहु रूप बनावें ।
जग में व्यभिचार बढ़ावें । स्वर से गाय गाय गाय ॥
पौडर से वे बदसूरत । बन जाते हैं खूबसूरत ।
बस जाय मोहनी मूरत । घूरो जाय जाय जाय ॥
पाठक तुम होश में आओ । मत झूठे रूप लुभाओ ।
धन धर्म के हेत लगाओ । अर से लाय लाय लाय ॥

भजन ८१

डूबे जाते हो क्यो यार! दिल रंडी से लगाने वाले ॥
पहले करती रंडी प्यार, लेती धन सम्पति सब टार ।
पीछे धक्के देती चार, मुफ्ती माल लुटाने वाले ॥ १ ॥
जब नहीं रहती धनकी आस, रंडी फिर नहीं आती पास ।
करती तुमको अधिक निराश, कुछ २ दुःख उठाने वाले ॥ २ ॥
फिर तुम जाते उसके द्वार, देती वह तुम को फटकार ।
कहती हट भँडुवे बदकार, जूती लात के खाने वाले ॥ ३ ॥
आखिर देते धर्म गँवाय, तुमको ज़रा शर्म नहीं आय ।
करते खिदमत खूब बनाय, लोटा चिलम उठाने वाले ॥ ४ ॥
होते रोग कठिन अधिकाय, होवे काम शरीर बनाय ।
जिससे सन्तति जाय नशाय, कुल का नाम मिटाने वाले ॥ ५ ॥
जब तुम देते नार बिसार, उस पर पड़े काम की मार ।
तब वह करती है व्यभिचार, जग में हँसी कराने वाले ॥ ६ ॥
रंडी है औगुन की खान, उस को तुम लेना पहचान ।
जिस से कभी न होवे हानि, अपना धर्म बचाने वाले ॥ ७ ॥

कहता राधाशरण पुकार, इस से खूब रहो हुशियार।
जिस से पाओ सुक्ख अपार, भारत वर्ष के रहने वाले ॥ ८ ॥

ग़ज़ल ८२

कभी तेरा भारत नाम था, तुझे याद हो कि न याद हो।
कर्त्तव्य पालन काम था, तुझे याद हो कि न याद हो ॥१॥
तेरा बढ़ा विज्ञान था, तू विश्व बीच प्रधान था।
निर्दोष नीति-निकाम था, तुझे याद हो कि न याद हो ॥२॥
छल-झूठ-हिंसा हीन था, सब भांति प्रेम प्रवीण था।
तू तीन लोक ललाम था, तुझे याद हो कि न याद हो ॥३॥
न अकाल प्लेग प्रताप था, नहिं लेश भर भी पाप था।
तू स्वर्ग सम सुखधाम था, तुझे याद हो कि न याद हो ॥४॥
तू आप अपने समान था, विद्वान वीर सुजान था।
सब विश्व करता प्रणाम था, तुझे याद हो कि न याद हो ॥५॥
ऐसा न कायर क्रूर था, साहस सुमति भरपूर था।
आलस्य तुझ को हराम था, तुझे याद हो कि न याद हो ॥६॥
आचार में तू एक था, पूरा विचार विवेक था।
उद्योग भी अभिराम था, तुझे याद हो कि न याद हो ॥७॥
सिद्धान्त तेरा उच्च था, शुभ लक्ष्य भी नहिं तुच्छ था।
तू ईश लीला धाम था, तुझे याद हो कि न याद हो ॥८॥

ग़ज़ल ८३

महाऋषि जो हुये ज्ञानी, फ़क़त ब्रह्मचर्य्य का बल था।

जो द्रष्टा मन्त्र लासानी, फ़क़त ब्रह्मचर्य्य का बल था ॥
रचे वेदांग षट्-दर्शन, कि जिस में चौदह विद्या हैं ।
अग्नि तत्त्वज्ञ महि पानी, फ़क़त ब्रह्मचर्य्य का बल था ॥
सभी भूगोल को जाना, सभी आकाश को छाना ।
विमानों के हुये बानी, फ़क़त ब्रह्मचर्य्य का बल था ॥
हुये चक्रवर्ती महाराजे, सदा से चार युग साजे ।
न था कोई सामने सानी, फ़क़त ब्रह्मचर्य्य का बल था ॥
जो चट्टे चौथ में खेलें, परीक्षावान विद्यार्थी ।
यशस्वी तेज बल सानी, फ़क़त ब्रह्मचर्य्य का बल था ॥
गुरुकुल में पढ़े जाकर, सभी सन्तान भेजे थे ।
बने हरिभक्त विज्ञानी, फ़क़त ब्रह्मचर्य्य का बल था ॥
जगत् जाने है जितना लाभ, गुरुकुल से हुआ पहिले ।
बने चौंसठ कला ज्ञानी, फ़क़त ब्रह्मचर्य्य का बल था ॥
न क्यों अफ़सोस हो पाठक, पड़े हो उठ के अब चेतो ।
मिले जो रत्न गुण खानी, फ़क़त ब्रह्मचर्य्य का बल था ॥

भजन ८४

यह वीर्य रत्न अनमोल है, योंहीं मत इसे गँवाओ ।
यही वीर्य अमृत कहलावे, मरे हुये को यही जिलावे,
एक बूंद रज पर पड़ जावे, यही आयुर्वेद की तोल है ।
उसी वक्त गर्भ ठहराओ ॥ मत० १ ॥

इसी वीर्य्य रक्षा के कारण, ब्रह्मचर्य्य करते हैं धारण,
होते हैं सब दुःख निवारण, दिया गुरुकुल खोल है ॥
जहां विद्या जाय पढ़ाओ ॥ मत० २ ॥

इस को जीत बनो ब्रह्मचारी, भीष्मपितामह से बलधारी,
ऋषी दयानन्द से उपकारी, जिन की चहुँ दिशि रौल है।
वैसा ही बन दिखलाओ ॥ मत० ३ ॥
जब से इस का किया अनादर, दुखी हुये सब देश बिरादर,
विद्या बल पुरुषार्थ गँवाकर, अन्दर खाली पोल है।
बाहर चाहे आब बनाओ ॥ मत० ४ ॥
चेहरों पर वह चमक रही ना, बिजली की सी दमक रही ना,
वीरों की वह धमक रही ना, जिन से डरा भूगोल है।
अर्जुन को ध्यान में लाओ ॥ मत० ५ ॥
अब भी इसकी दवा करालो, गुरुकुल की शिक्षा दिलवालो,
स्वामी जी की आज्ञा पालो, जिस ने करी टटोल है।
तभी वासुदेव सुख पाओ ॥ मत० ६ ॥

ग़ज़ल ८५

उठो बहनो! पढ़ो विद्या, यही शिक्षा हमारी है।
बिना विद्या के पढ़ने से, बुरी हालत तुम्हारी है ॥ १ ॥
तुम्हारा नाम शूद्रों में हुआ शामिल है ऐ बहनो।
बनी हो पैर की जूती यही दुख हमको भारी है ॥ २ ॥
तुम्हारा मान और इज्ज़त नहीं अब कुछ रहा बाक़ी।
सबब इसका यही है री अविद्या तुमको प्यारी है ॥ ३ ॥
तुम्हीं को कहते थे लक्ष्मी तुम्हाराही नाम था देवी।
तुम्हारे ही मूर्ख होने से हुआ भारत दुखारी है ॥ ४ ॥
यही वसुदेव की विनती, न जब तक तुम पढ़ो विद्या।
तभी तक यह बुरी हालत, हमारी और तुम्हारी है ॥ ५ ॥

भजन ८६

दोहा।

कौशल्या माता भई, जग में परम अनूप।
तासु पुत्र श्रीरामजू भये आर्य कुल भूप॥ १॥
सीता सुमति सुशीलता, सब जग में विख्यात।
जिहि चरित्र उपमा लिखत, कविजन मन सकुचात॥ २॥
देवहुती विद्याधरी, अनुसुया गुण गेह।
पतिव्रत धर्म सिखावती, विद्या सहित सनेह॥ ३॥
नाम गार्गी जग विदित, अति विरक्त संसार।
ब्रह्मचारिणी परम दृढ़, विद्या सिन्धु अपार॥ ४॥
सभा बीच गर्जत रहीं, वेद शास्त्र मुख द्वार।
मानो पण्डित जय किये, रहे सभी मन मार॥ ५॥
ज्ञानवती मन्दालसा, परम शील सन्तोष।
विद्या बुद्धि सुसभ्यता, धर्म धैर्य धन कोष॥ ६॥
गान्धारी शुभ कुलवती, पतिव्रत धर्मागार।
सुख में सुख दुख में दुखी, रही स्वपति अनुसार॥ ७॥
श्रीपटरानी रुक्मिणी, पतिव्रत धर्म निकेत।
तन मन धन अर्पण कियो, पती प्रेम के हेत॥ ८॥
पार्वती शुभ गुणवती, पती प्रेम आधार।
जिहि गुण सुन शिक्षा लहैं, सब कुलवन्ती नार॥ ९॥
विद्यानिधि लीलावती, भारत जीवन प्राण।
तासु रचित पुस्तक सुभग, मानत सभी प्रमाण॥ १०॥

दमयन्ती के चरित सुन, बहत नयन से नीर।
जिहि न होय रोमांच तन, को जग में अस धीर ॥ ११ ॥
क्षत्रिय सुता शकुन्तला, सत्य शील सुविवेक।
लाखन संकट वन सहे, एक धर्म की टेक ॥ १२ ॥
पतिव्रता कोटिन भई, गिनै सकन अस कौन।
जिहि चरित्र सुन होत हैं, सभी कवीश्वर मौन ॥ १३ ॥
पहिले बाला जो भई, सब विद्या की खानि।
हाय! आज अक्षर पढ़त, अवला करत गलानि ॥ १४ ॥
एक दिवस भारत हतो, सुख सम्पति भरपूर।
भई नारि विद्या रहित, कीनो चकनाचूर ॥ १५ ॥

दादरा ८७

कैसी शिक्षा दें माता हमारी।
बचपन से जहँ देतीं सुन्दर सिखावन।

सोता पावें, तकिया लगावें, मां सोवे यों धाखा सिखावें। हा कैसी० १ ॥ जहँ कहती बेटा पढ़ावेंगे तुमको। क्यो? वहँ यो सुनावें, रंडी बुलावें, नन्हीं बहू से व्याह करावें, हा! कैसी०२। महात्माओं के जीवन सुनाती जहँ, वहां कहानी चुड़ैल मसानी सुना किये डरपोक अज्ञानी। हा! कैसी०३ ॥ जहां कहती देखो बेटा चोरी न कीजो। बच्चा किसी का उठा लाये पैसा, उस का मंगा दें बर्फी पेड़ा। हा! कैसी० ४ ॥ क्यों ना? पढ़ाती हो, तो दें ये उत्तर, जो सीखेगा, तो पढ़ लेगा उमर पड़ी है क्या है चिन्ता। हा! कैसी० ५ ॥ पाठक कहे बहिनो!

अब भी समझ लो, यही तुम्हारे, प्राण अधारे, सुधर सके हैं। जबलों बारे। हा! कैसी० ६ ॥

भजन ८८

मेरी बहिनो ने अपना धर्म नहिं जाना ॥ प्यारी० ॥ टेक ॥

सासू का देतीं ताना, सुसरे का जुदा बखाना। प्रीतम को नहिं पहिचाना, नाहक का झगड़ा ठाना ॥ मेरी० १ ॥ डारो पर झगड़ा डाला, गण्डो का पन्थ निकाला। टुटको का ढाल निराला, वैद्यो का कहा न माना ॥ मेरी० २ ॥ आपस में करी लड़ाई, हँसवाये लोग लुगाई। जो ज़रा रोग हो जाई, बुलवाया घर में स्याना ॥ मेरी० ३ ॥ पाठक कह प्रीति बढ़ाओ, मत मूर्खों को बुलवाओ। मिल मिल कर बैठो गाओ, सुख पाओ बड़ा निदाना ॥ मेरी० ४ ॥

दादरा ८६

पहनो पहनो री सुहागिन ज्ञान गजरा।
दया धर्म की ओढ़ा चुनरिया, शील का नत्रों मे डारो कजरा।
लाज करो तुम पर पुरुषो से, अपने पति का देखो मुखरा ॥
सास ससुर की सेवा कीजो, अपने पति से न कीजो झगरा।
कहे अनाथ बिना विद्यारी बहिनो! सहती हो तुम अति दुखरा ॥

भजन ६०

सुख नहीं मिलता यार, मूर्ख नारि से हर्गिज़ ॥

मुंशी मास्टर और पण्डित, घर में हो जायँ सब खण्डित ।
जब होती तक़रार ॥ मू० १ ॥
अंगरेज़ी अर्बी वाले, सब फिर फिल दांत कराले ।
मिले जब मूर्खा नार ॥ मू० २ ॥
जो एम. ए. की डिगरी पाते, खुद उनकी हँसी उड़ाते ।
घर में तिरिया निपट गँवार ॥ मू० ३ ॥
बिरिंग वाटर मांगा आई, बासी रोटी ले आई ।
हुआ अनुचित व्यवहार ॥ मू० ४ ॥
बाहर चलती पण्डिताई, घर में आ सब रिल जाई ।
तिरिया जब दे ललकार ॥ मू० ५ ॥
ये सारे दुःख उठाते. बुरा त्रियों का पढ़ना बताते ।
कहां दई बुद्धि बिसार ॥ मू० ६ ॥
इस दुख से जो बचना चाहो, कन्याओं को जल्दी पढ़ाओ ।
करो विद्या विस्तार ॥ मू० ७ ॥

भजन ९१

बहिनो ! तुम यह गुण धार लो, मन चाहा फल पाओगी ।
बाली उमर में विद्या पढ़ना, घर में नहीं किसी से लड़ना ।
यथायोग प्रिय भाषण करना, कड़वे वचन सहार लो ॥
सब दुख से छुट जाओगी ॥ म० १ ॥
धर्म कमाई से धन जोड़ो, बुरे कर्म से मुखड़ा मोड़ो ।
करना फ़ज़ूल खर्ची छोड़ो, घर का खर्च विचार लो ॥
नहीं मूर्खा कहलाओगी ॥ म० २ ॥

घर के कामों में चतुराई, तन वस्त्रों की करो सफ़ाई।
अब त्रियो! सुनो कान लगाई, गर्भाधान सुधार लो॥
अति उत्तम सुत जाओगी॥ म० ३॥
सेवा करना सासु ससुर की, माता पिता पती देवर की।
यह आज्ञा है परमेश्वर की, बिगड़ी दशा सुधार लो॥
पतिव्रता कहलाओगी॥ म० ४॥
धीरजता धारा हे नारी, ज्यों द्रौपदी सीता ने धारी।
तेजसिंह कहे सुनो हमारी, भारत नाव उबार लो॥
जग में यश फैलाओगी॥ म० ५॥

भजन ६२

आलसी नार।

फूहर आई घर में नार, धन्य भाग तेरे भर्त्तार।
सूद सार रक्खे नहीं घर की, आलों में है पड़ी अँदरकी॥
एक ताक में रुपया धरा, दूजे में है गहना पड़ा।
दो दो दिन में लगती सूनी, घर में ढेरी लगी है दूनी॥
चांवल दाल बँधी है पाट, वही पाट रही भू में लोट।
छपड़े में जो पापड़ धरे, चूहे ले ले भट में पड़े॥
बिखरे बरतन बिखरी दाल, उघरे पड़े हैं सारे माल।
आंगन बीच में चर्खा खड़ा, धूरे उलटा पीढ़ा पड़ा॥
हरदम घर के खुले किवाड़, कुत्ते बिल्ली करें बिगाड़।
रोटी टुकड़े जहँ तहँ परे, कौवे उड़ आंगन में गिरे॥
चून चान घर बिगड़ा पड़ा, मालिक देखे टुक २ खड़ा।

जब फूहर ने रोटी करी, आधी कच्ची आधी जरी ॥
निमक पड़ा है बेतादाद, साग दाल कुछ नहीं सवाद ।
जो पूछो लड़ने का हाल, इस में पूरा करे कमाल ॥
ध्यान लगा लड़ने में सारा इसी सबब मिनका घर हारा ।
अच्छा मिला अगर घरवाला, अपना घर उन आप सँभाला ॥
जो मिल गये ऊत के ऊत, तो मारन लगे पड़ापड़ जूत ।
आया बसन्त यो पाठक कहे, फूहर नारी हरदम दहे ॥

भजन ६३

सुघड़ नार ।

सुघड़ नार का सुनो हवाल, सभी चीज की करे सभाल ।
लीप पोत घर करे सफाइ, चन्दा सी उजियाली छाइ ।
जो चीजें उसने मँगवाई तोल जांच घर मे मिगवाई ।
हर एक चीज की जगह ठहराई, काम किया वहि धरआई ।
कुण्डे में भी पड़ा है ताला, चाबी गुच्छा कील मे डाला ।
रुपया अलग अलग हे जवर खाट खड़ी हे एक कोन पर ।
चुनकर धोती खूंटी धर, कपडे बड़े अरगनी पर ।
बूटे फूल गोखरू जाने, गुलुबन्द बुना दस्तान ।
उम्दा २ कह कहानी, बन बहादुर बालक ज्ञानी ।
पिता वचन तुम मानो ऐसे, रामचन्द्र ने माने जैसे ।
बालक याने हो या स्याने, उजले रहें वह कहना माने ।
कपड़े धोबी लेजाय लावे, गिन गिनाय सारे सिंगवावें ।
लिखे हरएक घर का असबाब, आमद खर्च का अलग हिसाब।

जो खुद पै लिखना नहिं आवे, किसी परोसिन से लिखवावे।
प्रीतम से निज राजी रहे, काम करे जैसे वह कहे।
जब बोले तब मीठी बानी, लजवन्ती चतुरा गुणखानी।
पाठक समझो जीवन मूर, होयँ दरिद्दर सारे दूर।

ग़ज़ल ६४

हुआ वैदिक विवाह जो ये, हरेक घर हो तो ऐसा हो॥
सुने ध्वनि ओ३म् स्वाहा की, सुभग वरहो तो ऐसाहो।
उमर में है युवा दोनों, गुणों में भी बराबर हैं।
जो कन्या हो तो ऐसी हो, अगर वर हो तो ऐसा हो॥
बुलाया इष्ट मित्रों को, दिखाया ब्याह सतयुग सा।
जमा किये देवता देवी, समधि गर हो तो ऐसा हो॥
नहीं है नाच रंडी का, नहीं भांड़ों की कुछ चर्चा।
न आतिशबाज़ी फुलवारी, स्वयंवर हो तो ऐसा हो॥
सजाया बेल बूटों से, बनाया खूब ही मण्डप।
किया वेदोक्त सब कुछ ही, धरम पर हो तो ऐसाहो॥
बुला पण्डित ये विद्वद्वर, सुनाये धर्म के लेक्चर।
रचा यों यज्ञ बड़ा सुन्दर, निडर गर हो तो ऐसा हो॥
उठो पाठक सँभल बैठो, कि वैदिक वायु बहता है।
नहीं रोके रुकेगा अब, समा गर हो तो ऐसा हो॥

दादरा ६५

देखोरे भाइयो ! ऐसे विवाह रचाना।

वर कन्या हों जवान दोनों, सुन्दर जोड़ी मिलाना ॥ भा०
वर हो मंत्र खुद पढ़नेवाला, ऐसे ही हो विदुषी बाला।
अब है ज़माना आने वाला, गुण अरु कर्म स्वभाव ॥
यथा विधि तुम को पड़े मिलाना ॥ भाइयो! ऐस० १ ॥
चाहिये मण्डप को सजवाना, बड़े २ पंडित बुलवाना।
उत्तम २ यज्ञ रचाना, सुन्दर हों व्याख्यान ॥
जगत् से सारी कुरीति मिटाना ॥ भाइयो! ऐसे० २ ॥
तुम तो बाल विवाह रचाते, मामा जिनके गोद उठाते।
फेरा*तो अब हम नहीं खाते, कौन प्रतिज्ञा मन्त्र पढ़े ॥
जहँ नींद में हो गलताना ॥ भाइयो! ऐसे० ३ ॥
रंडो भांड़ों का बुलवाना, अपनी बागो बहार लुटाना।
मतलब समझ नहीं शर्माना, आतिशबाजी फूंक के।
पाठक धन को धूलि उड़ाना ॥ भाइयो! ऐसे० ४ ॥

दादरा ६६

सुन सज्जन हुए आनन्द उत्तम शादी हुई।
धन्य २ प्रभु की प्रभुताई, जिसने अद्भुत सृष्टि रचाइ।
जो है सच्चिदानन्द ॥ उ० १ ॥
धन्य २ स्वामी को भाई, जिसने वैदिक रीति चलाई।
धन्य तुम्हें हो दयानंद ॥ उ० २ ॥
कुल भूषण व्याहन को आया, उत्तम वर कन्या ने पाया।
है पूनो का सा चंद ॥ उ० ३ ॥

* वर सोता हुआ उठाया, फेरा को फेरे समझता है।

बेद रीति से भँवर डलाई, हवन हुआ ग्रहपूजा हटाई।
अनरीति हुई सब बंद ॥ उ० ४ ॥
चिरंजीव प्रभु हमको कीजो, आयु तेज विद्या बल दीजो।
मिटे सकल दुख द्वंद ॥ उ० ५ ॥
वासुदेव कहे शुभ दिन आया, वर कन्याका योग मिलाया।
रहा न कोई फंद ॥ उ० ६ ॥

ग़ज़ल ६७

वचन दो सात जब हम को तभी प्रीतम कहाओगे।
करो इक़रार पंचों में उसे पूरा निबाहोगे॥
पकड़ कर हाथ जो मेरा मुझे पत्नी बनाना है।
तो किश्ती उम्र की मेरी किनारे पर लगाओगे॥
हमारे वस्त्र भोजन की फिकर करना तुम्हें होगी।
वचन मन कर्म से प्यारे मुझे अपना बनाओगे॥
विपति सम्पति और बीमारी ग़मी शादी औ सुख दुख में।
कभी किसी हाल में मुझ से जुदा होने न पाओगे॥
जवानी औ बुढ़ापे में खिज़ां बाहार जोबन में।
निगाहे मिहर से हरदम खुशी मुझ को दिलाओगे॥
तिजारत नौकरी खेती अर्थ और धर्म सम्बन्धी।
करो कोई काम जब जारी, हमें पहले जताओगे॥
जो बिगड़े काम कुछ मुझ से करो एकान्त में शिक्षा।
मगर ननँदी सहेलिन में न तुम हम से रिसाओगे॥
हमें तजि और तिरिया को दिया कभी दिल तो तुमजानो।

किये अपने को पाओगे जो मेरा जी जलाओगे ॥
अग्नि को साक्षी देकर जो अर्धांगिन किया मुझको ।
तो फिर बलदेव बायें पर मुझे अपने बिठाओगे ॥

ग़ज़ल ६८

वचन देता हूँ मैं तुझ को तुझे प्यारी बनाऊंगा ।
मगर मैं चन्द बातों का अहिद तुझ से कराऊंगा ॥
तुझे मैं धर्म की ख़ातिर जो अर्धांगिन बनाता हूँ ।
अहिद ता उम्र अपने से न पग पीछे हटाऊंगा ॥
मगर तामील हुक्मों पर मेरे रहना कमरबस्ता ।
हुई इस काम में गलती तो फिर नीचा दिखाऊंगा ॥
सिवा मेरे जो कोई नर हो चाहे कितनाही बिहतर ।
जो की कभी ख़्वाब में ख़्वाहिश तो दिल तुमसे हटाऊंगा ॥
गृहाश्रम के लिये तुम को किया संगिन व सहधर्मिन ।
कठिन इस धर्म आश्रम को तेरे बिन कर न पाऊंगा ॥
विपति सम्पत्ति में हरदम हमारे साथ में रहना ।
गुजारा उस में ही करना कि जो कुछ मैं कमाऊंगा ॥
दगा राखो ना कुछ दिलमें तो अपने दिलकी तुम जानो ।
मगर मैं धर्म से अपना वचन पूरा निबाहूंगा ॥
वचन बलदेव के इतने जो है स्वीकार सत् चित से ।
तो फिर दिलजान से प्यारी तेरी ख़िदमत बजाऊंगा ॥

क़व्वाली ६६

तुम से वचन भरा के, पत्नी बनाऊंगा मैं ।

जो २ करूं प्रतिज्ञा, पूरी निभाऊंगा मैं ॥ १ ॥
पहली तो बात यह है, सुनलो ऐ प्राणप्यारी ।
गर हो पढ़ी तो अच्छा, वर्ना पढ़ाऊंगा मैं ॥ २ ॥
सच्चा तो व्रत यही है, प्रण आज जो करोगी ।
व्रत रहके भूखो मरना, हर्गिज़ न चाहूंगा मैं ॥ ३ ॥
अबतक पाखण्ड तुमने जो कुछ किया सो किया ।
छुड़वा के पोप लीला, आर्या बनाऊंगा मैं ॥ ४ ॥
जब २ मिलो किसी से, तब २ झुकाके सिरको ।
कर जोड़ कर नमस्ते तुम से कराऊंगा मैं ॥ ५ ॥
ईश्वर बिना किसी की, पूजा न करने दूंगा ।
मीरा मसान कबरें पूजन छुड़ाऊंगा मैं ॥ ६ ॥
तकलीफ मे तुम्हारी, बेशक रहूंगा साथी ।
लेकिन बुला के स्यानें, हर्गिज न लाऊंगा मै ॥ ७ ॥
माता पिता सम्बन्धी, भाई बहिन कुटुम्बी ।
कड़वा वचन किसी को, सुनने न पाऊंगा मै ॥ ८ ॥
भारत की सारी नारी, मूर्खा हुई बेचारी ।
उनको धर्म की शिक्षा, तुम से दिलाऊंगा मैं ॥ ९ ॥
माता पिता की सेवा, प्रीती से करनी होगी ।
दीनो पशू की रक्षा, तुम से कराऊंगा मै ॥ १० ॥
सन्ध्या हवन वा पितृ, बलिवैश्वदेव अतिथी ।
नित पांच यज्ञ करना, तुमको सिखाऊंगा मैं ॥ ११ ॥
मेले तमाशे तीरथ, संगीत नाच रंग में ।
जो जो हैं ये कुरीती, सारी हटाऊंगा मैं ॥ १२ ॥

भोजन व वस्त्र भूषण, तुम को मिलेंगे प्यारी।
लेकिन फ़िज़ूलखर्ची, करना छुड़ाऊंगा मैं ॥ १३ ॥
अब वासुदेव तुम ने, शिक्षा करी जो हम को।
जहां तक बनेगा मुझ से, मानूं मनाऊंगा मैं ॥ १४ ॥

भजन १००

सब मिल गाओ मंगलचार, इस उत्सव में आने वाले।
धन धन ईश्वर सर्वाधार, तुम हो सुक्खों के भण्डार।
तेरी महिमा बड़ी अपार, सबको सुमति दिलाने वाले ॥स०॥
जिनके जन्मा है सुकुमार, वैदिक रीति से हो संस्कार।
कराया वैदिक धर्म प्रचार, धर्म की धूम मचाने वाले ॥स०॥
आये भाई बन्धु मेहमान, पण्डित उपदेशक विद्वान।
करते भजन मण्डली गान, प्रिय उपदेश सुनाने वाले ॥स०॥
गाओ ईश्वर का धन्यवाद, सुन के मुहत की फ़र्याद।
उस ने पूरी करी मुराद, प्रभु हैं दुःख मिटाने वाले ॥स०॥
कृपा कीजै दीनदयाल, होवे चिरंजीव यह लाल।
रक्खे सदा धर्म का ख़याल, वर वेदों की आज्ञा पाले ॥स०॥
होवे तेजस्वी तपधारी, ईश्वर करे बने उपकारी।
गुरुकुल पढ़े रहे ब्रह्मचारी, उत्तम शिक्षा पाने वाले ॥स०॥
रक्खो वासुदेव विश्वास, पूरी करी प्रभू ने आस।
बुझगई पुत्र दर्श की प्यास, अबतो खुलकर दान दिलाले ॥स०॥

भजन १०१

रोरो करें अनाथ पुकार, भारत मान रखाने वाले।

हम हैं कई बहिन और भ्रात, भूखों मरते हैं दिनरात।
हमको छोड़ मरे पितु मात, तुम्हीं हो धीर धराने वाले॥
बैरी पेट के खातिर भाई, कितने हो गये हैं ईसाई।
तुमको लाज ज़रा नहीं आई, ऋषि सन्तान कहाने वाले॥
कहां गये दयानन्द महराज, थापित कर दिये आर्यसमाज।
बिगड़े सुधर गये सब काज, महर्षि पदवी पाने वाले॥
यहां थे हरिश्चन्द्र महिपाल, जिनको कंगालों का ख्याल।
देकर उनको धन और माल, मुनि की यज्ञ रचाने वाले॥
ऊधोराम की यही पुकार, घर घर धर्म बड़ा रख यार।
चुटकी आटे की दो डार, बन जाओ धर्म बचाने वाले॥

दादरा १०२

छोड़ो उर्दू का पढ़ना पढ़ाना।
नत्थू लिखो उसका पढ़ला बहू है, सिर्फ़ एक नुकता डाले सकता।
खुदा जुदा में फ़र्क़ न रहता–हा ! छोड़ो० ॥
कुलेबनफशही व इस्ने इलायाहिया किसने पढ़ाया किसका बनाया।
दाने इलायची था गुलबनफशा–हा ! छो० ॥
फिकबादो फ़ुक़बादो दोनों हैं यकसां, लिखदो किश्ती, पढ़लो कसबी।
फ़र्क़ शकिस्ता में नहिं कुछ भी–हा ! छो० ॥
आहा ये सुंदर है भाषा हमारी, शुद्ध नागरी, नागर देवी।
पाठक आव बड़े भागरी–हा ! छो० ॥

भजन १०३

टेक–तुम ने जो कुछ भी किया हमने सभी देख लिया।

जो निराकार प्रभु उसकी बनाकर प्रतिमा।
एक मन्दिर में धरा हमने सभी देख लिया ॥ १ ॥
भोग तुम रोज लगाते हो न खाते हैं वोह।
मिष्ट जल पुष्प चढ़ा हमने सभी देख लिया ॥ २ ॥
एक ईश्वर की जगह देव हज़ारों माने।
फल मगर कुछ न मिला हमने सभी देख लिया ॥ ३ ॥
श्राद्ध मुर्दों के लिये कर के चालाकी ऐसी।
पेट अपना ही भरा हमने सभी देख लिया ॥ ४ ॥
मद्य और मांस उड़ाते हैं बनाकर धोखा।
भेट देवी की बना हम ने सभी देख लिया ॥ ५ ॥
व्याह बच्चों के किये वेद की आज्ञा छोड़ी।
बुद्धि बल वीर्य घटा हमने सभी देख लिया ॥ ६ ॥
छोड़ कर वेद पुराणों की उड़ाईं गप्पें।
दोष देवों को लगा हमने सभी देख लिया ॥ ७ ॥
छोड़ ब्राह्मण व गऊ मात पिता की सेवा।
दान शूद्रों को दिया हमने सभी देख लिया ॥ ८ ॥
राहु और केतु शनिश्चर की बता कर ढैया।
नाम ज्योतिष का धरा हमने सभी देख लिया ॥ ९ ॥
धन्य है स्वामी तुम्हें तोड़े यह बन्धन झूठे।
वासुदेव आर्य बना जबसे सभी देख लिया ॥ १०॥

ग़ज़ल १०४

अय रावण तू धमकी दिखाता किसे, मुझे मरने का ख़ौफ़ो

खतर ही नहीं मुझे मारेगा क्या अपनी खैर मना, तुझे होनी की अपनी खबर ही नहीं ॥ अय० १ ॥

तू जो सोने की लंका का मान करे, मेरे आगे यह मिट्टी का घर भी नहीं । मेरे दिल का सुमेरु डिगेगा कहां, मेरे मन मे किसी का डर ही नहीं ॥ अय० २ ॥

आवें इन्द्र नरेन्द्र जो मिल के सभी, क्या मजाल जो शील को मेरे हरें । तेरी हस्ती है क्या सिवा राम पिया, मेरी नज़रों में कोई बशर ही नहीं ॥ अय० ३ ॥

तू ने सहस्र अठारा जो रानी बरीं, तुझे इतने पर आया सबर ही नहीं । पर तिरिया पै जो तू ने ध्यान दिया, क्या नर्क का तुझ को खतर ही नहीं ॥ अय० ४ ॥

मेरी चाह जो थी तेरे दिल में बसी, क्यों न जीत स्वयंबर तू लाया मुझे । वह था कौन शहर मुझे दे तू बता, जहां स्वयंबर की पहुंची खबर ही नहीं ॥ अय० ५ ॥

जो हुआ सो हुआ अब भी मान कहा, मुझे राम पै जल्दी से दे तू पठा । कहे सीता वगर्ना तू देखेगा क्या, चन्द रोज़ में अब तेरा सर ही नहीं ॥ अय० ६ ॥

दादरा १०५

लहराती है खेती दयानन्द की ।
वैदिक धर्म का बीज नमूदार होगया ।
गुरुकुल से बियाबान भी गुलजार होगया ॥ लह० ॥
प्रचार करते आर्य्य कर के गदागरी ।

करते हैं अहिले क़ौम की यह मुफ़्त चाकरी ॥ लह० ॥
कुप २ के गुल चुनते थे ईसाई मुसलमान ।
अब आर्य्यों की फ़ौज बनी उनकी पासबान ॥ लह० ॥
जो चीख चाख करते थे वेदों की बुराई ।
देखो उन्हों ने दाढ़ी मुंडा चोटी रखाई ॥ लह० ॥
चन्द्र जो गुरुकुल से ब्रह्मचारी आयेंगे ।
योरुप में जाकर आर्य्य मन्दिर बनायेंगे ॥ लह० ॥

भजन १०६

सुमिरन बिन गोते खाओगे ।

क्या लेकर तुमने जन्म लिया है, क्या लेकर चले जाओगे । सु०॥
मुट्ठी बांधे आये जग में, हाथ पसारे जाओगे ।सु०॥
यह तन है काग़ज़ की पुड़िया, बूंद पड़त गल जाओगे । सु०॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, ओ३म् बिना पछिताओगे । सु०॥

भजन १०७

ओ३म् जपन क्यो छोड दिया ॥ तूने० ॥

काम न छोड़ा क्रोध न छोड़ा, सत्य वचन क्यों छोड़ दिया ।
झूठे जग में दिल ललचाकर, असली वतन क्यो छोड़ दिया।
कौड़ी को तो खूब सँभाला, लाल रतन क्यों छोड़ दिया ।
जिस सुमिरन से अति सुख पावे सो सुमिरन क्यों छोड़ दिया ॥

भजन १०८

अनुग्रह करो सभी नर नार, कल को आर्यभवन में आकर ।

आये बड़े २ विद्वान, जिनका यश विख्यात महान।
उनके होवेंगे व्याख्यान, कैसे कहते है समझाकर॥
सुन २ वेदों के उपदेश, तुम्हरे दूर होवें सब क्लेश।
यही था स्वामी का उपदेश, जो थे वैदिक धर्म दिवाकर॥
मेरी विनय करो मजूर, कल को आइयो मित्रो जरूर।
करदो पक्षपात को दूर, मिलजाओ हाथ से हाथ मिलाकर॥
जो इस अवसर पर नहीं आव, निश्चय भाग्यहीन कहलाव।
पीछे कर मल २ पछताव, कहता वासुदेव समझाकर॥

भजन १०६

जलसा सबको मुबारिक सालाना, आहा समा है कैसा बना जलसा सबको मुबारिक सालाना।

सुन्दर सुहाना वेदों का गाना हर नर को होवे सफल यहां, आर्य भ्रातृगण का आना॥ ज० १॥

स्वामी दयानन्दजी ने दयाकर, हरी गुण का, विद्या धन का, आन खोला भारत म खजाना॥ ज० २॥

एसे ऋषी का धन्यवाद गाव जिसने दिया हम को जगा, वरना गफलत मे था सब जमाना॥ ज० ३॥

धन्य प्रधान और मन्त्री सभासद, हिलमिल के, सच्चे दिल से, जलसे का उत्साह बढ़ाना॥ ज० ४॥

धन्य २ पंडित उपदेशक, सबका दिया, भ्रम मिटा, दे दे करके उत्तम व्याख्याना॥ ज० ५॥

धन्य २ सारे दर्शक जन, कष्ट उठा, आये यहां, यहां सत्य झूठ को छाना ॥ ज० ६ ॥

भजन ११०

प्यारे प्यारे सजन मिल गावो प्रभू के धन्यवाद। अजी धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद हां।

कैसी कैसी यह उत्तम मानुष की देह दीनी। प्यारे मानुष की देह दीनी दया अपार कीनी ॥ गावो० ॥

कैसे २ समय में जन्म हमें है दीना। प्यारे जन्म हमें दीना। न्यायकारी का राज कीना ॥ गावो० ॥

ऐसे २ अवसर पर दयानन्द स्वामी आये। प्यारे दयानन्द स्वामी आये। वेदों के हामी आये ॥ गावो० ॥

बहु कष्ट उठाकर धर्म प्रचार है कीना। प्यारे धर्म प्रचार है कीना। जगत उपकार कीना ॥ गावो० ॥

सत्य धर्म न छाडा विष गर्चे है खाया। प्यारे विष खाया प्राण दीने। लाखों के उद्धार कीना ॥ गावो० ॥

कैसे २ यह उत्तम आर्यसमाज बनाये। प्यारे आर्यसमाज बनाये। धर्म के जहाज बनाये ॥ गावो० ॥

अब नगर नगर और ग्राम ग्राम में जावो प्यारे जावो प्रचार करो, जगत उपकार करो ॥ गावो० ॥

सारे सारे सुजन तब सुखी बसो आनंदित। प्यारे सुखी रहो आबाद रहो। तुम वेदों का प्रचार करो ॥ गावो० ॥

ओ३म् शांतिः शांतिः शांतिः।

लक्ष्मी	)
उपदेश रत्नावली	-)
विदुर नीति	।≈)
श्वेताश्वतर उपनिषद	≡)
भागवत् समीक्षा	।-)
नियोग निर्णय	≈)
उपदेशमंजरी नागरी भाषा	
श्री स्वामी दयानन्द जी के	
पूनावाले १४ व्याख्यान	।)
पुरातत्त्व प्रकाश २ भा	।॥-)
आर्य धर्मेन्द्र जीवन	१।)
सरस्वतीन्द्र जीवन	)
दयानन्द चरित्र स	१॥)
स्त्रीसुबोधिनी पांचों भाग	।)
सीताचरित्र पांचों भाग	१॥-)
तथा उर्दू ४ भाग	१।)
नारायणी शिक्षा	१।)
तथा सजिल्द	१।)
नागाश्रमविचार प्र०भा०	॥)
तथा द्वितीय भाग	।)
भारत वर्ष की वीर तथा विदुषी स्त्रियों के जीवन	
चरित्र प्रथम भाग	॥)
तथा द्वितीय भाग	≈॥
स्वाज्ञान प्रकाश	≈॥
स्वाज्ञानमाला २ भा	-)॥

मुकुतान विरुद्ध की अदालत और हाली का फैसला	-
सच्ची दुनिया	)
चार मीनार	।)
स्त्री हितोपदेश	)
काव्य कुसुमोद्यान	।)
संगीत रत्नप्रकाश	
प्रथम भाग ना ≈) उर्दू	
द्वितीय भाग ना०)॥ उर्दू	)।
तृतीय भा० ना०)॥ उर्दू -)॥	
चतुर्थ भा०ना -) उर्दू	।।
पञ्चम भा० ना -)। उर्दू	
पांचों भाग साथ	।)
भजनपच्चासी नागरी	-)
मनमानन्दभजना १ला	
शान्तिप्राचनशक्ति ।≈	
मन्त्र भाषान्तर द सहित	
सत्यनारायण की असल कथा	)
आर्यरत्न	)
समाधान रत्न	-)
उपयोगिक नागरी	-)
सज्जीवनबूटी ना	।)
पञ्चयज्ञपद्धति)। भी उर्दू	१)
ब्रह्मकुमार्ग्यनमान दर्पण	
मुस्लिम)॥ स भात	१)
सत्य दर्पण	-)
मुहम्मद चारित्रचर्चा	॥)
सत्या उर्दू) भी भात	१)

* ओ३म् *

❀ चतुर्थ भाग ❀

विविध विषयों पर राग-रागिनियों का मनोहर संग्रह ।

❀ संग्रहकर्त्ता और प्रकाशक ❀

बाज़ार बहादुरगंज-शाहजहांपुर ।

आर्य्यसमाज के

❁ काव्य-कुसुमोद्यान. ❁

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पुस्तक मिलने का पता—

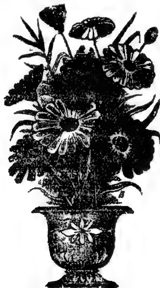
द्वारकाप्रसाद भगार,

[illegible]—आगरा, यू. पी.

सूचीपत्र संगीतरत्नप्रकाश ।

❀ चतुर्थभाग ❀

संख्या टेक भजन



* ओ३म् *

संगीतरत्नप्रकाश ।

* चतुर्थभाग *

भजन १

तेरो नाम ओंकार, पावै कोऊ नहिं पार ।
महा मुनीश गये हार, गाय गाय धाय धाय ॥१॥
सत् चित् आनँद स्वरूप, रहित सदा रंग रूप ।
तू अनूप जगत भूप, निराकार निर्विकार ॥२॥
अजर अमर नित्य अभय, सर्व शक्तिमान सदय ।
शुद्ध बुद्ध मंगल मय, तू अपार तू अपार ॥३॥
तू अभेद तू अछेद, पावै नहीं तू है खेद ।
नवलसिंह चारो वेद, कहत यही बार बार ॥४॥

भजन २

पिता तुम पतित उद्धारन हार ।
मोसे परम पातकी जन के, संकट मोचन हार ॥ पिता० १ ॥
आया हूँ मैं शरण तुम्हारी, अपना भला विचार ।
जैसे बनै कीजिये मेरा, भवनिधि से उद्धार ॥ पिता० २ ॥

हित अनहित कुछ नहीं विचारा, मै मतिमन्द गँवार।
अपनी अतुल दया के द्वारा, मुझको दीजै तार ॥ पिता० ३ ॥

भजन ३

ईश्वर निराकार, मेटो ताप संसार के।
त्राहिमाम् त्राहिमाम् त्राहिमाम् त्राहिमाम्॥
प्रभो ! प्रभो !! प्रभो !!! प्रभो !!!!
हम पर, इनपर, उनपर, सबपर, अपनी दया कर करुणा सागर।
हमने तेरा ध्यान भुलाया, वेदों का विज्ञान भुलाया ॥
होम यज्ञ और दान भुलाया, यथा योग्य सन्मान भुलाया ।
हरी ! हरी !! हरी !!! हरी !!!!
दाता धाता जग के त्राता, पाठक तेरी स्तुति गाता।
पाहिमाम् पाहिमाम् पाहिमाम् पाहिमाम्॥

भजन ४

शरण मै तेरी आया प्रभु जब भटक २ गया हार।
कोई नहीं बिन तेरे मददगार ॥
उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम, ढूंढ़ा सब संसार।
तूही तूही है दुख का मोचन हार ॥
मैं पापी तुम पतित उद्धारन, वेग कृपा कर मोहि उबारो।
रैन दिवस फिरा धनके कारन, लिया न इक छिन नाम तुम्हारो ॥
नाम पिता तेरा कष्ट निवारण, पाप ताप प्रभु मेरे टारो।

सत् विद्या को करूँ मै धारण, छल और कपट रहे सब न्यारो ॥
तू करतार, सिरजनहार, तेरा कार अपरम्पार मै बलिहार।
तेरा मुझे अधार, दाता दाता, तुम हो मोक्ष के दाता ॥
मोसम और न कोई पापी, सब पतितन मे नामी भारा।
और ठौर जब कोई न पाया, तब पाया एक तेरा द्वारा ॥
सुख के है सब मेरे सनेही, मात पिता भगिनी सुत दारा।
सारी उमर हा ! पाप कमाया, क्यो कर हो मेरा निस्तार ॥
तू दयाल, तू कृपाल, तू प्रतिपाल, तू रक्षपाल, मेरा हाल।
तुझ पै आशकार, खन्ना तेरा असीम गुनहगार ॥

भजन ५

प्यारे प्रीतम से प्रीति लगाओ रे जिन तारनारे।
बिन भगवान कोइ जन तेरे अन्त काम नहिं आवे ॥
वही भगवान, अति दयावान, प्यारे उसी की रहो शरना।
जो भवसागर तरना, नाहि योनो में दुख भरना।
वेदचार, बार बार, यही रहे पुकार।
खन्ना भजन बिन, सब अकाज, तेरा दान पुण्य करना।
प्यारे प्रीतम से प्रीति लगाओरे ॥

भजन ६

तू परिपूरण नाथ जगत का, महिमा तेरी अपरम्पार।
जगत पिता तुम सब से महाँ हो, कहते चारो वेद पुकार ॥

सूर्य्य, चन्द्र, पृथिवी, नभ आदिक, हैं तेरे ही रचे सँभार।
निश दिन करता दान पदारथ, तू सबको अति भले प्रकार॥
इस मन को ज्ञान दे, मत विषयों में जान दे।
पापों से ये छुटे, तेरे ध्यान में जुटे।
असत् को छोड़ दे, बन्धन तोड़दे।
लल्ला तुझ पै रहे सदा ही जाँ निसार॥

भजन ७

दीनानाथ दया कर वेग, नैया भारत पार लगाओ। टेक,
नैया पड़ी बीच मँझधार, पाता नहीं वार और पार।
मचरहा भारी हाहाकार, ईश्वर! तुमहीं इसे बचाओ॥दीना०१॥
छाया हुआ अँधेर महान, सके नहीं हैं कुछ पहिचान।
ग़ाफ़िल पड़े है किश्तीवान, इनको अबभी चेत कराओ॥दीना०२॥
पड़ रहे महामारी और काल, होगया हाल बहुत बेहाल।
ईश्वर! लीजै तुर्त सँभाल, इसमें नेक न देर लगाओ॥दीना०३॥
इस में है जो लोग सवार, कर रहे आपस में तक़रार।
उनमें बढ़गया पोच विचार, उनमें मेल मिलाप बढ़ाओ॥दीना०४॥
फँसकर खुदग़र्ज़ी में पापी, अब भी कर रहे आपा धापी।
मूरख समझे नहीं कदापी, चाहे कितनाही समझाओ॥दीना०५॥
तुम बिन हे प्रभु! दीनानाथ, देगा कौन बिपति में साथ।
स्वामी बढ़ा दया का हाथ, तटकी ओर खेंच लेजाओ॥दीना०६॥
कहता सालिग्राम पुकार, तुमसे हे हरि! जगदाधार।
होने पावै नहीं अबार, अबतो करुणा हस्त बढ़ाओ॥दीना०७॥

दादरा ८

प्रभु नैया किनारे लगादो जी।
सोये पड़े हैं सारे खिवैया, निद्रा से इनको जगादो जी ॥ १ ॥
डोल रही है नैया भँवर में, करुणा हस्त बढ़ादो जी ॥ २ ॥
डूबने में कुछ कसर नहीं है, देकर सहारा बचादो जी ॥ ३ ॥
भटक रहे हैं अन्धकार में, भूलों को राह बतादो जी ॥ ४ ॥
वैदिक मारग पर हम सब को, फिर आरूढ़ करादो जी ॥ ५ ॥
सत्य धर्म की देकर औषधि, मुर्दों को ज़िन्दा बनादो जी ॥ ६ ॥
क़हतो वबा ने दुखित किये हैं, इनको यहां से भगादो जी ॥ ७ ॥
सालिग्राम कहे प्रभु मेरी, नैया पार लगादो जी ॥ ८ ॥

भजन ६

जो हरि से प्रीति लगाता है, वह मोक्ष धाम को पाता है।
वह भय न काल से खाता है, निज मन में धीर बँधाता है ॥
वह शान्तिशील बन जाता है, सब दुख उसका मिटजाता है।
दुनियां में सब को भाता है, वह महा पुरुष कहलाता है ॥
नहीं कोई उसे थकाता है, नित निर्भय हरियश गाता है।
जो हरि से प्रीति लगाता है, वह मोक्षधाम० ॥ १ ॥
जो कर्ता को बिसराता है, सांसारिक मौज मनाता है।
धार्मिक उत्साह घटाता है, फिर अन्त समय पछताता है ॥
फिर आवागमन में जाता है, नहिं सुर दुर्लभ तन पाता है।
जो हरि से प्रीति लगाता है, वह मोक्ष धाम० ॥ २ ॥

सच्चे वह ही एक दाता है, जो सब का उदर भराता है।
वही कारन करन विधाता है, पापों से हम्हें बचाता है॥
वह सब का ही पितुमाता है, यह वेद हम्हें सिखलाता है।
जो हरिसे प्रीति लगाता है, वह मोक्ष धाम० ॥ ३ ॥

भजन १०

निरन्तर तेरा ध्यान धरूँ। टेक,
भक्ति बढ़े तव चरण सुखावह, दुष्कृत नाहिं करूँ।
निरन्तर तेरा ध्यान धरूँ ॥ १ ॥
भवसागर की धार अगम है, धीरज धार तरूं।
निरन्तर तेरा ध्यान धरूं ॥ २ ॥
'कर्ण' कहे भटकूं न शान्ति लह, उर आनन्द भरूँ।
निरन्तर तेरा ध्यान धरूँ ॥ ३ ॥

भजन ११

विनती करुणा निधान निधान सुनिये मेरी भगवान !
सुनिये मेरी भगवान !! सुनिये मेरी भगवान !!! विनती० ॥
करो शुद्ध जीवन, चलन और तन मन, हृदय में उत्पन्न हो तेरी लगन। दयालु, कृपालु, रक्षा करो, मागूं यही वरदान ॥ विनती० ॥ भक्ती न शुद्धी, न बल है, न बुद्धी, विद्या न शक्ती, मगर तेरी आस। धरम, करम, जनम सुधार, दूर करो अज्ञान ॥ विनती० ॥ आजिज़ हैं बन्दे तेरे दर पै आये, ऐ दानी हमें दान भक्ती का दो। पुकार, हरबार स्वीकार करो, अय सर्व शक्तिमान ॥ विनती० ॥

ग़ज़ल १२

जो जगतपिता के प्रेम जल से, यह खेत मन का हरा हुआ।
तो अवश्य होगा कि एक दिन, यह हो फूल फल से फला हुआ॥
चले चाहिये कि उपासना में, न होने पावे तगाफ़ुली।
रहे ओ३म् शब्द के जाप का, तेरे मन मे तार बँधा हुआ॥
ये उपासना का जो बाग़ है, सुबह शाम इसकी तू सैर कर।
ये करेगा कुरफ़ते दूर सब, ये सरूर से है भरा हुआ॥
यहां रहती सदा बहार है, यहां से खिज़ां को फ़रार है।
जो गुज़र हो इस मे खयाल का, रहे दिल का गुंचा खिला हुआ॥
यहां की फ़िज़ा है वह दिलरुबा, नहीं जिससे दिल हो कभी जुदा।
यहां गुल अजब है खिले हुए, यहां मोक्ष फल है लगा हुआ॥
जो दग़ा फ़रेब से है अलग, वही इसमे जाने का मुस्तहक़।
नहि इसकी नसीब उसे हवा, जो विषयो मे होवे फँसा हुआ॥
जो हो धर्म युक्त यती सती, वही पा सके है यहां जगह।
न सताय उस को क्लेश फिर, रहे सब दुखो से बचा हुआ॥
जिसे कोशिशो के तुफ़ेल से, जगह इस चमन मे अता हुई।
वही जीने मरने की क़ैद से, बिला रोक टोक रिहा हुआ॥
तेरी खुश नसीबी है केवला, तेरा इस तरफ को जो मन चला।
ज़रा जल्दी २ क़दम उठा, दरे बाग़ है वह खुला हुआ॥

भजन १३

हम तालिब है उस नूर के, जो नज़र नहीं आता है। टेक,

सब नूरों को बनाया जिस ने, अपने नूर को छिपाया जिस ने।
अब तक भी न दिखाया जिस ने, बैठ रहे हम घूर के।
ढूंढे से नहिं पाता है ॥ जो नज़र नहीं० ॥ १ ॥
आफ़ताब की ताब नहीं है, माहताब की आब नहीं है।
छिप गई वर्क जवाब नहीं है, होश खतम हुये हूर के।
कुल जहां मात खाता है ॥ जो नज़र नहीं० ॥ २ ॥
लाखों सर को पटक के मर गये, शकल न देखी भटक के मर गये।
इश्क फन्द में अटक के मर गये, जैसे हाल मंसूर के।
चढ़ दार पै इतराता है ॥ जो नज़र नहीं० ॥ ३ ॥
नकाब जालिम पड़ा ही देखा, जब देखा तब अड़ा ही देखा।
शोर मुल्क में बड़ा ही देखा, चक्कर काटे दूर के।
घीसा को वही भाता है ॥ जो नज़र नहीं० ॥४॥

ग़ज़ल १४

है जिसने सारे विश्व को धारण किया हुआ।
वह है हर एक वस्तु के अन्दर रमा हुआ ॥
मिलता नहीं है इस लिये अज्ञानियों को वह।
अज्ञान का है बुद्धि पै परदा पड़ा हुआ ॥
दुनियां के दुःख रूप समुन्दर से हैं वह पार।
जगदीश से है प्रेम जिन्हों का लगा हुआ ॥
सच्ची खुशी से रहते हैं जो जन सदा अलग।
मन जिनका विषय भोग में होवे फँसा हुआ ॥

मन तो मलीन वैसा ही मूरख रहा तेरा।
गंगा में रोज़ जाके नहाया तो क्या हुआ॥
खोते हैं खेल कूद में जो उम्र रायगां।
अफ़सोस उनकी बुद्धि को क्या जाने क्या हुआ॥
अज्ञानियों से रहता है केवल वह दूर दूर।
खुलजाय ज्ञान-चक्षु तो वह है मिला हुआ॥

भजन १५

सर्व नियन्ता स्वामी जन के दुख के मोचन हार।
रक्षक ! रक्षक ! सहायक सर्वाधार॥ सर्व०॥
काम क्रोध और लोभ मोह में, फँसा रहा तुझे नहीं विचारा।
जगन्नाथ काशी अरु मथुरा, फिरा भटकता दर दर मारा॥
धन अरु कुटुम्ब सहायक समझा, अब जाना वह भी निःसारा।
किसकी आस करूँ मैं भगवन, तुझ बिन नहीं कोई और सहारा॥
परमेश्वर! जगदीश्वर! सर्वेश्वर! विश्वम्भर!
पाठककी सुन पुकार, प्रभु! प्रभु! निज जनको शीघ्र उबार॥सर्व०॥

भजन १६

सुमिर हरदम तू भगवन् को, न खाली छोड़ इस मन को॥
मन खाली ऐसा बुरा, जैसा मर्द बेकार।
या बन जावे चोर यह, या होवे बीमार॥
लगे पापों के चिंतन को॥ न खाली०॥१॥
मनको खाली पावै जब, दे इसको यह कार।

स्वास २ पर वह रटे,एक अक्षर ओंकार ॥
रखो दृढ़ता से इस प्रणको ॥ न खाली ०॥२॥
झूंठ पाप दुर्बोधता, मत आने दो पास ।
यह तीनों ही करत है, धर्म कर्म का नाश ॥
घटाते है यही धन को ॥ खाली० ॥३॥
पढ़ले विद्या वेद की, प्रकट होय जो ज्ञान ।
दर्शन होवे ब्रह्म का, तब तेरा कल्यान ॥
खन्ना करले इस साधन को ॥ न खाली० ॥४॥

भजन १७

प्रभु से प्रीति लगाओ जी, ऐसा समय न पाओ ।
जिसने रचा है ये भू मगडल उसको घट में बसाओ जी ।
चकित हो लखि जिसकी रचना उस ही के गुण गाओ जी ॥
देश हितैषी समाज हितैषी सब ही मिलकर आओ जी ।
निश्चल हो आडम्बर छोड़ो सत्य में प्रीति बढ़ाओ जी ॥
ताता धिन धिन ताथइया में मत शुभ समय गँवाओ जी ।
सब जग को सम दृष्टि से देखो धर्म से लाभ उठाओ जी ॥
देश भक्ति शास्त्रीय भक्ति की, विमल ध्वजा फहराओ जी ।
अमली जीवन अपना बनाओ, तब पाठक सुख पाओ जी ॥

क़व्वाली १८

तुमही पिता हमारे, हो वेद ज्ञान वाले ।
जग में भी रम रहे हो, हो बे-निशान वाले ॥

छिन छिन तुम्ही को ध्याऊं, ऐ न्यायकारी स्वामी।
ज्योती तुम्हारी चमके, हो चन्द्र भान वाले॥
दुःखों से तुम छुड़ा दो, हम दास हैं तुम्हारे।
सिखला दो अपनी भक्ती, आनन्द खान वाले॥
पाठक के तुम हो सर्वस, ऐ दीनबन्धु स्वामी।
आवागमन छुड़ा दो, हो मोक्ष दान वाले॥

ग़ज़ल १६

बिना दर्शन किये तेरे नहीं दिल को क़रारी है।
कमल ज्यों नीर बिन सूखे पपीहा ध्वनि पुकारी है।
बिना जल मीन नहिं जीवे यही गत अब हमारी है॥ बिना०
नहीं है और की इच्छा तेरा ही नाम कारी है।
फिरा दृग दे इधर को तू यही बिनती हमारी है॥ बिना०
भला कैसे हो हा! सारी मिटी श्रुतबोधिनी विद्या।
बढ़ा दे फेर इस को अब यही उर आश धारी है॥ बिना०
न देखूं जब तलक तुझको मुझे जीना भी भारी है।
मुझे दर्शन दिखा दे क्यों वृथा सुध बुध बिसारी है॥ बिना०
नहीं हम मान के भूखे नहीं दौलत पियारी है।
फ़क़त चाहे शरण तेरी निहां ने यों पुकारी है॥ बिना०

भजन २०

तुमही रक्षक हो महाराज! दीनानाथ कहाने वाले॥ टेक॥

हमतो पापों में हैं लीन, कुछ नहिं रहा ठिकाने दीन।
बनगये बुद्धि विवेक विहीन, विषरस पान करानेवाले ॥ तु०
तुमहीं सब के हो आधार, जाना हमने इसे विचार।
पूरा न्याय विवेचन धार, हो तुम न्याय चुकाने वाले ॥ तु०
देते दुष्ट जनो को दण्ड, करके धारण रूप प्रचण्ड।
तुम में रौद्र प्रभाव अखण्ड, क्या गुण गावें गानेवाले ॥ तु०
हम सब तुम्हरी हैं सन्तान,अपना चाह रहे कल्यान।
पाठक त्यागे भ्रम अज्ञान, हों सब तुम्हरे ध्याने वाले ॥ तु०

लावनी २१

अय सनम तू दिखा, मुझे जलवा ज़रा, कहां जाके छुपा,
नहीं आया नज़र।
मैंने ढूंढ़ा जहान, सब कौनो मकान, नहीं पाया निशान,
तू गया किधर ॥
मसजिद में भी जा, मैंने सिजदा किया, चित गहरा दिया,
नहीं मिला मगर।
गया गंगो जमन, नहिं दिल को अमन, संहरा ओ चमन,
नहीं आया सबर ॥
काबा में गया, वहां तू न मिला, मैंने हज भी किया,
तेरी खातिर।
वैरागी हुआ, सर्व त्यागी हुआ, बड़ भागी हुआ,
कहला के फ़क़र ॥

तू मिलाही नहीं, मुझे माहेज़बीं, दिल बेतसकीं, रहता मुज़तर ॥ मैंने ढूंढ़ा जहान० १ ॥

मन्दिर में भी जा, मैंने सर को झुका, लिया तिलक लगा, पूजे ठाकुर ।

सभी देखे पुरान, पढ़ी आयत कुरान, तू रहा ही निहां, न हुआ जाहिर ॥

कभी शिव जी के जा, बेल पत्ती चढ़ा, कभी डौंरू बजा के कहा हर हर ।

कभी आफ़ताब, पूजा शिताब, इसे दिया आब, नहा धोके फ़जर ॥

मैं शबो रोज़, फिरा ग़म अन्दोज़, आतिश बशोज़, कभी बनके गबर ॥ मैंने ढूंढ़ा जहान० २ ॥

उर धारे मज़हब, मैंने तेरे सबब, सूझा कोई न ढब, ती हुआ शशदर ।

मैं हुआ हैरां, अब जाऊँ कहां, कर सनम अयां, तूही आकर ॥

जब हार चला, तो ईसाई मिला, उसने यूं कहा, तुम आओ इधर ।

मैं गया वहां, हुआ इंजीलख्वां, मेरा दिल नादान, गया गिरजाघर ॥

तू मिला न सनम, मुझ को इकदम, लगा दुगना ग़म, दिल को आखिर ॥ मैंने ढूंढ़ा० ३ ॥

जब ढूंढ भाल, हुआ बेहाल, पाया बिसाल, दिल के भीतर।
खुला दशम द्वार, मिला अपना यार, किया खूब प्यार, गले मिल मिल कर॥
बधावा राम, कर प्राणायाम, तू सुबू शाम, मुतलक़ नहीं डर।
वीर भान, यह ठीक जान, दिल में पहचान, अपना दिलवर॥
खन्नादास, मत हो निरास, दिलवर के पास, रहो शामो सहर॥ मैंने ढूंढा जहान० ४॥

भजन २२

तुम भूले जगत पिता को, कैसा छाय रहा अज्ञान। टेक
अब तक तुम ग़फलत में सोये, जीवन के प्रिय वासर खोये।
भारी बीज पाप के बोये, हुये मतिमन्द महान॥ तुम भूले० १॥
काया रहित ईश को जानो, मत उसको साकार बखानो।
तुम या सत्य कथन को मानो, तज पूजन पाषान॥तुम भूले०२॥
एक जगह जो इसे बतावे, वह क्या भेद उमर भर पावे।
यह घट घट में विभु कहलावे, दया सागर भगवान॥ तुम०३॥
दरिया बहा दूर तक जावे, कैसे लोटे बीच समावे।
गंगासहाय सारे सुख पावे, धर ईश्वर का ध्यान॥तुम० भू०४॥

ग़ज़ल २३

रहा मैं डूब भवनिधि में, उबारोगे तो क्या होगा ।
तसद्दुक़ जानो दिल तुम पर, निहारोगे तो क्या होगा ॥
हो लड़का कैसा ही नाक़िस, पिता को रहम लाज़िम है।
मुझे कर माफ़ ! बिगड़ी को, सँभारोगे तो क्या होगा ॥
अधम कैसा ही गो मैं हूँ, पतित पावन हो तुम स्वामी।
सभी मम दोष की गणना, बिसारोगे तो क्या होगा ॥
मुझे मद मोह आलस्य ने, प्रभू कुछ दिन से घेरा है।
इन्हें ले ज्ञान का खंजर, जो मारोगे तो क्या होगा ॥
शरण ली आप की अब तो, झुकाये सर हूँ मैं आगे ।
निगह एक रहम की करके जो तारोगे तो क्या होगा ॥
तुम्हें तज और को पूजें, नवायें सर जो नीचों को ।
ये मूरखता को भारत से, निकारोगे तो क्या होगा ॥
चहे कुछ भी कहो हमको, नहीं घटती है कुछ इज्जत ।
अधम या दास मूरख कह, पुकारोगे तो क्या होगा ॥

भजन २४

दोहा–विनय करूं कर जोड़ कर, सुनिये नाथ पुकार ।
इस असार संसार से, लीजे मोहिं उबार ॥

टेक–करुणानिधि वेगि उबारो, नाथ मेरी विनय तुम्हीं से है ।
बनकर अधम अधिक व्यभिचारी, विषय भोग में उम्र गुजारी ।
शरणागत अब हुआ तिहारी, चाह नहीं और किसी से है ॥क०॥

काम क्रोध ने बहुत सताया, लोभी बन इत उत को धाया।
सुमिरण में नहिं चित्त लगाया, हुई यह चूक मुझी से है ॥क०॥
मन मूरख चहुं दिशि को धावे, सुत धन दारा में भटकावे।
आखिर को धक्के ही खावे, पाता दुःख नाफहमी से है ॥क०॥
ऋषीराज को है शोक ने घेरा, दूर करो तज विलंब घनेरा।
दीपचन्द एक मित्र है मेरा, इसे भी आश तुम्ही से है ॥क०॥

भजन २५

हुआ लोभी संसार कारे, कुछ किया न ब्रह्म विचार।
यह व्यवहार सदृश सपने के, भूला फिरे क्या यार।
मृग तृष्णावत भटक मरेगा, देखले आंख पसार। हुआ० ॥
काम न आवे ऐंठ अकड़ कुछ, है दो दिन की बहार।
सुमिरन कर उस जगत पिता का, जो है सर्वाधार ॥हुआ० २
विषय भोग में उमर गँवाई, किया खूब व्यभिचार।
अन्त समय सिर धुन पछितैहै, पड़ेगी जमकी मार ॥हुआ०३॥
त्यागि नींद अब भी तुम जागो, जो चाहो उद्धार।
कहना मानो ऋषीराज का, त्यागो अघ आचार हुआ०४॥

भजन काफी २६

कोई तेरे काम न आवे भज अजर अमर अविकार।
सुत पित मात भ्रात प्रिय भगिनी धन दारा परिवार॥
सरत न काम धाम दस धाये न्हाये कुम्भ किदार।
भ्रम वश भ्रमत फिरत मृग वन २ मृगमद नाभि मँझार॥

तुलसी नींब बेल बड़ पीपल, कदली कदम अनार।
वन उपवन वृन्दावन मधुवन, और गिरराज पधार॥
सन्ध्या यज्ञ योग जप छोड़ा, मोडा मन उपकार।
आर्य्य धर्म का मर्म न जाना, किया निन्द्य आहार॥
पढ़ पढ़ बैबिल और कुरां सब, बैठे धर्म विसार।
आदि काल की विद्या का फिर कैसे होय प्रचार॥
सब प्रकार से सिद्ध हो रहा, यह संसार असार।
तन धन जोवन जान छिनक मे भजत न सिरजनहार॥
ऐहैं काल गांसिहै घींचे खींचै फांसी डार।
फिर पछताये प्राण न बचिहैं हुइहै यह तन छार॥
खसे केश देह भई जर्जर बीती बैस बहार।
परिहर सब पाखण्ड हजारी प्रभु भज बारम्बार॥

भजन २७

उस ईश्वर दीन दयाल को, वैराग्य बिना नहिं पाया॥ टेक॥
एक समय थी भरी जवानी, कामदेव निज ध्वजा फैरानी।
रूप देख हो बुद्धि दिवानी, भूला प्रभू विशाल को॥
मन विषयो को ललचाया, आंखो को रूप लुभाया।
एक दिन दिल मे शरमाया। उस ईश्वर०॥ १॥
जहां कामना पूर न पाई, क्रोध ने अपनी आंख दिखाई।
झट से तहँ ठन गई लड़ाई, पहुँचाया उस हाल को॥
अपना घर तक फुंकवाया, प्रण आत्मघात का भाया।
आखिर एक दिन यो आया। उस ईश्वर०॥ २॥

एक समय मन लोभ समाया, धन दौलत मैंने खूब कमाया।
झूठ दगा छल से घर लाया, जोड़ा बहु धन माल को ॥
नहिं खर्चा नहिं खुद खाया, चोरों से बहुत बचाया।
इस में भी सार न पाया। उस० ॥ ३ ॥

बेटा बेटी परिजन नारी, जिन के लिये सब उम्र गुज़ारी।
अपनेहि सुख की करे तयारी, देख के उनकी चाल को ॥
मेरे मन वैराग्य समाया, मैंने सत्संग अच्छा पाया।
मुझे निर्जन थल ही भाया। उस० ॥ ४ ॥

एक समय अहंकार समाया, अपने धन बल पर गर्वाया।
इसने भी नीचा दिखलाया, हल किया अहम सवालको॥
मन निर्मल शीशा बनाया, आंखों को बन्द कराया।
वाणी को ठीक सधाया। उस० ॥ ५ ॥

आखिर उपनिषदों को विचारा, वेद ज्ञान का लिया सहारा।
पाठक तब जाना प्रभु प्यारा, छोड़ा सब जंजाल को ॥
अविनाशी ईश्वर पाया, जिस ने ये जगत रचाया।
मैं उस का भक्त कहाया। उस० ॥ ६ ॥

भजन २८

दोहा—मरता किस के इश्क में, करता किस पर प्यार।
यहां मतलब के मीत हैं, देखा गया विचार ॥
टेक—सब स्वारथ का संसार है, तू किसपै प्यार करता है।
जब तक प्यारे करे कमाई, तब तक सारे करें बड़ाई ॥

चचा भतीजे ससुर जमाई, कुनबा ताबेदार है।
दिलबरी का दम भरता है । तू किस पै० १ ॥
जब तू शक्तिहीन हो जावे, अपनी हाजत कुछ फ़रमावे।
यार दोस्त कोई पास न आवे, मिट जाता सत्कार है॥
कम्बख़्त नाम पड़ता है । तू किस पै० २ ॥
जिस के प्यार में ईश बिसारा, धर्माधर्म न तनक विचारा।
उस कुनबे ने किया किनारा, कौन यहां ग़मख़्वार है॥
कह कह के यों मरता है। तू किस पै० ३ ॥
मत बन जान बूझकर भोला, हैं खुदग़र्ज़ यार मिठबोला।
यह बल्देव मानुषी चोला, फिर मिलना दुशवार है॥
जप उसे जो दुख हरता है। तू किस पै० ४॥

भजन २६

दोहा–धन यौवन को पाय के, क्यों करता अभिमान।
चन्दरोज़ की चांदनी, कोई दम का महिमान॥
टेक–मत ऐंठ मीत अभिमान में, ये ज़रासी जिंदगानी है।
बड़े २ शूर बीर धन वाले, अरु हकीम तरहदार निराले॥
सितमगार मुँह कर गये काले, बसे जाय श्मशान में।
गई छूट हुक्मरानी है। ये ज़रासी ज़ि० ॥ १ ॥
मुंसिफ़ हो के कर सरदारी, नहीं तो पीछे होगी ख्वारी।
चली जाय सब खुदमुख़्तारी, है तू जिस के गुमान में॥
ये जिस्म तेरा फ़ानी है। ये ज़रासी ज़ि० ॥ २ ॥
दर्द दूसरे का न विचारे, बिन अपराध ग़रीबन मारे।

दुखी दीन को नित्य पछारे, सूझत नहिं अज्ञान में ॥
तुझे यम की मार खानी है। ये ज़रासी ज़ि० ॥ ३ ॥
लाखों गले पर छुरी चलावे, खूंख्वारी से बाज़ न आवे।
ज़ुल्म करे कुछ खौफ़ न आवे, सोचत नहीं जहान में ॥
उस रब की राजधानी है। ये ज़रासी ज़ि० ॥ ४ ॥
ज़ुल्म किसी पर मतकर भाई, यह दुनियां ईश्वर ने बनाई।
अबहुं छोड़ कपट कुटिलाई, लगजा उसके ध्यान में ॥
बल्देव जो गत पानी है ॥ ये ज़रासी ज़ि० ५ ॥

ग़ज़ल ३०

ये दुनिया चन्द रोज़ा है प्रभू का ध्यान धर लीजे।
गुज़रती आयु जाती है, सभी विधि से सुधर लीजे ॥ १ ॥
न जाने कौन से क्षण में, बजेगी आखिरी नौबत।
नक़ारा कूंच का बजता है, इस पर ग़ौर कर लीजे ॥ २ ॥
पड़े सोते हो तुम अबतक, गये साथी निकल कोसो।
कठिन रस्ता है मंज़िल दूर, उठिये कर सफ़र लीजे ॥ ३ ॥
खुशी के साज और सामां, फिरे हैं जिनपे तू शादां।
हमारा मान कर कहना, हटा इनसे नज़र लीजे ॥ ४ ॥
फँसाया हम को पापों में, बुरे मन के विचारों ने।
अगर कुछ चाहते अपनी, भलाई तो सँभर लीजे ॥ ५ ॥
न अशरत दाम आवेगी, मगर हसरत सतावेगी।
है बेहतर धर्म धारण कर, सुपथ मेंही गुज़र लीजे ॥ ६ ॥

प्रभू के प्रेम साधन से, मगन होने का कर उद्यम।
जमा के मन को संध्या में, परम सुख की लहर लीजे॥ ७॥

ग़ज़ल ३१

भूला है किस पै अय मनुष्य फिरता है किस पै यूं मगन।
क्या यह ख्याल कर लिया, कि है अमर यह तेरा तन॥
इत्र लगा के जिस पै तू होता है दिल में सुर्खरू।
राखिये ज़िहनेनशीन यह तू नाश ये होगा एक दिन॥
गांव लिबासो मालो जर, जिससे है तेरा कर्रोफर।
सब यह रहेगा यांही पर, स्वर्ग को होगा जब गमन॥
रखते है तुझसे अब जो प्यार, माता पिता और स्त्री यार।
देखेंगे सब यह एक बार, जलते हुये तेरा बदन॥
प्यारी तेरी तब आनकर, मारेगी हाथ तानकर।
छाती पै तेरी अय बशर, होगा न और कुछ यतन॥
दोस्त कहेंगे बरमला, जल्दी से ले चलो उठा।
दिन है बहुत सा चढ़गया, होती है देर श्रेष्ठ जन॥
इस्से न ऐसा काम कर, पहुँचे किसी को जो ज़रर।
मौत का दिल में रख तू डर, अन्त में हो न तामहन॥
प्रीति परस्पर अब तू कर, सब से तू मिल झुका के सर।
निन्दा भी कोई करे अगर, स्तुति तू अपनी उसको गिन॥
धर्म का तू प्रचार कर जान भी जाय तो न डर।
होगा तू इस तरह अमर, गरचे करेगा यह यतन॥

मौत है सर पर हर घड़ी, मालूम नहीं कब आपड़ी।
तन है यह बालू की मढ़ी, जाने यह कब लगे गिरन॥
थे जो महराज नामवर, जग में था जिनका खूब डर।
खाते हैं ठोकर उन के सर, काल ने जब किया हनन॥
लंकपती न अब यहां, कंस का अब कहां निशां।
शिक्षा लो इनसे मेहरबां, दास की यह लगी लगन॥

भजन ३२

है थोड़े दिन जग रहना, मत कडुवे बोले बोल।
वैमनस्य घर २ है लड़ाई, दुश्मन है भाई का भाई।
जग में इसने अशान्ति फैलाई, बुद्धि तुला पर तोल॥ है०॥
मौन व्रत उनको बतलाया, जिन पै मीठा वचन न आया।
क्यों नहिं प्रभु का भक्त कहाया, मनकी घुगडी खोल॥ है०॥
आवागमन की कट जाय फांसी, कटें फन्द तेरे लखचौरासी।
जपले निराकार अविनासी, ये है रत्न अनमोल॥ है०॥
किसी जीव का मन न दुखाओ, धर्म अहिंसा जग फैलाओ।
पाठक कहे यों प्रभु को पाओ, वह है अगम अतोल॥ है०॥

भजन ३३

भरोसा नहिं एक स्वास कारे, क्यों फूला फिरे गंवार।
बना शरीर ये हाड़ मांस का, है मल मूत्र का ग्रार।
समझ देख तू दिल में प्यारे, क्या है इस में सार॥ भ०१॥

चौरासी लख योनि भोगकर, आये मुक्ति के द्वार।
फिरभी फँसगये विषय भोग में, किया न ईश विचार॥ भ०२॥
याद करहु जब मित्र गर्भ में, संकट परे अपार।
उस प्रभु को भूला अभिमानी, जिसने किया था पार॥ भ०३॥
राम और रावण कुम्भकर्ण गये, अरु गये अन्तकुमार।
ऐसेहि तू भी जायगा एक दिन, तेरा किन में शुमार॥ भ०४॥
सुत धन दारा संग जायँगे, समझ सोचले यार।
जा दिन डंका बजे काल का, छुटैगा सब परिवार॥ भ०५॥
नेकी कमाले ईश को भजले, समय न बारम्बार।
ऋषीराज की यही है शिक्षा, कहत पुकार पुकार॥ भ०६॥

भजन ३४

यह है असार संसार वृथा इस में लपटावेगा।
कर जगत पिता का ध्यान तभी तू आनन्द पावेगा॥

यह मनुष्य का तन पाया, जप योग में चित न लगाया।
विषयों में व्यर्थ गमाया, अन्त में दुख ही पावेगा॥ कर०॥
हुवे बड़े २ बलधारी, विद्वान और शूर खिलारी।
गये काल गाल बारी २, एक दिन तुझे भी खावेगा॥ कर०॥
धन यौवन सुत अरु दारा, कर जाँयगे तुझसे किनारा।
कोई संग न जाने हारा, नेको बद साथहि जावेगा॥ कर०॥
जवानी को यूँही बिताया, जब जरा ने आन दबाया।
सीने में कफ़ रुन्ध आया, खाक फिर तू क्या बनावेगा॥ कर०॥

तू है सृषिराज अनारी, दी प्रभु की सुगति बिसारी।
पाता है तभी दुखभारी, नहीं हरगिज़ सुख पावेगा ॥ कर० ॥

भजन ३५

ज़रा आंखें तो खोलो यार,
क्यों बेहोश पड़े मतवाले। टेक,

तुम्हें कैसी अविद्या छाई, सुध बुध सारी बिसराई।
जड़वस्तु से प्रीति लगाई, कभी हा! जपो नहीं ओंकार।
पीते विष रस के हो प्याले ॥ ज़रा आंखें० १ ॥
यह धन दौलत और काया, है बादल की सी छाया।
हा! तुम्हें चेत नहिं आया, उर में मद का अंकुर धार।
नित रँग भरते रहो निराले ॥ ज़रा आंखें० २ ॥
जब वृद्ध अवस्था आवे, कफ़ खांसी आन दबावे।
नहीं पाव घड़ी सुखपावे, दुखों की पड़ेगी भारी मार।
जिस दिन आके काल दबाले ॥ ज़रा आंखें० ३ ॥
क्यों ऐसा समय गँवाओ, ईश्वर से ध्यान लगाओ।
ध्रुव धाम सहज ही पाओ, रहे मन तेजसिंह निरधार।
सुन्दर पद्य बनाने वाले ॥ ज़रा आंखें० ४ ॥

भजन ३६

सुख भजन करन को दीना, नर छोड़ झूठ तोफान को। टेक,
सत्य कहे नहिं सत्य सुनाता, झूंठी साक्षी में क्या पाता।

नित अभक्ष्य मांसादिक खाता, दधि तज मदिरा पान को।
धिक्कार जगत मे जीना ॥ मुख भजन० ॥ १ ॥
वेदो का न करे उच्चारण, लगा पुरानो में सर मारन।
होगा यो भवनिधि उद्धारन, भर उर मे अभिमान को।
बनना चाहे परवीना ॥ मुख भजन० ॥ २ ॥
आंखे जती सती लखने को, सन्तों के दर्शन करने को।
आप लगे रंडी तकने को, खो बैठे ईमान को।
ऐसा क्यो अधरम कीना ॥ मुख भजन० ॥ ३ ॥
चरन दिये सत् पै चलने को, दौलत दीनो के पालन का।
पीटन लागे कंगालन को, हाथ दिये थे दान को।
मत खेल जुआ मतिहीना। मुख भजन० ॥ ४ ॥
कान दिये ब्रह्मज्ञान सुना कर, ठुमरी ठप्पे सुनता आकर।
चौसा कहे चेत म आकर, धर ईश्वर के ध्यान को।
सत् धर्म चाहिये चीना ॥ मुख भजन० ॥ ५ ॥

भजन ३७

धनानि भूमौ पशवश्च गोष्टे,
नारी गृहे द्वार सखा श्मशाने।
देहश्चितायां परलोक मार्गे,
धर्म्मानुगो गच्छति जीव एकः॥

(राजगीत)

धन धरा के बीच साराही गड़ा रह जायगा।
पशु भी बँधे रह जायँगे जब कूच का दिन आयगा ॥
नारि घर के द्वार तक ही साथ देगी लोक में।
मित्र दल मरघट से आगे साथ नहिं दिखलायगा ॥
देहभी तेरी चिता के बीच जल भुन जायगी।
यह दृश्य आगे का तुझे क्या चेत में नहिं लायगा ॥
एक बस ध्रुव धर्म्म ही सच्चा सखा है अन्त का।
जोड़ इस में प्रेम अपना नित नये सुख पायगा ॥
ध्यान मे ऐसा कहा जो वासुदेव न लायगा।
तो जहां के बीच भारी ठोकरें तू खायगा ॥

भजन ३८

टेक—है धर्म चीज़ वह प्यारो, जिससे कहलावे इन्सान।

आहार निन्द्रा भय मैथुनञ्च,
समानमेतत् पशुभिर्नराणाम्।
धर्म्मोहितेषामधिको विशेषो,
धर्म्मेण हीना पशुभिः समानाः॥

खाना पीना सोना और मैथुन करना।
और बलवालो से निर्बल होकर डरना ॥

है नीति शास्त्र का वचन ध्यान उर धरना ।
यह सब जीवों में कर्म बराबर बरना ॥
एक धर्म अधिक बतलाता । जिससे यह नर कहलाया ॥
जिसने नहिं धर्म कमाया । निष्फलही जन्म गँवाया ॥
क्या शिक्षा करी विचित्र, खींच कर चित्र, धर्म बिन मित्र,
देख पशु पक्षी मनुज समान है ॥ है धर्म चीज़ वह० ॥ १ ॥

धर्मार्थ काम मोक्षाणां यस्यैकोपि न विद्यते ।
अजागलस्तनस्येव तस्य जन्म निरर्थकम् ॥

जीवन के फल धर्मादि चार कहलावें ।
जो जन इन में से नहीं एक भी पावें ॥
जैसे बकरी के गल में स्तन लजावें ।
बस ऐसे खोवे जन्म शास्त्र बतलावें ॥
जिन किया धर्म नहीं धारण । है यही दुखों का कारण ।
करें वेद शास्त्र उच्चारण । हों तीनों ताप निवारण ॥
है यही परम उद्देश, मिटें त्रय क्लेश, करें उपदेश, सांख्य
में कपिल देव भगवान ॥ है धर्म चीज़ वह० ॥ २ ॥

येषां न विद्या न तपो न दानं ।
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः ॥
ते मृत्युलोके भुवि भारभूता ।
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरान्ति ॥

नहिं विद्या ही कुछ पढ़ी नहीं तप कीना।
नहिं किया दान नहिं ज्ञानी हुआ मति हीना॥
नहिं शीलवान नहिं गुणी धर्म नहिं चीना।
मृग के समान गरु हुआ जगत में जीना॥
पा ऐसा जीवन प्यारा। फिर भी नहिं धर्म विचारा॥
सब जीती बाजी हारा। भारी परलोक विगारा॥
तू आया था किस लिये, कर्म क्या किये, सोच तो हिये,
रोवेगा आखिर में नादान॥ है धर्म चीज वह० ॥ ३ ॥

झूलना।

इस धर्म से ही पुरुषोत्तम राम कहाये।
इसमें ही योगीराज कृष्ण पद पाये॥
लासानी दानी हरिश्चन्द्र कहलाय।
इससे ही विक्रमी संवत् का यह निशान है॥ १॥
मोरध्वज ने आरे की धार चलवाई।
शंकर वो भोज भर्तरी ने पदवी पाई॥
हुये लेखराम विख्यात इसी से भाई।
हो गया हकीकत इस पर ही कुर्बान है॥ २॥
जब यही लोप हुआ पाया, भारत का नाम डुबाया।
तब दयानन्द ऋषि आया, झट आर्यसमाज बनाया॥
हो बासुदेव हुशियार, ऋषि ऋण उतार, धर्मका द्वार।
वेद पढ़ बनो ऋषी सन्तान॥ है धर्म चीज़ वह० ॥ ४ ॥

दादरा ३६

वे नर पशु समान, जिन में धरम ना।
करते हैं आहार वह सब ही धारण किये जिन प्रान।
पशु सोते नर भी सब सोते देखो धर के ध्यान।
पशु डरते नर भी सब डरते लख औरन बलवान।
नर पशु सब में मैथुन करना है नित एक समान।
परदेशी कहे धर्म ही से नर कहलाया जग आन॥

भजन ४०

वेदःस्मृतिः सदाचारः स्वस्यच प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधंप्राहुः साक्षाद्धर्म्मस्य लक्षणम्॥

साक्षात् धर्म के चार ही, लक्षण मनुजी बतलाते। टेक,
ऋग् यजु साम अथर्व में भाई, जो कुछ धर्म दिया बतलाई।
उसी को मन में धारण कर के, चलो धर्म अनुसार ही।
यह पहला लक्षण गाते॥ लक्षण मनु० १॥
वेदों के अनुकूल जो होई, धर्म शास्त्र बतलावे सोई।
उसको धर्म कहे सब कोई, धारो सत्य विचार ही।
लक्षण दूजा ठहराते॥ लक्षण मनु०॥
वेद स्मृति कहे नित जोई, कर्म करे या जग में सोई।
सदाचार युत नर है वोई, कहना इतना सार ही।
तीजा लक्षण फरमाते॥ लक्षण मनु० ३॥

अपनी आत्मा को प्रिय जो है, तात्पर्य गुणकारक सो है।
धर्म यही ऋषियों का वह है, यथाशरण निरधार ही।
चौथा लक्षण यों पाते ॥ लक्षण मनु० ॥

भजन ४१

नहीं हटते वेद प्रचार से, जो धर्म वीर होते हैं।
चाहे दुनिया फिर जाय सारी, चाहे पड़े मुसीबत भारी।
नहीं धर्म से हटें पिछारी, तोप तीर तलवार से।
डर कर कायर रोते हैं ॥ जो० १ ॥
धर्म रूप बीड़ा जो उठावें, तन मन धन धर्मार्थ लगावें।
हर्गिज़ नहिं दबने में आवें। लोक लाज परिवार से।
नित धर्म बीज बोते हैं ॥ जो० २ ॥
दयानन्द गए देश जगा के, लेखराम गए प्रान गँवा के।
गुरुगोविन्द गए तेग चला के, बेडर हो संसार से।
वह सुख की नींद सोते हैं ॥ जो० ३ ॥
दुष्कर्मों से चित्त हटाया, वेदों का मारग मन भाया।
हीरासिंह ने गीत बनाया, नेह लगा निराकार से।
सब दिली दाग धोते हैं ॥ जो० ४ ॥

भजन ४२

हमतो बर वेद प्रचार में, निज को अर्पण करदेंगे। टेक,
ब्रह्मचर्य धारन करवाकर, वेद और वेदांग पढ़ाकर।

दर्शन के दर्शन करवाकर, माया जाल प्रपंच के।
मुख का मर्दन कर देंगे ॥ हम० १ ॥

गृहस्थाश्रम में फिर लाकर, ऋतुगामी सब ही को बनाकर।
षोड़स संस्कार करवाकर, सन्तानों की आयु को।
हम ऋषि जीवन करदेंगे ॥ हम० २ ॥

पंचयज्ञ नित ही करवाकर, पार्थिव पूजन को छुड़वाकर।
सच्चा ईश्वर भक्त बनाकर, गृहस्थाश्रम के ढंग को।
हम फिर पूरण कर देंगे ॥ हम० ३ ॥

वाणप्रस्थ की प्रथा चलाकर, आत्मा का स्वरूप लखवाकर।
ब्रह्मज्ञान पूरण करवाकर, दृढ़ आस्तिक्य विचार में।
स्थिर तन मन करदेंगे ॥ हम० ४ ॥

अन्त में संन्यासी बनवाकर, मान और अपमान छुड़ाकर।
पक्षपात से चित्त हटाकर, वेदों का सुप्रचार कर।
सुख का साधन करदेंगे ॥ हम० ५ ॥

गुण अरु कर्म स्वभाव मिलाकर, वर्ण व्यवस्था ठीक बनाकर।
नियोग-विधि को भी समझाकर, विधवन के दुख भार को।
सर्वथा दलन करदेंगे ॥ हम० ६ ॥

दयानन्द की आज्ञा शिर धर, पाखंडिन की पोल खोलकर।
राधाशरण ऐसे व्रत को चर, पर स्वारथ मन धार के ॥
चुकता ऋषि ऋण करदेंगे। हम० ॥ ७ ॥

भजन ४३

दोहा–भारत हित नहीं होयगा, बिना वेद प्रचार ।
सत विद्या सीखो तभी, होगा देश सुधार ।

टेक–बिन विद्या नहीं सुधरेगी, मित्रो ये भारत सन्तान ।
चाहि लेक्चर शबोरोज़ सुनाओ, मन्तक रियाज़ी घोट पिलाओ ।
चाहि नर्क का डर दिखलाओ, करत न कोई कछु मान॥ बिन०॥१॥
चाहि रोमन इंगलिश पढ़वाओ, बूट कोट पटलून पिन्हाओ ।
नक़ली जण्टिलमैन बनाओ, वृथा करो धनहान ॥ बिन० ॥ २ ॥
चाहि लन्दन जापान को जाओ, अमरीका जर्मनी भेजाओ ।
चाहि लेडी को गले लगाओ, करिके ब्राण्डी पान ॥ बिन० ॥ ३ ॥
चाहि सोडा लिमनेट पिलाओ, उबालकर अंडे खिलवाओ ।
चाहि नित गिरजे में जाओ, बनि पूरे क्रस्तान ॥ बिन० ॥ ४ ॥
चाहि जितने कांग्रेस कराओ, रिजुलशन चाहि पास कराओ ।
टेबिल तोड़ो शोर मचाओ, समुझत नहिं अज्ञान ॥ बिन० ॥ ५ ॥
तभी सुधरेगा देश तुम्हारा, सत् विद्या का लेउ सहारा ।
वेदों का भी बजे नक़ारा, भारत के दर्म्यान ॥ बिन० ॥ ६ ॥
सन्तति को गुरुकुल भिजवाओ, ब्रह्मचर्य से वेद पढ़ाओ ।
धर्म वीर बलदेव बनाओ, जो चाहो कल्यान ॥ बिन० ॥ ७ ॥

भजन ४४

दोहा—केवल वेद ही जगत में, कुदरत का कानून ।
उसे त्यागि मत कीजिये, सत्य धर्म का खून ॥

तुम को सोते हो चुकीं, बरसें पांच हज़ार।
अब तो उठकर कीजिये, बुधवर वेद प्रचार॥

टेक-वर वैदिक धर्म प्रचार में, तन मन धन सभी लगादो।
विन वैदिक धर्म प्रचार किये सुनो भाई।
करो कोटि यतन नहीं मिले शान्ति सुख दाई॥
बस इसी में समझो अपनी कुशल भलाई।
भारत सुधार का है यही एक उपाई॥

शैर-पहिले भारत में इन्हीं वेदों का खूब प्रचार था।
लोक और परलोक की खूबी का दारोमदार था॥
उस जमाने में ये भारत विद्या का भण्डार था।
मातहत सब मुल्क थे भूगोल ताबेदार था॥
जब से तुम वेद बिसारे। हुये ग़र्क नींद में प्यारे।
तब से सुख मिटगये सारे। पाखण्डने पैर पसारे॥

अबहूँ आलस को त्यागि, नींद से जागि, भूल से भागि,
लगो सदाचार में, भारत को स्वर्ग बनादो॥ तन मन०॥ १॥

अब नहीं हुक्म चंगेज़ी नादिरशाही।
औरंगज़ेबी महमूदी क़हर इलाही॥
अब है भारत में बृटिशराज्य सुखदाई।
पियें एक घाट जल शेर अजा समुदाई॥

शैर-देखिये करवट बदल क्या रोशनी की बहार है।
अपने २ धर्म में हर शख़्स खुद मुख़्तार है॥

हर मज़ाहिब के कुतुबक़ानून पर भी विचार है।
ख़ुद ग़रज़ बहकाने वालों पर ख़ुदा की मार है॥
तुम ऐसा अवसर पाई। क्यों नाहक़ रहे गँवाई।
ज़रा होश में आओ भाई। न तो रहि जैहो पछिताई॥
है वेद ईश्वरी ज्ञान, लेहु पहचान, होय सन्मान, तभी
संसार में, जा बजा ये सब को सुनादो। तन मन० ॥ २ ॥
वेदों की सदाकत को जो नित अजमाते।
हैं योरुप के विद्वान् भी अब चकराते॥
पहले ये वह बच्चों के गीत बतलाते।
बहि आज वेद को इलहामी ठहराते॥
शैर–मग़रबी उलमाओं का यही तजरबा माकूल है।
कुदरती कानून पस एक वेद ही मकबूल है॥
मानते दीगर कुतुब इलहाम उन की भूल है।
तास्सुब को दिल में रख के बात करना फ़ज़ूल है॥
अय भारत की सन्तानों। क्यों वृथा ख़ाक अब छानों।
निज धर्म पुरातन जानो। असलियत वेग पहँचानो॥
अब तजो गपोड़े आन, कहा लो मान, बनो विद्वान, पड़े
क्यों ग़ार में, वेदों का डंका बजादो। तन मन० ॥ ३ ॥
जब से तुमने सुभ सत्य धर्म को छोड़ा।
लिया मान आपने कल्पित-पन्थ-गपोड़ा॥
भड़का द्वेषानल आपस में खर फोड़ा।
तब आय विदेशिन मार २ मुँह तोड़ा॥

शैर–सल्तनत भारत हुई सरोमाल सारा लुटादिया।
लौंडी और गुलाम बने लाखों का सिर कटवा दिया॥
किले और मन्दिर तुड़ाये दरबदर रुसवा किया।
कुफ़ की पाई सज़ा हिन्दू भी नाम धरा लिया॥
दयानन्द ऋषी जब आया। सोते से सब को जगाया।
भ्रम बल्देव का सभी मिटाया। भारत की पलट दी काया॥
उस का गुण न भुलाओ, राह पर आओ, समयको लगाओ पर उपकार मे, खुदगर्जी को दिल से हटादो। तन मन०॥ ४॥

भजन ४५

करके विद्या कूंच, यहां से पहुँची इंगलिस्तान में। टेक,
भारत सुतन अनादर कीना, विद्या तुरत देश तज दीना।
चलत समय भाख्यो अति हीना, भरके नीर अँखियान में॥ क०॥
कहां गये ब्रह्मा सनकादिक, गौतम पातंजलि उद्दालक।
रहा न कोई भी मम ग्राहक, आर्य्यों की सन्तान में॥ करके०२॥
शिव दधीचि हरिचन्द युधिष्ठर, रामकृष्ण अर्जुनक्षत्रिय वर।
कपिल कणाद व्यास से ऋषिवर, राखें थे प्रियप्रानमें॥ क०३॥
महाभारत पश्चात हमारा, त्याग दिया करना सत्कारा।
मूरखता का बजा नकारा, अबतो हिन्दोस्तान में॥ करके०४॥
मूरखता ने पांव जमाया, धर्म कर्म सब मार गिराया।
नित दुख बढ़ता गया सवाया, भारत के दरम्यान में॥ कर०५॥
प्रथम गमन विद्या नै कीना, पीछे सुख सम्पति चलदीना।

घेर दश दुर्गति ने लीना, आवे नहीं बयान में ॥ करके०६॥
हे प्रभु कुमति निवारन कीजे, विद्या फिर भारत में दीजे ।
सुत बल्देव शरण में लीजे, फस रहा दुख दल्लान में ॥ क०७॥

ग़ज़ल ४६

विद्या पढ़ाओ जहां तक हो तुम से ।
बिगड़ी सुधारो तुम्हारी सन्तान है ॥
भारत पै छाई अविद्या की रात्री ।
तिसपर घटा घेर लाया अज्ञान है ॥
विद्या से शून्य है ये भूमि अभागिन ।
कर्मों से हीन है जाती अभिमान है ॥
विदेशी भी उपहास करते हैं सारे ।
इंगलैंड के वासी निवासी जापान है ॥
काले की तुमको मिली है उपाधी ।
आर्यवर्त्त से बना हिन्दोस्तान है ॥
वहशी जो थे आज वह हैं मुहज्जिब ।
विद्या ही केवल फ़खर इंग्लिस्तान है ॥
योरुप के विद्वान कला कौशलों से ।
बनाते हैं रेलादि नूतन सामान है ॥
आकाश पर्य्यटन करने के हेतु ।
रचा यथेच्छा बेलून जैसा यान है ॥
बिजली के तारों से लेते हैं कारज ।
निकालीं हैं कल जिसने क्या बुद्धिमान है ॥

इधर हिन्द का है निरक्षर आचार्य्य।
मुर्दे का लेता कफन तक का दान है॥
संशय निवारन अब हो इनसे किस्सा।
अनपढ़ पुरोहित पढ़ा यजमान है॥
पढ़ना कठिन किन्तु भिक्षा सुगम है।
नहीं लोक लज्जा नहीं इनमें आन है॥
क्षत्री भी है तो ये कायर हैं रन के।
न भुजदण्डबल है न शास्त्रों का ज्ञान है॥
पिता औ पितामह महावीर जिन के।
करता नहीं उन से चूहे का कान है॥
चौके पै उतरी है भारत की विद्या।
नाड़ी तो देखो कुछ बाक़ी जान है॥
धन्वन्तरी सा कहां हो चिकित्सक।
करे औषधी औ बतावे निदान है॥
कहां तत्व वेत्ता हो सांख्यी कपिल जी।
कहां बादरायन जो भारत का मान है॥
कहां है वह गौतम नैयायिक फिलास्फर।
कहते थे सब जिसको युक्ती निदानहै॥
कहां है पातंजलि महर्षि तुम्हारा।
योग और महाभाष्य जिस्का प्रधानहै॥
कहां जैमिनी जी मीमांसा के कर्त्ता।
धर्मों का तुम को सुनाते विधान है॥

कहां है कणाद जी का दर्शन वैशेषिक।
नहीं करता अब उन पै कोई भी ध्यान है॥
बाल्मीकि और कालिदास जी कहां हैं।
अलंकार जिनका महा रस की खान है॥
कहां विश्वकर्मा शिल्पकार चातुर।
जिनकी बनावट का पुष्पक विमान है॥
सुधर्मा सभा भी बनाइ थी जिस ने।
साखी जो पूछो तो भारत पुरान है॥
ऐसे तो थे पूर्व पुरुषा तुम्हारे!
तुमसा नहीं आज मूरख नादान है॥
अविद्वान का सारा जीवन है निष्फल।
ऐसे तो जीवन से मरना प्रधान है॥
विद्या से बनता है राजा का मन्त्री।
विद्या से बनता सभा में प्रधान है॥
विद्या बिना नर है वनचर के सदृश।
विद्या बिना पुरुष पशु के समान है॥
विद्या गुप्त धन है छिनता नहीं है।
न चोरी का डर है न अग्नि से हानि है॥
विद्या बिना वृद्ध बालक के तुल्य है।
बालक भी विद्वान् वृद्ध से सुजान है॥
चिरंजीवी है नाम विद्वज्जनों का।
इस के लिये कैसा कैसा प्रमान है॥

शंकर और दयानन्द की विद्वता का।
द्वीप और द्वीपान्तर में प्रसिद्ध मान है ॥
उन के सदृश थे और भी तो कितने।
बताये पता कोई नामोनिशान है ॥
विद्या से होती है बुद्धि की वृद्धि।
विद्या से अक्षर आनन्द ज्ञान है ॥
विद्या से होता है सन्तोष प्राप्त।
विद्या से गुनियों का गौरव महान है ॥
विद्या से धर्म, धर्म से अभय पद।
विद्या से मिलता परब्रह्म ज्ञान है ॥
संक्षिप्त कर के सुना तू अमीचन्द।
थोड़ा समय तेरा लम्बा व्याख्यान है ॥

भजन ४७

करो विद्या विस्तार, जो सुख सम्पति चाहो ॥ टेक ॥
विद्याही बुद्धि बढ़ावे, गौरव का रंग चढ़ावे।
ज्ञान की यह भण्डार ॥ जो सुख० १ ॥
विद्या है नर का भूषण, हरती है यह सब दूषण।
मन में करो विचार ॥ जो सुख० २ ॥
इनको नहिं चोर चुरावे, नहिं राजा बांट करावे।
करो चाहे यतन हजार ॥ जो सुख० ३ ॥
राजा स्वदेशही पूजित, विद्वान लोक विच भूषित।
लीजे यह मन धार ॥ जो सुख० ४ ॥

गुरुओं का भी यह गुरु है, नर इसके बिन अति गरु है।
इसी को लीजे धार ॥ जो सुख० ५ ॥
यह नित २ सुयश बढ़ावे, सिर पै न कलौंच मढ़ावे।
बना देवे सरदार ॥ जो सुख० ६ ॥
यह असली धर्म बतावे और ब्रह्मधाम पहुंचावे।
मुक्ति का खोले द्वार ॥ जो सुख० ७ ॥
विद्या की है यह माया, दी पलट देश की काया।
चला दिये रेलरु तार जो सुख० ८ ॥
बहु कल, मशीन हुई जारी, जो लेगई दौलत सारी।
खींच कर सागर पार ॥ जो सुख० ९ ॥
यह विविध भांति के कौशल, है सब विद्याही के फल।
जाने सब संसार ॥ जो सुख० १० ॥
कहे सालिग पढ़ो पढ़ाओ, आगे को बढ़ो बढ़ाओ।
देश का हो उद्धार ॥ जो सुख० ११ ॥

गजल ४८

ग़ाफिल समय क्यों खो रहा, उठ देख क्या है हो रहा।
किस नींद में तू सोरहा, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
ले सुबह से ता शाम है, विषया में तेरा काम है।
और होरहा बदनाम है, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
लालच से तुझ को प्यार है, और झूठ का व्यवहार है।
दिन रात येही कार है, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥

धन का तुझे अभिमान है, लिया धर्म इस को मान है।
उसमें ही तू ग़लतान है, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
कहीं मित्र गूढ़ बनाय तू, कहीं बैर कोही कमाय तू।
लाखो फरेब चलाय तू, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
तेरा जो महल और माढ़ी है, सामान लाख हज़ारी है।
आख़िर को ख़ाक ये सारी है, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
यह उम्र बेबुनियाद है, नहीं मौत तुझ को याद है।
ग़फ़लत में तू अब शाद है, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
सज्जन को दुश्मन जानता, सत् धर्म को नहीं मानता।
ऐसी हुई अज्ञानता, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
जान और की बर्बाद है, तेरा मज़ा और स्वाद है।
सुनता नहीं फ़र्याद है, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
खावे शराब कबाब तू, रक्खे उम्मीद सवाब तू।
आख़िर को देगा हिसाब तू, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
काफ़िर बना आनन्द से, प्रीती करी पाखण्ड से।
हरगिज़ न खौफ है दण्ड से, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
मूरख तुझे भ्रमावे है, सब गप्प शप्प सुनावें है।
खुद को ब्रह्म बतावे है, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
भक्ती की जो सिखलाते है, वह और भी जतलाते हैं।
ईश्वर को जड़ बतलाते है, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
सत्संग से तुझे आर है, कुछ जानता नहिं सार है।
भूला फिरे तू गँवार है, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥

निज धर्म सारा छोड़ कर, पत्थर से नाता जोड़ कर।
क्या होगा माथा फोड़ कर, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
यह तन न बारम्बार है, करता न क्यों उद्धार है।
तुझ को महा धिक्कार है, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
वेद का सुप्रकाश है, करता महा तम नाश है।
ऐसा हमें विश्वास है, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
ले वेद की अब भी शरन, सुधरे तेरा जीवन मरन।
दे इस में तन मन और धन, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥

भजन ४६

धन धन भारत यह भाग तुम्हारे,
आहा! यहां ये गुरुकुल खुला।

जब से छुटी थी गुरुकुल प्रणाली, भारत हुआ वेद विद्या से खाली। देखो ज़रा दृष्टि उठा, बन गये आश्रम ये बिगड़े थे सारे॥ धन धन भारत यह भाग० ॥ १ ॥

गुरुकुल को भूले थे भारत निवासी, आकर बता गये हमको संन्यासी। जिस ने दिया हमको जगा, ऋषी दयानन्द आके पधारे॥ धन धन भारत यह भाग० ॥२॥

भजन ५०

उस जगदीश कोरे, मन स कभी न भूलौ भाई।
आदि जगत में सकल विश्व की, रचना कैसी कीनी।

बालक और वृद्ध नहीं कीन्हा, युवा अवस्था दीनी ॥ उस०
पुनि मैथुनी सृष्टि होने का, नियम किया निर्धार।
गर्भवास में रक्षा करके, किया अधिक उपकार ॥ उस०
अग्नि और आदित्य अंगिरा, वायु ऋषी के द्वार।
ऋग् यजु साम अथर्व संहिता, प्रकट करी हैं चार ॥ उस०
एक पिता की जितनी सन्तति, सबका सम अधिकार।
इसी नियम को धारण करके, वेद का करो विचार ॥ उस०
ईश्वर रचे पदारथ जैसे, सब के लिये समान।
ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र को, तैसे ही वेदविधान ॥ उस०
सूर्य चन्द्रमा अग्नि वायु जल, जिन से निशि दिन काम।
परम पिता ने कृपा दृष्टि से, दिये सभी वेदाम ॥ उस०
उपकारी जीवो को रच के, सुख हमको अति दीन्हा।
तिनको मार २ के खाते, मरघट पेटहि कीन्हा ॥ उस०
राधाशरण मनुष्य जन्म में, प्रभु स चित्त लगाई।
आवागमन के दुख से छूटो, नहिं पीछे पछताई ॥ उस०

भजन ५१

वेदों की रक्षा का बन्धन होवे यज्ञोपवीत।
ऋषी २, मुनियों का मुख्य विचार ॥ वे०॥

शेर

सदन शुचि गोमय से जहँ तहँ बांधे बन्दनवार थे।
यज्ञशाला में लगाते वृक्ष कदली चार थ ॥

घट भरे जल से धरे थे अरु चन्दोआ तान के।
चित्रकारी अनेक कर मण्डप सजे घर बार थे॥
हवनकुण्ड खुदाय सुन्दर समिध स्रुवा जहँ तहँ धरे।
प्रोक्षणी अरणी प्रण ता पूर्णपात्र तयार थे॥
अगर चन्दन इलायची कस्तूरी केसर आदि सब।
आज्य थाली अनेक चांदी के मगलकार थे॥
चार आसन ऋत्विजो के यथोचित स्थान पर।
वेद मन्त्रो की झड़ी चहुं ओर प्रिय गुँजार थे॥

चलत

भेदक शक्ति अग्नि जान, मिटे रोग दुख की खान।
द्रव्य देते थे जिस आन स्वाहा २ गुञ्जत कान॥
अबतो २ पलटा है देश हमार॥ वेदो० ॥१॥

शैर

वेद मन्त्रो की हुई रक्षा बनाया नियम ये।
पूर्णिमा श्रावण का राखा रक्षाबन्धन नाम ये॥
वेद मत पर कितने हमले हो चुके और होरहे।
वीर भी कुर्बान कितने हो चुके और हो रहे॥

चलन

मित्रो ! तुम हो ऋषि सन्तान, करना यज्ञो के सामान।
फैले वेदो का विज्ञान, चाहे कितने हो कुर्बान।
उठो, उठो, कछु पाठक ये निरधार॥ वेदो ॥२॥

भजन ५२

ऐसी होरी का छोड़ो रचाना ॥ टेक ॥
लकड़ी व कण्डे खाली ढेर लगाओ, किसी का चर्खा,
किसी का पीढ़ा, किसी का चौखट किवाड़ तख्ता–हा !
मुँह काला कर गधे चढ़ाना, जूते सुराना,
हार बनाना, गले डालकर खुशी मनाना—हा !
मद पीके बकना, बेशर्म होना, धूल उड़ाना,
जूता चलाना, होरी का भड़वा बतलाना—हा !
अच्छे बुरे की पहचान छोड़ो, रंडी नचाना,
स्वांग कराना, बुरे काम में धन को लगाना—हा !
पाठक कहे देखो होरी हमारी, यज्ञ रचावें,
सब को बुलावें, मनुष्य मात्र को सुख पहुंचावें—हा !

गजल ५३

दुनिया में चारों वेदों का प्रचार करेंगे।
जो कुछ ऋषी की आज्ञा है उसे सर पै धरेंगे ॥
निश्चय हमारी कोशिशों का फल यही होगा।
काबुल अरब ईरान में जा झण्डे गड़ेंगे ॥
अमरीका आदि यूरुप जो देश हैं बचे।
बस वेद धर्म की ही आ शरण पड़ेंगे ॥
अफ़रीक़ा श्याम ब्रह्मा आदि जंगली जो देश।
कल्याणी वाणी वेद की सब दिल से पढ़ेंगे ॥

होवेंगे अग्निहोत्र भी घर २ में सुबह शाम।
पितृ अतिथ बलिवैश्व देव यज्ञ करेंगे॥
होगा आनन्द शांति घर घर में फिर ज़रूर।
वैदिक धर्म पै शीश जब आ आ के चढ़ेंगे॥
ईश्वर ने वेद सब के लिये हैं दिये हुए।
सारे ही मान इनका फिर से करने लगेंगे॥
प्रचार फण्ड को प्रथम हम कर के खूब पुष्ट।
आगे ही आगे धर्म के मैदान में अड़ेंगे॥

क़व्वाली ५४

मदफन है हसरतों का हिन्दोस्तां हमारा।
गुलचीं ने हाय लूटा ये गुलिस्तां हमारा॥
इक दिन रहे तरक़्क़ी में हम भी रहनुमा थे।
अब लोग पूँछते हैं नामो निशां हमारा॥
यूनान मिश्र रूमा इंगलैंड गाल जर्मन।
शागिर्द इक ज़माने में था जहां हमारा॥
दुनिया में हो रहा था भारत वर्ष का चर्चा।
सब की जबान पर था लुत्फेबयां हमारा॥
इल्मो अदबमें कामिल और हिंदसे के मूजिद।
था फ़िलसफ़ामें यकता हर नुक़्तादां हमारा॥
गौतम व्यास भीष्म थे नामवर यहीं के।
अर्जुन से तीर अफ़गन था इक जहां हमारा॥
लीलावती अहिल्या अरुन्धती मदालसा सीता।

इन देवियों से घर था रश्के जनां हमारा ॥
चर्खेकुहनने हम पर लेकिन वह ज़ुल्म ढाया ।
मूनिस रहा न कोई ऐ मेहरबां हमारा ॥
रौनक़ चमन की सारी फ़स्लेख़िज़ां ने लूटी ।
वीरान हो गया है सब गुलस्तिां हमारा ॥
इफ़लासो क़हितो ताऊन ने हाय मार डाला ।
फाक़ों के मारे तन है अब नीम जां हमारा ॥
हां ! अहिलहिंद उट्ठो हालत ज़रा संभालो ।
नक़शा हुआ दिगरगूं है बेगुमा हमारा ॥
फिर भी अगर है ख्वाहिश आवे वही ज़माना।
गुरुकुल में सन्तान भेजो होगा नफ़ा तुम्हारा ॥
सहराय ग़म में बरसों से हम भटक रहे हैं ।
मंज़िल पै पहुंचे या रब अब कारवां हमारा ॥
अपनी ये आर्ज़ू है मेहनत लगे ठिकाने ।
आफ़त से रक्खे अमन वह राजदां हमारा ॥

दादरा ५५

प्यारो ! काहे धर्म को छोड़ के तुमने दुख है ग्रहण किया ।
शेर–सत्य को छोड़ असत्य को पकड़ा कैसा अनर्थ किया ।
अब भी जागो प्यारे मित्रो बहुत है दुखित हिया ॥
जो बोया था तुम ने भाई वह ही काट लिया ॥ प्यारो० ॥
शेर–धर्म कर्म सब छोड़ के तुम ने नाश में चित्त दिया ।
सम्भलो २ प्यारे भाइयो क्यों विष घोल पिया ॥

करो सन्ध्या पढ़ो नित गायत्री हो अति मगन जिया॥प्या०॥
शैर–शम दम धीरज दान दया को तुम ने जो त्याग दिया।
इसी सबब ने तुम को भाइयो इतना दुःखी किया॥
अबभी संभलो अबभी संभलो कहना धारि हिया॥ प्या०॥

गजल ५६

है जाना देश देशान्तर सनातन धर्म में भाई।
उसे क्यों बन्द कर तुमने मुसीबत देश पर लाई॥
जिसे पाताल कहते थे वह है अब देश अमरीका।
ऋषी सन्तान जाते थे वह अर्जुन कृष्ण सुखदाई॥
गये थे व्यासजी भी वां महाभारत से साबित है।
औ उद्दालक ऋषी जी से की अर्जुन ने शिनासाई॥
कहा तशरीफ ले जाना महाशय देश भारत को।
युधिष्ठिर ने रचा है यज्ञ उस को देखना जाई॥
थे मैक्सीको रियासत में जो सूरज बंश के राजा।
उन्हीं की एक लड़की थी ब्याह अर्जुन के संग आई॥
पुराने रहने वाले हैं जो मैक्सी को रियासत के।
उन्हें "रेड इंडियन" कहते मुवर्रिख धर्म ईसाई॥
उन्हीं लोगो के अंदर है मसायल वेद पौराणिक।
प्रचार उनका किया जाकर जो ऋषी संतान है गाई॥
तनासुख के वह कायल है हवन करते थे रोज़ाना।
निशां उसका ये है अब तक कि अग्नि नहिं बुझन पाई।
हैं मिस्ले पार्सी लोगों के रखते अग्नि को हरदम।

इन्हें आतिश परस्तों की है पदवी इसने दिलवाई ॥
हैं औतारों को यह मानें जो हैं कच्छ और मच्छादी ।
परस्तिश इन्द्र सूर्य्य कर दिये मन्दिर हैं बनवाई ॥
जो मैक्सीकों के मन्दिर हैं है उनमें ऐसी एक मूरत ।
कि जिसका जिस्म आदम का व सर हाथी का दिखलाई ॥
नहीं हाथी की पैदायश है अमरीका में ऐ प्यारो ।
विना हिन्दू धरम के ऐसी रचना किसने करवाई ॥
जो तसवीरें हैं मैक्सीको के मज़हब के पुजारिन की ।
खड़ा है सांप फन काढ़े सरों पै उन के भयदाई ॥
समय सूर्य ग्रहण के यह मचा के शोर हैं नाचें ।
निगलना भूत का सूर्य को बचना इससे बतलाई ॥
वह मूरति शिव गणेशादी कथा यह राहु से मिलती ।
करो अब ग़ौर तुम दिल में सनातन धर्म अनुयाई ॥
शुक्र स्वामी दयानन्द का करो सब देश हितकारी ।
कृपा राधाशरण स्वामी से ध्वनि यह देश में छाई ॥

भजन ५७

भारत देश की हाँ ! प्रभुजी विगड़ी दशा सुधारो ।
जब २ विपति पड़ी भारत पर कीन्ही तुम्हीं सहाय ॥
अब भी दया करो पतितन पर देश रहा बिलखाय ॥ भारत०
स्त्री-शिक्षा उठी देश से जो उन्नति की खान ।
गृह आश्रम जो स्वर्ग धाम था अब है नर्क समान ॥ भारत०
पर्दे में रहना तिरियों का रहे उचित हैं मान ।

स्याने पुजारी अरु व्यभिचारी ठगते उन्हें महान ॥ भारत०
सच्चा पर्दा जो मन का है उसकी नहिं तालीम ।
जिसके बल सीता रावण घर रक्खा धर्म अज़ीम ॥ भारत०
स्त्री पुरुषों की अर्धांगी है दरजा सम बतलाय ।
स्त्री अन्दर है पुरुष हैं बाहर यह कैसा अन्याय ॥ भारत०
बाल विवाह ने आन दबाया हुये सकल बलहीन ।
पुरुषारथ नहिं रहा किसी में पर के हुये अधीन ॥ भारत०
पुनर्विवाह से हठकरि रोकत विधवन को नादान ।
गर्भपात निश दिन करवावत जानत सकल जहान ॥ भारत०
नीच वर्ण से उच्च वर्ण में कोई नहीं जाने पाये ।
विश्वामित्र आदि फिर कैसे ब्रह्मऋषी कहलाये ॥ भारत०
देशान्तर में भ्रमण किये से धर्म भ्रष्ट रहे मान ।
अर्जुन व्याहे अमरीका में इस पर दिया न ध्यान ॥ भारत०
शकर औषधी देशान्तर की करते है सब पान ।
धर्म भ्रष्ट फिर क्यों बतलाकर करते देश की हानि ॥ भारत०
छुआ छूत ने आर्यावर्त को कर दिया तेरह तीन ।
प्रायश्चित्त के बने मुख़ालिफ़ जो है शास्त्र विहीन ॥ भारत०
सोशल कान्फरेंस आदिक है यत्न करें अधिकाय ।
राधाशरण कहे हे भगवन् ! कोई न सुनता हाय ॥ भारत०

ग़ज़ल ५८

है बेकस अब तो यह भारत, सता ले जिसका जी चाहे ।
नहीं कोई यारो हामी है, रुला ले जिसका जी चाहे ॥

दिया तज धर्म वैदिक को, न जाना नाम विद्या का।
किरानी या कुरानी अब, बनाले जिसका जी चाहे॥
दुहाई भद्र पुरुषों की, दुहाई राव राजों की।
मिटा ध्रुव धर्म जाता है, बचाले जिसका जी चाहे॥
मियां और मृत को पूजा, हना लाखों ही जीवों को।
निडर बन कान नीचों से फुकाले जिसका जी चाहे॥
वरी धन देख कर कन्या, बड़ा छोटा न वर देखा।
नहीं कुछ झूंठ यह सच आज़माले जिसका जी चाहे॥
कहे कोई भी जो हित की, उसे समझें हैं ये वैरी।
नहीं शिक्षा को सुनते हैं, सुनाले जिसका जी चाहे॥
दशा बिगड़ी है भारत की, सुधारो दास मिलजुल कर।
पड़ा यह धर्म मिलता है, उठाले जिसका जी चाहे॥

गजल ५६

गया कहां पर बतादे भारत, वह पहिला जाहो जलाल तेरा।
कहां गई तेरी शानो शौकत, किधर गया वह कमाल तेरा॥
कहां गई तेरी वेद विद्या, वह ईश्वरी ज्ञान का ख़ज़ाना।
अज़ल में ईश्वर ने था जो सौंपा, किधर गया है वह माल तेरा॥
कहां वह ज्योतिष कहां वह मंतक, कहां है वह तपहुनर रियाज़ी।
फ़लक़ से ऊपर जो पहुंचता था, किधर गया वह ख़याल तेरा॥
कहां वह प्रतिमा कहां वह बल है, कहां वह पूरी चमक दमक है।
कि जिससे मानिन्द महिरे अनवर चमक रहा था जमाल तेरा॥
कहां गया तेरा सत्य भाषण, सुकर्म एवं सुधर्म धारण।

गया कहां पर वह प्रेम पुर्वन, कि था जो अनमोल लाल तेरा ॥
समाधि किरिया व योग बलसे, अजर अमर के भजनमें खुशथा।
रहे था भरपूर ब्रह्म विद्या, से देश ! हरदम कपाल तेरा ॥
नहीं था दुनिया में तेरा सानी, हुसूले इल्मो हुनर में कोई।
था सब मुमालिक के माहेकामिल, से ज्यादा रोशन हुलाल तेरा ॥
नहीं था तू ऐसा पाशिकिस्ता, नहीं था ऐसा खराबोखस्ता।
नहीं था ऐसा ज़लीलो रुस्वा, नहीं जिवूं था यों हाल तेरा ॥
नहीं थी तुझमें मुक़दमें बाज़ी, नहीं थी यो तुझमें कीनासाज़ी।
हमेशा रहता था तुझसे राज़ी, वह क़ादिरे ज़ुलजलाल तेरा ॥
वबाल जां तेरे हो रहे हैं, इनाद बुराजों निफ़ाक़ कीना।
फ़ज़ूलखर्ची व रस्मवद न, लिया है खूं सब निकाल तेरा ॥
दुबारा लेकर जनम जो आवें, कणाद गौतम वो व्यास आदी।
यक़ीं है सर को पकड़ के रोवें जो देखें ऐसा ज़वाल तेरा ॥
कमाल अफ़सोस ! हैफ़ हसरत ! कि तेरी औलाद सो रही है !!
नहीं है कोई कि उठके देखे, कि क्यो है चेहरा निढाल तेरा ॥
वकील मुख़तार बाबू पंडित, रईस और चौधरी हैं जितने।
सभी के सब तुझ से बेखबर है, न कोई पुर्सान हाल तेरा ॥
नक़ारखाने में मिस्ल तूती, के ऐसी आवाज बेअसर है।
जगावें क्योकर किसी को सालिग, बतावें क्योंकर ज़वाल तेरा ॥

भजन ६०

हा ! देश तेरी हालत पै रोना हमें आता है । हा ! देश० ॥
हा ! कि इस ऋषि भूमि में, भूमि में ।

गउओं के प्राण निकालत न कोई भी बचाता है ॥ हा० ॥
हा ! ब्रह्मचर्य तज दीना, तज दीना ।
छाई कि अजब जिहालत, सुकर्म नहिं भाता है। हा! कि रोना०
हा ! हज़ारों मत फैले, मत फैले ।
कोई न इन से बचाता, देश लुटा जाता है। हा देश० ॥
हा ! कि छज्जू सब मिलके, सब मिलके ।
बनो धर्म प्रतिपालक, समय चला जाता है। हा देश० ॥

भजन ६१

क्या हुआ ढंग बेढंग है, बेहोश नशे में होकर ।
नामी घर लुटगया तुम्हारा, यवन और ईसाइयों द्वारा ।
पर तुमको आलस रहा प्यारा, कब हुआ भारत का जंग है ।
नहीं उट्ठे तब से सोकर । बेहोश० ॥ १ ॥
आदि सनातन वेद बिसारे, मनगढ़न्त पुस्तक रचि डारे ।
धर्मयुद्ध से बाजी हारे, कैसा किया कुसंग है ।
निज धर्म कर्म सब खोकर ॥ बेहोश० ॥ २ ॥
अब तो होश में आओ भाई, वैदिक सूर्य दिया दिखलाई ।
क्यों आलस ने दिया दबाई, कौन हुई मत भंग है ।
अपना कर्त्तव्य बिगोकर ॥ बेहोश० ॥ ३ ॥
मिहर हुई अब दयानन्द की, जिसने खोटी रीति बन्द की ।
वासुदेव सब ने पसन्द की, चढ़ा धर्म का रंग है ।
सब मैल पाप का धोकर ॥ बेहोश० ॥ ४ ॥

भजन ६२

शैर-एक दिन यह देश सब देशों के सर का ताज था।
वेद मत का प्रचार था और आर्य्यों का राज था॥
जब से इस ने भूलकर लिया फूट का मेवा जो खा।
दर बदर रुसवा ज़लीलो ख्वार बिलकुल हो रहा॥
भाई का दुश्मन जो एक भाई ही जब से बन गया।
फिर तो बरबादी का पूरा ही इरादा ठन गया॥
यहां तक बिगड़ा कि अब हालत नज़ा में आरहा।
जिस के हाले ज़ार पर आलम जो आंसू बहा रहा॥
मैं भी इस का हाल अब रो २ के सबको सुनाऊंगा।
और सुनने वालों को भी दो २ आंसू रुलाऊंगा॥

टेक-भारत के हक़ीक़त हाल पर, अब गाना नहीं रोना है।
हुए पहिलवान गुणवान भारत में भारे।
जिन के डर से सुर नर कंपित थे सारे॥
हुए सतवादी धर्मज्ञ ईश के प्यारे।
तन मन धन जीवन दिया धर्म नहीं हारे॥

शैर-हुए इस भारत में पातंजलि, वशिष्ठ और अंगिरा।
कपिल और कणाद, गौतम जाने जिनको वसुन्धरा॥
हरिश्चन्द्र, दधीचि, नृप बलि कर्ण का जग यश भरा।
देदिया सर्वस्व नहीं पग धर्म से जिनका टरा॥
हम उन्हीं के कुल में प्यारे। अब सोते पांव पसारे।
धन, धर्म, कर्म सब हारे। हैं दर २ फिरते मारे॥

सत वैदिक धर्म विसार, हुए बेकार, तंग अरु ख़्वार।
द्वार घर बैठ कर धरि गालपर, कुछ खोदिया अरु खोना है।
यह गाना भी रोना है ॥ भारत० ॥ १ ॥
पहिले पुरुषों की नीति रीति बिसराई।
पड़ गये कुफ़्र में पाप से प्रीति लगाई ॥
दिया खुदग़र्ज़ों ने ऐसा हमें बहुँकाई।
रहा हित अनहित का बिचार अब नहिं भाई ॥

शैर—हा अविद्या ने हमें हैवां से बदतर कर दिया।
इज़्ज़तो हुरमत गई ग़मोदर्द से दिल भर दिया ॥

सल्तनत भी छिन गई जब धर्म कर से धर दिया।
वो भी दुश्मन बन गये पहलू में जिन के सर दिया ॥
हम निज दुख किसे सुनावें। कोई हितू नज़र नहीं आवें।
हम जिनकी शरण में जावें। मुँह वो भी हमसे छुपावें।
भारत पर आया ज़वाल, हुआ पामाल, हाल बेहाल, काल
पड़गया जानो मालपर, अँसुओं से मुँह धोना है ॥
यह गाना क्या रोना है। भारत० २ ॥
तजी ब्रह्मचर्य की रीति जब से सुखदाई।
बचपन में ब्याह करने की बात ठहराई ॥
तब से बहु रोगन भारत लीन दबाई।
भारतवासी हुए दीन हीन सौदाई ॥
शैर—बाल विधवा हो गईं लाखोंहि बाल विवाह से।
होगया ग़ारत यह भारत उनकी पुरग़म आह से ॥

छमल गिरते हैं हज़ारों हिन्द में इस राह में से ।
वेश्या बनती हैं लाखों पर पुरुष की चाह से ॥
बस इन पापों का मारा । हुआ मुफलिस मुल्क हमारा ।
पड़ें अकाल बारम्बारा । मरें भूख से लोग हज़ारा ॥
नहीं त्यागें कुटिल कुवान, अजहुँ नादान, करत बिषपान,
हानिकर रोते हैं कलिकाल पर, दुख होगया अरु होना है ॥
यह गाना नहीं रोना है ॥ भारत० ३ ॥
हट्टे कट्टे मुस्टण्डे बने भिखारी ।
चरसी भंगड़ बने पण्डे और पुजारी ॥
वेश्यागामी व्यभिचारी चोर अरु ज्वारी ।
भारत में दान लेने के बने अधिकारी ॥
शैर–लाखों बेवा अनाथ भूखों से यहां चिल्ला रहे ।
कूबकू अन्धे अपाहिज लाखों धक्के खा रहे ॥
लाखों ईसाई यवन बन २ के धर्म गँवा रहे ।
कुली और गुलाम बनकर ग़ैर मुल्कों को जारहे ॥
यहां भड़वे खांय मलाई । रण्डी की हो पहुनाई ।
बलदेव कहे समझाई । कुछ शर्म करो प्रिय भाई ॥
क्यों नाहक लोग हँसाओ, होश में आओ अब तो शर्माओ,
अपनी कुचाल पर, या बाक़ी अभी सोना है ॥ यह० ४ ॥

भजन ६३

शैर–हाय भारतवर्ष तेरी आज क्या हालत हुई ।
देखकर दुशमन के भी चुभती कलेजे में सुई ॥

दुख बयां करने में दिल को बेक़रारी होरही।
तेरे अबतर हाल पर अब सारी खलक़त रोरही॥
क़लम रुकती है ज़ुबां कहती न मुझ से काम लो।
करता हूं कहने की हिम्मत अब कलेजा थामलो॥

टेक–रोवे भारत जननि तुम्हारी, कैसी विपति पड़ी है भारी।
कैसा दुखों का पर्वत टूटा, सारा धर्म कर्म हा छूटा–जी!
हुआ भारत देश भिखारी॥ रोवे भार० १॥

कैसा देश का दुर्दिन आया, सारे दुखो ने आन दबाया–जी!
लुट गई भारत की निधि सारी॥ रोवे भार० २॥

लुटा सब ऐश्वर्य तुम्हारा, किया विद्या ने तुमसे किनारा–जी!
तुम्हें छोड़ विदेश सिधारी॥ रोवे भार० ३॥

कहीं आ भूडोल सतावें, जिस में महा नाश होजावे–जी!
फैली रहे कहीं महामारी॥ रोवे भार० ४॥
लाखों जन अकाल ने मारे, लाखों हैजे के बन गये चारे–जी!
कहीं ओलों ने खेती उजाड़ी॥ रोवे भार० ५॥
किस को निज व्यथा सुनावें, क्या करें कहां पर जावें–जी!
हुई बन्द ज़ुबान हमारी॥ रोवे भार० ६॥
लाखों गउओं को नित मारें, लाखों विधवा शोक उचारें–जी!
होता न धर्म कहिं जारी॥ रोवे भार० ७॥
अब तो सचेत में आओ, जननी को धैर्य बँधाओ–जी!
बनो वासुदेव हितकारी॥ रोवे भार० ८॥

भजन ६४

दोहा–प्यारे भारतवासियो, सुनो हमारी बात।
आंखें खोलो नींद से, भारत उजड़ा जात॥
टेक–अब जागो भारतवासियो, भारत उजड़ा जाता है।
रयडी मुयडी ज्वारी लूटें, पराडे और पुजारी लूटें॥
दे दे दम दुराचारी लूटे, योगी अरु संन्यासियो।
ये क्या अन्धेरखाता है॥ भारत० १॥
नौते और स्याने लूटें, मुर्शद अरु मौलाने लूटें।
पी पी भग दिवाने लूटें, दुख उपजत अरु हांसियो।
कहने मे नहीं आता है॥ भारत० २॥
नवग्रहो के दलाल लूटें, शराब दे दे कलाल लूटें।
नजूमी बन बन के धन लूटें, दे फरेब की फांसियो।
कोई गैब की बतलाता है॥ भारत० ३॥
महन्त और जटाधारी लूटें, किमियागर निराहारी लूटें।
विदेश के व्यौपारी लूटें, करि २ नकल नकाशियो।
कोई तिलस्म दिखलाता है॥ भारत० ४॥
वकील अरु बैरिष्टर लूटे, क़ानूनी मुळकत्तर लूटे।
रिशवतखोर मिकत्तर लूटें, सिविल पुलिस चपरासियो।
कोई फ़रेब फैलाता है भारत० ५॥
चढ़ा लुटेरो का दलभारी, करदिया भारत मुल्क भिखारी,
विनय करत बलदेव तुम्हारी, तुमहीं प्रभु पति राखियो।
एक तुमहीं से अब नाता है॥ भारत० ६॥

गजल ६५

इस धर्म पर धुरू ने मुसीबत सही बड़ी।
बच्चे थे वन मे जाके रियाज़त की जिस घड़ी ॥ १ ॥
इस धर्म ही पै राजा हरिश्चन्द्र थे डटे।
दानी थे इन्तहा के सखावत में मर मिटे॥
दिन उनके गो तमाम ग़मोंरंज में कटे।
पर करलिया जो अहिद न उससे ज़रा हटे॥
कितने ही उनके धर्म का अहवाल लिख गये।
रानी बिकी कुँवर भी बिका आप बिक गये॥ २॥
दशरथ अवध के राजा आली जनाब थे।
धर्मात्मा थे धर्म के वह आफ़ताब थे॥
जुर्रत में शूर, वीरता में लाजवाब थे।
राजो मे सूर्य वंश के वह इन्तख़ाब थे॥
जान कशमकश में आन पड़ी दम गया निकल।
आने दिया पै अहिद ना इक़रार में ख़लल॥ ३॥
श्रीरामने भी धर्म पै क्या क्या न कुछ किया।
तख़्तेशाही को छोड़ के बनबास लेलिया॥
चौदा बरस का बन में ज़माना बसर किया।
कुछ दोष अपने भाग न मा बाप को दिया॥
रानी भी उनकी धर्म पतिव्रत धार कर।
सम्पत पै सुख साथ चली लात मार कर॥ ४॥

कशमीर से जब आये भरतजी सुये वतन।
धर्मात्मा थे दिल में किया अपने यह परन॥
हक़दार ताजोतख़्त के जो थे गये वह बन।
हरगिज़ न राजगद्दी पै रक्खूंगा मैं चरन॥
चौदा बरस ज़मीन पर आसन जमा दिया।
तख़्ते शाही खड़ाऊँ से उनकी सजा दिया॥ ५॥
मा गोपीचन्द राव की मुँह उनका देखकर।
बोली यूं अपने बेटे से हो कर के चश्मतर॥
दुनिया है बेसबात ह दो दिन का करोफ़र।
दे छोड़ राज योग ले हो जावे तू अमर॥
कुछ भी न मा के हुक्म में चूँ व चरा किया।
जाहो हशम को छोड़ दिया योग लेलिया॥ ६॥
करतेथे तप इसी के लिये पाणिनी ऋषी।
राजा बिके कि इसके लिये जिस्म जान पी॥
राजा जनक इसी के सबब होगये यती।
थी मोरध्वज ने आराकशी इससे सरपै की॥
शुकदेव जी का नाम इसी से अमर हुआ।
बैकुण्ठ में इसी से मनुजी का घर हुआ॥ ७॥
पदवी इसी से राजा युधिष्ठिर को थी मिली।
बरतर बज़ुर्ग इसमे हुये राजा भीष्म जी॥
इसके तुफ़ेल से बने औतार कृष्ण जी।
योगी भी हुये इसके लिये राव भर्थरी॥

ज़र्रा थे, आफ़ताब इन्हें धर्म ने किया।
कतरे थे, दुर्रेनाब इन्हें धर्म ने किया ॥ ८ ॥

भजन ६६

यह धर्म हमारा प्यारा, कोई दिनका है बनजारा।
करो होश और निद्रा त्यागो, अब तो ग़फ़लत से जागो-जी।
नहीं रंज सहोगे भारा ॥ कोई० १ ॥
हमें खाने को लाखों बलायें, मुँह खोल २ कर धायें-जी।
लगी करने वह भक्ष हमारा ॥ कोई० २ ॥
गई फिर तक़दीर हमारी, लगे क़हित भी पड़ने भारी-जी।
मचा देश में हाहाकारा ॥ कोई० ३ ॥
कई भाई भूख के मारे, गये त्याग प्रान बेचारे-जी।
पीछे छोड़ के सब परिवारा ॥ कोई० ४ ॥
कई छोड़ वतन उठधाये, जहां जिस के सींग समाये-जी।
तजि बहिन भाई सुत दारा ॥ कोई० ५ ॥
यह हालत देख ईसाई, और मिसेज रामाबाई-जी।
उन ने लेने को हाथ पसारा ॥ कोई० ६ ॥
हुए लाखों यतीम किरानी, होय वैदिक धर्म की हानी-जी।
लगा औरों का बजने नक़ारा ॥ कोई० ७ ॥
अब भी वक्तहै होशमें आओ, पैसा २ भी अगर मिलाओ-जी।
तब भी बच जाय धर्म तुम्हारा ॥ कोई० ८ ॥

करो पूर्ण दया उर धारे, रक्षा दीनों की प्यारे-जी।
होवे यश, कल्याण तुम्हारा ॥ कोई० ६ ॥
कौड़ी पैसा जो हो सोई देदो, हिस्सा परम धर्म में लेलो-जी।
कहे खन्नादास विचारा ॥ कोई० १० ॥

दादरा ६७

देखो अनाथ यहां आये, हमें तो निराश न करो।
निराश न करो, निराश न करो।
तुम्हरी शरण में आये। हमें तो निराश० ॥ १ ॥
हा! हमारी माता ने, माता ने।
भूख से गोदी से गिराये ॥ हमे तो० २ ॥
हा! वे कैसी रोती थीं, रोती थीं।
अन्न के रूख न पाए ॥ हमें तो० ३ ॥
हा! कि उस समय पेड़ों, के पेड़ो के।
छाल और पत्ते चबाये ॥ हमें० ४ ॥
हा! कि विपता पापिन ने, पापिन ने।
पानी बिना तड़पाये ॥ हमे तो नि० ५ ॥
हा! कि सम्वत् छप्पन ने, छप्पन ने।
दर दर भीख मंगाये ॥ हमें तो नि० ६ ॥
हा! कि हम हैं सब बच्चे, सब बच्चे।
अच्छे कुत्तों के जाये ॥ हमें तो० ७ ॥
हो कि दाता धर्म करो, धर्म करो।
पाठक ये रो रो सुनाये ॥ हमें तो निराश० ॥ ८ ॥

भजन ६८

दीनों की आह ! फरियाद कोई सुनेगा ! या न सुनेगा !!
यह अक़ल तुम्हें क्या बुरी है, निज गला गले पर छुरी है।
कहो बात भली या बुरी है।
ओ ! बेरहिम सख्त जल्लाद, कोई सुनेगा या न० ॥१॥
यह सिफ़त इनमें जाती हैं, खावे घास दूध देती हैं।
वह तो बड़ा ही दुष्ट घाती है।
जो इनको करे नाशाद, कोई सुनेगा या न० ॥२॥
यही क़हतसाली का सबब है, ताऊन का भी यही ढब है।
ईश्वर का कहरो ग़ज़ब है।
क्यों न होवे मुल्क बर्बाद कोई सुनेगा या न० ॥ ३ ॥
गर रही यही इख़लाक़ी, तुम हम में नाइत्तफ़ाक़ी।
जो कुछ भी देश की है बाक़ी।
मिट जायगी देखो बुनियाद, कोई सुनेगा या न० ॥ ४ ॥

भजन ६९

ऋषी ऋण कैसे उतारेंगे, लगा घर में फूट की आग।
जिन पर थी निगाह हमारी, थी जिन से आशा भारी।
कि बन कर पर उपकारी, देश की दशा सुधारेंगे ॥ ल०१॥
उन्हें ऐसी मूर्खता छाई, लगे करने नित्य लड़ाई।
यह देता हमें दिखाई, कि यह सब काम बिगारेंगे ॥ ल०२॥

समझे थे जिन्हें हितकारी, वही निकले दुश्मन भारी।
क्या जाने समाज विचारी, कि यह सब प्रेम विसारेंगे ॥ ल०३॥
जो थे समाज के भूषण, वही हो गये उसके दुश्मन।
लगे खुद आपस में झगड़न, औरों को कैसे सँवारेंगे ॥ ल०४॥
आपस में युद्ध मचाओ, नहीं धर्म से प्रेम बढ़ाओ।
कुछ तो दिल मे शर्माओ, तुम्हे क्या लोग पुकारेंगे ॥ ल०५॥
हा! ईश्वर मे नहीं डरते हो, गारत समाज करते हो।
सर मुफ्त पाप धरते हो, तुम्हें जो नरक में डारेंगे ॥ ल०६॥
यों सालिगराम पुकारे, तुम्हें ईश्वर जल्द सुधारे।
बढ़ें मेल मिलाप तुम्हारे, यही हम अर्ज गुजारेंगे ॥ ल०७॥

भजन ७०

क्या करना था क्या लगे करन हमें यही अचम्भा है।
कर्तव था ईश गुण गाना, शुभ कर्म और धर्म कमाना।
पर इन मे लगाया तनिक न मन ॥ हमें यही० १ ॥
था उचित वेद का पढ़ना, नित पंचयज्ञ का करना।
अब छोड़ दिये सन्ध्या व हवन ॥ हमें यही० २ ॥
सब सत्य से प्रीति बढ़ाते, और झूठ से चित्त हटाते।
अब त्याग सत्य किया झूठ ग्रहण ॥ हमें यही० ३ ॥
जो सबका ईश कहाता, नहीं जिसे देख कोई पाता।
अब उसको भी लगि गये गढ़न ॥ हमें यही० ४ ॥
ज़िन्दे पितु मात न सेवें, पर मरों को भोजन देवें।
लगे ब्राह्मण भी कुलीपना करन ॥ हमें यही० ५ ॥

ब्राह्मण क्षत्री कहलावें, और भूतों से भय खावें।
लगे मुर्दों से जिन्दा भी डरन ॥ हमें यही० ६ ॥
बुड्ढे भी व्याह करावें, सर सेहरा मौर बंधावे ॥
खुद साठ वर्ष के, क्रः की दुलहन ॥ हमें० ७ ॥
कैसी है अविद्या भारी, ईश्वर को कहें वपुधारी।
बतलावे उसका जनम मरन ॥ हमें० ८ ॥
ब्रह्मचर्य आश्रम खोया, बल बुद्धी तेज डुबोया।
नहीं जाते है गुरुकुल में पढ़न ॥ हमें० ६ ॥
ऋषियों की भूमिम आई, अब घोर अविद्या छाई।
पर नहीं देते गुरुकुलों को धन ॥ हमें० १० ॥
जो बुद्धिमान कहलावें, सब को उपदेश सुनावें।
वही खुद आपस में लगे लड़न ॥ हमें० ११ ॥
मुश्किल से नर तन पाया, उसे मालिग वृथा गँवाया।
नहीं आया तू ईश्वर की शरन ॥ हमें० १२ ॥

दादरा ७१

हितैषी वनो सभी प्यारो कुरीती घर २ से टारो–टेक।
दो०–बने जहां तक मेट दो, दुखदा बाल बिवाह।
एक पुरुष रखे नार कई होरहा देश तबाह ॥
इसने व्यभिचार बढ़ाय दिया।
देश को नीचे गिराय दिया ॥ हि० ॥
विधवाओं की लखि दशा, थर थर जिय कम्पाय।

जहँ तक तुम से हो सके, इनका दुख दो मिटाय ॥
अदालत फिरती है लाखों ।
खून तक करती है लाखो ॥ हि० ॥
वेश्या आदि प्रसंग से, हुआ देश वीरान ।
मद्य मांसभी छोड़दो, है ये दुखकी खान ॥
बिगड़ गये घर के घर लाखो ।
गये सड़ २ के मर लाखो ॥ हि० ॥

बेटी पर धन लेय जो, है ये बड़ाही पाप ।
हानि बड़ी हो देशकी हिये विचारो आप॥
बुड्ढो तक से ब्याहें लोभी ।
बहुत ही धन चाहे लोभी ॥ हि० ॥

आलस का अब दुर्व्यसन बढ़ गया बेतादाद ।
जुवे बहुत से खिल रहे, हो रहा धन वर्बाद ॥
अच्छे भाई काम करो सारे ।
फिरो नहि तुम मारे मारे ॥ हि० ॥

कुये बाग पोखर बना, पुल अरु सड़क सराय ।
भोजन बस्तर दीन को, धन दो इन में लगाय ॥
सच्चे व्यवहार करो प्यारे ।
धर्म अनुसार चलो सारे ॥ हि० ॥

कन्याशाला खोल दो, गुरुकुल दो बनवाय ।
विद्या पावें नारि नर, यूं सुख दो फैलाय ॥
शीलता धीरज को धारो ।

देश हित तन मन वारो ॥ हि० ॥
गुन कर्मों से वर्ण को, मानों जन समुदाय ।
छूत छात के बन्ध को, देओ क्यों न तुड़ाय ॥
शूरता से काम करो सारे ।
सबका उपकार करो प्यारे ॥ हि० ॥

भाई जो तुम से जुदा, हुआ है या हो जाय ।
संग लेलो सब काल में, धर्म से लेओ मिलाय ॥
शुद्धि का खोलो दर्वाजा ।
जिसका जी चाहे वह आजा ॥ हि० ॥

नाना पन्थो को तजो, आर्य बनो नर नार ।
एक ईश्वर का मानना, वेद विहित आचार ॥
ऐ पाठक हो जाओ फिर वैसे ।
हुये तुमरे पुरुषा जैसे ॥ हि० ॥

भजन ७२

दो०-करो बिवाह विचार के, निगमागम विधि शोध ।
बिना स्वयंवर क्या करो, यह सब नीति विरोध ॥

टेक-शुभ रचो स्वयंवर शादी, सुख सम्पति प्रीति आराम हो ।

वर कन्या गुन कर्म में समहों, बुद्धि अवस्था में नहिं कम हो ॥
तब तो बिवाह अति उत्तम हों, सुख से उम्र तमाम हो ।
होवे न बैर और व्याधी ॥ शुभ० ॥ १ ॥

बाल उमर में शादी करना, गुड्डा गुड़िया खेल ये बरना ।

वेद विरुद्ध दोष सर धरना, विरोध आठों याम हो।
ऐसी मत करो उपाधी ॥ शुभ० ॥ २ ॥

क्या हासिल रण्डी का नचाना, हराम में पैसे का गंवाना।
भांड़ नचा के कुफ़ मचाना, महफ़िल भी बदनाम हो।
यह क्या बदरस्म चलादी ॥ शुभ० ॥ ३ ॥

आतिशबाज़ी बाग़ोबहारी, धन खोने की राह निकारी।
कितनेही पछतायँ पिछारी, जब कुर्क़ी नीलाम हो।
रोवें सुन ढोल मनादी ॥ शुभ० ॥ ४ ॥

बखेर का करना फ़ज़ूल है। बहुत बखेरो फिर भी धूल है।
पांच कर्म लो दुख का मूल है। कभी सिद्ध नहिं काम हों।
हर तरह समझ बर्बादी ॥ शुभ० ५

तुरंग बैल की जोट मिलाओ, सुत पुत्री पर ख्याल न लाओ।
कह बीसा पीछे पछताओ, बदनामी मुद्दाम हो।
मैं सांची बात सुनादी ॥ शुभ० ॥ ६ ॥

भजन ७३

बचपन में ब्याह सन्तति को, फिर रोते हैं नादान ॥ टेक ॥

पितु कहते लाल पढ़ने को नहीं जाता है।
गुरु कहते इसे एक हर्फ़ भी नहीं आता है ॥
मा कहती पूत मेरा दिन २ दुबराता है।
मुख पीला पड़गया भोजन नहीं भाता है ॥
जिस दिन से ब्याहि घर आया। जाने किस्की होगई छाया ॥

सब खान पान बिसरगया। हुई ज़र्द लाल की काया॥
गुरुओं की बात में आय, लग्न सुधवाय, पुत्र को ब्याहि।
हाय पड़गई ग़ज़ब में जान, दुख होत देख दुर्गति को॥ १॥

कोई कहत मानी हम काशीनाथ की बानी।
दी आठ वर्ष की सुता ब्याहि शुभ जानी॥
गये भाग फूट वर को लेगई भवानी।
कर दई दैव ने विधवा सुता अयानी॥

विधना ने बिपति क्या डाली। विधवा हुई कन्या वाली।
ज़रा होजाय चाल कुचाली। जाय दोनों कुटुम्ब की लाली॥
हो गया दैव प्रतिकूल, हुई क्या भूल, दुःख का मूल, शूल
सम लागत जगत मशान, कैसे राखे राम इज्ज़त को॥ बचपन०२

इस बाल ब्याह की बरकत से बिधवायें।
रोगे के लाखो सूने जिगर को खायें॥
छुप २ के करतीं हराम हमल गिरवायें।
हो काम विवश बनती हैं लाखों वेश्यायें॥

वह घर में न मौका पावें। तब काशी को चली जावें।
वहां जाके कुकर्म कमावें। दिल खोल के मौज उड़ावें॥
बहुतों को बिरह सताय, सहो नहीं जाय, ज़हर ले खाय,
धाय खंजर से खोवें प्रान, सिर आई देख बिपति को॥ ३॥

कोई इस कुरीति को अब हूँ न हाय हटावे।
भारत आरत है दिन २ छीजत जावे॥

आर्य्य समाज इन्हें कहां तलक समझावे।
इन निर्गुणयों को क्या कोई ज्ञान बतावे॥
हे ईश्वर सर्वाधारी। तुम से यह विनय हमारी।
देव सुमति, कुमति को टारी। लेव भारत नाथ उबारी॥
बलदेव की सुनें पुकार, करें स्वीकार, सुजन सर्दार, सार
यही वेदों का फ़र्मान, दीजै प्रभु दान सुमति को ॥ बचपन० ४ ॥

क़व्वाली ७४

बचपन के व्याहने से, अबहूँ तो बाज़ आओ।
बच्चों की करके शादी, करते हो क्यों बर्बादी।
बुधि बल औ शान शौक़त, मिट्टी में मत मिलाओ॥ १ ॥
मित्रो! ये मुल्क भारत, इसी से हुआ है ग़ारत।
अब छोड़ो ये जिहालत, आलम से क्यों हँसाओ॥ २ ॥
भारत की जो शुजाअत, मशहूर थी मुल्कों में।
उस के बरक्स हालत, दुनिया को क्या दिखाओ॥ ४ ॥
माहिर थी सारी खलक़त, कहती थी जिसको जन्नत।
उसी हिंद को अब यारो, दोज़ख न तुम बनाओ॥ ४ ॥
इस व्याह बालेपन से, आज़िज है लाखो तन से।
शबरोज़ रो रहे हैं, औरों को मत रुलाओ॥ ५ ॥
पथरी प्रमेह गठिया, घर घर बिछाई खटिया।
सुस्ती औ नामर्दी से, दामन तो अब छुटाओ॥ ६ ॥

इसी फ़ेल का फल पायें, लाखों हुईं बिधवायें।
शबोरोज़ रो रही हैं, इनका भी दुख बँटावो ॥ ७ ॥
रोती हैं मां बापों को, करती हैं बहु पापों को।
इस दुर्गति को यारो, भारत से अब हटाओ ॥ ८ ॥
इसकी ही बरकतों से, ग़मनाक हरकतों से।
लाखों ही ग़म उठाते, फिर भी तो कुछ शर्माओ ॥ ९ ॥
बलदेव की अर्जी है, भारत के सज्जनों से।
सुनो ग़ौर करके प्यारो, सुख हो अमल में लाओ ॥ १० ॥

भजन ७५

वह पुरुष महा चंडाल है, जो कन्या बेंचकर खावे।
बड़ा दुष्ट पापी वह जन है, जो कन्या पर लेता धन है।
दया धर्म का वह दुश्मन है, लोभी कुटिल कुचाल है ॥
जो कुल को दाग़ लगावे ॥ जो० १ ॥
लालच से धन के अन्याई, लड़की के लिये बना कसाई।
बुड्ढे खूसट से उसको ब्याही, जिसका चरा मुँहगालहै ॥
और हिला चला नहीं जावे ॥ जो० २ ॥
रूपवती अति सुन्दर बाला, वर है महा बदसूरत काला।
जल्द चिता में जाने वाला, तन की लटक रही खाल है ॥
नित थर थर मूढ़ हिलावे ॥ जो० ३ ॥
नहीं जाने बेचारी अबला, बूढ़ा पती लगे या बाबा।
ना उससे घूंघट ना पर्दा, खबर न क्या ससुराल है ॥
जो इसका घर कहलावे ॥ जो० ४ ॥

कुछ दिन में बूढ़ा मर जावे, कन्या को कर रांड़ बिठावे।
सारी उम्र वह दुःख उठावे, सहती विपत कमाल है॥
बिरह अग्नी जिगर जलावे॥ जो० ५॥

मोही मात पिता और भाई, चाचा ताऊ ब्राह्मण नाई।
जो कन्या पर करते कमाई, पुख्ता मेरा ख्याल है॥
हर एक नर्क में जावे॥ जो० ६॥

सालिम ऐसे मात पिता को, जो बेचे अपनी दुहिता को।
नजर हिकारत से नित देखो, कहे मनु महा चंडाल है॥
देखे से पाप लगजावे॥ जो० ७॥

गजल ७६

बुढ़ापे की अवस्था में जो ब्याह अपना कराते हैं।
वह एक मासूम कन्या को मुसीबत में फँसाते हैं॥
नहीं मालूम इन बुड्ढो बुजुर्गों को ये क्या सूझा।
कि जो मरते समय अपना अनोखा ब्याह कराते हैं॥
कँपे तन और हिले गर्दन नहीं है दांत तक मुह में।
मगर देखो तो बुड्ढे जी फबन कैसी दिखाते हैं॥
जड़े सुर्मा मले उपटन कटाकर मूछ और दाढ़ी।
बरस पन्द्रह या सोला का यह अपने को बताते हैं॥
नहीं आती शर्म उनको जरा नौशा कहाने में।
न जाने कौन सी उम्मीद पर कंगना बँधाते हैं॥
बहत्तर साल के हैं खुद बदौलत दस की है कन्या।

नहीं बुड्ढे मियां इस जोड़ पर दिल में लजाते हैं ॥
महीना दो महीने बादही यह पीर नाबालिग।
हमेशा के लिये मरघट में जा डेरा जमाते हैं ॥
मजे से आप तो जाकर चिता में लेट जाते हैं।
मगर ताजिन्दगी कन्या बिचारी को रुलाते है ॥
टके के लोग से पंडित जी भी झट खोल पत्रे को।
बिना सोचे विचारे बेतुका साहा सुझाते हैं ॥
उमर भर जान को रोती है उन मिश्रो की यह बवा।
कि जिन के साथ में बुड्ढो के वह फेरे कराते है ॥
समझ ले ख्व यह मन में मियां बुड्ढे व पण्डित जी।
कभी वह सुख नही पाते जो औरो को सताते है ॥
तअज्जुब है कि जो रोके उन्हें इस फेल बेजा से।
सनातन धर्म का उसको महा शत्रू बताते हैं ॥
सफल जीवन है स्वाजिगराम उनका शक नहीं इस में।
जो इन मकरोह बदरस्मो को दुनिया से मिटाते हैं ॥

भजन ७७

हुये कैसे मा बाप पुत्री बेंचकर खावें।
भेड़ और बकरी की नाई, बेंचे है उन्हें अन्याई।
नकद लेले चुप चाप ॥ पुत्री० ॥ १ ॥
कोई तीन हज़ार लगावे, कोई बदले ब्याह करावे।
हाय कैसा है पाप ॥ पुत्री० ॥ २ ॥

बच्चे बुड्ढों से व्याहें, उन्हें करना बिधवा चाहें।
करें नहीं पश्चाताप ॥ पुत्री० ॥ ३ ॥
नित रोवें और चिल्लावें, और ऐसा रुदन मचावें।
देख हिय जाता कांप ॥ पुत्री० ॥ ४ ॥
ऐ सुता बेंचने वालो, अब जुल्म से हाथ उठालों।
शर्म से लो मुँह ढांप ॥ पुत्री० ॥ ५ ॥
मेहनत से टका कमाओ, मत पुत्री बेंच कर खाओ।
बनो नहिं पापी आप ॥ पुत्री० ॥ ६ ॥
कहे सालिगराम पुकारी, तुम मानो बात हमारी।
जो हो सच्चे मा बाप ॥ पुत्री० ॥७॥

गजल ७८

विनय सुननो बुजुर्गों तुम हमारी।
करोड़ों रोरही बेवा विचारी ॥
गुनह हमने किया क्या है बताओ।
मिला एवज मे जिसके दुःख भारी ॥
तुम्हीं ने तो हमें बचपन में व्याहा।
तुम्हीं ने शास्त्र की आज्ञा है टारी ॥
मनु और वेद में क्या २ बताया।
रहें स्त्री पुरुष सब ब्रह्मचारी ॥
मगर तुमको नहीं कुछ ख्याल आया।
बिना सोचे धरी गलपर कटारी ॥

वर्ण और वर्ग और जाति मिलाई ।
मिलाई लग्न राशी और नारी ॥
ग्रह नक्षत्र गण आदि मिलाये ।
मगर विधि की लिखी नहीं जाय टारी ॥
तुम्हीं ईश्वर हमें धीरज बंधाओ ।
लगा विधवों के सीने ज़ख्म कारी ॥
जरा वासुदेव का कहना तो मानो ।
करो विधवा के फिर तुम व्याह जारी ॥

भजन ७६

विधवा नारि की रे, अपने मन में व्यथा विचारो ।
गौर करो टुक अपने दिल में, विधवा करें पुकार ।
तुम तो व्याहो दश २ नारी, हमको क्यों इनकार ॥ वि० १ ॥
साठ वर्ष की उम्र में आई, मर तुम्हारी बाला ।
काम कला को रोक न पाओ, फेर करो मुंहकाला ॥ वि० २ ॥
फिर जो व्याह न होय तुम्हारा, करो नित्य व्यभिचार ।
इज्जत खोओ नहिं शर्माओ, बनो धर्म औतार ॥ वि० ३ ॥
बालपन में पती हमारे, कर गये स्वर्ग पयान ।
चढ़ी जवानी मदन हिलोरे, निर्नहिं सिखावनज्ञान ॥ वि० ४ ॥
व्याह काज में हम देख सब, लेती मुंह लटकाय ।
देख निरादर मन में आवे, मरें ज़हर को खाय ॥ वि० ५ ॥
कोई कोई नारी शोक से, देतीं अपनी जान ।
अधिक भाग नीचो संग जातीं, जाने सभी जहान ॥ वि० ६ ॥

घर २ में त्योहार तीज को, करती हैं शृंगार।
बिन पीतम के अंग २ पर, पड़ें अनंग अंगार॥ बि० ७॥
दिब्या देवी के इकिस पति, कहा उसे नहिं नीच।
पद्म पुराण खोल के देखो, भूमि खंड के बीच॥ बि० ८॥
वेद और स्मृति देख के, ऋषी गया बतलाय।
आपद्धर्म्म नियोग आदि को, सदाचार ठहराय॥ बि० ९॥
राधाशरण कहे कर जोड़े, ईश्वर सर्वाधार।
पार करो अबलन की नैया, डूबत हैं मँझधार॥ बि० १०॥

एक दर्द अंगेज़ नज़्ज़ारा।

एक कमसिन हिन्दू लड़की शादी के दूसरेही दिन बेवा होजाती है! शौहर की लाश को गोद में लेकर मातम करती है और आइन्दा ज़िन्दगी की बेवगी के मसाइब को याद करके बेतरह रोती है, कसरत अन्दोह से बेहोशी की हालतमें उसका पति अपनी मजबूरी व क़ौम की बेपरवाही का गिला करते हुए राज़ी बरज़ा रहने की सलाह देता है।

मगर बामुसीबत उसकी सलाह व तस्कीन ने और दिलको तड़पा दिया, होश आतेही आंख खोलकर वह चीखें मारती है, और हिन्दू क़ौम के ज़ुल्मोसितम से पनाह मांगती हुई मौत के आग़ोश में मुंह ढांप लेती है!! एक के एवज़ दो जनाज़े उठते हैं!!!

मुसद्दस ८०

(अज़ महाशय अमरनाथ मुहसन)

सर्ताज ! मेरेवाली, मेरे प्रान से प्यारे।
बेवक्त कहां जाते हो, क्यों हाय सिधारे॥
छोड़ा है मुझे आपने, अब किस्के सहारे।
इन्साफ़ से कहना, ये यही वादे तुम्हारे॥
वह क़ौल कहां और वह इक़रार कहां हैं।
दो दिनही में बदअहदी के उनवान अयां हैं॥ १॥

वादा तो था यह साथ न छोड़ेंगे कभी भी।
आईनये दिल तेरा न फोड़ेंगे कभी भी॥
इस रिश्तये उल्फ़त को न तोड़ेंगे कभी भी।
मुंह तेरी मुहब्बत से न मोड़ेंगे कभी भी॥
क्यों ? कहिये तो, क्या आप के यह ध्यानमें आया।
क्यों नक़शेवफ़ा आपने इस तरह मिटाया॥ २॥

सोचो तो कोई ऐसी कभी करता है जल्दी।
जिस तरह कि ऐ जाने जहां आपने अबकी॥
कँगना है उधर ताज़ा इधर ताज़ी है मेंहदी।
जामे की सफ़ेदी भी ज़रासी नहीं बदली॥
सेहरे भी अभी सरके तो मुर्झाये नहीं हैं।
चूड़े के भी रोमाल में शिकन आये नहीं हैं॥ ३॥

दो चार घड़ी पहिले जो यह घर था गुलिस्तां ।
लो आप के जाने से हुआ साफ़ बियाबां ॥
रोते हैं इधर भाई उधर बहनें हैं नालां ।
गरियां हैं इधर अपने उधर गैर हैं हैरां ॥
क़िस्मत से अदावत की सज़ावार तो मैं हूँ ।
औरों पै है क्यों जुल्म गुनहगार तो मैं हूँ ॥ ४ ॥
क्या भावजों ने इस लिये सुर्मा था लगाया ।
क्या बहनों ने था इस लिये घोड़ी पै चढ़ाया ॥
क्या इस लिये जामा था यह शादी का सिलाया ।
क्या इस लिये गुलगूना था चेहरे पै लगाया ॥
उड़ जाओगे ज्यूँ नगहते गुल बाग़ जहां से ।
जाओगे अभागिन के सुहागों को जला के ॥ ५ ॥
जिस वक्त से यूं आप ने बदली हैं निगाहें ।
उस वक्त से हि बन्द हैं सब प्यार की राहें ॥
हरएक मुझे देखते ही भरता है आहें !!!
नय मेरी मुहब्बत है किसी को, न हैं चाहें ॥
बेज़ार मेरी शक्ल से है सारा घराना ।
वैरी है मेरा प्रानपती, सारा ज़माना ॥ ६ ॥
जिन आंखों में थी फूल कभी, खार हुई हूँ ।
मैं अपने ही कुनबे के लिये भार हुई हूँ ॥
बेकस हूँ मैं ! बेवस हूँ मैं ! लाचार हुई हूँ ।
सच कहती हूँ मैं जीने से बेज़ार हुई हूँ ॥

मनहूस कोई कहता है और कोई अभागिन।
कहता है कोई क्यों न मरी होते ही डाइन ॥ ७ ॥
ऐ प्रानपती ! यूं मुझे ताने न दिलाओ।
मुझ दुखिया पै दुनिया को न इस तरह हँसाओ ॥
देखो तो ! न जलती हुई को और जलाओ।
ले जाओ मुझे साथ जहां जाना हो जाओ ॥
जब आपने ही जाने जहां, ऐसी दशा की।
क्या और से मै रक्खूंगी उम्मीद वफ़ा की ॥ ८ ॥
लो अब तो सहर होने लगी तुम को जगाते।
किस बात से रूठे कि नहीं मनने में आते ॥
क़िस्मत भी मेरी सोगई है तुम को जगाते।
यह आप के अन्दाज़ निराले नहीं भाते ॥
किस सोच में लेटे हो ज़रा सर तो उठाओ।
गो दिल नहीं मिलता है पै आंखें तो मिलाओ ॥ ९ ॥
मै ग़ैर सही मुझ से अजी बोलो न बोलो।
पर अपने अज़ीज़ों से तो यूं ज़हिर न घोलो ॥
किस हाल में है घर के ज़रा आंख तो खोलो।
माता की मुहब्बत को कुछ इनसाफ़ से तोलो ॥
क्या दूध की धारों का यही मोल है प्यारे।
सिर पीटती को छोड़ चले आप सिधारे ॥ १० ॥
कहने को अभी और थी दुख दर्द बिचारी।
कहने भी न पाई थीं मुसीबत अभी सारी ॥

इफ़रात ग़मो रंज से ग़श होगया तारी।
इस ग़श में यह क्या देखती है कर्मोंकी मारी॥
सर्ताज वही दूल्हा बना पास खड़ा है।
और यास भरे लहजे में यूं गोया हुआ है॥ ११॥
ऐ नेकसीयर! अस्मतो इफ़्फ़त में यगाना।
ऐ बायसे बहबूदी वो रौनक़ दहेखाना॥
ऐ मूनिसे लासानी व हमदर्द ज़माना।
सुनता हूँ तेरे ग़म का मैं मुद्दत से तराना॥
मैं आजिज़ो लाचार हूँ हुक्म कर नहीं सक्ता।
गो तेरा ही हूँ! तेरा भी दम भर नहीं सक्ता॥ १२॥
इस गुलशने हस्ती में यही फल थे तुम्हारे।
लिक्खे थे बिधाता ने यही लेख तुम्हारे॥
रो रो के उतारेगी तू अफ़शां के सितारे।
और चूड़ा सुहागों का चिता पै तू उतारे॥
तू बदले में शहनाई के सरकूबी सुनेगी।
फूलों की एवज़ रश्कचमन फूल चुनेगी॥ १३॥
जो तुझ पै हुई है वह नहीं कोई निराली।
कोई भी तो घर होगा न इस होनी से ख़ाली॥
जो आज चमन में है भरी फूलों से डाली।
कल देखना होती है वही फूलों से ख़ाली॥
जिस शाख़ बरहना को बहार आके खिलाये।
लाज़िम है उसे फ़स्ले ख़िज़ां भूल न जाये॥ १४॥

जाने का मुझे अपने नहीं रंज ज़रा है।
पर ख़ौफ़ तेरा जानेजहां मुझको बड़ा है॥
जिस क़ौम में है तू वह अजब अहलेजफ़ा है।
नय शर्मही है इस को न कुछ ख़ौफ़ ख़ुदा है॥

है नाला गरीबों का इसे एक तराना।
है अश्क यतीमों का इसे मोती का दाना॥ १५॥

नय अक़्ल बतावे जो इसे, इसको यह माने।
नय शास्त्र और पाक किताबों को यह जाने॥
नय मनु महाराज के लिक्खे को बखाने।
नय वेदों के अहकाम को अहकाम यह माने॥

आई है अजब जिहलो जिहालत के ये बस में।
मनमानी बना रक्खी हैं इस क़ौम ने रस्में॥ १६॥

जो रंज तुझे पहुंचा है कब मुझ से निहां है।
सूरत से तेरी हाले दिलेज़ार अयां है॥
आहों से तेरी, दिल में मेरे उठता धुआं है।
लेकिन ऐ मेरी जान, यह बेसूद फ़िगां है॥

तहरीर क़ज़ा आंसुओं से मिटती नहीं है।
आहों से कभी फ़ौजे अलम छुटती नहीं है॥ १७॥

मैं चाहता कब हूं कि तुझे ताने दिलाऊँ।
मैं चाहता कब हूं कि अक़ारिब को रुलाऊं॥
मैं चाहता कब हूं कि इसी उम्र में जाऊं।
मैं चाहता कब हूं कि तुझे छोड़ के जाऊं॥

लेकिन मेरी जां ! इस में नहीं मेरी ख़ता है।
मैं आने पर मजबूर हूं यह हुक्म क़ज़ा है ॥ १८ ॥

गो आलमे बेहोशी में थी दर्द रसीदा।
इस आखिरी फ़िक़रे से हुआ और इसे सदमा ॥
इस सदमे के लगते ही गिरा और कलेजा।
गिरते ही कलेजे के बिगड़ने लगा नक़्शा ॥
मुंह ज़र्द हुआ ! नबज़ें छुटीं ! रिक़्क़ते तारी।
और देखते ही देखते दुखिया भी सिधारी ॥ १९ ॥

ऐ नाज़रीन ! क्या यासोक़लक़ का है यह मंज़र ?
दिल पानी हुआ जाता है ! दो लाशें बराबर !!!
यह कबकदरी है तो है वह माहे मुनव्वर।
दोनों की मुहब्बत तुली कांटे में बराबर ॥
महबूबो मुहब कोई अजल ने नहीं छोड़ा।
वह कौनसा रिश्ता है जो इसने नहीं तोड़ा ॥ २० ॥

ऐ भारतियो ! हाय ये अन्धेर नहीं है।
औलाद पै भी ज़ुल्म सुना तुमने कहीं है ॥
तुमने तो समझ रक्खा है जो कुछ है यही है।
नय हशर का है ख़ौफ़ न दावर का यक़ीं है ॥
मासूम का यह खून न दामन से छुटेगा।
धुलने से धुलेगा न मिटाने से मिटेगा ॥ २१ ॥

कहते हो कि है पुनर्बिवाह बायसे खिजालत।
कुनबे के लिये फ़ेल है यह बायसे नफ़रत ॥

है चादरे अस्मत के लिये दाग निदामत।
हां सोचिएगा जब तो नहीं आती है ग़ैरत !! (कब)
जब कोर्ट में पुलीस से चालान होते हैं।
किस वक्त ? कहां ? कौन के जब सुनते हो फ़िक़रे॥
गो लिखी हुई वेदों में है साफ़ इजाज़त।
और की है मनु जीने भी खूब इसकी हिदायत॥
और अक्ल ने भी दी है इसी ही की शहादत।
हैरान हूं फिर आप को है किस लिये नफ़रत॥
ये याद रहे आप को जीते ही मरोगे।
बेवाओं की शादी में जो ताख़ीर करोगे॥ २३॥

और बेवा भी वह जिसने नहीं देखा ज़माना।
है ख्वेश बेगाना में अभी एक यगाना॥
बातों को समझती है जो मर्गूब तराना।
शादी है अभी जिस के लिये एक फ़िसाना॥
अलक़िस्सा वह बेचारी जो मासूम रही है।
और कुदरती जज़बात से महरूम रही है॥ २४॥

जिस क़ौम का यह हाल हो क्या उसको सुनाना।
मुमकिन ही नहीं ज़ालिमों से दाद का पाना॥
सोते का तो है मुश्किलेमन सहिल जगाना।
कौन उसको जगाये जो करे महिज़ बहाना॥
फिर याद रहे करते हैं जो हीले बहाने।
किश्ती नहीं लगेगी कभी उनकी ठिकाने॥ २५॥

हक़दारों का यूं बहरे खुदा हक़ न गवांओ ।
महकूमों पै अहकाम तहद्दी न चलाओ ॥
मंझधार में है नाव ज़रा ज़ोर दिखाओ ।
बेवाओं की शादी में न अब देर लगाओ ॥
ऐ मुहसनो अर्बाब सितम की कोई हद है ।
कुछ करके दिखाओ कि यही वक्त मदद है ॥ २६ ॥

भजन ८१ ।

दोहा–जिस घर में नहीं होत है, नारिन को सत्कार ।
कहत मनू निज शास्त्र में, सो घर होत उजार ॥
भारतवासी आज यह, मनु का वचन भुलाय ।
भांति भांति के करत हैं, अबलन पर अन्याय ॥

टेक–इन भारत की अबलान पर, हा ! कैसा ज़ुल्म होता है ।
जन्मतही सब शोक मनाते, पालन में नहीं प्रेम दिखाते ॥
विद्या तक नहीं इन्हें पढ़ाते, व्याह करत नादान पर ।
मुख पै कलंक होता है ॥ हा ! ० १ ॥

बूढ़े बालक और प्रमादी, बिना मेल की करते शादी ।
फिर हो जब उनकी बर्बादी, इस कुरीति अज्ञान पर ॥
सारा कुटुम्ब रोता है ॥ हा ! ० २ ॥

अनमिल से मन मिले न भाई, नित दोनो में होय लड़ाई ।
घर की फूट ने लंका ढाई । वेश्या टिकी मकान पर ।
पति उसके संग सोता है ॥ हा ! ० ३ ॥

आतिश में पति सड़कर मरगये, तिय के माग पर पत्थर धरगये।
बाली उम्र में विधवा करगये, आफ़त उसकी जान पर।
खाती भारी गोता है ॥ हा० ! ४ ॥
रो २ कैसे आयू काटे, मन मतंग अबला कैसे डाटे।
लखि यह दशा बज्र हिय फाटे, जो बीतत विधवान पर।
लखि दुश्मन भी रोता है ! ० ५ ॥
अबलन पर मत जुल्म गुज़ारो, शुभ शिक्षा दे इन्हें सुधारो।
अपना धर्म बलदेव सम्भारो, हरदम राखो ध्यान पर।
निज धर्म ही दुख खोता है ॥ हा ! ० ६ ॥

होली ८२

अब तक होली सो होली, समुझ अब खेलिये होली।
आयो बसन्त सुखद यह सजनी, देखो नैन ज़रा खोली।
सुखद सुहाग फाग हाय तबही, भरो सुमति हिय झोली ॥
मलो रुचि से रस रोली ॥ अब तक० १ ॥
वशी करण यही मन्त्र जगत में, सीखो सरल मृदुबोली।
मलि गुलाल सदाचार सुभग शुचि, प्रेम प्रीति रंग घोली ॥
रंगो पिय को हिय खोली ॥ अब तक० २ ॥
सावित्री द्रौपदी दमयन्ती, खेल गईं जैसी होली।
सीता ने खेली राम रघुबर से, बड़ी २ बिपति बिलोली ॥
धर्म से तनक न डोली ॥ अब तक० ३ ॥
हो वासुदेव बसन्त मुबारक, पाई जो पचरँग चोली।

सो मत पाप पंक में सानो, मानो ये सिखवन मोली ॥
बनो बनिता मत भोली ॥ अब तक० ४ ॥

भजन ८३

क्या अब भी नहीं उठोगी, बहिनो सोई हो पांव पसार।
सीता को हुआ बनबास, सहा सब त्रास, न कोई पास, सोच नहीं कीना। विद्या ने जिसका सभी दुःख हर लीना ॥ भई कृष्णाकुमारी एक, धर्म की टेक, कि जिस ने विवेक, पिता हित कीना। क्या नहीं उमड़े जी, जिस ने प्राण तज दीना ॥

चौपाई।

दुर्गावती अहिल्या बाई। दमयन्ती कुन्ती समुदाई ॥
जिनकी कीरति जगमें छाई। दिखलागई अपनी पंडिताई ॥

शेर।

शस्त्र विद्या में कोई थी शास्त्र में कोई चतुर।
ब्रह्म विद्या में कोई कोई रसायन की थीं घर ॥
कोई वैद्यक शिल्प में व्याकरण ज्योतिषमें कोई।
धनुरविद्या गणित में पुरुषों से बाज़ी ले गई ॥

लीलावती भोज की रानी। थी गणित शास्त्र की खानी।
पुस्तक रची है लासानी। तजे मान गणित अभिमानी ॥
अरी तुम होकर अज्ञान, सोवो नादान, पड़ी क्या बान। हाय क्या तुम नहीं जानो सार, जने कितने दुख भरोगी ॥ क्या अब० ॥ १ ॥

एक विद्योत्तमा महान, रूप गुण खान, महा विद्वान,थी जब वह क्वांरी। नहीं शास्त्रार्थ में विद्वानों से हारी॥

विप्रों ने मिल छल किया, मूढ़ संग लिया, मौन कर दिया। है पंडित भारी। सिखला पढ़ाय कर लाये सभा मँझारी॥

चौपाई।

कन्याने एक अंगुली उठाई। आशय था एक ईश है भाई॥
मूढ़ ने अपनी आंख बचाई। झटपट दो अंगुली दिखलाई॥

शैर।

पांच कन्या ने उठाई पंच इन्द्री वश में हैं।
मूढ़ ने थप्पड़ समझ मुक्का दिखा संकेत में॥
पहली दो अंगुलियों से समझा था माया ईश को।
अब यह समझी इन्द्रियां बश में हैं मुट्ठी बन्द जो॥
बस इतने पर वह हारी। और ब्याह की की तैयारी॥
फिर खुला जाल यह भारी। नहीं घबड़ाई वह नारी॥

रख उसने अपने पास, ज्ञान में फांस, सो कालीदास, नाम जिसका जाने संसार, क्या उसकी रीस करोगी॥ क्या० ॥२॥

मण्डन अरु शंकर गुनी, शास्त्र के धनी, तर्क की ठनी, बाद हुआ भारी। तहां उभय भारती तिय मध्यस्थ विचारी॥

यह थी मंडन की नार जाने संसार, मंगा दो हार, दोन गले डारी। जो सूखे पहिले हार कि उसकी बारी॥

चौपाई ।

मंडन मिश्र से प्रथम पुकारा । पतिजी गिरगया पक्ष तुम्हारा ॥
फिर यह कहा पे शंकर स्वामी । हूँ अर्धांगी पति अनुगामी ॥

शैर ।

पती जी जीते है मेरे मुझ को भी अब जीत लो ।
तबही समझो जीत को नहीं जीत हो नहिं हार हो ॥
आप मेरे सामने इस भांति ही उद्यत रहें ।
अंग आधे को न जीता आप इस मुख से कहें ॥
शंकर जो करें बहाना । पर उसने एक न माना ।
विद्या को प्रश्न से जाना । नहीं उत्तर बना निदाना ॥

ऐसी यह विदुषी भई, नाम कर गई, कीर्ति जग छाई, अरी कुछ मन में लेउ बिचार, गुण उस के चित्त धरोगी ॥ क्या०॥३॥

कुछ अपनी दशा निहार, न जानो सार, शास्त्र आगार, में क्या २ भरा है । तुम ने पति देखा कहा जा वो बेजा है ॥

जानो नहीं तुम निज धर्म, व अपने कर्म, तुम्हारा मर्म, नहीं खुलता है । नहीं खुलीं पाठशालायें जो ऐसी दशा है ॥

चौपाई ।

गिनती हा ! सौ तक नहीं आवे । क्या अचरज जो धोखा खावे ॥
धर्म कर्म फिर क्या चिड़िया है । हा इसका नहीं बोध किया है॥

शेर ।

वे चतुर शास्त्रार्थ में अरु तुम हो लड़ने में चतुर ।
ऐसी कर के बराबरी तुम ने उजाड़े बड़े घर ॥
तुम तो पूजो ताजिये क़बरें व पत्थर ईंट को ।
पती को पूजे थीं वह सीता को क्यों न देखलो ॥
अब भी कुछ होश में आओ । पति ही की दासी कहाओ ।
जो कोइ उसे कर लाओ । तब ही तुम सतपद पाओ ॥
पढ़कर पुनि करो विचार, शास्त्र को सार, है यह तैयार, वेद रवि विद्या का भण्डार, कह पाठक उदित लखोगी ॥ क्या० ॥४॥

भजन ८४

पतिव्रत है धर्म तुम्हार, निवाहो सुख पाओ ॥ टेक ॥
पति की आज्ञा को सिर धरना पितृयज्ञ नित घर में करना ।
देव ऋषीऋण चहिये टारना, अतिथि पूज हरबार ॥ नि० ॥१॥
प्रातःकाल स्नान कराना, सन्ध्या होम में मदद दिलाना ।
पीछे सुन्दर पाक बनाना, दिनचर्य्या अनुसार ॥ नि० ॥ २ ॥
सदा बोलना मीठी बानी, प्रेम भक्ति पूजा की सानी ।
विनय शील से वस्तु मंगानी, जो चाहिये घर बार ॥ नि० ॥ ३ ॥
दूर देश से आयें जब वोरी, करो नमस्ते दोउ करजोरी ।
कुशल पूँछना मार्ग बहोरी, कैसे रहे भरतार ॥ नि० ॥ ४ ॥
मित्र समझकर नित हित करना, है तो बराबर अधिक समझना ।
पाठक इस का ध्यान भी धरना, बालक सुधरें तुम्हार ॥नि० ॥५॥

दादरा ८५

मेरी भोली सी बहनो ! इधर कान करोरी ।
वेदों का सूरज यह कितना चढ़ा है ।
जिसने जगत् को प्रकाशित किया है ॥
मत सुन्दर समय को वीरान करोरी ॥ मेरी० ॥ १ ॥
पुरुषो ने उठकर सवेरे से देखो ।
कैसे बनाये हैं गुरुकुल ये पेखो ॥
तुम भी कन्या गुरुकुल का सामान करोरी ॥ मेरी० ॥२॥
लाखों बहिन का मिटा है अंधेरा ।
तुम को क्या ? आलस की निद्रा ने घेरा ॥
उठ विद्या के अमृत को पान करोरी ॥ मेरी० ॥ ३ ॥
तैमूर नादिर ज़माना नहीं है ।
जानो हो सब कुछ बताना नहीं है ॥
बस सच्ची तरक्की का ध्यान करोरी ॥ मेरी० ॥ ४ ॥
साहस व हिम्मत को आगे बढ़ाओ ।
वेदों की विद्यायें जग में फैलाओ ॥
कह पाठक शुभकर्मों में दान करोरी ॥ मेरी ॥ ५ ॥

दादरा ८६

तुमने बुलाये भाभी स्याने, मैं आनगई ।
भैया जी आवेंगे तब उन से कहूंगी, भाभी ये कहना न माने ॥ मैं० ॥ १ ॥

पन्नी सराई मिठाई मँगाई, की है चौराहे रवाने ॥ मैं० ॥२॥
लोटे का पानी चौराहे में लौटा, अब लगी बातें
बनाने ॥ मैं० ॥ ३ ॥
डोरा कराया गले में बँधाया, भैया जी धोखा न
जाने ॥ मैं० ॥ ४ ॥
मुर्गा मँगाया उस की हत्या कराई, करना जी कैसे
बहाने ॥ मैं० ॥ ५ ॥
पाठक कहे देख आती है बदबू, राई के दाने
जलाने ॥ मैं० ॥ ६ ॥

दादरा ८७

अब से न स्याने बुलाऊं, मैं बाज़ आई ।
अच्छी बीबी री मत कहिये पती से ।
हाथों को जोड़ सिरनाऊं, मैं बाज़ आई ॥ १ ॥
जैसे कहोगी वैसे ही करूंगी ।
तुम्हारी क़सम मैं तो खाऊं, मैं बाज़ आई ॥ २ ॥
चाहे सुख हो चाहे दुःख हो ।
पर नहीं धोखे में आऊं, मैं बाज़ आई ॥ ३ ॥
सयडे मुसगडों ने मुझे बहकायां ।
अब कर मल पछताऊं, मैं बाज़ आई ॥ ४ ॥
भूतों को भेतों को अब से न मानूं ।
मीरा की जात नहीं जाऊं, मै बाज़ आई ॥ ५ ॥

स्याने दिवाने जो सर को हिलावें ।
इनके न फन्दे में आऊं, मै बाज़ आई ॥ ६ ॥
पोपों के फन्दे से तुमने बचाया ।
जन्म २ गुण गाऊं, मैं बाज़ आई ॥ ७ ॥
अब से करूंगी मै ईश्वर की भक्ती ।
सन्ध्या और हवन रचाऊं, मै बाज़ आई ॥ ८ ॥
वासुदेव की यह शिक्षा मानूं ।
उनकाही भजन सुनाऊं, मैं बाज़ आई ॥ ९ ॥

ख्याल ८८

होश में आकर हुस्न परस्तों दिलको लगाना अय भाई ।
इश्क की तह में छिपे हुये है, ग़मो मुसीबत रुसवाई ॥
मजनूं हुआ लैला पर आशिक, रो रो जिगर खूं को खाया ।
खाक किया सब जिस्म को अपने, जहां में पागल कहलाया ॥
फिर शीरीं फ़रहाद का क़िस्सा, सब के सुनने में आया ।
ग़रज़ कि जिसने किया इश्क़, आखिर में वोही पछताया ॥
लाखा हुये बर्बाद इश्क़ में, खराब मिट्टी करवाई ।
इश्क की तह में छुपे हुये हैं ग़मो० ॥ १ ॥
जबकि साहिबे हुस्न आप की, निगाह कोई पड़ जाता है ।
मिली आंख से आंख तो दिल पै, उसका अक्स छो जाता है ॥
हमकलाम होते ही असर जादू सा तुम्हें दिखलाता है ।
उसके सिवा कोई और तुम्हें फिर देखा भी नहिं भाता है ॥

बेवकूफ बेदीन बेईमां बनोगे बेशक सौदाई ।
इश्क की तह में छिपे हुए हैं ॥ रामो० २ ॥

तुम्हारे दिल की असली हक़ीक़त उनको अयां होजावेगी ।
उसी समय से उनके दिल में घनी हिमाक़त आवेगी ॥
तुम्हारी जां पर रक़ीब होंगे मौत तुम्हें तब भावेगी ।
आग लगी सारे शरीर में फेर न बुझने पावेगी ॥
खून हुये इसतरह हज़ारों मरगये लाखों विष खाई ।
इश्क की तह में छिपे हुये हैं ॥ रामो० ३ ॥

बदकारी का खिताब पाना तरह २ के ग़म खाना ।
जीते हुये जलाना निजको शिक्षा भली नहीं पाना ॥
बेईमान बेदीन कहाना खुशी से दोजख में जाना ।
है यह तुम्हें ग्रहण तो बेशक इश्क के कूंचे में आना ॥
न हो यक़ीं बल्देव का तुमको तो बेशक लो अज़माई ।
इश्क की तह में छिपे हुये हैं ॥ रामो० ४ ॥

भजन ८६

मांसाहारी लोगों ने भारत में विघ्न मचा दिये ।

गौ माता सा दुखी न कोई । घी और दूध कहां से होई ।
बल, विचार, प्रिय मेधा खोई । दुर्बल निपट बना दिये ।
दुष्टाचारी लोगों ने ॥ भारत० ॥१॥

हा ! श्वानों का पालन करते । गौ रक्षा में चित्त न धरते ।

हिंसा करने से नहिं डरते। खट खट छुरे चला दिये।
आफ़त तारी लोगों ने ॥ भारत० ॥२॥

जिनसे है दुनिया का पालन। उन्हें मार क्या सुख हो लालन।
फँस गई प्रजा विपत के जालन। उत्तम पशु खपा दिये।
क्या मन धारी लोगों ने ॥ भारत० ॥३॥

मृगा उछलते दृष्टि न आवें। दरियाओं में मीन न पावें।
मोर कहां से कूक सुनावें। मार मार के ढादिये।
विपता डारी लोगों ने ॥ भारत० ॥४॥

क़बूतरों के गोल रहे ना। तीतर करत कलोल रहे ना।
शुक मैना अनमोल रहे ना। हरियल गर्द मिला दिये।
पँढ़की मारी लोगो ने ॥ भारत० ॥५॥

अजा भेड़ दुम्बे नहिं छोड़े। ऊन के होगये जग में तोड़े।
कहां से बनेंगे ऊनी जोड़े। महँगे मोल बिका दिये।
कीनी ख्वारी लोगों ने ॥ भारत० ॥६॥

पाढ़े नील गाय हनि डारे। ससे स्यार मुर्ग़ गोह बेचारे।
ग़रीब कच्छप नटों ने मारे। ऐसे त्रास दिखा दिये।
दुख दे भारी लोगों ने ॥ भारत० ॥७॥

जब सब जन्तू निबड़ जायेंगे। सोचो तो फिर ये क्या खायेंगे।
कह घीसा सब सुख नसायेंगे। सो कारण मैं गा दिये।
सुन लई सारे लोगों ने ॥ भारत० ॥८॥

दादरा ६०

कैसा बिगड़ा ज़माने का चालो चलन ॥ टेक ॥

स्वांग थियेटर में करें खर्च दिलो जां से ज़र।
दीन बेचारे मरें भूखो नहीं उनकी खबर ॥
साथ कमज़र्फ़ों के उड़ते हैं रात दिन सागर।
फ़िज़ूल खर्चीमें लाला ने लुटाया सब घर ॥
पाखंडी, मतिमन्दी, ये रण्डी के नाचों में होंरहे मगन ॥ कै० ॥

सदहा दीवाने बने फिरते हैं नौटंकी पर।
ज़नाना भेस बनाना पहिन पहिन ज़ेवर ॥
हैफ़ सद हैफ़ नहीं ध्यान है पमालों पर।
वाह ! अफ़सोस खुश हों ऐसे चाल ढालों पर ॥
अज्ञानी, अभिमानी, मनमानी, शैतानी, यह करते कथन ॥ कै०॥

अनेक बाबा भी देखे हैं जार बिलकुल हैं।
अपढ़ ढोंग रचाये गँवार बिलकुल हैं ॥
वेद आज्ञा से भी बेशक फ़रार बिलकुल हैं।
हमने देखा तो वह मतलब के यार बिलकुल हैं ॥
व्यभिचारी, हमारी, तुम्हारी अनारी, लगें बहिनें तकन ॥ कै० ॥

सच्चे जगदीश को तो दिल से भुला रक्खा है।
जखैया प्रेतों को भूतों को मना रक्खा है ॥
मोक्ष पदवी को भी मुट्ठी में दबा रक्खा है।

अय भुन्नीलाल यह अन्धेर मचा रक्खा है ॥
मूर्ख नहीं व नालों को समझे हैं तारन तरन ॥ कै० ॥

भजन ६१

तू कहीं घूम ले प्यारे, बिन साधन मोक्ष मिले ना ॥ टेक ॥
नहीं मोक्ष यमुना जाने से, नहीं मोक्ष गंगा न्हाने से ।
पुष्कर तीरथ फिर आने से, होत नहीं निस्तारे ॥
कर्मों का भोग टलेना ॥ बिन० ॥१॥

तपोभूमि में ना तपने से, करकी मनका ना जपने से ।
नहीं हिमालय के खपने से, मिलें मोक्ष के द्वारे ॥
संसारी फांस खुलेना ॥ बिन० ॥२॥

चाहे रामेश्वर हो आओ, चाहे जगन्नाथ को जाओ ।
कुरुक्षेत्र में द्रव्य लुटाओ, सफल न जन्म तुम्हारे ॥
झूठा व्यवहार चलेना ॥ बिन० ॥३॥

कोई दर्शन से मोक्ष बतावे, घूम २ कोई उम्र गँवावे ।
गंगा सहाय सच्ची दरशावे, प्रभु के बिना बिचारे ॥
मन की कामना फलेना ॥ बिन० ॥४॥

भजन ६२

गलती है तेरी तलाश में, जड़ को चेतन माना है ॥ टेक ॥
जड़ की चेतन मान रहा है, तुझ में ना कुछ ज्ञान रहा है ।

दुख में सुख तू जान रहा है, झूठे भोग विलास में।
नहिं हर को पहिचाना है ॥ जड़० १ ॥
अपना नहिं समझा निस्तारा, तीरथ करने मूढ़ सिधारा।
मन अपने से भ्रम न बिसारा, लगा है झूठी आस में।
पहना गुरु का बाना है ॥ जड़० २ ॥
निशदिन भूला पोप जाल में, सत्य वस्तु नहिं जमी ख्याल में।
अपस्वारथ के फंसा जाल में, समझा प्रभु नहिं पास में।
उसे दूरवाला जाना है ॥ जड़० ३ ॥
जगदीश्वर की सुध बिसराई, बड़ पीपल लिये ईश बनाई।
बर्मा कहे प्रभु के गुण गाई, लग भक्ती की चास में।
मुश्किल से जनम पाना है ॥ जड़० ४ ॥

भजन ६३

वेद सनातन त्यागे, मित्रो झूठे रचे पुरान।
इनमें मिथ्या लिखी कहानी, लोगों ने सांची कर जानी।
सब नर नारि बने अज्ञानी, हो गये पशू समान ॥ वेद० १ ॥
कर उपदेश झूठ का जारी, वेद विरुद्ध बने नर नारी।
भरतखण्ड की इज्जत सारी, खोकर बने नादान ॥ वेद० २ ॥
पोपों ने कीनी चालांकी, धर्म यहां पर रहा न बाकी।
जड़ वस्तू की कराई झांकी, बतला के भगवान ॥ वेद० ३ ॥
बेहोशी को त्यागो भाई, बन आओ श्रुतिमत अनुयायी।
गंगा सहाय बड़ा सुखदाई, वेद धर्म का ज्ञान ॥ वेद० ४ ॥

भजन ९४

पोपो का ज्ञान देखो भारतवासी ।
ब्रह्मा को दोष लगाया, कन्या पर चित्त चलाया ।
कहे भागवत पुराण ॥ देखो० १ ॥
विष्णू को छली बताया, वृन्दा का सत्त डिगाया ।
कहे यह पद्मपुराण ॥ देखो० २ ॥
शिव को विषयी ठहराया, मोहनी के पीछे धाया ।
पढ़ो भागवत पुराण ॥ देखो० ३ ॥
शिवपुराण यूं फर्मायें, शिव नंगे होकर धाये ।
ऋषी पत्नी हैरान ॥ देखो० ४ ॥
गोपाल सहस्सरनामी, वह कृष्ण को कहता कामी ।
चोर जारों के प्रधान ॥ देखो० ५ ॥
पुस्तक जो बाल्मीकी की, गति, इन्द्र अहिल्या जी की ।
करी कैसी व्याख्यान ॥ देखो० ६ ॥
मै कहां तक तुम्हें सुनाऊँ निर्दोष कोई नही पाऊं ।
जो हैं पोपो के महान ॥ देखो० ७ ॥
यह राधाशरण है गावे, पोपो को शर्म नही आवे ।
किया कैसा अपमान ॥ देखो० ८ ॥

भजन ९५

सनातनधर्म और आर्य समाजो में जो अनबन है ।
जहां तक हमने सोचा है, अविद्या इसका कारन है ॥

वह कहते हैं धरम वह है, जो लिक्खा है पुराणों में।
यह बतलाते धर्म उसको, कि जो वेदों में वर्णन है॥
वह बतलाते महीधर, सायणा के भाष्य को सच्चा।
यह कहते हैं कि उन में, वाममार्ग का निरूपन है॥
वह बरसो की भी बातों को, सनातन धर्म बतलावें।
यह कहते आदि सृष्टि से, जो है वह ही सनातन है॥
वह कहते हैं कि परमेश्वर, जनमता और मरता है।
यह कहते हैं नहीं उसके लिये कोई भी बन्धन है॥
वह कहते मूर्ति पूजन को, ज़रिया मन लगाने का।
यह बतलाते है ज़रिया इसका, केवल योग साधन है॥
वह कहते है कि परमेश्वर है, मन्दिर और शिवालों में।
यह बतलाते कि उसका ज़र्रा से ज़र्रा भी मस्कन है॥
वह कहते है मिले ईश्वर, महिज़ घण्टा हिलाने से।
यह बतलाते नहीं बिन योग, उसका होता दर्शन है॥
वह कहते हैं कि गंगा से, कटे है मैल पापों का।
यह कहते हैं कि जल से, शुद्ध होसक्ता फ़क़त तन है॥
हव कहते हैं कि मुर्दा आनकर जी में कलागत को।
यह कहते हैं कि ज़िन्दाही, फ़क़त कर सक्ता भोजन है॥
वह कहते हैं जन्म से ही ब्राह्मण, गो निरक्षर हो।
यह कहते ब्रह्म को जो जानले, वहही ब्राह्मण है॥
वह कहते हैं न खाने से, मिले बैकुण्ठ में बासा।
यह कहते हैं न खाना, सिर्फ़ बहुरे राहतेतन है॥

वह बतलाते हैं तीरथ, आबजा फिरने व लुटने को।
यह कहते हैं बड़ा तीरथ, जो यम नियमों का पालन है॥
वह कहते हैं पशूवध यज्ञ के मोके पै जाइज है।
यह बतलाते कदापी भी नहीं यह फेल अहसन है॥
वह बतलाते सनातन पीर सैयद ताजिया पूजा।
यह कहते हैं कि यह हरकत सरासर धर्म खण्डन है॥
वह बतलाते हैं नौ दस साल में बच्चों का ब्याह करना।
यह कहते हैं कि ऐसा ब्याह बल बुद्धि का दुश्मन है॥
वह बतलाते सनातन ब्याह में रंडी नचाने को।
यह कहते हैं कि यह व्यभिचार बदकारी का मखज़न है॥
वह कहते हैं रवा है बाल बिधवाओं का तड़पाना।
यह बतलाते कि बस यह नर्क में जाने का लक्षन है॥
वह कहते हैं समुन्दर यात्रा को फेल नाजाइज।
यह कहते हैं रवा हर तौर से देशों का भ्रमन है॥
वह कहते हैं नहीं जाइज है बिलकुल स्त्री शिक्षा।
यह कहते हैं कि नारी का बड़ा विद्याही भूषन है॥
बिना विद्या के सालिगराम खुलने की नहीं हर्गिज़।
जो इन दोनों फ़रीक़ों में पड़ी इस वक्त उलझन है॥

भजन ९६

दयानन्द दे गये ज्ञान गुदड़िया।
रच सत्यार्थ, कर शास्त्रार्थ, पोप पाखण्ड सब जग से

छुटा गये ॥दया० १ ॥ नियम दिये दश जग हितकारी, देश देश में समाजें बना गये ॥ दया० २ ॥ सोवत थे सब गाढ़ नींद में, वेद नाद कर सब को जगा गये ॥दया० ३॥ प्रागदत्त धन स्वामी जी को, भूले हुओं को सत मार्ग बता गये ॥ दया० ४ ॥

गजल ६७

किया तुमने स्वामी जी खूब ही, जो ये वेद मत का प्रचार है।
वह जो सत्य धर्म्म था डूबता, लिया उसको तुम ने उबार है॥
यह तो हौसिला था हजूर का, दिया वेदमत को जो यूं चला।
लिया धोखेबाज़ों से बस बचा, तुम्हें धन्यवाद हज़ार है॥
वह जो स्वार्थियों ने जान कर, थीं उड़ाई गप्पें बेबालों पर।
किये उनके आपने नीचे सर. क्या नहीं यह कुछ उपकार है॥
जो हमारे माल उड़ाते थे, और हमें ही गप्पें सुनाते थे।
कहीं भूत प्रेत पुजाते थे, अब क़लील उनका शुमार है॥
कहीं राम कृष्ण को बरमला, था बताया छिनला व चोरटा।
दिया तुमने दोष वह सब मिटा, तुम्हें धन्यवाद हज़ार है॥
वह जो मूरखता का अन्धेरा सा, था जो भारतवर्ष पै छा रहा।
किया नष्ट आपने सर्वथा, नहीं बाक़ी उसका गुबार है॥
गौ सामने थी पुकारती, नहीं देता साथ था कोई ज़री।
जो विपति हरी तो तुम्हीं हरी, दिया उनका दुःख निवार है॥
जो हैं आर्य उनसे यह अर्ज़ है, हों सहाय दीनों पै फ़र्ज़ है।
तजें द्वेष यह बुरा मर्ज़ है, यही नेकमर्दों का कार है॥

ज़रा सोचिये तो यह बरमला, थी कमी उसी ही के घरमें क्या।
न दुखी न मूर्ख दरिद्री था, हुआ हम पर से जो निसार है॥
उसे जाहिलों ने तो तंग किया, कि वह छोड़ देवे यह रास्ता।
पर धरा न पीछे को उस ने पा, किया दुश्मनों का शिकार है॥
दयानन्द स्वामी न होता जो, तो था सुनता कौन पुकार को।
छली लूट खाते दयार को, नहीं जिनका अब एतबार है॥
यह स्वदेश दशा विचार कर, हो तैयार बांध कर अब कमर।
नहीं वक्त सोने का नाम वर, हुआ मुल्क आप का ख्वार है॥
जो बुरा हो दास ने कुछ कहा उसे मूर्ख जान के कर क्षमा।
नहीं शायरी है वह जानता, निरा वह तो एक गँवार है॥

दादरा ६८

क्या २ कर दिखलाया ऋषी ने-टेक।
कैसे उत्तम समाज बनाये, वेदों का भाष्य रचाया। ऋ०॥ १॥
जन्म से वर्ण जो हम माने थे. ये अभिमान मिटाया। ऋ०॥२॥
संस्कार जो उलट पुलट थे, उनको ठीक कराया। ऋ०॥ ३॥
चारों आश्रम जो भूले थे, उनका ध्यान दिलाया। ऋ०॥ ४॥
एक ओर थे बिछुरे भाई, उन को शुद्ध कराया। ऋ०॥ ५॥
माता बहिनें जहां मूर्खा थीं, उन को पठन बताया। ऋ०॥ ६॥
एक ओर खड़े रोते अनाथा, उन को छाती लगाया। ऋ०॥ ७॥
नन्हें का जो व्याह करें थे, बुरा था बन्द कराया। ऋ०॥ ८॥
काशी जा हम कुछ न पढ़े थे, अब गुरुकुल खुलवाया। ऋ०॥६॥
पाठक जहँ छाई अविद्या, विद्या प्रकाश दिखाया। ऋ०॥ १०॥

भजन ६६

यह उत्सव तुमको सालाना सदा शुभ हो सदा शुभ हो।
महा सुजनों का बुलवाना सदा शुभ हो सदा शुभ हो॥
हुई ध्रुव धर्म की रक्षा तुम्हारे सत्य कथनो से।
फिसल कर पांव जम जाना सदा शुभ हो सदा शुभ हो॥
हजारों को थे बहकाते मुसल्मां और ईसाई।
उन्हीं को पीक्षा दिखलाना सदा शुभ हो सदा शुभ हो॥
छुड़ा कर बाल विधवो को जो रोती या सिसकीं थीं।
बधिक से गौ का छुड़वाना सदा शुभ हो सदा शुभ हो॥
जो सन्तानों का रोका है लड़कपन में विवाह करना।
विद्या बल बुद्धि बढ़ जाना सदा शुभ हो सदा शुभ हो॥
अनाथों को जो देते हो अनाथालय के चन्दे में।
पढ़ाना खाना खिलवाना सदा शुभ हो सदा शुभ हो॥
खुला गुरुकुल जो है प्यारे है फल तुमरे परिश्रम का।
पुनः विद्या का फैलाना सदा शुभ हो सदा शुभ हो॥
जो मासिक चन्दा में देते कमाई सौवें हिस्से की।
उन्हीं को आर्य कहलाना सदा शुभ हो सदा शुभ हो॥
कमर कस वेग जुट जाओ दिखाओ अपने कर्तब को।
महा विद्यालय खुलवाना सदा शुभ हो सदा शुभ हो॥
बहादुर देश देशों में जिसे आर्य्यावर्त कहते हैं।
वो हिम्मत तुम को मर्दाना सदा शुभ हो सदा शुभ हो॥

प्रथम हुआ होम मन्त्रों से हुई फिर धर्म की चर्चा ।
पुनः ईश्वर का गुण गाना सदा शुभ हो सदा शुभ हो ॥
अमीचन्द वृष्टि अमृत की हुई है आज उत्सव में ।
खुशी के फूल बर्साना सदा शुभ हो सदा शुभ हो ॥

दादरा १००

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं ँ शान्तिः पृथिवी
शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः
शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं ँ
शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥
यजुः ।

टेक—आज घर शान्ति हुई, तुम गाओ मंगलचार ।
स्वस्तिवाचन और शान्ति पाठ सब ।
सुनकर लोग प्रसन्न हुये सब ॥
धन धन है कर्तार ॥ आज घर० १ ॥
हम सब को प्रभु शरण में लेओ ।
सारे ही सुख हमको देओ ॥
दुःख के मोचन हार ॥ आज घर० २ ॥

सुख दे हमको यह जग सारा ।
दुख होवे हम सब से न्यारा ॥
तीनों ताप प्रभु टार ॥ आज घर० ॥ ३ ॥

सूर्य्य चन्द्र और यह तारे ।
फूल वनस्पति जो हैं सारे ॥
दें सुख सर्व प्रकार ॥ आज घर० ॥ ४ ॥

अभयं मित्रादभयममित्रात् ।
अभयं ज्ञातादभयं परोक्षात् ॥
होवे अभय संसार आज घर० ॥ ५ ॥

द्यौः शान्तिः अन्तरिक्षं शान्तिः ।
वायुः शान्तिः पृथ्वी शान्तिः ॥
शान्ति जल की फुवार ॥ आज घर० ॥ ६ ॥

औषधिः शान्तिः वनस्पतिः शान्तिः ।
विश्वेदेवाः च ब्रह्म शान्तिः ।
शान्ति हो त्रय वार ॥ आज घर० ॥ ७ ॥

शान्तिरेधि सा मा शान्तिः ।
भौतिक अग्नि भी देवे शान्तिः ॥
हे दया के भण्डार ॥ आज घर० ॥ ८ ॥

पश्येम शरदः शतम् ।
जीवेम शरदः शतम् ॥
शुद्ध होवे व्यवहार ॥ आज घर० ॥ ९ ॥

भृणुयाम शरदः शतम् ।
अदीनाः स्याम शरदः शतम् ॥
होवें नहिं लाचार ॥ आज घर० ॥ १० ॥
सारे हिल मिल आनँद गाओ ।
आज दिन यह मुबारिक पाओ ॥
गले में फूलों के हार ॥ आज घर० ॥ ११ ॥

आर्य्य समाज के दश नियम ।

(आल्हा की ध्वनि में)

(१) सकल सत्य विद्या, विद्या से जो कुछ प्यारे जाना जाय ।
आदि मूल सबही कामन में, ईश्वर को लीजे ठहराय ॥ १ ॥
(२) जिसका नाम वेद प्रतिपादित, सत्य सनातन से ओंकार ।
उसको अजर, अमर, अविनाशी, समझ लीजिये हृदय विचार ॥२
वह न कभी वपु धारण करता, दिया इसे श्रुति ने निरधार ।
करो प्रेम से भक्ति उसी की होवे हम सब का उद्धार ॥ ३ ॥
(४) जो सच्ची विद्या वेदों की प्यारे पढ़ो प्रेम उर लाय ।
तो बच जाओ त्रिविध ताप से सज्जन रहे इसे समझाय ॥४॥
(५) धारो सदा सत्य को वीरो ! रहै असत्य का न लवलेश ।
सत्यवान पुरुषों का जग में, होता है सन्मान विशेष ॥ ५ ॥
(६) करो काम धर्म्मानुसार ही, करके सत्यासत्य विचार ।

सभी भांति मिट जाओगे तुम, जो न किया ऐसा स्वीकार ॥ ६ ॥
(७) सामाजिक अरु दैहिकात्मिक उन्नति कर रख पूरा ध्यान ।
भले प्रकार करो परमारथ, धर्म यही जग बीच महान ॥ ७ ॥
(८) यथा योग्य वर्ताव कीजिये, रख आपस में मेल मिलाप ।
तजो अविद्या-विद्या ही का, धारण है नाशक त्रय ताप ॥ ८ ॥
(९) है सब की उन्नति में अपनी उन्निति ही का ठीक विचार ।
स्वारथ साधक कहलाने से होगा नहीं मित्र ! उद्धार ॥ ९ ॥
(१०) सबके हितकारी नियमों के पालन में परतंत्र कहाय ।
छेदी लाल आर्य्य कहलाओ, खोओ मत शुभ अवसर पाय ॥ १० ॥

* इति *

वसु ऋतु ग्रह करतार, विक्रमाब्द शुभ भाद्रपद ।
'कर्ण' काव्य हित धार, पुस्तक दीनी शोध यह ॥



स्त्री-शिक्षा के प्रेमी ध्यान दें।

पता:—द्वारकाप्रसाद अत्तार,

संगीत-रत्न-प्रकाश

मुंशी द्वारकाप्रसाद अत्तार

प्रसिद्ध कवि "कर्ण" द्वारा संशोधित।

षष्ठवार | सन् १९१२ | मूल्य =)।

॥ ओ३म् ॥

मूल्य घटा दिया ! घटा दिया !! घटा दिया !!!

श्रीमान् महाराजाधिराज

पञ्चम् जार्ज

के

राजतिलक उत्सव के हर्ष में

संगीत-रत्न-प्रकाश

के

पाँचों भागों का मूल्य [illegible] से घटा कर ॥=) कर दिया
मूल्य प्रथम [illegible] द्वितीय -)॥ तृतीय -)॥ चतुर्थ -)॥
पञ्चम -)॥ पाँचों भाग सजिल्द [illegible]

आर्य सेवक—
द्वारकाप्रसाद अत्तार,
बाजार बहादुरगंज, शाहजहाँपुर, यू. पी.

ता० १२-१२-११

॥ ओ३म् ॥

मूल्यघटादिया ! घटादिया !! घटादिया!!!

श्रीमान्महाराजाधिराज

पञ्चम जार्ज

के

राजतिलक उत्सव के हर्ष में

[illegible]

के

पांचों भागों का मूल्य ॥।-) से घटा कर ॥=) कर दिया
मूल्य प्रथम भाग ≈) द्वितीय -)॥ तृतीय -)॥ चतुर्थ -॥।
पञ्चम =)॥ पांचों भाग सजिल्द नागरी ॥) उर्दू ॥)

ता० १२-१२-११

आर्य सेवक-
[illegible]
बाजारबहादुरगंज, शाहजहांपुर यू.पी

सूचीपत्र संगीतरत्नप्रकाश

❀ पंचम भाग ❀

——:※:○:※:——

❀ धन्यवाद ❀

महाशयवर ! परम पिता परमात्मा को धन्यवाद देने के पश्चात् आप सर्व सज्जनों को भी धन्यवाद है कि "संगीत रत्न प्रकाश" जैसी तुच्छ पुस्तक का आपने उम्मैद से बढ़कर मान किया, यह आप सर्व महानुभावों के सहर्ष ग्रहण करने का ही कारण है कि मैं इस पुस्तक को डेढ़लाख से भी अधिक सामाजिक दुनिया में फैला चुका हूँ।

विशेष धन्यवाद मैं अपने मित्र कुँवर कर्ण सिंह जी कवि स्थान चहँडौली प्रान्त अलीगढ़ को देता हूँ कि जिन्हों ने मेरे ऊपर ही नहीं किन्तु समस्त आर्य्य-जगत के ऊपर कृपा कर और महान कष्ट उठा कर कई मास के लगातार परिश्रम से "संगीतरत्न प्रकाश" के पाचों भागों से उन सब दोषों को दूर कर दिया है कि जो छन्द भ्रष्टता आदि के इन पर लगाये जाते थे, यही नहीं किन्तु अधिकतर मामूली और पुराने भजनों को निकाल कर नये २ बड़े ही उत्तम २ भजन आदि का उन की जगह दर्ज करके इन की शोभा को और भी बढ़ा दिया है, मुझे पूर्ण आशा है कि आप अब इनको देखकर बड़े ही प्रसन्न होंगे।

मैं बड़े हर्ष के साथ आप को ये भी सूचित करता हूँ कि मैंने १२ दिसम्बर सन् १९११ ई० से श्री महाराजाधिराज जार्ज पञ्चम के राजतिलक उत्सव के हर्ष में संगीतरत्नप्रकाश के पाचों भागों का मूल्य ॥।-) के स्थान में ॥≈) कर दिया है।

वैदिक धर्म का सेवक :—

द्वारकाप्रसाद अत्तार,

शाहजहांपुर, यू. पी.

* ओ३म् *

संगीतरत्नप्रकाश ।

* पंचमभाग *

(हरिगीतिका)

हे सप्त भू नव खण्ड रवि शशि आदि आदि चराचरम् ।
विश्वानि देव सदेव देवम् एक मेव गुणागरम् ॥
सर्वस्य जगदाधार जाननहार व्यापक सर्वकम् ।
सवितर विधाता सर्व अन्त प्रकाशकस्य प्रकाशकम् ॥
प्रभु आप मम त्रय तात शाप विलाप जगकारण करण ।
दुरितानि खान परासुव अथवा विथा कीजै हरण ॥
यदि सत्य भद्रम् मुक्तिपथ अंकित सुमति चित दीजिये ।
कल्याण पद अर्थात् तन्न कृपाल आसुव कीजिये ॥

भजन १

नहीं बुद्धि हमारी गावें महिमा तुम्हारी तुम साधु सुखकारी प्रभु ओ३म् ३ ।
दया भक्तन पै कीजे सब दुख हर लीजे निज भक्ती को दीजे प्रभु ओ३म् ३ ।

(हरिपद छन्द)

ऋषी ऋषीश्वर मुनी मुनीश्वर कभी न पावै पार ।
तुम को किस विधि गा सका हूँ मैं मतिमन्द गँवार ।
हारे योगी योगीश्वर सारे ऋषी ऋषीश्वर जाने महिमा
मुनीश्वर न ओ३म् ३ ॥
थलचर जलचर नभचर आदिक है जितने जग माहि ।
तुम बिन इनकी सुन्दर रचना दिखा सके कोउ नाहिं ॥
तुम ऐसे अपार कोऊ पावे न पार सब बैठे हैं हार ।
प्रभु ओ३म् ३ ॥
हे जगदीश्वर जग के स्वामी सदा सत्य सुख धाम ।
दीनदयालु कृपालु दयामय हे प्रभु पूरणकाम ॥
प्रभु तुम हो कर्तार सारे जग के अधार सभी कहते पुकार
प्रभु ओ३म् ३ ॥
शिवनारायण के तुम ही हो प्रभु पार लगावनहार ।
टूटी नैया बिन केवट के नाथ पड़ी मँझधार ॥
नहीं तुम बिन हमारा कोई जग में सहारा तुम्हीं जीवन
अधारा प्रभु ओ३म् ३ ॥

भजन २

ख्याल ।

ईश्वर के निज ओ३म नाम को अर्थ सहित गाना चहिये ।
सायं समय अरु प्रात काल नित ध्यान बीचा लाना चहिये ॥

ध्यान धारणा का शुभ अवसर कभी न टल जाना चाहिये
तेजसिंह नित शान्त चित्त रह सारा सुख पाना चहिये ॥

टेक-मय अर्थों के बोलो तुम ओ३म् ३।

तीन अक्षर का ओंकार, अकार उकार मकार, सज्जन करके विचार कहो ओ३म् ३।

सब में उत्तम है नाम, जपो सुबह और शाम, तज कर सब दुनियां के काम, गहो ओ३म् ३।

जैसे अकार से विराट अग्नि और विश्व जानो तुम ओ३म् ३।

अर्थ है विराट का खास, करता जग को प्रकाश, करके पूर्ण विश्वास, कहो ओ३म् ३।

अग्नि है ज्ञान स्वरूप, जिसकी उपमा अनूप, व्यापक छाया वा धूप, है वह ओ३म् ३।

बसें जिसमें सब देश, रहे कर हैं प्रवेश, प्रविष्ट होकर भी शेष, रहा ओ३म् ३।

इतने आकारसे जान, मत भूलेरे नादान, नित्य धरना चहिये ध्यान, कहकर ओ३म् ३।

हिरण्यगर्भः तेजस वायू, मानो उकार से तुम ओ३म् ३।

इस लिये हिरण्यगर्भ कहलाया, सबको गर्भ बीच ठहराया सब लोकों को आप बनाया, है वह ओ३म् ३।

करूं तेजस का अर्थ बयान, है प्रकाश स्वरूप जान, सब जग का प्रकाशक मान, है वह ओ३म् ३।

ये था अक्षर उकार, जिसका किया विस्तार, इस लिये नर और नारि, कहो ओ३म् ३।

मकार से ईश्वर और आदित्य है तीसरा प्राज्ञ कहो ओ३म्३।

ईश्वर सब जग का उत्पादक, सर्व शक्तिमान सहायक न्याय कारी सब फल दायक, है वह ओ३म् ३।

बस आदित्य का अर्थ यही है, जिसका हो कभी नाश नहीं है, यह वेदों मे साफ़ सही है, है वह ओ३म् ३।

यही अर्थ प्राज्ञ का जानो, इसको ज्ञान स्वरूप मानो, है वो ओ३म् ३।

इतने मकार से बतलाये, कथकर छन्दों के बिचगाये, फिर तुम क्यो गफ़लत में आये, कहो ओ३म् ३।

तेजसिंह जो मुक्ती चाहो, अर्थों सहित बोलो ओ३म् ३।

काटे स्वामी जी ने फन्द, पाके दया और आनन्द, अब तो बोलो मतिमन्द, मुख से ओ३म् ३॥

लावनी (चाल लँगड़ी) ३

ओ३म् नाम को त्याग और के गुण गाना नहिं चहिये।
ओ३म् नाम ही सार मंत्र है इसे भुलाना नहिं चहिये॥
बना धर्म का ध्यान रहे, अघ ओघ कमाना नहिं चहिये।
साधु सन्त गुरु देव आदि का चित्त दुखाना नहिं चहिये॥
पास द्रव्य नहीं होय, वृथा दानी कहलाना नहिं चहिये।
द्रव्य होय तो फेर दान से हाथ हटाना नहिं चहिये॥

दुर्जन का सहवास पाय निज नाम लजाना नहिं चहिये।
बढ़ती रहे महा मूर्खता दुर्बोध बढ़ाना नहिं चहिये॥
धर्म समझ गंगा यमुना के जल में न्हाना नहिं चहिये।
मन मानी कर वैदिक मत का नाम मिटाना नहिं चहिये॥
मन्दिर मठ बनवाय मूर्ति में ध्यान जमाना नहिं चहिये।
निराकार की तज उपासना दुःख उठाना नहिं चहिये॥

भजन ४

सबसे उत्तम ओ३म पियारे।

अकार उकार मकार मिला है, व्यापक है प्रति लोम, पियारे।
चाँद वो सूरज ज़िमीं सितारे, जिस ने बना बना कर धारे।
महिमा उनकी अपने में यह, भर नहिं सकता व्योम पियारे॥
धी बल सम्पति जो जग प्यारी, है जिसके अधिकार विचारी।
यदि इच्छुक हो पाने के तुम 'कृष्ण' भजो एक ओ३म् हियारे॥

भजन ५

जपो मुख से ओंकार हो कल्याण तुम्हारा।

विषयों में उमर गँवाई, लई माला बुढ़ापे में आई।
जपे गैरों को गँवार ओ३म का छोड़ सहारा॥ जपो०॥१॥
रट राम कृष्ण सिय राधा, चाहे विनाशिनी व्याधा।
न समझे सार असार, जीत के बाजी हारा॥ जपो०॥२॥
ऋषियों ने जिसको गाया, मुनियों ने जिसको पाया।
उसी का ध्यान विसार, चाहे रहा निस्तारा॥ जपो०॥३॥

पढ़ उपनिषदों को लीजे, सब तन्त्र मन्त्र तज दीजे ।
तेजसिंह कहे पुकार तब होगा सुख भारा ॥ जपो० ॥४॥

भजन ६

जप जगदाधार जीवन प्राण हमारे ।
अज्ञान महा तम टारो, विज्ञान प्रकाश पसारो ।
करो ध्रुव धर्म प्रचार ॥ जीवन० ॥१॥
आलस असुर को मारो, पुनि पातक पुंज पजारो ।
हरो भ्रम जनित विकार ॥ जीवन० ॥२॥
भवसागर पार उतारो, सुधि लेहु देहु फल चारो ।
दया निधि परम उदार ॥ जीवन० ॥३॥
शिवशंकर नाम तिहारो, सब संकट काटन हारो ।
जपें जन बारम्बार ॥ जीवन० ॥४॥

भजन ७

जा दिन अपनावेंगे आप ।
वेद पढ़ावेंगे हम सबको ज्ञानी गुरु मा बाप ।
स्वामी छूट जांयगे छिन में घोर कुकर्म कलाप ॥१॥
पौरुष पावक में पजरेंगे आलस के अभिशाप ।
बैर बिसार सुपन्थ गहेंगे करके मेल मिलाप ॥२॥
व्रत वारिधि में बूड़ मरेंगे जन्म जन्म के पाप ।
फिर व्याकुल कबहुं न करेंगे मोह शोक सन्ताप ॥३॥
भूखे भारत में न बसेंगे दम्भ अविद्या दाप ।
परम शुद्ध वे पद गावेंगे जिन में शंकर छाप ॥४॥

भजन ८

मेरी नैया पार लगाओ जगत् पिता।
विपता से मुझे बचाओ जगत् पिता॥
आन पड़ी मँझधार में नैया, तुम बिन कोई नहीं खिवैया।
तुमहीं हो एक धीर धरैया, करुणा हस्त बढ़ाओ॥ जगत्०॥
मैं मूरख मतिमन्द अनारी, आन पड़ा प्रभु शरण तुम्हारी।
पाऊं किस प्रकार सुख भारी, सुमति सुधा बरसाओ॥ जगत्०॥
मुझ को विद्याहीन जान कर, दीनों से भी दीन मानकर।
हे प्रभु लीजे देख नज़र भर, नेक नहीं बिसराओ॥ जगत्०॥
कठिन पन्थ और देश बिगाना, सूझ पड़े हा नहीं ठिकाना।
हृदय बीच भारी भय माना, हिम्मत फेर बँधाओ॥ जगत्०॥

भजन ६

प्रभु विनती सुनो हमारी, हम हैं सब शरण तुम्हारी।
अति गाढ़ मोह तम नाशौ, उर विद्या अर्क प्रकाशौ (जी)
हों सुखी देश नर नारी॥ प्रभु विन० १॥
सुख दायक मार्ग दिखाओ दुष्कृति से हमें बचाओ (जी)
हा! बुद्धि गई है मारी॥ प्रभु विन० २॥
धन धैर्य्य प्रतिष्ठा दीजै, शुभ गति अधिकारी कीजै (जी)
यह चाह रहे हैं भारी॥ प्रभु विन० ३॥
हम से सब जन सुख पावें, हितकारी भाव बढ़ावें (जी)
ऐसी उर आशा धारी॥ प्रभु विन० ४॥

है जितने मित्र हमारे, हों भक्त अनन्य तुम्हारे। (जी)
मिट जाय बुरी मति सारी प्रभु विन० ४॥

गज़ल १०

प्रभु जी वेग भारत को जगा देते तो अच्छा था।
किनारे डूबती नैया लगा देते तो अच्छा था॥
हजारों वर्ष से भारत पड़ा है घोर दुःखों में।
भला अब दुःख सारेही भगा देतेतो अच्छा था॥
जहां देखो वहां इसके विरोधी ही नजर आते।
इसे वह बाग अर्जुनका गहा देते तो अच्छा था॥
रहा कोई न शुभ साधन बढ़ी है फूट की चरचा।
इसे अब सूत की माला धगा देते तो अच्छा था॥
करे क्या 'शिव' भला तुमसे दिली मंशा सभी जाहिर।
कला कौशल में फिर इस को लगा देते तो अच्छा था॥

भजन ११

अब तो दया करो करतार।
विषय भोग में मैंने फँसकर तुम का दिया विसार।
अपने हित की बात न जानी कैसे हो उद्धार॥
ज्ञान ध्यान सिखलाकर मुझ को दीजे भवनिधि तार।
बार बार यह "कृष्ण" पुकारे अनहित भई विचार॥

भजन १२

मोसे भई दयामय भूल ।

तुमसे सुखदाता की स्वामी भक्ति करी न कबूल ।
फँसा रहा निशिदिन विषयोंमें इतनी मम उरशूल ॥
करो पार तुमही हो मेरे पिता परम सुख मूल ।

भजन १३

विनती है मेरी आपसे जी ओंकार ।

भारत के बासी नर नारी, रहे न अब तो नेक सुखारी ।
श्रेष्ठ आर्य से भए अनारी, तज घर वेद प्रचार ॥ वितनी है० १ ॥
द्वेषभाव आपस में छाया, सारा मेल मिलाप मिटाया ।
अब तक भी उर चेतन आया, रहे कुमतिही धार॥ विनतीहै० २॥
भारत फिरसे लासानी हो सच्चा शूर वीर दानी हो ।
कोई न इस में अज्ञानी हो, कुल कठोर महिभार॥विनती है० ३॥
सबकी कुमति निवारण कीजे, विद्या भर घट २ में दीजे ।
तेजसिंह को शरण में लीजे, हे प्रभु जगदाधार ॥ विनती है ०४॥

भजन १४

(प्रश्न) ख्याल

ईश्वर के लक्षण बतलाओ ईश्वर किसे बताया है ।
बिना बताये कैसे जाने हमको सम्भ्रम छाया है ॥
किसी ने मन्दिर अथवा मसजिद, गिरजाघर बनवाया है ।

किसी ने अपने ही को सच्चा ब्रह्म रूप बतलाया है ॥
विधिवत् जाने बिना उसे जो भक्ती अर्थ सिधाया है।
तेजसिंह वह सब निष्फल है समझो प्रिय समझाया है ॥
सब लक्षण कहो सुझाय के,
किस को ईश्वर माने हम। टेक-
किसको ईश्वर तुम जानो हो, बतलादो किसको मानो हो।
किस लक्षण से पहचानी हो सच्चाई दरशाय के।
सब अलग अलग छानो तुम। किसको० १ ॥
अब लक्षण दरशाना होगा सारा भेद बताना होगा।
ऐसा गीत बनाना होगा, मधुर स्वरो से गायके।
भेजो सब के कानो तुम ॥ किसको० २ ॥
बतलादो भारी सुख होगा, तुर्त पलायमान दुख होगा।
सुन सबका हर्षित मुख होगा इस उत्तर को पाय के।
मनमें निश्चय मानो तुम किसको० ३ ॥
उत्तर हो तो देना चहिये शीरीं जुबां से कहना चहिये।
नहिं हो तो चुप रहना चहिये, तेजसिंह गम खायके।
फिर क्यो झगड़ा ठानो तुम ॥ किसको० ४ ॥

भजन १५

(उत्तर) ख्याल

ईश्वर के लक्षण बतलाऊँ इधर ध्यान देना चहिये।
आसन मार बैठ चुपकेही तुमको सुन लेना चहिये ॥
जहां तुम्हें शंका हो प्यारे निश्चय ही कहना चहिये।

किसी भांति से भी संशय में तुमको नहिं रहना चहिये ॥
कहते हैं इधर ले कान कर जिसको ईश्वर मानें हम । टेक--
अति सर्व सुखदायक अजर अमरादि जिसके नाम हैं ।
अद्भुत अतुल इह लोक में जिसके अनेकों काम हैं ॥
गुण कर्म जिसके सह प्रकृति माने गये परिशुद्ध हैं ।
लक्षण कहीं लाक्षरय से उसके न बुद्धि विरुद्ध है ॥
वह सुख स्वरूप कहलावे। नहीं जन्म मरण में आवे ॥
जीवों के दुःख मिटावे। यों बार बार श्रुति गावे ॥

है भारी अपरम्पार, न पावें पार, सभी गये हार, यथाविधि ध्यान कर। इस प्रकार से जानें हम ॥ जिसको० ॥१॥

वह है महा अद्भुत, अलख, अभयादि लक्षण युक्त विभु ।
जगदीश मंगल मूल सत् चित ज्ञानमय सर्वेश प्रभु ॥
उसको न कोई प्राप्त हो सब भांति वह अविकार है ।
मल युक्त वपु से रहित उसको श्रुति रही निरधार है ॥
वह सबको भोग भुगावे । कर्मों का फल पहुँचावे ॥
वह पुनि पुनि जगत रचावे। रचने में चतुर कहावे ॥

ये जीव है सब अल्पज्ञ, ब्रह्म सर्वज्ञ, महा मर्मज्ञ, उसी को जानकर । अनुभव से पहचानें हम ॥ जिसको० ॥२॥

वह सदाही नित्य शुद्ध और बुद्ध मुक्त सुभाव है ।
बस एक उसके ही सहारे विश्व का ठहराव है ॥
जिस में भरी है शक्ति भारी कौन गा सकता उसे ।
कर भेद अवगत न्यून मति से कौन पा सकता उसे ॥

वह है प्रभु अपरम्पारा। परिपूरण नाथ हमारा ॥
उसने ही यह जग सारा। करके उत्पादन धारा ॥

बस यही लक्षण है मूल, इनको मत भूल, चलें अनुकूल,
इन्हीं को छानकर। लगे क्यों धोखा खाने हम ॥ जिसको० ॥३॥

जितना बताया है गया सब वेद के अनुकूल है।
कुछ भी नही इस में रही अस्पष्टता की भूल है ॥
जिस में घटें लक्षण सभी ये, ईश उसको मानिये।
विषयादि म फँस जानना, उसका कठिन ही जानिये ॥
अय मित्र अगर सुख पाओ। तो ईश्वर के गुण गाओ ॥
मत अवसर व्यर्थ गँवाओ। कुछ ध्यान भले का लाओ ॥

कहें तेजसिंह समझाय, ईश गुण गाय, सुनो चित लाय,
खूब आसान कर। लगे तुमको दर्शाने हम ॥ जिसको० ॥४॥

भजन १६

(प्रश्न) ख्याल

ईश्वर २ कहो सिद्ध कर उसको दिखलाना चहिये।
ईश्वर सिद्धि विधायकही शुभ रचा ख्याल गाना चहिये ॥
समझाने मे रहे कमी तो फिर भी समझाना चहिये।
तेजसिंह ऐसे वर्णन को ले समीप आना चहिये ॥
ईश्वर के सिद्ध करने में,
कोई प्रमाण दिखलाओ ॥ टेक ॥
उसको ईश्वर कैसे जाने, है ईश्वर वो कैसे माने।

बिना प्रत्यक्ष नहीं पहचाने कर प्रत्यक्ष दरशाओ ॥ को०॥१॥
ईश्वर अति महान कहलावे, जीव बापुरो पता न पावे ।
कैसा वो समझा नहिं जावे, कर विस्पष्ट सुनाओ ॥ को०॥२॥
हम मुद्दत से भ्रमे पड़े है, पट महान्धता रूप अड़े हैं ।
जोड़ हाथ सामने खड़े है, भेद भाव समझाओ ॥ को०॥३॥
मिटा दीजिये शंका मेरी, मिल जावे शुभ शान्ति घनेरी ।
क्यो करते हो इस में देरी, तेजसिंह कथ गाओ ॥ को०॥४॥

भजन १७

उत्तर

दोहा—अय जिज्ञासू क्यो वृथा, संशय रहा बढ़ाय ।
सिद्ध करूं जगदीश को, सुनले कान लगाय ॥

वह प्रत्यक्षादि परमाण ले,
ईश्वर के सिद्ध करने में ॥ टेक ॥

ज्यो पांच ज्ञान इन्द्री और मन है भाई ।
दें विषय भी इनके जुदे जुदे दिखलाई ॥
विषयो से मिलकर जो कि ज्ञान होजावे ।
बस वही ज्ञान मित्रो प्रत्यक्ष कहलावे ॥

हो ज्ञान भी ऐसा भारी, मिटजावे शंका सारी ।
अनुभव सच्चा होजावे, कुछ भेद न रहने पावे ॥

लेकिन यह हर्षित गात, सुनो प्रिय भ्रात, मुख्य हालात,
अगाड़ी जानले । कली तीनों के जड़ने में ॥ ईश्वर० ॥१॥

देखो विचार मन और इन्द्रियों के ताईं।
है गुणों का सब प्रत्यक्ष गुणी का नाहीं॥
फिर गुणों के पीछे गुणी को ऐसे पावे।
इस आत्मयुक्त मन से प्रत्यक्ष किया जावे॥
ऐसेही सृष्टि में भाई, हम विशेष रचना पाई।
गुण ज्ञान आदि लख सारा, हुआ ईश्वर सिद्ध हमारा॥
ले दूसरा भी दृष्टान्त, इस के उपरान्त, सुन होके शान्त,
इधर कर कान ले, यह शिक्षा उर भरने में॥ ईश्वर० ॥२॥

जिस समय जीव किसी कर्म में मन लाता है।
फिर उसी समय प्रमाण प्रत्यक्ष आता है॥
हो अशुभ कर्म तो भय शंका लज्जा आवे।
शुभ हो तो हर्षित अंग मोद दरशावे॥
भय अभय जो दे दिखलाई, है ब्रह्मकी ओरसे भाई।
मत जीव की ओर से जानो, यह सत्य कथन पहँचानो॥
जीव है स्वतन्त्र, तभी करे, पीछे दुख भरे, इसी से डरे,
मित्र पहँचान ले, नहीं क्या हासिल डरने में॥ ईश्वर के० ॥३॥

प्रमाण तीसरा प्रत्यक्ष यह पाता है॥
हर काम नियम अनुकूल नज़र आता है॥
बनना व बिगड़ना सभी नियम से होता।
कर विचार मन की क्यों नहीं शंका खोता॥
देखो सृष्टि में भाई। ये अटल नियम दिखलाई॥
ज्यों माली बाग़ लगावे। कहीं फ़र्क ज़रा नहि आवे॥

हुआ इसी से ईश्वर सिद्ध, समझले निद्ध, छोड़कर जिद्द,
तेजसिंह छान ले, इस बुद्धि रूप छरने से ॥ ईश्वर० ॥ ४ ॥

भजन १८

प्रश्न ।

दोहा–किसी पुरुष का प्रश्न यह, जब कि ईश निराकार ।
फेर बताओ किस तरह, वेद बनाये चार ॥

टेक–वेद फिर कैसे बनाये हैं जब निराकार जगदीश ।
नहिं ईश्वर का कोई अंग है । नहिं रूप है न कोई रंग है ॥
नहिं इन्द्रियादि का संग है । शब्द कैसे फरमाये हैं ॥ वे० १॥
कर लेकर के वेद विचारो । खुद आंख पसार निहारो ॥
यह भ्रम की बात विसारो । शब्द नहिं सुनने में आये हैं ॥२॥
हमने जब ये देखे विचारे । हुई हृदय में शंका हमारे ॥
इस लिये ही सम्मुख तुम्हारे । प्रश्न अपना ये लाये हैं ॥ ३ ॥
तब तो फिर उत्तर लाओ । हमें साफ़ २ समझाओ ॥
मेरे हृदय की शंका मिटाओ । तेजसिंह कहचुप लाये हैं॥४॥

भजन १९

उत्तर–

दोहा–अय जिज्ञासू समझ तू, हो करके खामोश ।
वेद रचे निराकार नें, कुछ नहीं आवे दोष ॥

रचने का वेद निराकार में,
कोई दोष नहीं आता है ॥ टेक ॥
जब है सर्व व्यापक जगत् में वह जगराई।
फिर मुखादि अंगो की क्या जरूरत भाई ॥
जो हो आप से भिन्न दूसरा कोई।
उस के लिये मुख जिह्वा की ज़रूरत होई ॥
देखो तो तुम अपने ताई। कुछ मुख की ज़रूरत नाहीं ॥
जब अन्तर्यामी है भाई। फिर ये शंका क्यों आई।
जब है सर्व शक्तिमान, उसकी क्या हान निश्चय लो
जान, दोष ये आता है साकार में, बिन मुख नहीं फर्माता है ॥१॥
है दूसरा दृष्टान्त इन में मेरे भाई।
मन में मुखादि अवयव देते न दिखाई ।
मत मुखसे बोलो मतकुछ जुबांहिलाओ।
फिर भी संकल्प विकल्प सैकड़ों पाओ ॥
ऐसे ही ईश्वर में जानो। मत शंका इस में मानो ॥
हैं मिले हुए नहीं प्यारे। तभी बिन मुख शब्द उचारे ॥
वेदों ने दिया बताय, है ईश्वर अकाय, न लेत सहाय,
वही संसार में सबको फल पहुंचाता है ॥ कोई० २ ॥
यह जीव अल्प शक्ती वाला है जैसे।
मत कदापि समझो ईश्वर को तुम ऐसे ॥
क्यों इस पर तुम को ध्यान मित्र नहीं आया।
बिन शरीर के सारा ही जगत बनाया ॥

यह क्यों नहिं बात विचारी। होती शक रफ़ै तुम्हारी॥
कर विचार शंका तेरी। हो दूर लगे नहीं देरी॥
कर विचार शंका कटै, तिमिर सब हटै, अविद्या घटै,
काहे व्यर्थ विचार में, नित २ शंका लाता है॥ कोई० ३॥

वेदों की विद्या कही गई सूक्षम है।
क्या जगत् में चक्षू आदि की रचना कम है॥
जब रचना अचरज भरी करी यह सारी।
फिर निराकार को वेद रचन क्या भारी॥
जो सवाल तुमने कीन्हा। उसका उत्तर दे दीन्हा॥
हो और अगर कुछ कहना। तो कहो मौन क्यो रहना॥
कहे तेजसिंह मतिमन्द, बना के छंद, मिले आनंद, देखो
नर संसार में, बिन विचार दुख पाता है॥ कोई० ४॥

भजन २०

प्रश्न—(ख्याल)

यह तो सब कुछ ठीक आपने जैसा कुछ फर्माया है।
पर एक बात है शेष इसी से नहीं समझ में आया है॥
जब प्रकाश से युक्त ईश को वेदों ने बतलाया है।
प्रकाश है तो है क्या वो जो आंखों से न लखाया है॥
प्रकाश सबको दीखना चहिये जैसे धूप और छाया है।
फिर ईश्वर का प्रकाश हम को क्यों न दीखने पाया है॥

उत्तर–

दोहा–अय जिज्ञासु समझकर, कर इस पर विश्वास।
कभी नज़र आवे नहीं जो प्रकाश है खास॥

कभी देख न सका कोई, उस स्वतः प्रकाश को भाई। टेक,
मसलन ज्यों सूर्य्य की शुवायें। किसी छिद्र में होकर आयें।
पड़े नज़र कि जहां रुक जायें। दें बिचमें न दिखाई॥ उसस्वतः१
जाके शुवा जिस शै में पड़ी है। देखो वहां भी नज़र से बरी है।
उस शै की ही दमक रही है। सफ़ेदी सुर्खी स्याही॥ उसस्वतः२
इस से भी जब वह सूक्ष्म है। व्यापक जगह जगह जो समहै।
किसी जगह में ज्यादा न कम है। कैसे पड़े लखाई॥ उसस्वतः३
उत्तर दे दिया इसका जानो। नेक न शंका मन में मानो।
तजदो पक्ष न झगड़ा ठानो। तेज सिंह दरशाई॥ उसस्वतः॥४॥

भजन २१

प्रभु नाव मेरी मझधारा। तूही पार लगावन हारा।
यह भँवर बीच में आई। आंधी भी ऊपर छाई (जी)
बस तेरा ही तकूं सहारा॥ तूही पार लगावन (१)
हैं पाप बोझसे भारी। चहुंओर मगरभयकारी (जी)
हा! मैंने साहस हारा॥ तूही पार लगावत (२)
अब देर करो मत स्वामी। हे सबके अन्तर्यामी (जी)
गहरी नदिया है दूर किनारा॥ तूहीपार लगावन (३)
कोई साथी काम न आया। अबलेहु खबर जगराया (जी)
कहे जगन् ये दास तुम्हारा॥ तूही पार लगावन (४)

भजन २२

प्रभु जग करतार–तुझे नमस्ते मेरा। टेक,

प्रभु आदि अन्त नहिं तेरा, सब तुझ में करें बसेरा।
अमित तेरा विस्तार ॥ तुझे० १ ॥

तेरे गुण ज्ञानी गाते गाते गाते थक जाते।
है तू अपरम्पार ॥ तुझे० २ ॥

सृष्टी का तू कारण है, तेरा ही उर धारण है।
परम सुख का भण्डार ॥ तुझे० ३ ॥

तू कर्मों का फल देता, न्यायानुसार सुधिलेता।
सकें नही तुझे बिचार ॥ तुझ० ४ ॥

नहीं देह कभी तू धरता, तू अमर कभी नहीं मरता।
कहे श्रुति शास्त्र पुकार ॥ तुझे० ५ ॥

है तुझ को क्या नहिं प्यारा, हस्ती क्या कीट विचारा।
सबका तू आधार ॥ तुझे० ६ ॥

नहिं हलका नहिं तू भारी, नहीं बाल वृद्ध नर नारी।
पीत सित नहिं रतनार ॥ तुझे० ७ ॥

रस गन्ध रूप नहिं तेरा, नहीं खट्टा मीठा कसेरा।
नहिं कडवा नहिं खार ॥ तुझे० ८ ॥

मोहि दया दान दे दीजे, उस पार जलधि के कीजे।
जगन् विनवे बहुबार ॥ तुझे० ९ ॥

भजन २३

प्रभु जग भर्तार, अटल प्रताप तुम्हारा। टेक—

तुम सकल विश्व के स्वामी। हो अगम अगोचर नामी।
दया के भी भण्डार, श्रुति ने सुयश उचारा ॥ प्रभु० १ ॥
तुमही हो अधम उधारण। तुम करते दुःख निवारण ॥
नहीं तुम हो साकार, हो निर्मल रहित विकारा ॥ प्रभु० २ ॥
तुम अविनाशी घट वासी। हो सब के स्वयं प्रकाशी ॥
तुमहीं हो प्राणाधार, है महिमा अपरम्पारा ॥ प्रभु० ३ ॥
अद्भुत है तुम्हारी माया। नहिं अन्त किसी ने पाया ॥
ऋषि मुनि सब गये हार, क्या बरनै जगन विचारा ॥ प्रभु०४॥

भजन २४

सब मिलके हरि गुण गाओरे, प्यारे सुनो सुनो।

जो हरि सारे ही दुख हरता, जो न जन्मता अरु नहिं मरता।
उसकी शरण सिधाओरे ॥ प्यारे० १ ॥

वही न्याय कारी सुखदाता, उससा कोई दृष्टि न आता।
उसकी भक्ति बढ़ाओरे ॥ प्यारे० २ ॥

उसका ही उर कीर्त्तन धारो, पार्थिव पूजा वेग विसारो।
बिगड़ी बात बनाओरे ॥ प्यारे० ३ ॥

करके स्तुति और प्रार्थना, करहु जगन फिर तुम उपासना।
या विधि ताप मिटाओरे ॥ प्यारे० ४ ॥

भजन २५

शरणागत पाल कृपाल प्रभो ? हमको एक आश तुम्हारी है।
तुम्हरे सम दूसर और कोऊ नहिं दीनन को हितकारी है॥
सुधि लेत सदा सब जीवन की अतिही करुणा विस्तारी है।
प्रतिपाल करै बिनही बदले अस कौन पिता महतारी है॥
जब नाथ दया करि देखत हो छुटि जात विथा संसारी है॥
बिसराय तुम्है सुख चाहत जो अस कौन निदान अनारी है।
परवाहि तिन्हैं नहिं स्वर्गहु की जिनको तब कीरति प्यारी है।
धनि है धनि है सुख दायक जो तव प्रेम सुधा अधिकारी है॥
सब भांति समर्थ सहायक हो तब आश्रित बुद्धि हमारी है।
परताप नरायन तो तुम्हरे पद पंकज पै बलि हारी है॥

भजन २६

करिये स्वीकार; बिनती नाथ हमारी।
आनन्द सुधा बरसाओ, सब के दुख दूर भगाओ।
कहाओ हरि हितकार॥ विनती० १॥
गौरव के दिवस दिखाओ, व्रत शील सुबोध बनाओ।
सिखाओ पर उपकार॥ विनती० २॥
ऋजु मारग माहिं चलाओ, नित नीके कर्म कराओ।
रिझाओ विविध प्रकार॥ विनती० ३॥
माया मय मोह छुड़ाओ, कर्माधम को अपनाओ।
लगाओ भव निधिपार॥ विनती० ४॥

भजन २७

हे दीन बन्धु जगदीश दया निधि पूरण सुख दाता ।
मुनि समोद महिमा गाते है, योग वृक्ष के फल पाते हैं ।
सब दुःखों से छुटजाते है, शोक न ढिग आता ॥ हे दीन० १ ॥
अजर अमर अज मंगल कारी, एक अखण्ड चराचर धारी ।
नाथ अनाथन के भय हारी, धन्य धन्य त्राता ॥ हे दीन० २ ॥
वेद विशुद्ध अकाय बखाने, भौतिक मूरति मान न माने ।
साधु समूह अगोचर जाने, विश्वम्भर धाता ॥ हे दीन० ३॥
बिन समाधि साधन के प्यारे, किस अबोध ने आप निहारे ।
कर्ण निपट शिशु के रखवारे, पालक पितु माता ॥ हे दीन० ४॥

गजल २८

दया दृष्टी हमारे पर दयामय अब घुमा दीजे ।
यह रोज़ाना मुसीबत आफ़ते यां से हटा दीजे ॥
कहत ताऊंन आदिक ने किया भारत को ग़ारत है ।
भविष्यत में इसे इन से कृपा कर के बचा दीजे ॥
हज़ारों साल से भारत निवासी ख्वाब गफ़लत में ।
पड़े बेहोश सोते है इन्है अब तो जगा दीजे ॥
अविद्या के अँधेरे में नहीं कुछ सूझ पड़ता है ।
दयामय ज्ञानका दीपक दिलों में अब जला दीजे ॥
सहारा छोड़ कर तेरा पिताजी अब तलक हमने ।
बहुत ही कष्ट भोगे हैं दिलों में सुख बसा दीजे ॥

नहीं है धर्म से उल्फ़त न ममता देश की अपने।
हमारे बोध की मात्रा निरन्तर को बढ़ा दीजे॥
बजुज़ तेरे न समझें और को माबूद हम अपना।
सुदृढ़ विश्वास यह मन में हमारे अब बिठा दीजे॥
यह प्यासा प्रेम रस का है तुम्हारा दास सालिगराम।
दया कर एक प्याला जल्द तर इस को पिला दीजे॥

कव्वाली २९

बिन आप के प्रभू जी कोई नहीं हमारा।
है आप ही का केवल हम को बड़ा सहारा॥
हालत हमारी स्वामी अबतर बहुत हुई है।
सुख सम्पदायें हम से कर हैं गई किनारा॥
आफ़ात आज कल जो भारत पै पड़ रही है।
उनको किसी ने मन में तक भी न था विचारा॥
ताऊन औ क़हत ने लाखों को मार डाला।
सदहा ही बस्तियों को भौंचाल ने उजारा॥
घर २ लरजने लगता है खौफ़ से कलेजा।
आंखों में कांगड़े का आता है जब नज़ारा॥
मातमकदा सा भारत अब बन रहा है हरसू।
घर २ से आ रहा है आहो बुका का नारा॥
सोने की हाय भूमी में रहने वाले इंसान।
फ़ाक़े पै फ़ाक़ा कर के करते हैं अब गुजारा॥

पंद्रह बरस से कम की हैं बीस लाख बेवा।
नित शोक में पती के करती हैं हाहाकारा॥
यक २ बरस की बच्ची जिस देश में हों बेवा।
डूबे न फिर भला क्यों उस देश का सितारा॥
ऋषियों की हाय सन्तति मूरख बनी फिरे है।
हालत को देख जिनकी फटता जिगर हमारा॥
सालिग की हे दयामय है आप से विनय यह।
भारत निवासियों का दुख दूर होय सारा॥

गजल ३०

मगन ईश्वर की भक्ती में अरे मन क्यों नहीं होता।
पड़ा आलस्य में मूरख रहेगा कब तलक सोता॥
जो ख्वाहिश है तुझे कट जायें सारे मैल पापों के।
प्रभू के प्रेम जल में क्यों नहीं अपने को तू धोता॥
विषय और भोग में फसकर न कर बर्बाद जीवन को।
दमन कर चित्त की वृत्ती लगा ले योग में गोता॥
नहीं संसार की वस्तू कोई भी सुख की हेतू है।
वृथा इस के लिये फिर क्यों समय अनमोल तू खोता॥
कभी उसको न मिल सकता है फल सुख शांतिका हर्गिज।
धरम के बीज को अन्तःकरण में जो नहीं बोता॥
धरम ही एक ऐसा है जो होगा अन्त में साथी।
न जोरू काम आवेगी न बेटा और कोई पोता॥

भटकता आवजा नाहक़ तू फिर सुख के लिये सालिग।
तेरे हृदय के अन्दर ही बहै आनन्द का सोता॥

भजन ३१

दोहा–कोई आवे कोई गये, कोई हो रहे तैयार।
फिर मूरख अपना यहां, किसे बनावे यार॥

टेक–तेरा बिन ईश्वर कोई नहीं, सच कहूं समझ ले मन में।

यह क्षणभंगुर अंग बनाया, कोई न साथी संग बताया, समय तुम्हारा तंग बताया, फिर भी तो बोई नहीं, शुभ कर्म बेल इस तन में॥ सच० १॥

बहते इस दरिया के किनारे, धोले हाथ बुद्धि के मारे। दुर्गन्धित है वस्त्र तुम्हारे, दुर्गन्धी धोई नहीं, दुख मिला अखीरी पन में॥ सच० २॥

सब कुछ जान बूझ कर प्यारे, अन्धे बने हुए हो भारे। कहते कहते हम है हारे, त्यागी बदगोई नहीं। रही प्रीति पराये धन में॥ सच० ३॥

सोता है तः अब भी जगल, ईश्वर भक्ति भाव में पग ले, बुरी कामनाओं से भग ले, जो दुर्मति खोई नहीं, तो मिट जावेगा क्षण में॥ सच० ४॥

भजन ३२

कर लेहु प्रशंसित काम रही अब थोड़ी जिन्दगानी।
रहो न योहीं अपयश पाते, पापी पांमर पोच कहाते॥

मंगलमय मारग अपनाओ, यह सिख सुखदानी ॥ कर० १ ॥
छल बल कपट कुकर्म विसारो, यम नियमों को उरमें धारो।
कबहूँ न काहू पैंठ दिखाओ, चेतो अभिमानी ॥ कर० २ ॥
दीन अनाथन के दुख टारो, देश दशा का ढंग सुधारो।
साहस पाय बनो कारन मे, शूरवीर दानी ॥ कर० ३ ॥
कीरति की नित सम्पति जोड़ो, पतित समागम से मुख मोड़ो।
साथ न होगी हाय देह भी, त्यागो मनमानी ॥ कर० ४ ॥
ऐसी देह न पुनि पाओगे, करलो कुछ तो पछताओगे।
कर्ण अन्त की घड़ी सामने, समझ ते ज्ञानी ॥ कर० ५ ॥

भजन ३३

टेक–पल पल आयु रही है बीत।

संग्रहकर परहित की पूंजी यही भली मिखमीत ॥ पलपल०१ ॥
विषयों में फसना न भला है लीजे बाजी जीत ॥ पल पल० २॥
तर जाओ जगदीश्वर के तुम गाय गाय गुणगीत ॥पल पल०३॥

भजन ३४

क्या तन मांजतारे आखिर माटी में मिल जाना।

माटी ओढ़न माटी पहिरन माटी का सिरहाना।
माटी का कलबूत बनाया जिस मे भँवर समाना ॥क्या०१॥
माटी कहती कुम्भकार से तू क्या रूंधे मोय।
एक दिन ऐसा भी तो होगा मैं रुधूंगी तोय ॥ क्या० २ ॥

चुन चुन लकड़ी महल बनावे बन्दा कहे घर मेरा।
नहिं घर मेरा नहिं घर तेरा चिड़िया रैन बसेरा। क्या० ॥३॥
फाटा चोला भयो पुराना कब लग सीवे दर्ज़ी।
दिल का मरहम कोई न मिलिया जो मिलिया अलगर्ज़ी ॥४॥
दिल के मरहम सतगुरु मिलगये उपकारन के गर्ज़ी।
नानक चोला अमर भयो जो सन्त मिलगये गर्ज़ी। क्या० ॥५॥

भजन ३५

जन्म सफल कर लीजिये, अवसर न बिसारो।
कर सत्संग कुसंगति त्यागो सुमति सुधारस पीजिये। अब०
दीन अनाथन को अपनाओ सूरन को सुख दीजिये। अब०
परम रंक भिक्षुक भारत पै प्रेम पसार पसीजिये। अब०
हिलमिल शंकर के गुण गाओ वाद विवाद न कीजिये। अब०

भजन ३६

इस काल बली से बाजी बली तो सब हार गये २।
जितना परिवार तुम्हारा, कोई संग न चलने हारा।
सब कर गये अन्त किनारा, न संग में सुत यार गये ३॥ इस०
जिन वश में किया न मनको, नहीं दिया धर्म में धनको।
तो फ़िज़ूल ही नर तनको, जगत में योंहीं हार गये ३॥ इस०
यहां लाखों ज़ालिम आये, जिन दीन हीन तरसाये।
वह भी न सुखी कहलाये, स्वयं को मार गये ३॥ इस०

जो धर्म से प्रीति लगावे, पग अधरम मे न बढ़ावे।
पद तेजसिंह कथ गावे, वही तो जन पार गय ३॥ इस०

भजन ३७

दोहा–पानी का सा बुलबुला, यह है अधम शरीर।
कबतक प्रिय! ठहरायगा, वृक्ष नदी के तीर॥

टेक–थोड़े मे जीने पर, क्यो इतना अभिमान।
ये क्षणभंगुर काया है, बादल कीसी छाया है।
जिसे रहा स्थिर जान॥ थोड़े० १॥
हुये रावण से अभिमानी, और दुर्योधन लासानी।
मिटा सब उनका निशान॥ थोड़े० २॥
नित भरी अकड़ मे डोले, नहिं सीधा किसी से बोले।
चढ़ा शिर पै शैतान॥ थोड़े० ३॥
क्या इस में है चतुराई, सब छोड़ी नेक कमाई।
किये दुख के सामान॥ थोड़े० ४॥
कहे तेजसिंह शर्मा तू कुछ अब भी होश में आ तू।
रहा बन जो इंसान॥ थोड़े० ५॥

दादरा ३८

अँखिया लागीं समय सब बीत गयो।

शैर—खुदी के जोम में बेखुद खुदा मिले क्योंकर।
अनी जो दिल मे पड़ी वह अनी टले क्योंकर॥
उदू हैं खम से तेरे यह उदूं हिले क्योंकर।

न तू मिले तो मिले वह तेरे गले क्योंकर ॥
सितम है तुममें न, तुमको सितम मिले क्योंकर । अँखि०१

रहे हमेशा से पेन्न शमूल बातों में ।
गुजारी उम्र को बक २ जिलूल बातों में ॥
कभी न खुश हुये आखिर मलूल बातो में ।
खराब वक्त किया सब फिज़ूल बातों में ॥
बतादो तुम को हुआ क्या हसूल बातो में । अँखि० २ ॥

रहोगे कब तलक बे फिक्र ख्वाबग़फ़लत में ।
उठो २ ये सदा आती है मज़म्मत में ॥
लगाना दाग़ है ये फ़ायदा अपनी हुरमत में ।
अजल से बचना नहीं और तुम मुहब्बत में ॥
हुये शहीद हो बतलादो किसकी उलफ़तमें । अँखि० ३ ॥

हजारो दोस्त थे अपने, किरोड़ो खिदमतगार ।
हसीन लाख हुये नाज उठाने को तैयार ॥
खिरद औ अक्ल न रखते थे और थे ज़रदार ।
लुटाके माल जवानो का जब हुये हुशियार ॥
जो देखा ग़ौर से प्यारे तो प्रेम था बेकार । अँखि० ४ ॥

दादरा ३६

स्वामी लीजेगा अब तो निहार मेरी दीन दशा ।
शैर—नमस्ते! श्री मेहे विज्ञान मुक्ति के दाता ।
स्वयम्भू सच्चिदानन्द आपही पिता माता ॥

अव्यक्त न्यायी निराकार जगत है गाता।
तुम्ही हो स्वामी सखा बन्धु और अन्नदाता॥
सुध लीजेगा सबही प्रकार ॥ मेरी० १ ॥
महादेव हो निर्वैर आप हो ज्ञानी।
कृपालु शील हो अद्वैत प्राण के दानी॥
विभुः रुद्रः गोतीत जोत जग जानी।
हमारा कीजे कल्याण भक्ति उर ठानी॥
बिन तुम्हरे न कोई अधार ॥ मेरी० २ ॥
दयालु क्लेश हरो, नाशो यह विपत सारी।
डरोत्पन्न जो सन्ताप क्रोध है भारी॥
सदाही बुद्धि रहे शुद्ध स्वामी हमारी।
बने सभी के प्रेमी विद्वेष मूल हारी॥
कीजे निर्मल पिता जी विचार ॥ मेरी० ३ ॥
प्राणी भूले हुये जब कि कष्ट पाते है।
तो ईश तुम को ही भूले हुये बताते हैं॥
करेंगे जैसा मिलेगा यह कह के गाते है।
तुझे भी कर्म के आधीन कर बनाते है॥
प्रेम गति है तुम्हारी अपार ॥ मेरी० ४ ॥

भजन ४०

फिर दांव न ऐसा बार बार, उठ बीती जात नर तन बहार।
भज सकल सृष्टि कर सृजनहार, जो घट २ व्यापक निर्विकार॥
है वही मुक्तिदाता उदार, तज उसे होत क्यों जग में ख्वार ॥ १ ॥

हुये बड़े २ योधा अपार, तिन्हैं जात न लागी त॰,
जिनके धन सेना बेशुमार, ग ये अन्त समय सब हाथ झारे ।
अब समझ सोच कुछ कर विचार, कर ग्रहण सार तजदे असार।
है यही धर्म सब सुखको द्वार, हर भजिय त्याग मन से विकार ॥३॥
जग जीवन तेरा बेकरार, तज अजहुं नींद गफलत गँवार।
बलदेव जन्म को ले सुधार, झख मारत काहे द्वार द्वार ॥४॥

दादरा ४१

बांधो न गठरिया अपयश की।
है थोड़ी उमरिया दिन दश की ॥ बांधो न० ॥

अकड़ बेग यहां कितने ही आये, गये धरणि में सब धसकी ॥१॥
कोई दिन का महिमान यहां तू, मत ले चाट विषय रस की ॥२॥
नहीं क़ज़ा से चलि है कज़ाकी, ठगक रहेगी सब ठसकी ॥३॥
अजहुँ विचार धर्म अपने को, धोरे २ उमर जाति खसकी ॥४॥
यम के द्वार मार पड़े मोटी, बढ़ी निकसि जाय नस नस की ॥५॥
भजप्रभु को बलदेव वेगि अब, न तो काल लेत तोहिं भसकी॥६॥

दादरा ४२

चलना है पथिक रह जाना नहीं।

क्यों सोवे ग़फ़लत में पैसा, यहां एक पलका ठिकाना नहीं ॥१॥
तेरे सँघाती कितने चले गये, तेरा यह कुछ थाना नहीं ॥२॥
इस सराय में चोर बसत हैं, उन से गांठ कटाना नहीं ॥३॥
बली पहलवां हजारों आये, चलते समय काहू जाना नहीं ॥४॥

जिस मालिक ने तुझ को पाला, उसको तू पहचाना नहीं ॥५॥
झख मारत फिरता दुनियां में, दीवाना है तू कुछ दाना नहीं ॥६॥
यमको उत्तर दे किस मुख से, है कोई बाक़ी बहाना नहीं ॥७॥
अजहुँ जाग बलदेव नींद से, फिर फिर नर तन पाना नहीं ॥८॥

भजन ४३

कब लेगा प्रभु का नाम उमरिया गई रही थोडी। टेक—
कौन भूल में पड़ा सोचकर, नाचे काल कुचाली शिर पर।
लालच की लीला में फसकर। क्यो पूंजी जोड़ी। कबलेगा० ॥१॥
केवल खेल कूद मन भाया, हित साधन में चित न लगाया।
हाय! अभागे पाप कमाया। सतसंगति छोड़ी ॥ कबलेगा० ॥२॥
मात पिता भ्राता सुत दारा, साथ रहे परिवार न सारा।
मानी मान मोह की धारा। रुदुर्मति मोड़ी ॥ कबलेगा० ॥३॥
अबहूं जीवन को न सुधारै, करणी को जड़ "कर्णा" विगारै।
नेक न हरि की ओर निहारै। प्रेम लता तोड़ी ॥ कबलेगा० ॥४॥

भजन ४४

कर मल २ पछतावे जब मृत्यु तेरी नियराई।
बड़े भाग्य मानुष तन पाई, किंचितहू कीन्ही न भलाई।
वृथा समय को दीन्ह गॅवाई, धर्म की अब सुध आई ॥जब०॥१॥
बाल समय सब खेल गॅवायो, विद्या पढ़ी न धर्म कमायो।
इन्द्री जीत न वीर्य बढ़ायो, सोच समझ पछताई ॥ जब० ॥२॥
युवा अवस्था आई तन में, चूर भयो भारी यौवन में।

कीन पाप नहिं रहे भजन में, योंही आयु बिताई ॥ जब०३॥
वृद्धापन की बारी आई, लोभ मोह तृष्णा अधिकाई।
करी जन्मभर पाप कमाई, तुलसी आयु घटाई ॥ जब० ४ ॥

भजन ४५

मन सोच समझ बन ज्ञानी—अज्ञानी क्यों होता है।

जो ईश्वर सब सुख निधान है, क्यों नहिं उसका धरत ध्यान है।
नर शरीर दुर्लभ महान है, ऋषि मुनि रहे बखानी ॥
क्यों सुख की नींद सोता है। अज्ञानी० ॥ १ ॥

सत्य धर्म से चित्त हटाया, विषय वासना ग्रस्त कराया।
वीर्य्य रत्न अनमोल गँवाया, सोच लाभ अरु हानी ॥
क्यो दुःख भार ढोता है। अज्ञा० ॥ २ ॥

मन विकार को तज के प्रानी। निर्विकार कौ ले पहँचानी।
दिना चार की है जिंदगानी, रे बनकर अभिमानी ॥
क्यों खाता यों गोता है। अज्ञानी० ॥ ३ ॥

भरा असत से सभी जगत है। केवल ओ३म् नाम एक सत् है।
तुलसी क्यों नहिं ध्यान धरत है, मौत आय नियरानी ॥
क्यों पाप बीज बोता है। अज्ञानी० ॥ ४ ॥

ख्याल ४६

करो सदा सतकर्म धर्म तुम मिले न पुनि नर की काया।
बड़े भाग्य से प्रियवर तुमने ऐसा शुभ अवसर पाया ॥

चेतो क्यों जीवन को प्यारे विषयों बीच गँवाते हो ।
तज विवेक की बातें क्यों तुम ऐसा पाप कमाते हो ॥
दीन अनाथ दुखी को लख के नेक तरस नहीं खाते हो ।
बन सुधीर मनमाहिं विचारो दुःखको इसी से पाते हो ॥
सारी त्याग दीजिये जड़ता बहुतक तुमको समझाया ॥ बड़े० ॥

करके मेल मिलाप सदावर वेद धर्म को विस्तारो ।
यही भली सामाजिक शिक्षा अपने जीवन में धारो ॥
नाना मत पन्थों के झगड़े सारे के सारे टारो ।
करो सदा कल्याण देश का मत अपना सर्वसु हारो ॥
ऋषि मुनियों की चलो चाल क्यों अपने कुल को शर्माया॥बड़े०॥

पर के दुखको निज दुख समझो पर सुखको निजसुख मानो ।
पर नारी को निरख के प्यारे निज माता भगिनी जानो ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह को त्यागो अबतो सज्ञानो ।
कर संचित सुधर्म से धन को भले बुरे को पहचानो ॥
क्षमा, शील, संतोष बढ़ाओ मिले सदा सुखमन भाया ॥ बड़े० ॥

सायं प्रातः सन्ध्या करके जगदीश्वर में चित लाओ ।
अग्नि होत्र का नियम निभाकर परमानन्द नित्यपाओ ॥
भूलो मत वलि वैश्वदेवको पितृ यज्ञ भी फैलाओ ।
फैले सुख सारी दुनियां में श्रेष्ठ आर्य्य तुम कहलाओ ॥
विविध-भाव से भरा ख्याल तुलसी ने अपना कथगाया ।
बड़े भाग्य से प्रियवर तुमने ऐसा शुभ अवसर पाया ॥ ४ ॥

गजल ४७

सुनो ऐ मित्रवर यक दिन यहां से सबको जाना है।
करो शुभ कर्म निशि वासर तभी आनन्द पाना है॥
बने अज्ञानी फिरते हो, न होता चेत है बिल्कुल।
अविद्या आदि से सोचो जरूरी चित हटाना है॥
जिसे ठहराया वेदों ने तुम्हारा फ़र्ज़ आवश्यक।
बड़ा अफसोस है देखो उसे तुमने न माना है॥
पड़े सोते हो गफ़लत में जरा अब आंख तो खोलो।
हुआ है प्रात उठ बैठो तुम्हें होना रवाना है॥
न सम्पति काम आवेगी न भ्राता मित्र सुत दारा।
अरे इनकी मुहब्बत में वृथा चित को फसाना है॥
महा सुख मूल जगदीश्वर सकल सृष्टी के कर्त्ता का।
कभी मत भूल अय तुलसी वही तेरा ठिकाना है॥

भजन ४८

क्या कीन्हा रे तन पाय नेक ता यह सोचो प्यारे।

नहीं पर दुख को दुख जाना, नहिं पर सुख को सुख माना।
नहीं दीन दुखिन पहिचाना, मिलें क्यों कर आनंद भारे॥ क्या० १॥
नहिं सन्ध्या में चित दीन्हा वैश्व, बलि भी न हा कीन्हा।
नहिं अग्निहोत्र को चीन्हा, महा अवगुण उरमें धारे॥ क्या० २॥
नहिं सत संगति में बैठा, नहीं ज्ञान ध्यान में पैठा।
नित रहा शान में ऐंठा सुखों के शुभसाधन हारे॥ क्या० ३॥

नहीं वेद मन्त्र उच्चारे, नहीं पढ़े सूत्र भी प्यारे ।
सब हुये अकाज तुम्हारे, विनय तुलसी करके हारे ॥ क्या० ४ ॥

कव्वाली ४६

मानो कहा हमारा, कुछ धर्म अब कमाओ ।
पाकर मनुष्य जनम को, योंही न हा गँवाओ ॥
मुश्किल से यह मनुष तन, इसवक्त तुमनेपाया ।
ऐसे करम करो तुम, आगे भी इस को पाओ ॥
मुमकिन जहां तलक हो, सबकी करो भलाई ।
फँस स्वार्थ में किसी को, ऐ यार मत सताओ ॥
यम नियम का यथोचित, पालन करो हमेशा ।
गंगा के तुल्य निर्मल अपना हृदय बनाओ ॥
परमात्मा की शिक्षा, वेदों में जो है वर्णित ।
संसार भर में उसका, विस्तार अब कराओ ॥
बद-पतकादियो में, जो लोग फँस रहे हैं ।
उनको सुधार सच्चा, वैदिक ब्रती बनाओ ॥
हिन्दूपना मिटाना, लाजिम है हिन्दुओं का ।
कहलाना आर्य सच्चा अच्छीतरह सिखाओ ॥
वैदिक धरमकी अज़मत, पाकीज़गी को प्यारो ।
अपने चलन अमलसे, दुनियां को तुम दिखाओ ॥
हर्गिज़ भी मत डरो तुम, बेजा मुखालफ़त से ।
आगेही आगे अपना, हरदम क़दम बढ़ाओ ॥
उट्ठो कमर को कसकर, हिम्मत से मेरे प्यारो ।

दुनियां में हर जगह पर, वैदिक ध्वनी गुँजाओ ॥
सालिग तुम्हारा सेवक, कर जोड़ कह रहा है ।
वैदिक धरम का बीड़ा, अच्छी तरह उठाओ ॥

दादरा ५०

कोई दम का यहां है बसेरारे ।

जिस घर को तू अपना जाने, यह तो नहिं है तेरारे ॥१॥
बड़े २ भूप बीर अरु योधा, कर गये यहां पर डेरारे ॥२॥
कालबली ने यक दिन सबको, आय यहां से खदेरारे ॥३॥
विषय भोग में फँस मन मूरख, ईश्वर से मुख फेरारे ॥४॥
ना जाने कब आवे बुलावा, करले काम सबेरारे ॥५॥
करले जीवरे धर्म कमाई, क्यो आलस ने घेरारे ॥६॥
सालिगराम ईश को जपले, पार होय तेरा बेड़ारे ॥७॥

दादरा ५१

रहना धर्म के आधार, आधार मेरे प्यारे ।

बिना धर्म के कोई न साथी, मतलब का संसार २ मेरे प्यारे ॥
मरती वार यही सँग जावे, चले न कुटुम्ब परिवार २ मेरे प्यार ॥
दम निकले सुत, नारि बन्धु सब, फेंकदें देलासा डार २ मेरे प्यारे ॥
कोई मँरघट तक सँगजावे, धरदें चिता के मँझार २ मेरे प्यारे ॥
काठ सा फूंक अग्नि में देवे, कोई न करता प्यार २ मेरे प्यारे ॥
पीठ फेर कर घर को आते, ऐसे हुये लाचार २ मेरे प्यारे ॥

जब यह धर्म रहे है संग में, तभी करे हित यार २ मेरे प्यारे ॥
घीसा कहे भटीपुर वासी, करता है ज्ञान उच्चार २ मेरे प्यारे ॥

दादरा ५२

भय खेहौ तो कैसे धरम रैहै, भय खेहौ।

भय से जो तुम धर्म को तजिहो, ईश्वर क सम्मुख कहा कैहौ।
ईश्वर की आज्ञा धरम है भाई, ईश्वर से लड़ क कहां रैहौ ॥
या कर लेना वा कर दना, करनी पै बस डट जैहौ।
पाप बिपति की जड़ ह भाई, करिहौ तौ सकट सहौ ॥
शीतल कहते मानो जी प्यार, नाहीं मानोग तो पछतैहौ ॥

भजन ५३

मेरी बिनती सुनो धर ध्यान।

गृह आश्रम ही सर्व श्रेष्ठ है क्या कुछ कहे बखान ॥१॥
पुरुष तो है घर की शोभा, पुरुष की स्त्री जान ॥
स्त्री की पतिव्रत है शोभा, रक्षा करे भगवान ॥२॥
दोनो की शोभा प्रीति परस्पर, पानी दूध समान ॥
जिस घरमें दोनो यह खुश है, वह घर स्वर्ग समान ॥३॥
मुखकी शोभा मृदुल वचनहै, हाथकी शोभा दान ॥
दानकी शोभा पात्र हो अच्छा, कहगये पुरुष महान ॥४॥
पर उपकार है तन की शोभा, तन की शोभा प्रान ॥
धर्म से शोभित प्रान बताया. मर्म यही है प्रधान ५।
वेद शास्त्र की ओ३म् है शोभा, अरु जीवन की ध्यान ॥

ध्यान की शोभा ओ३म जाप है, लीजे इतना मान ६ ।
है ब्रजलाल नगर की शोभा, जिस में होय समाज ।
समाज की शोभा कर्मकाण्ड है, सदस्य हो गुणवान ७ ॥

भजन ५४

फैला दो ब्रह्म ज्ञान जगत् में ।

सत्य धर्म और वेद पठन में अर्पण कर दो प्राण १ ।
धीरज धारो मीठा बोलो, तज देहु हठ अभिमान ॥
नित प्रति पंचयज्ञ का करना, दे दीनो को दान २ ।
जगत् गुरू था देश हमारा, सब ने किया बखान ॥
वेदो की प्रिय आज्ञा पालो, होगा वह फिर मान ३ ।
देश देश में धूम मचा दो, हो जाओ सिंह समान ॥
चीन अरब आदिक देशो में, यूरुप और जापान ४ ।
गुरुकुल में सन्तान पढ़ाओ, तजो मोह की बान ॥
सच्चे मात पिता कहलाओ, दो गुरुकुल को दान ५ ।
तुम्हरे हित ऋषि अर्पण कर गये, तन मन धन और प्रान ॥
छज्जू कहै वेग ही चेतो, मिलकर ऋषि सन्तान ॥६॥

भजन ५५

आजाना रे इस वैदिक धरम पर ।

आजानारे भाइयो आजानारे सभी आजानारे ॥ इस वैदिक० १ ॥
यह तो ईश्वर की है बाणी, सारे ऋषि मुनियो की मानी ।
ऋषि दयानन्द फर्मानी, कहते जिस को सब कल्यानी ॥

छोड़ो झूंठा करम, न गँवाओ जनम, कुछ खाओ शरम।
पकड़ो वैदिक धरम ॥ आजानारे० २ ॥
जो कोई इसको पढ़े पढ़ावे, पढ़कर भारी बोध बढ़ावे।
सो वह परमानन्द को पावे यही वेद हमको सिखलावे ॥
यही सच्चा करम, जिसे कहते धरम, जो कोई जाने मरम।
आवे इसकी शरन, आवे इसकी शरन ॥ आजानारे० ३ ॥
कहे परशुराम सुन भाई, सारे हिन्दू मन चित लाई।
चाहे मुसल्मान ईसाई, कोई मत वाले हों भाई ॥
सबही आजानारे, फल पाजानारे, दुख उठा जानारे।
सुख पाजानारे, सुख पाजानारे ॥ आजानारे० ४ ॥

गजल ५६

जमाने भर में वेदों की सदाक़त होने वाली है।
दिलों में सब के वेदों की वह इज्जत होने वाली है ॥
बिधी ब्रह्मचर्य की फिर भी सुजीवित होने वाली है।
तो अब शहवत परस्ती यां से रुखसत होने वाली है॥
लगी करने हैं अब कन्यायें भी जुन्नार को धारन।
बशाने गार्गी हर एक औरत होने वाली है॥
ज़माने भर में डंका वेद का बजता है अब मित्रो।
ज़माने भर की अब कुछ और हालत होने वाली है॥
हुई थी देव-भाषा की जो हालत कुछ दिनों पहले।
वही अब फार्सी की देखिये गत होने वाली है॥

शरन में वेद के सज्जन सभी आने लगे अब तो।
प्रभू की सब पै ज़ाहिर सच्ची कुदरत होने वाली है॥
लगीं करने हैं प्राणायाम अमरीका की महिला गण।
वहां भी इल्म रुहानी की कसरत होने वाली है॥
न क्यों ! अय महर्षि तुझ पै दिलोजां हम करें कुर्बान।
तरक्की हिन्द की तेरी बदौलत होने वाली है॥
न घबराना मेरे मित्रो कि गुरुकुल खुलगये अब हैं।
जगत से दूर यह सारी जिहालत होने वाली है॥
न हों वे आश वे हैं जो गिरफतारे मरज़ मुहलक।
कि आयुर्वेद की जारी तिबाबत होने वाली है॥
करेगा वाक़ई इंसाफ़ वह मुंसिफ़ हक़ीक़ी है।
ग़लत यह बात है उस जा शफ़ाअत होने वाली है॥
पसे मुर्दन अगर होंगे तो संग ऐमाल ही होंगे।
नहीं हमराह दौलत और हशमत होने वाली है॥
पये इसलाह क़ौमी हिन्दुओं को लाख समझावें।
मुअस्सर यह नहीं उनको नसीहत होने वाली है॥
लगे बनने सभी इसजा हक़ीक़ी धर्म के ख्वाहां।
हर एक ज़ी अक्लको ईश्वर से उलफ़त होनेवाली है॥

भजन ५७

आओ देखो मुक्ति साधन वेदों ही का ज्ञान है।
ज्ञान है विज्ञान है, कर्म ही प्रधान है।

जिससे उसका ध्यान है, सो सर्व शक्तिमान है ॥आओ० ॥
इंजील नहीं तौरेत में, नहिं काबा अल्लाऽवेत में।
जिन बुध के नाहिं निकेत में, है युक्ति प्रभु के हेन में।
प्राणी क्यों छाया अज्ञान, जड़ में चेतनता का भान।
मान मान दुख की खान है ॥ आओ० ॥
शैर–मुक्ति उसका नाम है जो दुख छुटे संसार के।
दुख छुटे तब जब न हो आवा-गमन का चक्र ये ॥
प्रवृत्ति तब तक है जबतक जन्म मृत्यु लग रहा।
दोष से है प्रवृत्ति अरु दोष मिथ्या ज्ञान से ॥
मिथ्या ज्ञान, कंटक जान, तजो पाठक संशय वान॥ आओ०

दादरा ५८

हम वेदों की शिक्षा सुनाये जांयगे।
अपनी निन्दा पर ध्यान न देंगे, सदा स्वामी का मन्तव्य फैलाये जांयगे ॥ १ ॥
जैनी पुरानी किरानिन को मित्रो, ऋषियों के वाक्य सिखाये जांयगे ॥ २ ॥
हिंसा न करना बता करके सबको, कुरीती यहां से मिटाये जांयगे ॥ ३ ॥
विधवा अनाथों की टेर पर तुलसी, सारे भारत को रुलाये जांयगे। हम वेदों की० ॥ ४ ॥

भजन ५६

भूला काहे प्राणीरे प्रभु की सत्ता नहिं पहचाने ।

सत् है सदा से चित् चेतन है, नित आनन्द स्वरूप ।
उस स्वामी से विमुख पड़े, तुम अन्धकार के कूप ॥ भूला० १॥
सुनते लखते चखते सूंघते, छूते जिनके द्वार ।
जड़ इन्द्रिय सहाय है उसकी, ऐसा सर्वाधार ॥ भूला० २ ॥
आंख न देखे, बाणि न पहुँचे, मन तक जावे नाहिं ।
सोचो मित्रो ! कैसे पहुंचे, ब्रह्म की सत्ता माहिं ॥ भूला० ३ ॥
जो कुछ तुमने अब तक जाना, सब इन्द्रिय के द्वार ।
ज्ञात वस्तु से ऊपर है वह, अज्ञातसे परे निहार ॥ भूला० ४॥
पाठक कहै मैल तज मन से, तब उपजे सत ज्ञान ।
आसन आदि समाधि अन्त ले, योगसे हो पहुँचान ॥ भूला० ५॥

भजन ६०

छवि ऋतुराज कीरे अपनी ओर निहार निहारो ।

पल पल अंश घटें रजनी के, बढ़ै दिवस का मान ।
यथा अविद्या सकुचै ज्यों २ त्यों २ विकसे ज्ञान ॥छवि० १॥
द्रुम दल हीन हुये पुनि पाई, हरियाली भरपूर ।
देखो यों अवनति को उन्नति कर देती है दूर ॥छवि० २॥
बन २ छदन छबीले छाये, कोर रहे करील ।
कोई काल मन्द भागी को, करे न सम्पति शील ॥छवि० ३॥

सरसों ने कर दिये बसन्ती जौ गेहूं के खेत।
मानों सुमति मिली सम्पति ने धर्म सुकर्म समेत ॥छवि० ४॥
सूखे फुलचुन्दे कदम्ब के, कलियानी कचनार।
हो बैठे धनहीन धनी यों, निर्धन साहूकार ॥छवि० ५॥
उलहे गुल्मलता तृण औषधि, अंकुर कोमलकाय।
जैसे न्यायशील राजा की प्रजा बढ़े सुख पाय ॥छवि० ६॥
मीठे फल देने को बौरे, मंगल मूल रसाल।
जैसे सकल सुलक्षण धारे, होनहार कुल पाल ॥छवि० ७॥
धीरे धीरे फूल फबीले, धरें सेवती सेव।
जैसे शुद्ध सत्व गुण धारी, दरसें देवी देव ॥छवि० ८॥
फूले फुलवाड़ी में गेंदा, और गुलाब अनूप।
राज-सभा में आय विराजे, मानो मंत्री भूप ॥छवि० ६॥
लाल फूल फूले समर के, काढ़ कोश गंभीर।
मानों ले प्रवाल के प्याले, मदिरा मांगे वीर ॥छवि १०॥
रस बांटें विकसे तड़ाग में, उपकारी अरविन्द।
दान पाय गुण गाते डोलें, याचक वृन्द मलिन्द ॥छवि ११॥
फूले पाय लाल सी लाली, टेसू गन्ध विहीन।
जैसे सजें रँगीले बाबा, बिन विवेक तन पीन ॥छवि १२॥
देखो सत्यानाशी फूली, तीखे कंटक धार।
जैसे साधु वेष कटुवादी वंचक करें विहार ॥छवि १३॥
फूले फबीले बरसाते हैं वन बीहड़ आराम।
किंवा शर युवती युवकों पर छोड़ रहा है काम ॥छवि १४॥

चारों ओर सुगन्ध उड़ावें, शीतल मन्द समीर।
जैसे सज्जनकी महिमा को, प्रकट करे कविधीर ॥छवि १५॥
कुंज २ में कोकिल कूजे, बोलें विविध विहंग।
सामगान के संग बजें ज्यों, वीणा वेणु मृदङ्ग ॥छवि १६॥
त्याग विरोध मिले आपस में, सरदी और निदाघ।
बेर बिसार तपोवन में ज्यों, साथ रहैं मृग बाघ ॥छवि १७॥
दूर न देखे ऋतुनायक से, रसपति और अनंग।
जैसे माया जीव ब्रह्मको छुटे न अविचल संग ॥छवि १८॥
वृद्ध ब्रह्मचारी बसन्त का, करते हैं अपमान।
ज्यों रसभाव भरी कवेनाको, भद्दी कहें अज्ञान ॥छवि १९॥
सब देशों में भर देता है, मधु उमंग रसरंग।
शंकर भूवे भारत को भी, चढ़ जाती है भंग ॥छवि २०॥

गज़ल ६१

स्टेशन जिस्म है मेरा नफ्स की रेल चलती है।
पकड़ सकता नहीं कोई कि जब फारम निकलती है॥
नहीं आता है जब तक तार उधर से लेनकिलयर का।
करो दिल की सफाई फिर ज़रा फ़ुर्सत न मिलती है॥
टिकट नेकी का हो जिसके पास वह अन्दर निकलता है।
बग़ैर अज़ टिकट के दुनियां खड़ी ही हाथ मलती है॥
बजा करती है सीटी रात दिन यां मौत की लोगो।
बदों के वास्ते हर दम पुलिस दर पै टहलती है॥

करे नेकी अगर ज़ायद तो पाये दर्जा भी अव्वल।
टिकट लेलो अभी कुछ देर है इंजन बदलती है॥
गया बचपन जवानी ने बजाई दूसरी घंटी।
चलो जल्दी नहीं तो तीसरी घंटी उछलती है॥
उठा असबाब अपना हक़-शनासी का चढ़ो जल्दी।
नहीं तो बिछुड़ जाओगे घड़ी उसकी न टलती है॥
खड़े रह जांयगे चुप चाप फाटक पर जो ग़ाफ़िल हैं।
यह चलदी रेल है "श्रद्धा" तो अब क्या पेश चलती है॥

भजन ६२

दोहा–राजा अपने देश में, पाता है सन्मान।
बुद्धिमान जन हर जगह, पुजता एक समान॥

टेक–उस बाप को वैरी जान, जिस ने नहि पुत्र पढ़ाया।

बिन विद्या मूरख कहलावे, जब तक जीवें दुःख उठावें।
जब कहीं विद्वानो में जावें, पाते हैं अपमान॥ जि० १॥
गुणियों में मूरख नर ऐसे, है बगले हंसों में जैसे।
बैठे लगें कुशोभित वैसे, लगें न शोभावान॥
वहां जाकर के पछताया॥ जिस ने० २॥
पितु का यह कर्त्तव्य कर्म है, सबसे पहला यही धर्म है।
सोचो इसका गूढ़ मर्म है, पढ़ादे निज सन्तान॥
बस वही पिता कहलाया॥ जिसने ३॥
सुता और सुत पढ़ जावेंगे, सब दुःखों से छुट जावेंगे।

सारे इच्छित फल पावेंगे, कीजे इसे प्रमान ॥
पद तेजसिंह ने गाया ॥ जिसने० ४ ॥

भजन ६३

दोहा-बिन विद्या संसार में, बुद्धि भई विपरीत ।
शुभ मारग तजकर चलें, तब कैसे हो जीत ॥
टेक-उलटी होगई रे, बिन विद्या के बुद्धि हमारी ।
सत् विद्या का पढ़ना छोड़ा, हुआ घोर अन्धेर ।
तब से मित्रो आर्य्यवर्त की, पड़ा बुद्धि में फेर ॥ उ० १ ॥
सत्य असत्य का बिलकुल हमको, नहीं रहा कुछ ज्ञान ।
हैवानों से भी बढ़चढ़ कर, हुये आज हैवान ॥ उ० २ ॥
जन्म मरण के दुखद चक्र में, भोग रहे दुख भारी ।
भीख मांग कर खावें फिर भी, बनते ब्रह्म अनारी ॥ उ० ३ ॥
देखो मुक्ति नहीं मिलती है, बिना हुये सत् ज्ञान ।
तबतो वृथा तीर्थ व्रत पूजा, गंग जमुन का न्हान ॥ उ० ४ ॥
तेजसिंह कहै जो सुख चाहो, करो वेद विस्तार ।
लड़के लड़की सभी पढ़ाओ, तभी होय उद्धार ॥ उ० ५ ॥

भजन ६४

दोहा-बिन विद्या के जगत् में, हुआ बहुत नुक़सान ।
मेरी कहने में तभी, है कमज़ोर ज़बान ॥
टेक-बिन विद्या के संसार में, होगई बहुत सी हानी ।
प्रात हुई वर बुद्धि बिसारी, आपस में चल रही कटारी ।

इज्जत बिगड़ी सभी हमारी, रह रह निज तकरार में ॥
सब होगये दुश्मन जानी ॥ होगई० १ ॥
निशि दिन भुजा ठोक लड़ते है, बिना बात अकड़ मरते हैं ।
अति कठोर भाषण करते हैं, नहीं रही नर नार में ॥
मंजुल मँजीर सी बानी ॥ होगई० २ ॥
जब पढ़ना वेदों का छूटा, ब्रह्मचर्य्य आश्रम भी टूटा ।
आर्य्यवर्त का नसीब फूटा, फँसे दुष्ट व्यभिचार मे ॥
सुखदा सिख एक न मानी ॥ होगई० ३ ॥
अबभी ज़रा चेत में आओ, लड़के लड़की सभी पढ़ाओ ।
सदा शक्ति अनुसार लगाओ, रुपया वेद प्रचार में ॥
तज तेजसिंह नादानी ॥ होगई० ॥

भजन ६५

नहीं ऐसा अवसर फेर सुधारो जीवन को भाई ।

मत योंही प्रिय सर्वसु हारो, साहस और सुमति उर धारो ।
आलस की मात्रा न बढ़ाओ, सुख बुध बिसराई ॥ नहीं० १ ॥
समता सीख सुनियम प्रचारो, पाय सुनीति अनीति बिसारो।
उन्नति के कर्त्तव्य अहर्निशि, समझो सुखदाई ॥ नहीं० २ ॥
मात, पिता, गुरु देवों को नित, पूजो अपना देकर हित चित ।
घटै न सद्व्यवहार त्यागिये, गरु मूरखताई ॥ नहीं० ३ ॥
सतसंगति का मान बढ़ाओ, नीच नरों के पास न जाओ ।
कर्म धर्म की गैल गही तिन, जिन कीरति पाई ॥ नहीं० ४ ॥

भजन ६६

परम पछताव है रे हमने जीवन योंहीं पाया।

पढ़े न चारु चरित ऋषियों के, नित बकवाद मचाया।
भूलगये महिमा नरत्व की, अन्धकार अधिकाया ॥ परम० १ ॥
चोरी जारी में सुख माना, नाम भला न धराया।
नाना विधि कर प्राप्त अधोगति, हा! उपहास कराया ॥परम०॥२
चार अांक पढ़ पत्रा बांधा, कभी न सुयश कमाया।
विविध मतों के जालों में फँस, सच्चा ईश भुलाया ॥परम०३॥
कुल सपुत अब कौन कहेगा, पाप प्रपञ्च बढ़ाया।
हाय! कर्यो भारत माता को, भारी दुख पहुँचाया परम० ४ ॥

भजन ६७

इंसान और हैवान में, क्या फर्क हमें बतलादो।

खाना तो पशु भी खाते हैं। बोझा मनों उठा लाते हैं। स्त्री भोगें सो जाते हैं। जन्म और मर जान में, कोई इस से अलग बतादो ॥ क्या फर्क० १ ॥

आंख तो मृगा मीन खंजन की। वाणी कोकिल मोर पिकन की। नासा शुक ग्रीवा हंसन की। चितवन सिंह बलवान में, कटि चीते की उपमा दो ॥ क्या फर्क० २ ॥

ऊनी वस्त्रों से जो बड़ाई। ऊन भेड़ दुम्बों से पाई। रेशमीन सो कीट कमाई। क्या हासिल इतरान में, इस घमण्ड को बिसरादो ॥ क्या फर्क० ३ ॥

चलन भगन में उत्तम घोड़े, बल में गज भैंसे क्या थोड़े। धन तो पशुओं के बल जोड़े। क्यों तुम भरे गुमान में, सांचा मतलब समझादो ॥ क्या फर्क० ४ ॥

कुश्ती सीखे आप शुतर से। पटे पैंतरे को बन्दर से। राग तो पक्षी पशु सुघर से। पड़े नहीं हो गान में, है कौन बड़प्पन गादो ॥ क्या फर्क० ५ ॥

ज्ञान धर्म तप विद्या नाहे। तो पशु सम फिर मनुष्य क्या है। ईसा ने पद सत्य कथा है। श्रुती रहै नित ज्ञान में, भूला तो आप सिखादो ॥ क्या फर्क० ६ ॥

गजल ६८

दिल अपना राह हक़ पै लगाये चले चलो।
आगे ही आगे पांव बढ़ाये चले चलो ॥ १ ॥
रस्ते से वेद पाक के जो हो रहे जुदा।
उनको भी राह रास्त दिखाये चल चलो ॥ २ ॥
वद एतक़ादियों को दिलों से उखाड़ कर।
वेदोक्त सारे कार कराये चले चलो ॥ ३ ॥
वदरस्मियात देश में फैली हुई हैं जो।
चुंगल से उनके सबको छुड़ाये चले चलो ॥ ४ ॥
प्राचीन देव वाणी के उद्धार के लिये।
गुरुकुल व पाठशाला बनाये चले चलो ॥ ५ ॥
बेकस यतीम बच्चों को औलाद की तरह।

निज आत्मा से लाड़ लड़ाये चले चलो ॥६॥
विधवा अनाथ दीन अपाहज हैं जिस क़दर ।
इन बेकसों को धैर्य्य बँधाये चले चलो ॥७॥
हिम्मत दिलाओ उनको जो निर्बल हैं आत्मा ।
कमजोर नातवां को निभाये चले चलो ॥८॥
गुरुदत्त लेखराम दयानन्द की तरह ।
वैदिक धरम का नाद बजाये चले चलो ॥९॥
माने न माने कोई यह उनको है इख्तियार ।
तुम सच्ची सच्ची बात सुनाये चले चलो ॥१०॥
सालिग प्रण जो कर चुके आकर समाज में ।
तादम अख़ीर उसको निभाये चले चलो ॥११॥

गजल ६९

उठो तुम भी अय भारत के दुलारो ।
टुक अपने देश की हालत निहारो ॥१॥
अगर कुछ देश की ममता है तुम को ।
तो मिल जुल कर इसे जल्दी सुधारो ॥२॥
बताओ कब तलक सोते रहोगे ।
तुम अय भारत के सच्चे यमगुसारो ॥३॥
मिलो आपस में प्रीति पूर्वक सब ।
परस्पर वैर को दिल से बिसारो ॥४॥
विनय है आप से सालिग की हरदम ।
प्रभू भारत की अब हालत सुधारो ॥५॥

भजन ७०

उठ भारत का करो सुधार, कैसे बैठे हिम्मत हार।

क्या हुई देश की हालत, नित दूनी बढ़े जहालत।
है बदबख्ती की दलालत, पर तुम बैठे हिम्मत हार ॥ उठ०

नित लगा अकाल सताने, ताऊन किये घमसाने।
भूकम्प मार लगे खाने, दुनियां रोवे बेशुमार ॥ उठ०

कहीं रोवे यतीम बिचारे, जो थे मा बाप के प्यारे।
वह मरे भूख के मारे, होते ईसाई रोज हजार ॥ उठ०

मर रहीं शोक मे बेवा नहीं रहा कोई मुख देवा।
छुटी पति अपने की सेवा, लगा डराने मुझे सिंगार ॥ उठ०

अय देश के चाहन वालो, तहज़ीब बढ़ाने वालो।
करो हिम्मत देश सँभालो, वर्ना डूब चला मँझधार ॥ उठ०

करो शुद्ध पतित जो भाई, हुये मुसल्मान ईसाई।
अपने तुम लेओ बनाई, वेद पढ़ाओ बे तकरार ॥ उठ०

दीनो की कराओ रक्षा, देओ थोड़ी थोड़ी भिक्षा।
करो पोषण और देओ शिक्षा, पुत्र बनाओ करलो प्यार ॥ उठ०

जितनी है कमसिन बेवा, केवल फेरो की लेवा।
मत बनो उन्हें दुख देवा, उनका करो पुनः संस्कार ॥ उठ०

करो गुरुकुल आदी जारी, जहां पढ़ें वेद ब्रह्मचारी।
फिर बनें देश हितकारी, परदेशी की सुनलो पुकार ॥ उठ०

गजल ७१

उठो नींद से अब सहर होगई है।
उठो रात सारी बसर होगई है॥
उठो कुल सभा मुन्तशर होगई है।
हवा सब इधर की उधर होगई है॥
बग़ल में नसीबे को भी लेके सोये।
अजलको भी तुम आज दम देके सोये॥ १॥

हुई सुबह और जानवर सारे जागे।
जनो मर्द हैं घर व घर सारे जागे॥
शरारत के रसिया बशर सारे जागे।
उठे वह भी जो रातभर सारी जागे॥
फ़क़त ख़्वाब में बेख़बर तुम पड़े हो।
अजब नींद की नींद में तुम पड़े हो॥ २॥

उठो ऐ बुज़ुर्गों की पत खोने वालो।
उठो बाप दादा की मत सोने वालो॥
उठो अपनी अक्लो सुरत खोने वालो
उठो अपनी बाक़ी की गत खोने वालो।
ज़रा ख़्वाब ग़फ़लतसे आँखें तो खोलो॥
गई आबरू अब तो मुँह अपना धोलो॥ ३॥

वह चमका है नूरे सहिर कुल जहां में।
नई रोशनी फैली है हर मकां में॥

शबे गम ने चादर स्याह है उतारी।
खुलीं ग़फ़लतों से न आंखें तुम्हारी॥
सब आरायशें लुट चुकीं हैं तुम्हारी।
बहारें हुई पेश की तुम पै भारी॥ ४॥

वह चलने लगीं इज्जतों की सवारी।
बस अब है जनाज़ा निकलने की बारी॥
ग़ज़ब! उम्र सोने में तुम ने गँवादी।
उठो बन गई और क़ौमों की चांदी॥ ५॥

वह कुन्बे की इज्जत चली अबतो उट्ठो।
वह दौलत व ह हशमत चली अबतो उट्ठो॥
तरक्की का दिन सारा ढलने को आया।
तन्ज्जुल ने यह दिन है तुमको दिखाया॥
किया तुम पै अद्‌बार ने अपना साया।
मगर ग़फ़लतों ने न तुमको जगाया॥ ६॥

पड़े ही पडे आंखें मलकर तो देखो॥
ज़रा अपनी करवट बदल कर तो देखो।
ज़माने की रंगत बदलने लगी है॥
हवा और आलम में चलने लगी है।
उठो धूप दुनिया की ढलने लगी है॥
हर एक क़ौम गिरकर संभलने लगी है॥ ७॥

बड़े बनते जाते हैं छोटे तुम्हारे!
नसीबे हैं किस दर्जे खोटे तुम्हारे!!

अमूल्य शेरें ७२

प्यारो उठो कि अब तो नसी में सहर चली।
सदियों के ग़ाफ़िलों को भी वेदार कर चली॥
आख़िर में यह है पाय के तुम्हें बेखबर चली।
साअत जो काम की यह कहकर गुज़र चली॥
ख्वाबे गरां को जाने दो आया है वक्त कार।
फ़ुर्सत है कम तो काम है करने को बेशुमार॥
मुर्गान सुबह कहते हैं तुम को पुकार के।
उठो यह कैसे सोये हो पाओं पसार के॥
कब तक बने रहोगे शिकार अन्धकार के।
हसरत से हाथ काटोगे मौके गुज़ार के॥
करता नहीं है वक्त किसी का भी इन्तज़ार।
करले जो काम वक्त पै होगा वह कामगार॥
हमेशा के लिये रहना नहीं इस दारफ़ानी में।
कुछ अच्छे काम करलो चारदिनकी जिन्दगानीमें॥
जो अहिले करम हैं वह बुराई नहीं करते।
दुनिया में किसी से भी लड़ाई नहीं करते॥
पुरख़ार दरख़्तों की तरह उनकी है हस्ती।
दुनिया में किसी से जो भलाई नहीं करते॥
सुन ले अय मग़रूर इन्सान मक्रो हीले छोड़दे।
राहहक़ पै आके तू इस कजरवी को छोड़दे॥
मकि नेकी करले ज़ालिम ऐश दुनिया छोड़दे।

मर्द है आजिज जो दुनियाही में दुनिया छोड़दे ॥
अगर्चे खलकत यह जानती है, कि इसमें रहता कोई नहीं है।
फिर इसपै गफ़लत ये छारही है, कि सो रही है तमाम दुनिया ॥
दाल और पर भी ता काम आते हैं हैवानों के।
हैफ ! इन्सान के इन्सान न गर काम आवे ॥
जायइबरत है यह दुनिया, गाफिलो डरते रहो।
ताज था जिस सर पै, है वह कासए सरज़ेरपा ॥
आकिल है गर ता सर न उठाना बजेर चर्खे।
आकिल बहुत बुरा है नतीजा गरूर का ॥
कितन ही नन क शहर के और गांव के निशान।
थो मिट गय जमी प कि ज्यो पांव के निशान ॥

भजन ७३

दोहा-कुछ सलूक तो कीजिये, प्रिय स्वदेश के साथ।
बिल्कुल इसे डुबाय के क्या आवेगा हाथ ॥
टेक-तुम्हारे क्या हाथ आवेगा, इस भारत की नैया डुबाकर।
नफा कितनी देय दिखाई, जो करते हो इतनी बुराई।
क्या मरने समय भी भाई, कुछ इस में से साथ जावेगा ॥
आबजा दीन रोते है, रो रो आंखें खोते हैं।
सब सुख बिसार सोते है, कौन इन्हें धीर बंधावेगा ॥
तुम्हें दीखता है किसका सहारा, कर बैठे हो जा अब किनारा।
अब स्वामी न जिन्दा तुम्हारा, जो इतना दुखड़ा उठावेगा ॥

उठो भाई होश सँभालो, अपने बोझ को आप उठालो।
इस गुरुकुल पै दृष्टी डालो यही सारे दुःख मिटावेगा॥

भजन ७४

न हिम्मत हारनारे, सुख पाओ भारतबासी॥
रहो न हरगिज न्यारे न्यारे, मिलकर बैठो भाई सारे।
प्रीति प्रेम से सत्यासत्य नितारनारे॥ सुख०॥
हालत देश की देखो भालो, ऐसी कोई तजवीज निकालो।
सारे देश के जिस्म से कष्ट निवारनारे॥ सुख०॥
पड़े तुम्हारे आलिम भारी, तुमपर ग़फ़लत होरही तारी।
छोड़ो गफ़लत आँखें जरा उघारनारे॥ सुख०॥
देखो वेद उपनिषद् दर्शन लाखो तरह के उन में है फन।
खोलो इनको, मित्रो तानक विचारनारे॥ सुख०॥
ब्रह्म विद्या मे यह पूरन, लौकिक विद्या का भी मखज़न।
भूल के खन्ने, इनको नहीं बिसारनारे॥ सुख०॥

भजन ७५

क्या हुआ तुझे अय हिन्द! तेरा था रुतबा कभी आला॥
कहां से तूने नाम यह पाया, असल नाम को किधर गँवाया।
उत्तम नाम तेरा आर्यवर्त था, सुन्दर अर्थवाला॥ क्या०॥
सब विद्याओं की तू कान थी, सब देशों की तूही जान थी।
शंकराचार्य गौतम कणाद को, तूने ही पाला॥ क्या०॥

राजा भोज ने घोड़ा बनाया, फल कोई उस में ऐसा लगाया।
सत्ताईस कोस चलता घंटे में, थी तू विद्याला ॥ क्या० ॥
ऐसेही उसका पंखा हिलता, दिवस रैन बिन छूए चलता।
इसी तरह के लाखो क़ायम थे, तुझ में शिल्प आला ॥ क्या० ॥
अन्य देशी सब यहां थे आते, यहां से विद्या सीख के जाते।
अब मुहताज तू है औरो का, क्या उलटा चाला ॥ क्या० ॥
कपड़ा तेरा बाहर से आवे, दिया तेरा कोई और जलावे।
सीने के लिये सुई न घर में, अजब रंग ढाला ॥ क्या० ॥
धन दौलत का क्या था ठिकाना, हासिद था सब तेरा ज़माना।
बच्चे तेरे अब भूख के मारे, करते आहो ! नाला ॥ क्या० ॥
जाहो हशम जितना थी तेरी, ग़ज़नी की जब चली अंधेरी।
चोर लूटकर ले गये सब कुछ, तोड़ ताड़ ताला ॥ क्या० ॥
रही सही जो बची बचाई, नाइतफ़ाक़ी ने वह गँवाई।
अब तो ख्वाब ग़फ़लत से जागो, हो गया उजाला ॥ क्या० ॥
शूद्र बनकर उमर न घालो, कोई कौशल कला निकालो।
करो उद्धार कुछ देश अपने का, सेठ बाबू लाला ॥ क्या० ॥
देशी चीज़ बर्तो बर्ताओ, देशी पहनो देशी खाओ।
खन्नादास कहे होगी उन्नति, रहे बोलबाला ॥ क्या० ॥

गजल ७६

कभी हम जहां में थे आलीजाह, तुम्हें याद हो कि न याद हो।
अन्य देशी पाते थे यहां पनाह, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥

यहां थे पातंजलि नामवर, जिन योगशास्त्र बनाय कर।
किया राह हक़ से हमें आगाह, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥
जहां राम थे दशरथ के जा, जिसने मारीच और ताड़का।
बालकपने में किये फ़नाह, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥
जहां पाणिनि जैसे ऋषि, जिन अष्टाध्यायी थी रची।
कहां तक थे इल्म में पकता, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥
गौतम से थे जो फ़िलासफ़र, जिसने कि न्यायशास्त्र रचा।
मन्तक की जान बना दिया, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥
जहां वेदों जैसा खजीना है, उपनिषदों का भी दफ़ीना है।
देखो तो इनमें है क्या दवा, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥
क्यों तुम ने इनको छोड़ा है, सत् विद्या से मुँह मोड़ा है।
कहदो पुराणों में क्या धरा, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥
अब आंखें खोल दो बरमला, नहीं वक्त है अब सोने का।
जैसे किसी ने है यूं कहा, तुम्हे याद हो कि न याद हो॥
गया वक्त फिर आता नहीं, सदा पेश दिखलाता नहीं।
कई काल वक्त गुजर चुका, तुम्हे याद हो कि न याद हो॥
खन्ना सदा समझाता है, सब खुफ़तगाँ को जगाता है।
उठ देखो कितना दिन चढ़ा, तुम्हे याद हो कि न याद हो॥

भजन ७७

कैसा शोक है रे, भारत माता अति दुख पाती।
वेद न कोई पढ़े पढ़ावे, शास्त्र दिये कर दूर।
प्रणयन कर आधुनिक पुस्तकें, करी धर्म की धूर॥ कै०॥

ब्रह्मचर्य की प्रथा उठाई, बालक गृही बनाये।
वाणप्रस्थ संन्यस्त कहां फिर, चहुँदिशि कुमति लखाये ॥ कै०॥
राज पाट धन धर्म धाम पर, निर्भय दौड़ी हार।
दुख दरिद्र दुबिधा ने घेरे, नेकहु नाहिं सुधार ॥ कै० ॥
चोर उचक्के और ठगों ने, कर राखी नित लूट।
हिल मिल 'करण' एक नहीं होते घर घर फैली फूट ॥ कै० ॥

भजन ७८

कर लेहु सुधार फिर भारत का भाई।
वर वैदिक धर्म प्रचारो। नाना मत पन्थ विसारो।
राखो सब से प्यार ॥ फिर० ॥
तन पै घर के पट धारो। धन को मत बाहर डारो।
सीखो सद व्यापार ॥ फिर० ॥
तजि दुर्मति सुमति पसारो। कर्त्तव्य कभी न बिसारो।
पाओ उच्चऽधिकार ॥ फिर० ॥
सन्मान न शेष तिहारो। जुरि मिल अवनतिको टारो।
कहता करण पुकार ॥ फिर० ॥

गजल ७६

तुम्हें अय भारत निवासियों क्यों, स्वदेश वस्तू नहीं है प्यारी।
ज़रा तो दिल में विचार देखो, हुई है कैसी दशा तुम्हारी ॥
विदेश वस्तू ने अपना झंडा, यहां पर आकर है जब से गाड़ा।

हुई है रुखसत यहां से बिलकुल, तमाम सनअत व दस्तकारी ॥

जिलावतन कर के इस जगह के, तमाम कसबोकमाल यारो ।
किया है अपना रिवाज इसने, यहां के कुल मर्दोजन में जारी ॥
स्वदेश वस्तू को आपने हा! यहां तलक दिल से है गिराया ।
कि गोया छूने से इस अभागिन के, सख्त होती हतक तुम्हारी ॥

यहां की रुई कपास चमड़े, को कौड़ियों में खरीद कर के ।
बना रहे कौड़ियों की मोहरें, बिला शुबह मग़रबी व्यापारी ॥
यहां पै बनात शाओ अतलस, चिकन वो कमख़ाब और मखमल ।
कभी बने थे नफीस ऐसे, कि पहने जिन को थे ताज धारी ॥

यहां के सन्नाः वो अहिलेपेशा, रहे थे खुशहाल सब हमेशा ।
मगर बिचारे ग़रीबो बेकस, बने हैं सब इन दिनों भिखारी ॥
जोलाहे, छीपी, लोहार, मोची, बढ़ी वा रंगरेज यां के सारे ।
हुए हैं बेकार हाय! ऐसे, करे हैं मुशकिल से दिन गुज़ारी ॥

सुई से लेकर तमाम जितनी, जरूरी चीजें हैं ज़िन्दगी की ।
फ़रोख्त होती हैं आज भारत में, ग़ैर मुलकों से आके सारी ॥
न होवें मुफ़लिस क्यों अहिलेभारत, पड़े न क्यों काल यां हमेशा ।
करोड़ों अबों जो सालियाना, ले छीन योरुप की सनाकारी ॥

विदेश वस्तू से दिल हटाकर, स्वदेश वस्तू को दो तरक्की ।
इसी से क़ायम रहेगी प्यारो, तुम्हारी फ़ेशन व वजेदारी ॥
स्वदेश वस्तु की उन्नति परही, देश की जिन्दगी है निर्भर ।
कभी भी मुमकिन नहीं यह सालिग, अकेली काफ़ी हो काश्तकारी ॥

भजन ८०

शैर—अय साहिबान बज्म ये है ग़ौर का मुकाम।
हिन्दोस्तान से दीनो धरम मिट गया तमाम ॥
मीठी न बात होगी मेरी तलख है कलाम।
और सच्ची बात कड़वी हुआ करती है मुदाम ॥
पर दिल्लगी यह है कि शकर का बयान है।
कड़वा न मै बनूं यही फिर भी गुमान है ॥
जब हड्डियो की खाक बिके यां तमाम तर।
और लोग लेते देते न शर्मायें सम्मा भर ॥
मंदिर मे मसजिदो में यह रायज हो सरबसर।
फिर क्यो प्लेगो क़हित बनालें न अपना घर ॥
सब जानते फ़रेब नहीं बात साफ है।
हठ धर्मियो को इस से मगर अनहराफ़ है ॥

टेक—देशी शकर बिचारी, फिरती दर दर है मारी।
कैसी ख्वारी है इसकी, ये राम राम राम ॥
रक्त हड्डी मिलाई, तुम्हें देते खिलाई, मेरे भाई

न लो अब नाम नाम नाम ॥ देशी० ॥ खता कीजे मुआफ, होवें गुस्सा न आप । जिस से करते हैं साफ वहां कहता हूं बात । जरा सुनिये जनाब, इस में पड़ता पेशाब, मरे मुर्दों का मास। और चाम चाम चाम ॥ देशी० ॥

खून बैल का हड्डी सुअर की। हिन्दू मुसल्मान को जो है

हराम। पड़ती इस में मुदाम। करते ऐसा कुकर्म, तुम्हें आवे न शर्म, मोल लेते अधर्म, देके दाम दाम दाम ॥ देशी० ॥

अब तो कीजे किनारा, कहा मानो हमारा, नहीं होगा तुम्हारा बड़ा नुकसान। खेती ऊंखों की सारी, बन्द होगी तुम्हारी, देश होगा भिखारी, तज काम काम काम ॥ देशी० ॥

अब तो ऐसी खोराक, पर डालो तुम खाक, जो है ऐसी नापाक, अजी छी छी छी। मित्र कहता पुकार, मत छूनाँ जिन्हार, देशी शक्कर प्रचार करो धाम ३ ॥ देशी० ॥

भजन ८१

करो देशी का मान, खांड़ विदेशी त्यागो ॥
यह देखतमें भड़कीली, उज्वल सफेद चमकीली।
धर्म की करती हान ॥ खांड़० ॥
रोगों को उपजाती है, बल बीरज को घटाती है।
डाक्टर करें बयान ॥ खांड़० ॥
हड्डी और रक्त जब डारें, तब गुड़ का मैल उतारें।
यह अखबारों में बयान ॥ खांड़० ॥
खाने से बुद्धि नस जावे, जग में सो प्रकट दिखावे।
फूट है याको प्रमान ॥ खांड़० ॥
जो है सवाद देशी में, वह नहीं है परदेशी में।
देखलो जल में छान ॥ खांड़० ॥
सज्जन तजते जाते हैं, जब दुर्गुण सुन पाते हैं।
सभी नर करें ग्लान ॥ खांड़० ॥

अब तक खाई सो खाई, अब खाओ राम दुहाई।
शब्द सुनलो धर ध्यान ॥ खांड़० ॥
देशी का प्रचार कराओ, परदेशी वस्तु घटाओ।
तभी होगा कल्यान ॥ खांड़० ॥
शंकर कहे सभा मँझारी, सुन रहे सभी नर नारी।
वृद्ध बालक और जवान ॥ खांड़० ॥

भजन ८२

(ख्याल)

अरे मित्र तुम बुरा न मानो, तुमने कहां विचारा है।
कितने दिन से तुमने अपना, हिन्दू धर्म बिसारा है॥
पशुओं की हड्डी का कोयला, गऊ रक्त की धारा है।
पड़े विदेशी खांड़ में रहगया, फिर कहां धर्म तुम्हारा है॥

टेक—क्यों नहीं करते मित्र विचार, विदेशी खांड़ के खानेवालो।
इसमें झूँठी न जानों यार, देखो पढ़ सारे अखबार॥
पड़ती गऊ रक्त की धार, जिसको नित्य जबां पर डालो॥ क्यों०

तुम हुए पेट के ताबेदार, दीन्हा अपना धर्म बिसार।
और बने गौवों के खूँख्वार, ऋषि सन्तान कहानेवालो॥क्यों०

तुम हो उनके राजदुलार, धवज धर्म्म के सर दिया टार।
अब तुम उनके हो कुलतार, दो रोटी पै धर्म बिकालो॥ क्यों० ॥

कहते तेजसिंह यही सार, मत अब करो इसे स्वीकार।
सब गली कूँचे शहर बजार, मिलकर एकदम कसम उठालो॥

भजन ८३

दोहा-विद्या की हानी भई, छई अविद्या आप ।
फूट पड़ी कौतुक भये, भारत भरत विलाप ॥

टेक-महाभारत दुखदाई ने, भारत को गर्द मिला दिया ।

पहले भारत महाराज था, शोभायुत ताजों का ताज था ।
दुनिया के काजों का काज था, अब मौताज बना दिया ।
दुर्योधन अन्याई ने ॥ महाभारत० ॥

आपस में लड़ २ के मरगये, विद्यावान जगत से टरगये ।
वेद के पाठी विप्र किधर गये, वैदिक धर्म गँवा दिया ।
अपनी मूरखताई ने ॥ महाभारत० ॥

फूट पड़ी आपस की दहगई, सुख सम्पति प्रभुता सब बहगई ।
बड़ हाथ की लकड़ी रहगई, शास्त्रों को बिसरा दिया ।
आपस की लड़ाई ने ॥ महाभारत० ॥

लखसंहारी वाण कहां गये, गगनमंडल विमान कहां गये ।
बल पौरुष गुण ज्ञान कहां गये, सारा तेज घटा दिया ।
भाई को मार भाई ने ॥ महाभारत० ॥

कोई हिंदू कोई मुसल्मीन भये, कोई जैनी कोई कृश्चीन भये ।
कोई बौद्ध कोई नवीन भये, ऐसा विघ्न मचा दिया ।
पोपों की ठगियाई ने ॥ महाभारत० ॥

एक धर्म का पता न पावे, आपस में कोई मता न पावे ।

अज्ञान विन कोई खता न पावे, जिसने होश भुला दिया।
समझन की कच्चाई ने ॥ महाभारत० ॥

विप्र धर्म विप्रों ने छोड़ा, क्षत्रिन ने क्षत्रापन छोड़ा।
घीसा कहे बुद्धि का तोड़ा, जो समझा सो गा दिया।
हृदय की सुघड़ाई ने ॥ महाभारत० ॥

भजन ८४

अविद्या पापिन जगत में ज़ुल्म गुजारा।
खुदगर्जों ने खुदगर्जी से अपना धर्म बिगाड़ा ॥ पा०॥
अनेक मत होगये जगत में, द्वेष भाव फैलाना।
वैर विरोध बढ़ा आपस में, रच दिये ग्रन्थ हजार ॥ पा०॥

हाजिर नाजिर खुदा कुरानी, पर्दानशीं बताना।
होगा न्याय क़यामत के दिन, बन्द पड़ा अब द्वारा ॥ पा०॥

श्रीभागवत में ईश्वर को कच्छ मच्छ बतलाना।
कहां तक तुमको हाल सुनाऊं ऐसेही पुरान अठारा ॥ पा०॥

हाय शोक भारत की नारी, होगई पशू समाना।
क़ब्र ताज़िये फिरैं पूजती, पतिव्रत धर्म बिगाड़ा ॥ पा०॥

पहले मिलकर प्रीति बढ़ाते, प्रेम भाव फैलाना।
बात २ पर अब लड़ते हैं, हाय शोक है भारा ॥ पा०॥

ऐसी दशा में ऋषी दयानन्द, आगये सूर्य्य समाना।
छज्जू धन्य २ स्वामी को, बार २ गुण गाना ॥ पा०॥

दादरा ८५

आज भारत में छाय रही काली घटा।

बादल अविद्या के चढ़आये, वेदों के सूरज को दीना हटा॥
दान पुन्य में देते न कौड़ी, पापों में रुपये रहे हैं लुटा।
अच्छे कामों में ढिग नहीं आवें, रंडी के चकले में जाता डटा॥
अन्तिम विनय यह है तुम से मेरी, वेदों का पकड़ो प्यारो पटा॥

कव्वाली ८६

वैदिक धरम की शिक्षा, गुरुकुल से लाभ होगी।
ब्रह्मचर्य्य आश्रम जो, बुनियाद आश्रमों की।
इस के बिना तुम्हारी, आयु खराब होगी॥
तालीम आज कल जो, भारत में हो रही है।
वह एक दिन तुम्हारे, शिर पै अज़ाब होगी॥
हरवर्ड और न्यूटन, कालेज में याद आवें।
ऋषियों की हाय हिस्ट्री, तुम सबको ख्वाब होगी॥
वेदों को छोड़ देंगे, बच्चों के गीत कह कर!
जब हाथ में तुम्हारे, बाइबिल किताब होगी!!
दिन वो तिथी को भूलें, सम्वत न याद होगा।
तारीख़ ईसवी पर, गिन्ना हिसाब होगी॥
जिन भोजनों से प्रतिमा, होती सतोगुणी थी।
उनकी जगह पै ज़र्दा, कलिया पुलाव होगी॥

होटल में जाके शामिल, होगी तुम्हारी सन्तान।
भोजन क़बाब होगा, बोतल शराब होगी॥
स्त्री पुरुष की संज्ञा, होगी नहीं किसी को।
सहधर्मिनी तुम्हारी, लेडी चुनाव होगी॥
करते हो काम उलटे, चाहते हो उन्नती को।
रफ्तार फिर तुम्हारी, कैसी जनाब होगी॥
वैदिक धर्म के प्यारो, भारत के रहनुमाओ।
सच्ची स्वदेश भक्ती, वेदों से लाभ होगी॥
इस वास्ते यह प्यारो, स्वामी ने जो कहा है।
आज्ञा उसी ऋषी की, बस लाजवाब होगी॥
ऐ वासुदेव निश दिन, वेदों का नाद होगा।
तब ही तुम्हारी इज्जत, और मुँह पै आब होगी॥

क़व्वाली ८७

देखो तो आज कैसा, आनन्द आ रहा है।
गुरुकुल का इस जमी में, झंडा लहरा रहा है॥
पौदा लगा ऋषी का, सरसब्ज़ हो चला है।
यह आर्य भाइयों से, इमदाद चा रहा है॥
गलता जो बीज पहले, फलता वही है प्यारो।
कुदरत का नियम हमको, यह सुभ दिखा रहा है॥
इसमें गला है स्वामी, फिर क्यों न फलको देगा।
स्वामी से ब्रह्मचारी, गुरुकुल बना रहा है॥

ईश्वर तुम्हारी मंशा, पूरी करेंगे एक दिन।
गुरुकुल को देख आशा, ये दिल बँधा रहा है॥
आवाज़ अपने कानों, एक दिन सुनोगे प्यारो।
योरुप में आर्यों का, झंडा लहरा रहा है॥
आवेंगे खत अरब से, उन में लिखा यह होगा।
गुरुकुल का ब्रह्मचारी, हलचल मचा रहा है॥

गजल ८८

क्यों दीनबन्धु मुझ पै तेरी कुछ दया नहीं।
आश्रित तेरा नहीं हूँ कि तेरी प्रजा नहीं॥
मेरे तो नाथ कोई तुम्हारे बिना नहीं।
माता नहीं है बन्धु नहीं है पिता नहीं॥
माना कि मेरे पाप बहुत हैं बड़े प्रभू।
कुछ उनसे न्यूनतर तो तुम्हारी दया नहीं॥
करुणा करोगे क्या मेरे आंसूही देखकर।
जी का भी मेरे दुःख तो तुमसे छिपा नहीं॥
जानेगा कोई क्या कि है दासों का तुझ को पक्ष।
दुष्टों का सर्वनाश जो तूने किया नहीं॥
क्यों मुझ को दुःख देते हैं लेते हैं मेरा शाप।
लोगों का मैंने कुछ भी लिया और दिया नहीं॥
तुम भी शरण न दोगे तो जाऊँगा हा! कहां।
अच्छा हूँ या बुरा हूँ किसी और का नहीं॥

गजल ८९

दयानिधान हमारी व्यथा सुनो तो सही ।
पुकार पुत्र की अपने पिता सुनो तो सही ॥
जो अपने लोगों के ऊपर दया नहीं करते ।
कहेगा आप को संसार क्या सुनो तो सही ॥
जो पापियों को भी देते हो शान्ति की आशा ।
कहां गई वह तुम्हारी दया सुनो तो सही ॥
मिलेगा आप को क्या लेके क्षुद्र कीट के प्राण ।
बिगड़ के हम से बनाओगे क्या सुनो तो सही ॥
जो हमसे फेरते हो मुँह सदैव हो राजा ।
किसी की ओर हैं हम क्या प्रजा सुनो तो सही ॥
जो भूल बैठे हो अपने प्रताप को ऐसा ।
तो होगी इस की भला क्या दशा सुनो तो सही ॥

गजल ९०

भाइयो हिन्दू कहाना छोड़ दो । अपने को रुसवा बनाना छोड़ दो ॥१॥ तुम नहीं हर्गिज़ भी काफिर और चोर। खुदको तुम ऐसा बताना छोड़ दो ॥ २ ॥ जो तुम्हें हिन्दूपना अच्छा लगे, तो ऋषी सन्तान कहाना छोड़ दो ॥ ३ ॥ आर्य्य हैं आप के सब खैरो ख्वाह । इनको अब मित्रो सताना छोड़ दो ॥ ४ ॥ वेद मारग को करो सब अख्तियार । बेतुकी गप्पें उड़ाना छोड़ दो ॥

सारे जग के रचने वाले ब्रह्म को। अपने हाथों से बनाना छोड़ दो ॥ ६ ॥ जो परिपूरण है कुल ब्रह्माण्ड में । उस को देह धारी बताना छोड़ दो ॥ ७ ॥ काली आदि देवियों की भेंट में। बकरे और भैंसे कटाना छोड़ दो ॥ ८ ॥ रोक दो बच्चों व बूढ़ो के विवाह। अबला कन्यायें रुलाना छोड़ दो ॥ ९ ॥ ब्याह आदी संस्कारो के समय। रण्डी भड़वो को नचाना छोड़ दो ॥ १० ॥ गर ब्राह्मण वंश के हो खैरख्वाह। बेपढ़े ब्राह्मण जिमाना छोड़ दो ॥११॥ रस्मियातें बद म फँस कर ख्वाहमख्वाह। भाइयो! धन का लुटाना छोड़ दो ॥१२॥ धर्म पालन में डरो हर्गिज न तुम। इसकी खातिर खौफ़ खानी छोड़ दो ॥ १३ ॥ पीर सैयद ताजियो के सामने। अब तो तुम सर को झुकाना छोड दो ॥ १४ ॥ आर्य धमकी में आवेंगे नहीं। इनको बस आंखें दिखाना छोडदो ॥१५॥ है निवेदन तुम से सालिगराम का। बाहमी लड़ना लड़ाना छोड़ दो ॥ १६ ॥

भजन ६१

दो०—उठो सनातनधर्मियो, तुम भी सुमिर गणेश।
भारत जननी के हरो, मिल जुल सकल कलेश ॥
मित्रो! सालिगराम यह, विनय करै कर जोड़।
करो काम उपकार का, बैर भाव को छोड़ ॥

टेक—अब त्याग के बैर विवाद को, कुछ करलो देश भलाई।
बहुत दिवस इसही में बीते। तुम हारे हो और हम जीते।

किये निरर्थक बहुत फ़ज़ीते । नाहक उठा फिसाद को ॥
तुमने अय हिन्दू भाई ॥ कुछ० ॥
जिसने हा ! तुमको समझाया । उसी से तुमने बैर बढ़ाया ।
तरह २ मे शोर मचाया । कर के बन्द इमदाद को ।
उलटी हानी पहुँचाई ॥ कुछ० ॥
फूट पापनी का यह फल है । भारत जो इतना निर्बल है ।
जिस घर में रहती कलकल है । क्यों ना वह बर्बाद हो ।
बने क्यो न नरक की खाई ॥ कुछ० ॥
मानो २ प्यारे भाई । बैर भाव को दो बिसराई ।
कर के आपस में एकताई । बजा दो वैदिक नाद को ।
जतला उसकी प्रभुताई ॥ कुछ० ॥
भारत जननी की करो सेवा । कर के दूर फूट दुख देवा ।
प्रेम प्रीति का चखलो मेवा । जिसके न्यारे स्वाद को ।
पाओगे अति सुखदाई ॥ कुछ० ॥
विद्या का विस्तार कराओ । कालिज और गुरुकुल खुलवाओ ।
करना बाल बिवाह हटाओ । शिक्षा दो औलाद को ।
ब्रह्मचर्य उसे रखवाई ॥ कुछ० ॥
दीन अनाथ का पालन पोषण । करने लगो पुत्रवत सज्जन ।
यह असली है धर्म सनातन । मेटो विपद विषाद को ।
दीनो के बनो सहाई ॥ कुछ० ॥
सन्ध्या हवन करन नित लागो । बदरस्मों को जल्दी त्यागो ।
भारतवासी जागो जागो । छोड़ बुरी मर्याद को ।
बनो वेदों के अनुयायी ॥ कुछ० ॥

हार जीत दिल से बिसराओ। सत्य धर्म से प्रीति बढ़ाओ।
वेदों की अब शरन में आओ। जिस से अधिक मुफ़ाद हो।
और बल बुद्धि बढ़जाई ॥ कुछ० ॥
सालिगराम कहे समझाई। शुद्ध भाव से तुम को भाई।
कभी न बर में करो लड़ाई। मित्रो इस फ़र्याद को।
सब सुनलीजो चित लाई ॥ कुछ० ॥

भजन ६२

शैर—अय! सनातन धर्मियों मत आर्यों से तुम लड़ो।
यह नहीं शत्रु तुम्हारे गौर तो दिल में करो ॥
भाइयों हैं आर्य सच्चे तुम्हारे खैरख्वाह।
रखते हैं हरदम तुम्हारी बेहतरी पर यह निगाह ॥
देश के सेवक तुम्हारे धर्म के हैं पासवान।
इन से लड़ना नामुनासिब है तुम्हें अय मिहरबां ॥
छोड़ दो लड़ना लड़ाना इनसे प्यारे भाइयो।
शुद्ध हृदय करके देश और धर्म की सेवा करो ॥
टेक–करो अब कुछ उपकार, देश धर्म का प्यारो।
लड़ने में समय मत खोओ, मत बीज द्वेष का बोओ ॥
सँभल जाओ अय यार ॥ देश० ॥
लड़ने की आदत छोड़ो, शुभ कर्मों से दिल जोड़ो।
करो कुछ परउपकार ॥ देश० ॥
गुरुकुल कालिज करो जारी, जिन में औलाद तुम्हारी।
रहे ब्रह्मचर्य धार ॥ देश० ॥

हैं दीन अनाथ जो बालक, बनजाओ उनके पालक ।
करके सच्चा प्यार ॥ देश० ॥
बदरस्मो रिवाज हटाओ, और वैदिक रीति चलाओ ।
देश का करो सुधार ॥ देश० ॥
लाखों जो तुम्हारे भाई, हुए मुसल्मान ईसाई ।
करो उनका उद्धार ॥ देश० ॥
मत घर में करो लड़ाई, मिल जाओ प्रेम से भाई ।
छोड़कर सब तकरार ॥ देश० ॥
करे सालिगराम निवेदन, लड़ना नहीं धर्म सनातन ।
करलो सोच विचार ॥ देश० ॥

दादरा ६३

मत लड़ना आपस में भाई रे ।

कौरव व पांडवों ने आपस में लड़कर । भारत को दीना डुबाई रे ॥ मत० ॥ पृथीराज ने जैचन्द से लड़कर । अपने को दीन्हा मिटाई रे ॥ मत० ॥ जरासन्ध ने लड़कर कृष्ण से करदी थी कुल की सफाई रे ॥ मत० ॥ लाखों करोड़ों राव और राजे । बिगड़े हैं करके लड़ाई रे ॥ मत० ॥ आपस के झगड़ेही इस का सबब हैं । भारत पै आफत जो आई रे ॥ मत० ॥ आपस में यहां पर जो झगड़े न होते । न आते मुसल्मां ईसाई रे ॥ मत० ॥ सालिग जो अपने को चाहो सुधारा । वेदों के बनों अनुयाई रे ॥ मत० ॥

भजन ६४

दोहा—बोली एक अमोल है, बोली जाय तो बोल।
हिया तराज़ू तोल कर, मुख से बाहिर खोल॥

टेक—वचन तू मीठा बोल, वाणी का घाव बुरा है।
जिसकी वाणी में मीठापन है, उसको हर जगह अमन है।
जी चाहे जहां डोल॥ वा०॥
इस वाणी से प्रीति हो गहरी ! हा ! यही बना दे बैरी।
कलेजा देती छोल॥ वाणी०॥
इसे मित्र शत्रु सब जाने, और कोयल काक पहचाने।
जब दे मुखड़ा खोल॥ वाणी०॥
वाणी ने हव्वा बताया, बच्चों को लू लू सुनाया।
बैठगयी सुनकर हौल॥ वा०॥
सब की क़ीमत होती है, हीरा माणिक मोती है।
नहीं वाणी का मोल॥वाणी०॥
कहे तेजसिंह सच बोलो, मत असत्य को मुख खोलो।
है कच्ची जिसकी तोल॥ वाणी०॥

भजन ६५

अनाथपुकार।

सुनिये साहब ज़री, देश में अपने आग लगी।
क़हत रूपी अग्नि के शोले उठते हैं हर आन।
जिस में लाखो भाई हमारे होते हैं बेजान॥ सु०॥

देख देख इस आग के शोले जागे देश तमाम।
ना जागे पर भारतवासी सो रहे बद अंजाम ॥ सु० ॥
अन्य देशी जो उठे बुझाने जाहिर करके प्रीति।
रत्न रत्न वह लगे चुराने खोटी करके नीति ॥ सु० ॥
एक मुसाफिर रास्ते जाता कर गया है हुशियार।
देखो हालत देश अपने की ख्वाब से हो बेदार ॥ सु० ॥
जागो जागो जल्द बुझालो क्यों हो लापरवाह।
फैल गई तो सारे देश को कर देवेगी दाह ॥ सु० ॥
लाखों लड़के और लड़कियां ले गये क्रिश्चन लोग।
आंख नहीं पर खुली तुम्हारी भारी हमको शोक ॥ सु० ॥
पहले थे वह मित्र तुम्हारे अब है दुश्मन जान।
पहले रक्षक थे गौओं के अब हरते हैं प्रान ॥ सु० ॥
कौड़ी कौड़ी पैसा पैसा जमा करो हर आन।
जहां तलक हो दीन जनों के अर्पण करदो दान ॥ सु० ॥
बच जावे यह धर्म तुम्हारा छोड़ो सभी प्रमाद।
खन्ने की यह सत्य नसीहत करोगे पीछे याद ॥ सु० ॥

भजन ६६

गये मात पिता हमें छोड़ हाय अब कौन बंधावे धीर।
फिरते हैं भटकते दर दर। करे कौन लाड़ अब हम पर।
नहीं कोई हमारे सर पर। हाय यूँ फूट गई तकदीर ॥ गये० ॥
रहने को नहीं ठिकाना। नहीं मिले पेट भर खाना।

अब तुमही हमे बताना । करें क्या जीवन की तदबीर ॥ गये० ॥
जब भूख और प्यास सतावे । और खान पान नहीं पावे ।
तब बस यही पार बसावे । बहा देते आंखों से नीर ॥ गये० ॥
जब कभी बहुत दुख पावें । तब याद मात पितु आवें ।
हम रोदन बहुत मचावें । खींच दिल में उनकी तसवीर ॥ गये० ॥
पर कुछ नहीं पार बसाती । रहजाते पीट कर छाती ।
बस अब दुनिया में नाती । हमारे तुम हो आरज वीर ॥ गये० ॥
हो तुम्हीं पिता और माता । हो तुम्हीं बहिन और भ्राता ।
नहीं और नज़र कोई आता । हरे जो दिलकी हमारे पीर ॥ गये० ॥
अच्छे कुल के हम जाये । पर विपति ने बहुत सताये ।
यां शरन तुम्हारी आये । काटदो अब दुखकी जंजीर ॥ गये० ॥
अब धर्म और प्राण हमारे । हैं सब आधीन तुम्हारे ।
इनकी रक्षा में प्यारे । कमर कस सालिग बन के वीर ॥ गये० ॥

भजन ६७

तुम ही हो मा बाप कोई और नहीं है ।

तुम से अय आर्य पुरुषो, कहते हैं अपने दुखको । ज़रा कृपा करके सुनलो, नहीं सुनोगे तो कुछ हमारा ज़ोर नहीं है ॥ तुम० ॥ कभी हम भी थे राजदुलारे । मा बाप को आंखों के तारे । अब फिरते हैं मारे मारे, हमें रहने तक को ठौर नहीं है ॥ तुम० ॥ हमें ईसाई फुसलावें, हमारा वैदिक धर्म छुड़ावें । अपना मज़हब सिखलावें, कहें मुक्ति का और कोई तौर नहीं है ॥ तुम० ॥

हिंदुओं ने दया बिसारी, नहीं लेते खबर हमारी । हमें समझें गैर अनारी, उन्हें दुख पर हमारे कुछ ग़ौर नहीं है ॥ तुम० ॥ वह मुजरे नाच करावें, वहां धन को खूब लुटावें । हम भूखे रुदन मचावें, वहां दया धर्म का दौर नहीं है ॥ तुम० ॥ अब नहीं कोई धीर बँधावे, हमें भोजन बना खिलावे । कपड़े जूते पहनावे, बिपता का हमारी, कोई और नहीं है ॥ तुम० ॥ हम बालक नन्हे तुम्हारे, फिरते हैं मारे मारे । नहीं रहा अब कोई हमारे, तुमहीं हो बस अब कोई और नहीं है ॥ तुम० ॥ कहे सालिग धर्म को पालो, म्हारे धर्म और प्राण बचालो । हमें पुत्रवत गले लगालो, कहां जांय जान को ठौर नहीं है ॥ तुम० ॥

गजल ६८

करें हैं मोहसन कुशी खिलाशक, तमाम गौवें सताने वाले ।
उन्हीं को जो हैं बड़ी सहायक, हुये ये ज़ालिम नशाने वाले ॥
पियें उमरभर हैं दूध जिसका, हैं खाते मक्खन दही वो मस्का ।
ग़ज़ब है काटें गला उसीका, उसीका हैं ग्नूँ बहाने वाले ॥
गऊ के जायेही हल चलावें, गऊ के जायेही अन कमावें ।
जिन्हें कमाकर यह नित खिलावें, वही हैं इनके सताने वाले ॥
गऊ के जायेही दें सवारी, इन्हीं पै निर्भर है काश्तकारी ।
इन्हीं की गर्दन पै हा ! कटारी, चलायें हड्डी चबाने वाले ॥
भला है दुनिया में कौन ऐसा, करे जो उपकार गाय कैसा ।
खिलाये मक्खन व खाय भूसा, व बैलदे हल चलाने वाले ॥

किसान भारत के आज सारे, हुये हैं मुफलिस बहुत विचारे।
बिगड़ रहे हैं क़र्ज़ के मारे, यह सब की रोज़ी कमाने वाले॥
कभी जो दसको था बैल आता, वह सौको भी अब नहीं है पाता।
पकड़ के रोते हैं अपना माथा, तमाम खेती कराने वाले॥
गौकुशी की ही बदौलत, हुई जो दूध और घी की किल्लत।
बतादो आवे कहां से ताकत, हैं सुखी रोटी के खाने वाले॥
करोड़हां ऐसे हैं यहां जन, जिन्हें नहीं होते घी के दर्शन।
हमेसा करते हैं खुश्क भोजन, शरीफ घर के कहाने वाले॥
मिले नहीं जिनको दूध और घी, बढ़े भला कैसे बल वो बुद्धी।
नहीं समझते मगर कुबुद्धी, ये मांस से तन फुलाने वाले॥
गुनाह मोहसनकुशी सा यारो, नहीं है दीगर जरा विचारो।
भला करे जो उसी को मारो, हो कैसे अहसां भुलाने वाले॥
हिजूर पंचम जियार्ज आली, हो चूंकि भारत के आप वाली।
तुम्हारी इस ने पनाह पाली, तुम्हीं हो इस के बंधाने वाले॥
करो दयाकर यह हुक्म जारी, न मारी जावें गऊ विचारी।
हुई है भारत प्रजा दुखारी, हैं आप दुख के हटाने वाले॥
किसी को नालिम जो हैं सताते, नहीं वह आराम खुदभी पाते।
हमेशा रहते हैं दुख उठाते, किसी के दिलको दुखाने वाले॥

भजन ६९

दोहा–गो रक्षा कीजे सुजन, ये भारी उपकार।
इस से रक्षा जगत की, पलता है संसार॥

टेक–दीनों पर दया करोरे, गौ माता कहें रँभाय के।
दूध दही और घी खाते हो। मावे तक से हर्षाते हो।
बल बढ़ मोटे हो जाते हो। बड़े बड़े सुख पाय के॥
दुख सागर से उतरोरे॥ दीनों०॥
गोबर से चौके लगवालो। कंडों को अग्नि में जलालो।
मूत्र से उम्दा दवा बनालो। रोगों पर अजमाय के॥
मत मांस से पेट भरोरे॥ दीनों०॥
मरती बार चर्म दे जावें। चर्म ढोल जूते बनवावें।
फिर भी हम पर तेग़ चलावें। न्याय नीति बिसराय के॥
ईश्वर से जरा डरोरे॥ दीनों०॥
सुत हमार हल कुँये में चालें। मेवा मिठाई अन्न कमालें।
रंक राव प्रजा को पालें। अपना ज़ोर लगाय के॥
फिर भी क्यों प्राण हरोरे॥ दीनों०॥
गाड़ी तोप रथों में चलते। राजों के भी काम निकलते।
फिर भी कुकर्म से ना टलते। भारत हो तड़पाय के॥
गले पर ना छुरा धरोरे। दीनों०॥
तृण घास की चरने वाली। जगकी रक्षा करने वाली।
बिन खता से मरने वाली वृथा मूँड़ कटाय के॥
बिन मौत से मार मरोरे॥ दीनों०॥
हे राजन! मेरी अर्ज के ऊपर। कीजो ग़ौर गरज के ऊपर।
घीसाराम फर्ज के ऊपर। गाता छन्द बनाय के॥
अधरम से अलग टरोरे॥ दीनों०॥

गजल १००

मांस भक्षण की कोई श्रुती ज़रा मिलती नहीं ।
आज्ञा वेदों में ईश्वर की फ़िदा मिलती नहीं ॥
इसकी निसबत वेद में ईश्वर का है उपदेश साफ़ ।
कौन कहता है कि ज़ालिम को सज़ा मिलती नहीं ॥
गुलशने भारत हुआ सुन्सान ऐसा किस लिये ।
क्यों वह गुल मिलते नहीं क्यों वह फिज़ा मिलती नहीं ॥
पहले होते थे हवन घर २ नहीं अब नाम भी ।
इस लिये भारत में वह आबो हवा मिलती नहीं ॥
वह ज़माना क्या हुआ जब सब में प्रीती थी बहम ।
पुत्रो माता में भी अब महरो वफ़ा मिलती नहीं ॥

भजन १०१

दोहा—बकरी पाती खात है, ताकी काढ़ी खाल ।
जो बकरी को खागये, तिनके कौन हवाल ॥
मांस २ सब एक से, क्या बकरी क्या गाय ।
ये जग अन्धा हो रहा, जान बूझ के खाय ॥
टेक—नर दोज़ख में आते हैं, बेख़ता जीव को मार के ।
और के गलपर छुरी धरें हैं, नहीं संगदिल दया करें हैं ॥
पापी कुष्टी होय मरे हैं । दिल से रहम बिसार के ।
गल अपना कटवाते हैं ॥ नर० ॥

जो गल कटकर बहिश्त जाना, काट कुटुम को भी पहुँचाना।
और खुदा को दोष लगाना। उसका नाम पुकार के।
दुख देख न घबड़ाते हैं॥ नर०॥
घास खांय सो गल कटवावें, मांस खांय सो किस घरजावें।
समझें ना बहु बिधि समझावें। खुश होते सिर तार के।
करनी का फल पाते हैं॥ नर०॥
मांस २ सब है इकसारी, क्या बकरी क्या गाय बिचारी।
जान बूझ खाते नर नारी। रूप दुष्ट का धार के।
हा! मूत्र मनी खाते हैं॥ नर०॥
बढ़ जाते हैं रोग बदन में, ना कुछ ताक़त बढ़ती तन में।
हे ईश्वर! दे ज्ञान उरन में। बख़्शें ज्ञान बिचार के।
जन घीसा यश गाते हैं॥ नर०॥

भजन १०२

गिरे हैं देखो वर्ण आश्रम चार।
निज २ धर्म सँभालो न जब तक, होगा न पुनर उद्धार॥ गि०॥
ऋषि मुनी थे पूरे त्यागी, हैं उनकी सन्तान अभागी।
प्रीति निमन्त्रण में अति लागी। मूर्ख दरिद्री हाथ कटोरा,
स्वर्ग बतावन हार॥ गिरे हैं०॥
क्षत्रिय सब की रक्षा करते, अष्टादश व्यशनों से डरते।
आज मद्य मांस खाते। फिरते। हाय! दया की जगह,
मृग की खेलत फिरें शिकार॥ गिरे हैं०॥

वैश्य धर्म से जोड़े थे धन, कृषी वनिज करते थे निशदिन ।
आज व्याज की है इतनी धुन । दें पचास जो कर्ज,
वर्ष पांचक में लेवें हजार ॥ गिरे हैं० ॥

शूद्र करें थे सेवा सारे, तीन वर्ण के रहते प्यारे ।
आज नहीं मिलते पनिहारे । करें सामना उच्च वर्ण का,
बढ़ा रहे व्यभिचार ॥ गिरे हैं० ॥

गुरुकुल में बनते ब्रह्मचारी, आज मूर्ख सन्तान हमारी ।
विद्या गई देश की सारी । घर से लड़ते जोकि,
बने ब्रह्मचारी फिरें हजार ॥ गिरे हैं० ॥

जो गृहस्थ था अति उपकारी, हो जवान जीते नर नारी ।
पंचयज्ञ करते सुखकारी । इनकी यह दुर्दशा सुने से,
बहे नयन से धार ॥ गिरे हैं० ॥

वनिस्थ था विद्या का द्वारा, उसका हमने नाम विसारा ।
वस्त्र गेरुवा जिसने धारा । वही वनस्थी बना रहा,
बाबा का शब्द पुकार ॥ गिरे० ॥

यह ब्राह्मण संन्यासी कहावे, ज्ञान यथारथ जिस से पावे ।
'अहम-ब्रह्म' जो ध्वनी लगावे । आप ही भ्रम में पड़े,
जगत को मिथ्या माननहार ॥ गिरे० ॥

आर्यसमाज यह याद दिलावे, हीन दशा सुन्दर बनजावे ।
कहे पाठक दुनिया सुख पावे । हो विद्या की वृद्धि,
उजाला करदो प्रति घर द्वार ॥ गिरे० ॥

भजन १०३

देखोरे मित्रो ! ऐसे नियम चलाना ।
चाहे कितनीही पड़े आपति, तो नहिं उन्हें छुड़ाना ॥ मि० ॥

ब्रह्मचर्य प्रथम करवाओ, उसके द्वारा बलको बढ़ाओ ।
परा अपरा विद्या को पढ़ाओ, पच्चीस वर्ष पश्चात् गृहस्थ
चाहिये उसे करानारे ॥ मित्रो० ॥

गुण कम और वर्ण अनुसारी, करे गृहस्थ विवाह कुमारी ।
सत्य बनज कर करहु गुजारी, हो सन्तान सुशिक्षित
तबहि बानप्रस्थ बतानारे ॥ मित्रो० ॥

नवम बसो पुरी तट जाके, अन्न मिले व कन्द फल खाके ।
रहे ब्रह्म में मन को लगाके, ऐसेही आश्रम साधा
फिर संन्यासी होजानारे ॥ मित्रो० ॥

परोपकार में आयु लगाकर, देश २ उपदेश सुनाकर ।
सबही को सत्मार्ग सुझाकर, झूठ पाखण्ड हटाय
जगत चाहिये आर्य बनानारे ॥ मित्रो० ॥

भजन १०४

दो०—शतपथ ब्राह्मण का वचन, सुनो लगा के कान ।
तीन सुधी शिक्षित मिलें, जब सुधरें सन्तान ॥

ख्याल—पहले माता पिता दूसरा और तीसरा आचारी ।
तभी मनुज हों ज्ञानवान सब शूरवीर और बलधारी ।

मात पिता विद्वान हों जिसके सदा रहे हों ब्रह्मचारी।
वो सन्तति अति भाग्यवान है धन्यवाद दें नर नारी॥

टेक—तुम चलो मित्र इस रीति से, बने शुभ सन्तान तुम्हारी।

है मात पिता को उचित काम जो करना।
वही रीती करूं बयान ध्यान टुक धरना॥
मादक चीज़ों के खान पान से डरना।
करें बल बुद्धी का नाश वेद में बरना॥

उनहीं चीज़ों को लावें। जो बल और बुद्धि बढ़ावें।
पितु मातु उन्हीं को खावें। नहीं और पै चित्त चलावें।

दोहा–गेहूँ चाँवल दूध घृत, इनको उत्तम जान।
इनहीं का सेवन करें, पुत्र होय बलवान॥

पुत्र होय बलवान, महा विद्वान, यह निश्चय जान, बचो सदैव अनीति से, बने रहे दिव्य ब्रह्मचारी॥ बने०॥

अब ऋतु गमन का समय सुनो चित लाई।
रजो दर्शन से सोलह दिन मियाद बताई॥
वे प्रथम चार दिन त्याग महा दुखदाई।
एकादश त्रयोदश छोड़ रहे दश भाई॥

वह मियाद याद कर लीजे। इस में ही समागम कीजे।
फिर ऋतु दान नहीं दीजे। सब व्यर्थही वीर्य छीजे॥

दोहा–जब तक समय ऋतुदान का, पूर्वोक्त नहीं आय।
फिर आपस में समागम, हर्गिज़ किया न जाय॥

गर्भ स्थिति से तादाद, समागम स्वाद, वर्ष दिन बाद, सभी विपरीति है। जो करै वही व्यभिचारी ॥ ब० ॥

जद लेकर बालक जन्म जगत में आवे।
स्नान और नाड़ी छेदन हवन करावे॥
पीछे फिर स्त्री को भी तुर्त नहलावे।
खाने का अति उत्तम प्रबन्ध मिलावे॥
माता का दूध पिलाना। छै दिन से अधिक लिखाना।
कोई धाई तुर्त बुलाना। या बकरी गाय मँगाना।

दोहा-बल वर्द्धक चीजें सभी, धाई खाय हमेश।
जिस से बालक पुष्ट हो, पावे नहीं कलेश॥

ऐसे मकान में रहै, सुगन्धी लहै, पवन शुभ बहै, बचै ऊष्णता शीत से। सुखदाई हो वस्तू सारी ॥ ब० ॥

माता के अंग से अंग बने बालक का।
इस लिये लिखा नहीं दूध पिलाना उसका॥
जो निर्धन हो चल सके नहीं बल जिसका।
फिर जैसा समझ उचित यत्न करे उसका॥
बच्चे को धाय लगाओ। मत मा का दूध पिलाओ॥
कोई ऐसी औषधि लाओ। दे औषधि दूध हटाओ॥

दोहा-इसी रीति से नारि निज, बनी रहे बलवान।
पुरुष ब्रह्मचारी रहे, दोनों एक समान॥

सुख पाओ सब प्रकार, सभी नर नार, लो मन में धार। तेजसिंह इस रीति से। फिर मिले तुम्हें सुख भारी ॥ ब० ॥

भजन १०५

दोहा–ब्रह्मचर्य की रीति जब, गई भारत में टूट।
तब से बस इस देश का, गया नसीबा फूट॥

टेक–जब से यह मर्यादा टूटी, गये धर्म कर्म सब छूट।
जहां होते थे बली ब्रह्मचारी, जिनके बाण लक्ष संहारी।
अब होगये हैं रोगी भारी, जब से ये शुभ डगरी छूटी॥ जब०॥
इस बाली उमर के व्याहने, हा! बाली कन्याओं की ब्राहू ने।
हा! इसी रस्म बेजा ने, हमारी सुख सम्पति लूटी॥ जब०॥
यहां कितनेही आलिम आये, कितनेही उपदेश सुनाये।
नहीं समझे बहुत समुझाये, उलटी और हिये की फूटी॥जब०॥
कहे तेजसिंह तुम विचारो, ब्रह्मचर्य न जब तक धारो।
चाहे फिजूल लाखों बघारो, तुम्हारी सब शेखी भूटी॥ जब०॥

भजन १०६

नर नारि सदा रोते हैं, इस ब्रह्मचर्य्य को खोय के।
खेल कूद में उमर गँवाते। विद्या में ना चित्त लगाते।
बाली उमर में व्याह कराते। बड़े मगन मन होय के।
कच्चा वीरज खोते हैं॥ नर०॥
दुर्बल होय लगे दुख पाने। निर्बल हों जिन के सन्तानें।
बढ़े रोग ना अकल ठिकाने। वैदिक धर्म बिछोय के।
मूरख व्याकुल होते हैं॥ नर०॥

होत प्रमेह कांप कर चलते । जल्दी डाढ़ दांत सब हिलते ।
नयनों जल नजले के ढलते । चलत अन्ध हैं टोय के ।
फिर सुख से ना सोते हैं ॥ नर० ॥
पहले वर्ष सवासौ जीते । अब तो बरे साठ से बीते ।
घीसा कहैं होय मन चीते । फिरते वही धर्म संजोय के ।
क्यो विपद भार ढोते हैं ॥ नर० ॥

भजन १०७

दोहा-करो विवाह विचार के, वेद शास्त्र से सोध ।
बुरी चाल को त्याग दो, जो कुछ तुम को बोध ॥
टेक-वेदोक्त विवाह किये मे सुख सम्पति शोभा प्रीति हो ।
सोलह वर्ष की कन्या चहिये, पच्चिस साल सुन्दर वर कहिये ॥
बल विद्या गुण कर्म देखिये, जैसी कुल की रीति हो ।
समता को निरख लिये से । वेदोक्त० ॥
कन्या चित्र दिखाये वर को, वर का चित्र सुघर दुख्तर को ।
उत्तम कुल ढूँढे हमसर को, समधी सम निज मीत हो ।
सो चहिये ज्ञान हिये से । वेदोक्त० ॥
वेद रीति को जाने दोनौं, गृहस्थ धर्म पहिचाने दोनौं ।
बाद विवाद न ठानें दोनौ, सुख से उमर व्यतीत हो ॥
अधरम को त्याग दिये से । वेदोक्त० ॥
पुष्ट होयँ सन्तान जिन्हों के, उत्तम शोभावान जिन्हों के ।
कह घीसा उर ज्ञान जिन्हों के, सो ना स्वप्न फ़जीत हो ।
गुणियों के चरन नये से । वेदोक्त० ॥

भजन १०८

ख्याल–बिना परीक्षा किये कभी सम्बन्ध मिलाना नहिं चहिये ।
नाई बाम्हन के हाथ कभी औलाद विकाना नहिं चहिये ॥
ऐसी कन्या वरो न वर में जो हो पीत बरन वाली ।
अधिक अंग हो पति स जिसका अति बकवाद करनवाली ॥
हो रोगों से युक्त जो कन्या निश दिन दुःख भरनवाली ।
अमित लोम या लोम न तन पर हो भूरी अँखियनवाली ॥
खुदगर्जों के हाथ बिका खुद धोखा खाना नहिं चहिये । ना०॥

दोहा–अजा गाय धन धान्य रथ, हाथी घोड़े राज्य ।
इतना दे कोई तब भी तू, कर दश कुल का त्याज ॥

टेक–दश कुलों का त्यागन कीजे, वर कन्या के सम्बन्ध में ।
प्रथम सत् क्रिया हीन जो कुल हो भाई ।
दोयम सत् पुरुषों में न हो आवा जाई॥
सोयम वेदों से विमुख जो दे दिखलाई ।
चौथे तन पर हो लोमों की अधिकाई ॥
बुद्धि से आप बिचारो । आंखों से खूब निहारो ॥
ये हैं सन्तान तुम्हारी । क्यों इनकी सुरति बिसारी ।
आगे छः कुल रहे और, कीजिये गौर, कहूँ इस तौर । बना के छन्द में, धर ध्यान मित्र सुन लीजे ॥ दश० ॥
है पांचवां कुल जो बवासीर का त्यागो ।
छठे दम खांसी और खई से कोसों भागो ॥

किस ग़फ़लत में तुम पड़े हो अबतो जागो।
उठो अपने आप इन शुभ कर्मों में लागो॥
सम्बन्ध बुरे न जुड़ाओ। खुद अपने आप मिलाओ॥
क्या इस में चातुरताई। जो बेंचे बाम्हन नाई॥
मत मिलो एक गुण कर्म, मुट्ठी हो गर्म, बड़े बेशर्म। डाल दें फन्द में, वर कन्या इन्हें न दीजे॥ दश०॥

है सातवां रुज आमाशय जगत् में भारी।
विपता मे उसकी कटे व्यवस्था सारी॥
अष्टम मृगी है असाध्य अति दुखियारी।
कर जोड़ जोड़ के कहूं सुनो नर नारी॥
नहीं इस पर ध्यान धरोगे। जीते जी दुःख भरोगे।
नहीं झूठी बात हमारी। हो रही दुर्दशा तुमारी॥
बुद्धी विन हुये मत हीन, अंग से क्षीण, द्रव्य बिन दीन। कटै दिन द्वन्द में, ये कुरीति विष मत पीजे॥ दश०॥

है श्वेत कुष्ट जिस कुल में नवां बताया।
है गलित कुष्ट जिस कुल मे दशवां गाया॥
जो कोई इन कुलो से पुत्र या पुत्री लाया।
उस ने भी इन रोगो से दुःख उठाया॥
इस लिये जो मेल मिलाना। पता अच्छी तरह लगाना॥
जब ठीक पता लग जावे। दोनों का ब्याह रचावें॥
तुम इस विधि रचो विवाह, बढ़े उत्साह, मिटे सब दाह। बीते जन्म अनन्द में, कहे तेजसिंह दुख छीजे॥ दश०॥

भजन १०६

दोहा–इतनी बात विचारना, मात पिता का काम।
उनका भी त्यागन करो, जिनका निन्दित नाम॥

टेक–जो नाम निकम्मे भाई, करूं उनका हाल बयान मैं।
कोई धरै नाम नक्षत्र नाम पर भाई।
ज्यों अश्विनी, भरणी, रोहिणी रेवति बाई॥
कोई वृक्ष नाम पर नाम धरै अलबेली।
कोई तुलसिया गेंदा चम्पा और चमेली॥
कन्या का नाम बिगाड़े। उसे उल्टी भांति पुकारे।
हो चन्द्रमुखी मुखवाली। कहैं उसे भी कलिया काली।
रहे उल्टी भांत पुकार, सभी नर नार, न करते विचार।
आज इस आर्यावर्त्त स्थान में, क्या उल्टी रस्म सुहाई॥ जो०॥
कोई नदी नाम पर नाम धरें कन्या का।
कहैं गंगा यमुना अजब रिवाज यहां का॥
कोई कन्या पर्वत नाम से नामवती है।
कहैं विन्ध्या, हिमालय, कोई पार्वती है॥
ये निन्दक नाम बताऊँ। कुछ और भी आगे गाऊँ॥
जरा सुनिये मित्र हमारे। हुये कैसे ख्याल तुम्हारे॥
बिन सोचे समझे धरो, न मन में डरो, शर्म नहीं करो। रख
निन्दित नाम जहान में, क्यों तुम्हें दया नहिं आई॥ जो०॥

बहुतेरी कन्या सर्प नाम वाली हैं।
कहें नागी, भुजंगी, जो बुद्धि से खाली हैं॥
कहीं पत्ती नाम से कन्या जांय पुकारी।
कहें कोकिला मैना धन २ बुद्धि तुम्हारी॥
कोई भीषण नामों वाली। भीमकुँवर चंडिका काली।
बिन सोचे नाम धरैं हैं। कैसी अनरीति करैं हैं॥
है पूरी अनरीत, वेद विपरीत, अय मेरे मीत। सिवा नुक़सान के, न मिले नफ़ा एक पाई॥ जो०॥

कोई माधोदासी नाम से बोलें बानी।
कोई मीरादासी नाम धरैं अज्ञानी॥
ये धर्मशास्त्र ने नाम बुरे बतलाये।
फिर किस विधि ऐसे निन्दित नाम सुहाये॥
जो ऐसे नाम सुन पाओ। मत हर्गिज़ व्याह रचाओ॥
उस कन्या को तज देना। यह धर्मशास्त्र का कहना॥
ये धर्मशास्त्र का लेख, समझकर देख, नाम रख नेक। खड़ा इस जल्से के दर्म्यान में, रहा तेजसिंह समझाई॥ जो०॥

भजन ११०

दोहा–अब मित्रो सुनिये ज़रा, हो करके खामोश।
जो ऊपर समझा दिये, यह समझो दश दोष॥
टेक–यही दसदोष बताये हैं, कर तलाश इन को त्यागो॥
ये रीति वेद अनुकूल है। नहीं इस में ज़रा भी भूल है।

मनुस्मृति का यही रूल है । छन्द पिछले में जो गाये हैं ॥ य० ॥
और अब मौजूदा हाल बतावें । पड़ें फेरे तो पानी मँगावें ।
कहें दोष दूर होजावें । सो दस छींटे लगवाये हैं ॥ यही० ॥
खुदग़र्ज़ों ने छींटे लगाकर । दिये दश दोष हमारे हटाकर ।
नहीं तलाश किये कहीं जाकर । हाय ! हम कैसे भुलाये हैं ॥य०
पद तेजसिंह ने गाया । अब कैसा ज़माना आया ।
अपना कुल आप डुबाया । हाय ! हम तरस न लाये हैं ॥

भजन १११

ख्याल ।

क्यों बिगड़ी यह बात देश भारत पर क्यों आफत आई ।
विवाह संस्कारों के बिगड़ने से सब कुछ बिगड़ी भाई ॥
कहां गई वह रीति वर्ष पच्चीस का होता ब्रह्मचारी ।
यह विवाह था कम दर्जे का सोलह वर्ष कन्या प्यारी ॥
पच्चीस वर्ष विद्या पूर्णकर शरीर से हो बलधारी ।
वर कन्या गुण कर्म मिलाकर थी विवाह की तैयारी ॥
अपन आप करते थे परीक्षा नहीं वकील ब्राह्मण नाई । बि० ॥
आज रीति विपरीत देश भारत की हम दिखलाते हैं ।
खुद करने का काम उसे गैरों के हाथ कराते हैं ॥
कैसा गुण और कर्म अवस्था बिल्कुल नहीं मिलाते हैं ।
कोई मरो कोई जियो पेट अपने का काम बनाते हैं ॥
फेरों पर बन वकील जाली झूठी रजिष्ट्री लिखवाई । बि० ॥

हो लिखी कहीं बतलाइये, ऐसी रहरसम तुम्हारी ॥ टेक ॥
काशीनाथ ने नहीं फर्माया, नहीं कहीं पुराणों में पाया।
फिर अंधेर ये कैसे आया, क्यों बेशर्मी छाई है ॥
बर बुड्ढा तो कन्या बारी ॥ ऐसी० ॥

और सुनो बुद्धि का टोटा। कन्या बड़ी और वर छोटा।
अरे मित्र यह मारग खोटा। चलते लाज न आई है ॥
ब्रह्मचारी से हुये व्यभिचारी ॥ ऐसी० ॥

तेजसिंह कहे होश में आओ। मत फिजूल दुनिया को हँसाओ।
डूब चुकी क्यो और डुबाओ। कुछ तो जरा शर्माइये ॥
क्या बिल्कुल शर्म उतारी ॥ ऐसी० ॥

भजन ११२

भारतवर्ष से रे, अब तो बाल विवाह उठाओ।
बाल विवाह ने आर्य्यवर्त का, कर दिया सत्यानाश।
बल काया पुरुषार्थ हीनकर, मेटी सुख की आश ॥ भारत०
पांच साल की करोड़ो कन्या, रुदन करैं बिललाय !
पति का अर्थ न आने बेसुध, किया गज़ब क्या हाय !! भारत०
लाखो कन्या होकर बिधवा, गर्भ को रहीं गिराय।
लाखों कन्या बनगई वेश्या ! कुल को दाग लगाय ॥ भारत०
आठ वर्ष की होवे गौरी, इसका किया प्रचार।
लीन किया सब धर्म सनातन, फैलाया व्यभिचार ॥ भारत०

बड़ी आयु में वर कन्या का, भाइयो रचो विवाह।
तुलसीराम वह गृहस्थाश्रम में, अपना करैं विवाह ॥ भा०

भजन ११३

कैसा गज़ब है आह! किया बुड्ढे ने ब्याह, तकें लकड़ी हैं राह हा! शोक शोक शोक, शोक शोक शोक ॥

तन उबटन लगाय, नैन अंजन लगाय, हा! मूछैं कटाय, हा! शोक ३ शोक ३ शोक ३ ॥ कैसा० ॥ ब्याह भये दिन चार, घर में आई नई नार, करैं सौं २ से प्यार, हा! शोक ३ शोक ३ शोक ३ ॥ कैसा० ॥ नेक लागी न देर, लीन्हा कफ़ने हा! घेर, रहे छत को यह हेर, हा! शोक ३ ॥ कैसा० ॥ हाय विधवा अनाथ, रोवें मत्थे धर हाथ, तुमने दीन्हा न साथ, हा! शोक ३ ॥ कैसा० ॥ नष्ट हो गये सुहाग, लगी मदन की आग, गई लोचन संग भाग, हा! शोक ३ ॥ कैसा० ॥ कहे तुलसी हे मीत, नष्ट करो कुरीति, हाय कैसी अनरीति, यह! शोक ३, शोक ३, शोक ३ ॥ कैसा० ॥

दादरा ११४

खड़ी रोवे एक विधवा विचारी रे।

हाय! नाश जइयो काशीनाथ का, गर्दन पै धर गया आरी रे ॥
होतेही पैदा करदें सगाई, फिर ब्याह की तैयारी रे ॥ खड़ी० ॥
फेरों से पीछे प्रीतम को लेगई, वो माता की बीमारी रे ॥ ख० ॥
चढ़ी जवानी अब कैसे काटूं, अब देखूं दुनियादारी रे ॥ खड़ी० ॥

हाय वैरी हुआ है बाप हमारा, दुश्मन हुई महतारी रे ॥ ख० ॥
अपने विवाह तो करते हैं चार२, हम करहैं तो जुर्मभारी रे ॥ख०॥
छिप२ हम पाप लाखो कमावें, लाखो जान जांय मारी रे ॥ ख०॥
कहे तेजसिंह तुम अबभीतो सोचो, क्यों हुए मूर्ख अनारीरे॥ख०॥

दादरा ११५

उन्हें मुझपर तरस नहीं आयारे ।
सात बरस की मैं साठ के बालम, कैसा ये जोड़ मिलाया रे ॥ ले करके नक़दी पापी पिता ने, कुयें में मुझको गिरायारे ॥ उ० ॥ सड़ २ के मरियो वह पंडित पुनीता, जिसने लगन वह सुझायारे ॥ उ० ॥ कीड़े पड़ें उस मिस्सर के तन में, जिस ने विवाह यह करायारे ॥ उन्हें ॥ काटूंगी क्योंकर उमर का रंडापा, यह न उन्हों ने बतायारे ॥ उन्हें० ॥ लालच के बस हो इन सब ने सालिम, कैसा पाप कमायारे ॥ उन्हें० ॥

गजल ११६

हम से शौहर की जुदाई अब सही जाती नहीं ।
चैन दिन को रात को आंखोंमें नींद आती नहीं ॥
ऐसे दुष्टो का बुरा हो ब्याह बच्पन में करें ।
विधि मिलाते पंडितोंको कुछ समझ आती नहीं ॥
रांड होकर उम्र भर हम दुःख सहती ही रहें ॥
तब भी अंधों के हृदय में कुछ शरम आती नहीं ।
पति के जीते औरतों का दुःख सुख पूछें सभी ॥

साथ छोड़ा जब सनम ने फिर कोई साथी नहीं ।
हाल दिल किससे कहें अपना सुनावें किसको ग़म ।
है शरम की बात औरों से कही आती नहीं ॥
देखकर हमपर मुसीबत कुछ यतन करते नहीं।
ऐ अधर्मी पापियों ! तुम को दया आती नहीं ॥
सोच लो अपनेही दिलमें जो मुसीबत हम पै है ।
काम की पीड़ा ये तुम से भी सही जाती नहीं ॥
करते हो दो चार शादी और भी रंडी से प्यार ।
क्या ख़ता हम से हुई तुमको दया आती नहीं ॥
रस्म तोड़ों बचपने के व्याह की सब सज्जनों ।
श्रीराम भारत की भलाई और दिखलाती नहीं ॥

गजल ११७

तड़पती हैं पड़ी बेवा ज़रा इस ग़म पै दिल दीजै ।
है छोड़ा साथ खाविंदने, रहिम कुछ आपही कीजै ॥
किया वादा था स्वामीने, न पूरा कर चले कुछ भी ।
छुटी मँझधार में किश्ती, पकड़ कर पारही कीजै ॥
नहीं माता पिता साथी, न साथी कोई ससुरारी ।
तरस खाकर ज़रा इनपर, यही तदबीर अब कीजै ॥
रचाकर व्याह फिर इनका, रहिम दिल होके सब सज्जन ।
रिहाई ग़म से कर इनकी, यही दुनिया में यश लीजै ॥
कहां जावें कहें किस से, सुनेगा कौन अब इनकी ।
हितैषी हो जो भारत के, तो इनका साथही दीजै ॥

न भूलें उमर भर नेकी, जो होगी साथ में इनके।
उठाओ ब्याह का बीड़ा, न कुछ अब देरही कीजै॥
मुसीबत देख बेवों पर, तरस श्रीराम आता है।
सो अब मिलकर सभी सज्जन, मुसीबत से रिहा कीजै॥

गजल ११८

लगाके ईश्वर से ध्यान हरदम सुधारो भारत को अबतो प्यारो।
निगाह करके ज़रातो देखो, यह देश दुखिया है क्यों तुम्हारो॥
तड़प रही हैं विचारी विधवा, हैं बहते आंखों से खूंके दरिया।
उदास बैठी बिलख रही हैं, नहीं है जिनका कोई सहारो॥
न दूधका दांत जिनका टूटा, न पग महावर है जिनका छूटा।
यह ब्याह रिस्ता है जिनका झूठा,ऐ मित्र अब तो इन्हें उबारो॥
एक २ साला उमर है जिनकी, अभी हैं माता का दूध पीती।
हों देश में जिनके ऐसी विधवा, न होवे क्यों करके मुख कारो॥
अनाथ बच्चे तड़प रहे हैं, ज़मी पै सर को रगड़ रहे हैं।
बग़ैर भोजन विलख रहे हैं, हे मित्र देवो उन्हें सहारो॥
यह शिवनारायण है दस्तबस्ता, प्रभू तुम्हीं से विनय है करता।
ये देश भूखों जो मर रहा है, हे ईश अब तो इसे उबारो॥

गजल ११९

कन्या विचारियों पै जो करते दया नहीं।
दुश्मन किसी जनम के हैं माता पिता नहीं॥ १॥

जो जुल्म लड़कियों पै यां होते हैं आज कल।
वहशी सी वहशी क़ौम भी रखती रवा नहीं ॥ २ ॥
पैदा अगर हो लड़का तो खुशियां मनायें सब।
लड़की अगर हो शोक की कुछ इन्तहा नहीं ॥ ३ ॥
पैदा ही होते घुटते हैं सदहा के हा! गले।
सदहा को मर्ज़ में कोई मिलती दवा नहीं ॥ ४ ॥
लड़कों के लाड़ प्यार में करदें हजार खर्च।
पर लड़कियों के वास्ते घर में टका नहीं ॥ ५ ॥
इन देवियों को समझा धन है पराये घर का।
अफ़सोस इस समझ पै क्यों पत्थर पड़ा नहीं ॥ ६ ॥
बकरी व भेड़ की तरह बिकती हैं सैकड़ों।
शिकवा न उनको बाप से मा का गिला नहीं ॥ ७ ॥
ऐसी उमर में हो गई बेवा हजारहां।
पत्नी पती के शब्द से जो आशना नहीं ॥ ८ ॥
बचपन की शादियों की बदौलत हा! बीस लाख।
बच्ची हैं रांड जिनको खबर भी ज़रा नहीं ॥ ९ ॥
बेकस बुझायें किस तरह कहिये विरह की आग।
आंखों में आंसुओं का भी क़तरा रहा नहीं ॥ १० ॥
चक्की व चर्खा दो ही हैं सुनने को हाल दिल।
ग़मख्वार हाय इनका कोई तीसरा नहीं ॥ ११ ॥
आहों से इनकी हिल गई भारत की सरज़मीन।
भारत निवासियों का मगर दिल हिला नहीं ॥ १२ ॥
इन बेकसों के शाप से भारत पै इन दिनों।

कहिये ? वह कौन सी है जो आई बला नहीं ॥ १३ ॥
ज़ालिम जो बेज़बानों पै ज़ोरो जफ़ा करें।
रख याद उनका भी कभी होता भला नहीं ॥ १४ ॥

भजन १२०

जो चाहो स्वर्ग में बास तुम, इक पतीव्रत धर्म निभालो।
पतिव्रत धर्म से उत्तम गहना, नहीं दूसरा जग में बहना।
जो चाहती हो इसको पहना, रहो पती की दासि तुम ॥
नित आज्ञा उसकी पालो ॥ इक० ॥
करो नित्य केवल पति पूजा। नारी के लिये देव न दूजा।
अन्य देव सेवा है बेजा। करो यही बिश्वास तुम ॥
या रामायण पढ़ डालो ॥ इक० ॥
नारि धर्म नहीं दूसर देवा। नारि धर्म केवल पति सेवा।
जो चख लोगी तुम यह मेवा। होगी न कभी निरास तुम ॥
बस मन चाहा फल पालो ॥ इक० ॥
राखो ऐसी शुद्ध तुम काया। अन्य पुरुष का पड़े न साया।
जो तुम ने यह बर्त निभाया। बनोगी देवी ख़ास तुम ॥
जब चाहो तब अजमालो ॥ इक० ॥
पीर फ़क़ीर पुजारी पण्डे। स्याने ओर भगत मुस्टण्डे।
जिन्हों ने गाड़े ठगी के झण्डे। जाओ न उनके पास तुम ॥
मत उनसे कुछ पूछा लो ॥ इक० ॥
भूत परेत चुड़ेल मसानी। काली और शीतला रानी।

इनको पूजना है नादानी । नाहक़ मरो न त्रास तुम ॥
ईश्वर से ध्यान लगालो ॥ इक० ॥
सीता और सावित्री नारी । द्रौपदी तारा और गंधारी ।
सब थीं पति की आज्ञाकारी । पढ़ देखो इतिहास तुम ॥
उन जैसा चलन बनालो ॥ इक० ॥
हया शर्म का राखो पर्दा । सत्य से शुद्ध करो मन हिर्दा ।
बैठे न जिस पर पाप का गर्दा । पहनो ऐसा लिबास तुम ॥
और ब्रह्मज्ञान में न्हालो ॥ इक० ॥
कभी न घर में करो लड़ाई । सास ससुर की करो बढ़ाई ।
टहल करो उनकी चितलाई । करो न उन्हें उदास तुम ॥
खाओ जब उन्हें खिलालो ॥ इक० ॥
गन्दे राग कभी मत गाओ । ब्याहों में कोयल न बुलाओ ।
स्वांग तमाशे में मत जाओ । कभी न देखो रास तुम ॥
इन सब पर मिट्टी डालो ॥ इक० ॥
सालिगराम कहैं क्या कीन्हा । तुम ने अपना धर्म न चीन्हा ।
ठगियो ने तुम्हें धोखा दीना । सत् की करो तलाश तुम ॥
सत् धर्म से प्रीति बढ़ालो ॥ इक० ॥

भजन १२१

जो चाहती हो सुख मेरी बहना, तौ तुम यह गुण धार लो ।
पतिव्रत धर्म का पालन करके, शुभ जीवन का सार लो ॥जो०॥
घर में कलह लड़ाई झगड़े, रूठ मनावा त्यागकर ।
चतुराई और हुशियारी से, घर के काम सँवार लो ॥ जो० ॥

पढ़ो आप सन्तान पढ़ाओ, मूरखता को छोड़ दो।
बिना पढ़े कुछ अक्ल न आवे, मन में खूब विचार लो ॥ जो० ॥
प्रीति प्रेम कुटुम्बवालों से, तुम को रखना चाहिये।
सास जिठानी नन्द देवरानी, के तुम बचन सहारलो ॥ जो० ॥
कब्र ताज़िये पीर सीतला, को मत पूजो भूलकर।
अपने पति और परमेश्वर को, पूज के जन्म सुधारलो ॥ जो० ॥
पतिव्रता नारी को जग में, होवे यश और कीर्ती।
सीता सावित्री दमयन्ती, को तुम ओर निहारलो ॥ जो० ॥
अन्य पुरुष का स्वप्ने में भी, साया तक मत देखना।
पतिव्रत धर्म का उत्तम गहना, तन अपने में डारलो ॥ जो० ॥
पति आज्ञा को भंग न करना, जब तक घट में प्रान है।
सालिगराम कहे मेरी बहनो, बस तुम यह गुण धारलो ॥ जो० ॥

भजन १२२

यदि चाहो कल्याण, करो पुत्री सन्मान, दो विद्या का दान, तुम हे बन्धु, हे बन्धु, हे बन्धु ॥ १ ॥ सम है अधिकार, यह नियम विस्वाधार, पढ़े विद्या नर नार, सब हे बन्धु० ॥ २ ॥ तुमने किया अन्याय, इन्हें शूद्रा बताय, दिया पढ़ना छुड़ाय, हा! हे बन्धु० ॥ ३ ॥ बिना विद्या के भाई, नर पशू कहाई, सब सुनियो चितलाई, अब हे बन्धु० ॥ ४ ॥ द्रौपदी सीता महान, भई कैसी विद्वान, थीं गुनों की खान, सब हे बन्धु ॥ ५ ॥ देखो सभा मँझार, मण्डन मिश्र की नार, शंकराचार्य पछार, दिया, हे बन्धु० ॥ ६ ॥ कहै तुलसी हरबार, सुनिये विनय हमार, पुत्रीशाला करो तैयार, अब हे बन्धु० ॥ ७ ॥

दादरा १२३

देखो अबला धरम गई भूल ! हा० ।
उत्तम विचारों को उर में न लावें, सुख के करम गई भूल–हा ।
पतियोंसे लड़तीं न करतीं सुकरनी, कुल की शरम गई भूल–हा ।
स्यानों दिवानों पै विश्वास राखें, सच्चा मरम गई भूल–हा ।
मानें नहीं करण हित की कही को, हरिका जुरम गई भूल–हा ।

गजल १२४

वाक़ई निसवान का अय पुरषो ! सताना मना है ।
जुल्म करना उन पै उनका दिल दुखाना मना है ॥
रंडियों से दिल को अय पुरषो लगाना मना है ।
पत्नियों से अपनी आंखो का चुराना मना है ॥
कारखाने खोलिये या फिर तिजारत कीजिये ।
लड़कियों को बेच कर धन का कमाना मना है ॥
किस लिये फिर मांस को अपनी बनाई है गिज़ा ।
जब कि वेदों में लिखा है मांस खाना मना है ॥
तन्दुरुस्ती के लिये अच्छा है गंगाजल से गुस्ल ।
मोक्ष इच्छा के लिये गंगा नहाना मना है ॥
अच्छे कामों में लगाना आर्य धन को मगर ।
नाच में और रंग में धन का लुटाना मना है ।

गज़ल १२५

पढ़ना किस का वेद भी हम को सुनाना मना है ।

दोनों दुनिया की हमें विद्या सिखाना मना है ॥
किस की आज़ादी कहां के और हक्के हमसरी।
बात कैसी हम को तो लब तक हिलाना मना है ॥
हाय ! यह ज़ोशेशबाब और उस पै ये वैधव का रोग।
मर को खम रखती हैं गर्दन का उठाना मना है ॥
आप तो दिन भर मटरगश्ती करें बाये नसीब।
और हम को ताज़ी वायु का भी खाना मना है ॥
आप तो शादी पै शादी अपनी करलें आर्यो।
लेकिन हम को दूसरी शादी कराना मना है ॥

भजन १२६

सुनोरी ! बहना बहना बहना, धरो धीरज न हमें रुलाओ।
यह सुन कर के दुखड़ा तुम्हारा, कांपै है यह शरीर सारा।
दुखी हुआ है हृदय हमारा, भरे नैना नैना नैना ॥ सुनो० ॥
हमने जब से व्रत तोड़ा, पुत्रियों का पढ़ाना छोड़ा।
हमने अपनेहाथों फोड़ा, अपना लहना लहना लहना ॥ सुनो०॥
हम पुत्री पाठशाला बनायेंगे, उस में पुत्रियों को पढ़ायेंगे।
जब थोड़ी सी फ़ुर्सत पायेंगे, फ़ुर्सत देना देना देना ॥ सुनो० ॥
पद तेजसिंह ने गाया, तुम ने अति दुःख पाया।
बस वही ज़माना आया, सुख से रहना रहना रहना ॥ सुनो० ॥

भजन १२७

दो०—चार तरह की पतिव्रता, जग में पड़ैं लखाय।
उत्तम, मध्यम, नीच, लघु, सकल कहूं समझाय ॥

जो नारी इस भेद को, सुनले कान लगाय।
इस में संशय है नहीं, भवसागर तर जाय॥

टेक–उसे क्यों त्यागारी, जो था पतिव्रत धर्म तुम्हारा।
थोड़े सुख के देनेवाले, मात पिता और भाई।
बेशुमार सुख पति ही देता, दोउ लोकन के ताईं॥ उसे०॥
आपतकाल परखिये चारी, जिनका करूं बयान।
धीरज, धर्म, मित्र और नारी, कर जग में पहचान॥ उसे०॥
बूढ़ा रोगी मूरख निर्धन, अन्ध दीन और बहरा।
करे घृणा तिया ऐसे पति से, भोगे नरक दुख गहरा॥ उसे०॥
मन और वचन कर्म से रक्खे, पति चरणों में प्रेम।
स्त्री का है एक ही जग में, यही धर्म व्रत नेम॥ उसे०॥
पतिव्रता हैं चार जगत में, सुनलो कान लगाय।
उत्तम मध्यम और नीच लघु, सकल कहूं समझाय॥ उसे०॥
उत्तम नारी है वह जग में, सुनियो कान लगाये।
नहीं पुरुष दूजा कोई जग में, स्वप्ने पड़े लखाये॥ उसे०॥
मध्यम नारी की तुम जानो, जग में यह पहचान।
भाई बाप और सुत के सम, परपति को रहीं हैं मान॥ उसे०॥
जो करे पराये पति की इच्छा, भोग करन की ताईं।
धर्म विचार दूर हट बैठे, नीच नार बतलाई॥ उसे०॥
समय न मिले रहे डर कर के, भोग बिना पर पति से।
महा नीच वह नारि बताई, कहे रामायन इस मत से॥ उसे०॥
जो अपने पति से छल कर, रति करे पराये पति से।

वह स्त्री सौ कल्प नरक में, बास करे संगत से ॥ उसे० ॥
क्षण भर के जो सुख के लिये, सौ जन्म के दुख की न सूझी ।
उससे खोटी और जगत में, कौन नार है दूजी ॥ उसे० ॥
जो छल छोड़ करे पति सेवा, उत्तम गति को पावे ।
विरोधिनी स्त्री जहां जन्मे, जवां रांड हो जावे ॥ उसे० ॥
पति की सेवा जो करती हैं, तन मन धन से नारी ।
रघुनन्दन कहे वही स्वर्ग की, बनती है अधिकारी ॥ उसे० ॥

भजन १२८

कैसी पतिव्रता वह नारी है, द्रौपदी दमयन्ती सीता ।
जब रामचन्द्र ने आज्ञा बन की पाई ।
चले रामचन्द्र और लक्ष्मण दोनो भाई ॥
जब सीता ने सुनी संग तुरत उठ धाई ।
पर रामचन्द्र ने बहुतक करी मनाई ॥
डर बहुतेरा दिखलाया । पर संग नहीं बिसराया ॥
तज सुख सम्पति और माया । संग चौदह वर्ष निभाया ॥
वह नंगे पैरो बन फिरी, रावण ने हरी, पर धर्म से ना गिरी,
देखो कैसे दुःख की मारि है, यह धर्म पतिव्रत जीता ॥ द्रौ० ॥
जब कौरवो से पांडव जुये में हारे ।
धन धर्ती और बस्त्र हार गये सारे ॥
उस विपति काल में संग द्रौपदी पग धारे
परदेश में जा बैराट में किये गुजारे ॥

वहां कीचक थोखा भारा। द्रौपद से पाप विचारा॥
धोखा दे काम निकारा। द्रौपद ने धर्म नहीं हारा॥
कहा भीमसेन से जाय, हाल समझाय, दुष्ट को जाय।
दिया तुरत भीम ने मारही, सब कर लीना मनचीता॥ द्रौ०॥
जब नल पुष्कर से सर्व जुये में हारा।
करवाय मनादी दे दिया देश निकारा॥
जब नल दमयन्ती छोड़ चले घर सारा।
बन २ में भूखे फिरे दुःख सहा भारा॥
चली भूखी मंजिल की मारी। वन में जब सोगई नारी॥
नल ने तरस देख के भारी। बन सोवत छोड़ी प्यारी॥
नल ने हृदय किया कठोर, मोह को तोड़, चला मुख मोड़।
कुछ किया न सोच विचारही, रानी का किया फ़जीता॥ द्रौ०॥
जब सोवत से रानी उठी बहुत घबराई।
वहां नल को देखा पड़ा न कहीं दिखाई॥
फिर डाढ़ मार कर रो रो कर चिल्लाई।
रोना सुन एक ब्याध ने घेरी आई॥
ईश्वर से ध्यान लगाया। उस ब्याध से धर्म बचाया॥
घर पिता का पता लगाया। आ स्वयम्बर जब ठहराया॥
वहां नलको लिया ढुँढ़वाय, दुःख बहुपाय, मिले दोउ आय।
रघुनन्द कहै पुकार ही, नहीं तजा धर्म दुख बीता॥ द्रौ०॥

भजन १२६

कट गई है बुद्धि हमारी, शूद्र पग उल्टे पुजवावें।

कोई बने देवी के पंडे। माल हराम खा हो गये संडे।
अबलाओं के बांधे गंडे। महन्त कहलावें, सब पूजें
नर और नारी॥ कट०॥
किसी ने बांधी सरपै सेली। बना लिये सब चेला चेली।
आंख दिखावें काली पीली। सब दहशत खावें, डर करा-
मात का भारी॥ कट०॥
करामात का झूठा जाल है। यह सब इन दुष्टो की चाल है।
और धोखे से खा पुष्ट माल है। मोटे हो जावें फिर करते
है बदकारी॥ कट०॥
जो हम तुम सब विद्या पढ़ते। तो क्यों इन दुष्टों मे डरते।
क्यो ये माल हमारा हरते। तेजसिंह गावें, है आगे खुशी
तुम्हारी॥ कट०॥

भजन १३०

बहै नयनो से नीर सुनकर ये दुखड़ा तुम्हारा।
तुम क्यो अधीर होती हो, क्यों बार २ रोती हो।
क्यों आंसुओं से मुख धोता हो, क्यों तर करती हो चीर॥सु०॥
ये हे शब्द जितने तुम्हारे, नहीं जाते हैं हम से सहारे।
बस वाणी तुम्हारी का म्हारे, जिगर मे खटके तीर॥ सु०॥
बेशक हमने अन्याय किया, नाश है मुल्क अपने का लिया।
दशा देखें तो कांपे है हीया, कलेजे उठती पीर॥ सु०॥
अब यही कोशिश हमारी, कन्या पाठशाला हो जारी।
कुछ खुलगई कुछ खुलने की त्यारी, बँधालो अब तो धीर॥सु०॥
जिसने आज यह दिन दिखलाया, कन्यादुखपर है ध्यान दिलाया।

पद तेजसिंह ने गाया, धन्य स्वामी को अखीर ॥ सुन० ॥

भजन १३१

दोहा–अबलाओं की क्या खता, क्यो देते हो दोष ।
खता आप की है सभी, रहो मित्र खामोश ॥
टेक–कुछ इनकी खता नहीं है तुम्हारी है बेईमानी ।
अबलाओ को, शूद्र बताओ, तुम ब्राह्मण क्षत्री कहलाओ ॥
आप ऊंच उन्हें नीच बनाओ, क्या ये बुद्धिमानी ॥ कु० ॥
जो जननी को शूद्र बताओ, तुम ब्राह्मण कैसे बन जाओ ।
इसका भेद हमें समझाओ, ये किस भांत से मानी ॥ कु० ॥
कन्याओ को नही पढ़ाया, वेद का नही अधिकार बताया ।
पशु तुल्य तुमने ही बनाया, आप बने ज्ञानी ॥ कु० ॥
घर की ०ज कुलवन्ती नारी, उसे त्याग बनते व्यभिचारी ।
जो तुम मानो झूठ हमारी, बात नहीं छानी ॥ कुछ० ॥
ढोल गवांर पशू और नारी, चारो डंडे के अधिकारी ।
ऐसे सब कह रहे अनारी, छागई नादानी ॥ कुछ० ॥
निज पत्नी से प्रीति न करते, जा मूरख रंडी पै मरते ।
तेजसिंह तभी दुखड़ा भरते, हुआ देश अज्ञानी ॥ कुछ० ॥

दादरा १३२

पति पूजो तो मुक्ति तुम्हारी है ।
जो पति सेवा करे प्रेम से । सब दिन सुखी वही नारी है ॥प०॥
पिय को छोड़ न पूजो पथरं । सींचो न मर भर झारी है ॥प०॥
अपने पति को न्हिलाय धुलाय कर । भोजन में मत कर

अखारी है ॥ पति० ॥ रक्खो शुद्ध सदा सब चीज़ें । मैले से हो बीमारी है ॥ पति० ॥ तेजसिंह पति आज्ञा जो माने । पति की सदा वही प्यारी है । पति० ॥

दादरा १३३

विचार करो री, प्यारी बहनो यह मन में ।

वह देश भक्ति जो पहले थी तुममें । कहां गई अब इस का इज़हार करोरी ॥ प्यारी० ॥ जो तुमने जाये शूर और वीर कहाये । अब इनको किन में शुमार करोरी ॥ प्यारी० ॥ कहां तो तुम इस देशकी करतीं भलाई । अब क्यों तुम उल्टा बिगाड़ करो री ॥ प्यारी० ॥ ये दुख का कारण अविद्या है सारा । तुम चाहो तो विद्या प्रचार करो री ॥ प्यारी० ॥ कहे तेजसिंह पुत्र और पुत्री सब को । विद्या पढ़ाने का प्यार करो री ॥ प्यारी० ॥

भजन १३४

श्लोक-गुरोःप्रेतस्य शिष्यस्तु पितृमेधं समाचरेत् ।
प्रेतहारैः समं तत्र दशरात्रेण शुद्ध्यति ॥
मनु० अ० ५ । ६५ ॥

शैर-प्रेत कहते हैं उसे जब गुरु का छूटे शरीर ।
और प्रेतहारे हैं वही करें दाह जो मरघट के तीर ॥
भूत कहते हैं उसे जल बुझ के हो जिसका अख़ीर ।
इस में शंका नहीं ज़रा भी हैं मनूजी की नज़ीर ॥

दो०-ब्रह्मा से ले आज तक, बड़े बड़े विद्वान ।
ऐसा ही सब मानते, माने नहीं अज्ञान ॥

टेक—अज्ञानी नर डरने लगे बिन ज्ञान भूत के भय से।

देखो जग में जब कोई मनुष्य मरता है।
फिर भी कर्मों अनुसार देह धरता है॥
शुभ अशुभ कर्म का फल दुख सुख भरता है।
फिर बता कौन है भूत किससे डरता है॥

जो अज्ञानी कहलावें। ज्वर आदि को भूत बतावें।
नहीं डाक्टर आदि बुलावें। नीचों की हा हा खावें॥

शैर—धूर्त पाखण्डी महा मूरख अनाचारी चमार।
स्वार्थी भंगी शूद्रहों व म्लेच्छ आदि गँवार॥

जाकर उनके पास, बने हैं दास, करें विश्वास। उन से कर जोड़ अर्ज करने लगे। महाराज करें हम कैसे॥ बिन०॥

नाना प्रकार से ढोंग धूर्त फैलावें।
करें मन्त्र तन्त्र गण्डा ताबीज बँधावें॥
करें धन का नाश सन्तान को दुख पहुचावें।
नहीं औषधि आदि करें खोड़ दिखलावें॥

बिन विद्या के नर नारी। दुख भोग रहें हैं भारी।
नहीं झूठी बात हमारी। हो रही दुर्दशा तुम्हारी॥

शैर—करजोड़ कहे उस नीच से, मम पुत्र क्यों नहीं बोलता।
नहीं जाने इसको क्या हुआ, यह आंख क्यों नहीं खोलता॥

अब सुनतेही ऐसा हाल, अभी तत्काल, आंखें कर लाल। श्वास ऊंचे नीचे भरने लगे, कहा इस पै प्रेत है ऐसे॥ बि०॥

शैर—जब तक यत्न तुम से कोई इसका किया नहीं जायगा।
यह नहीं छूटेगा हर्गिज़ प्राण तक ले जायगा॥

जो तुम इतनी शीरनी या भेंट दो हमें लाय के।
तो हमारे मन्त्र से काबू में यह आ जायगा॥
फिर वो अन्धे उनके सम्बन्धी भी यह कहनेलगे।
सर्वस्व हमारा जाय चाहे पुत्र तो बच जायगा॥
फिर तो उन की चढ़ बनी और भेंट लई मंगवाय के।
थाली बजा के शोर करते सब कहें कहां आयगा॥
उन में एक पाखंडी सर को लगा हिलाने।
लगा अपने आप को हनूमान बतलाने॥
नहीं छोड़ूं इस के प्राण लगा धमकाने।
सुन कर बेचारे गृहस्थ लगे घवड़ाने॥
नीचों से वह घबड़ाकर। लगे कहने शीश झुका कर।
कुछ दीजे हुक्म चढ़ाकर। हम वही भेंट धरें लाकर॥
शैर–मैं हूँ हनुमान लाओ पक्की मिठाई तेल और सेंदूर।
सवामन का रोट लाल लंगोट दे दुःख होंगे दूर॥
कोई देवी आदि बताय, मद्य मंगवाय, बकरे कटवाय। हाय!
जीवों के प्राण हरने लगे, वही करें धूर्त कहें जैसे॥ वि०॥
अब हम इन धूर्तों का इलाज बतलावें।
ज़रा सुनने वाले इधर चित्त ठहरावें॥
जहां कहीं ये पाखंडी जब जाल बिछावें।
इन्हें जूते लाते डंडे से ठीक बनावें॥
यह पूजा अधिक बताई। पड़े मार भूत भग जाई।
तुम सच्ची समझो भाई। ये मद्दा दुष्ट दुखदाई॥
शैर–हनूमान और देवी भैरव देवता जो हैं सभी।
मार खा प्रसन्न होकर भाग जावेंगे तभी॥

धन हरया ढंग है सभी, दूर तो तभी शोच लो सभी। पुत्र इन स्थानों के क्यों मरने लगे, कहैं तेजसिंह इस लय से ॥ बिन० ॥

भजन १३५

दोहा–अय मित्रो इस बात को, निश्चय लीजे मान।
जो शंका करे भूत की, वह पूरा अज्ञान ॥
टेक–यह शंका भूत की रे, बिल्कुल झूठी है क्यों डरते हो ॥
आप डरो तो डरो किन्तु बच्चों को क्यों डरपाओ।
लूलू हव्वा कहके उन को मत डरपोक बनाओ ॥ यह० ॥
भले बुरे जो संस्कार बचपन में पड़जाते हैं।
नहीं मरण पर्यंत छुटें सदा सुख दुख पहुँचाते हैं ॥ यह० ॥
झूठ बोलना भी बच्चों को तुमने ही सिखलाया।
कोको ले गई ऐसे कहकर बच्चों को बहकाया ॥ यह० ॥
झूठे और डरपोक बनाकर नाम पै सिंह लगावें।
गीदड़ तो वह पहलेही कर दिये कैसे सिंह हो जावें ॥यह०॥

भजन १३६

कवित्त।

एक बात बाक़ी रही यापै मित्र ध्यान धरो, तीरथों के जाल में स्वदेश टकरा रहा। काशी आदि धाम और नदियों के संगम को, तारक सदा से शुभ तीरथ बता रहा ॥ धन को खराब करे अंग सो बेताब करे, और भी अनेक भांति महा कष्ट पा रहा।

त्याग के हठीलापन सीख यह कान धरो, तेजसिंह तीरथों का भाव जतला रहा ॥

टेक-जो दुखसागर से तार दें, वही हैं तीर्थ मेरे भाई ।
है तीर्थ अतिथि जो अकस्मात घर आवे ।
मा बाप की सेवा सदा तीर्थ कहलावे ॥
है तीर्थ बड़ा सतसंग जो पार लगावे ।
है तीर्थ वेद सत शास्त्र अमल में आवे ॥
सदा वेद और शास्त्र बिचारे । नहीं पापों में पग धारे ।
सदा न्यायकी ओर निहारे । यहीहै तीर्थ सुनों चितलायके।
वही तीर्थ जिस से तरजाय, सदासुख पाय, सुनों चितलाय तुम्हें इसपार से कर उसपार दे, दे पूरण सुख पहुँचाई । वही०॥
है तीर्थ वह योगाभ्यास का नित्य बढ़ाना ।
है तीर्थ नित्य ईश्वर से ध्यान लगाना ॥
कर उपकार संसार को सुख पहुँचाना ।
है तीर्थ झूठ को छोड़ सत्य पर आना ॥
निष्कपटी निर अभिमानी । नहीं करे पराई हानी ।
तज वैर बने लासानी । क्रोध को देवे दूर हटायके ॥
कर ब्रह्मचर्य से प्रीति, हो इन्द्रीजीत, समझ यही रीति । दुष्ट इस काम बली को मारदे, ये तीर्थ बड़ा सुखदाई ॥ वही० ॥
है मन को मारना तीर्थ जगत में प्यारे ।
है तीर्थ शान्ति नहीं अशान्ति मनमें धारे ॥
हैं ज्ञान और विज्ञान यह तीर्थ तुम्हारे ।

आलसको तजै तो लग जावे नाव किनारे ॥
वस असल बात ये जानो। शुभ कर्मों को तीर्थ मानो।
मत झूठा झगड़ा ठानो। तुम्हें सत तीर्थ दिये बतलायके ॥
ज़रा अबभी समझ गँवार, तीर्थ का सार, होके हुशियार।
खेल मत जीत के बाजी हार दे, फिर है जीत अति कठिनाई ॥
है असलबात यही तीर्थ जिससे तरना हो।
भला वह क्यातीर्थ जिसमें उल्टा मरना हो ॥
धन और धर्म्म संकलप में जहां धरना हो।
सुख दरकिनार उल्टा दुखड़ा भरना हो ॥
ये शहर नदी और नाले। इन सब से चित्त हटाले।
इन्हें जो तीर्थ कहने वाले। सन्मुख कहो हमारे आय के ॥
तू अबभी हठ को छोड़, इनसे मुख मोड़, कहूँ कर जोड़।
मित्र य जल थल तीर्थ बिसारदे करी तेजसिंह कविताई ॥

भजन १३७

दोहा–जो कुछ असली तीर्थ हैं, उनका किया बयान।
अब नक़ली बतलाऊँगा, सुनिये धरके ध्यान ॥
टेक–अब तो मतिमन्द अनारी, तीर्थ जल थल को बतलावें ॥
यमुना गंगा नदी न्हाने को। छाप द्वारिका की खाने को।
शरीर जीता जलवाने को। बद्रीनाथ आवें। कहें यही
तीर्थ है भारी ॥ अब० ॥
कोई प्रयागराज को धावे। और तीर्थ जान त्रिवेणी न्हावे।
और कोई काशी में प्राण गमावें। ऐसे फर्मावें। कहें मुक्ति
होय हमारी ॥ अब० ॥

तीर्थ तलावों को फर्माकर । तीर्थ पहाड़ों को नित जाकर । जगन्नाथ को तीर्थ बताकर । जूंठ भात खावें । नहीं पड़ती है पसल न्यारी ॥ अब० ॥

तीर्थ वही जिससे तर जावे । इनमें तो उल्टे गोते खावे । फिर क्यों इनको तीर्थ बतावे । तेजसिंह गावे । क्यों अक्ल गई है मारी ॥ अब० ॥

भजन १३८

ख्याल–ऐ मित्रों एक बात तुम्हें हम ऐसी आज बतावेंगे ।
हैं जितने पौराणिक भाई सभी नरक में जावेंगे ॥
अपनी तरफ से निमक मिर्च हम बिल्कुल नहीं मिलावेंगे ।
और किसी में नहीं उन्हें हम पुराणों में दिखलावेंगे ॥

दोहा–बीच पुराणों के लिखा, बिरतों का विस्तार ।
बिन व्रत छोड़ा है नहीं, कोई तिथि और बार ॥

टेक—पाओगे नरक जरूर तुम, जितने हो पौराणिक भाई ।
ज़रा गौर करो पुराणों पर जनाब आली ।
नहीं कोई तिथि और बार बिना व्रत खाली ॥
अब था पुराणों पर अमल क्यों आज्ञा टाली ।
क्यों किया अन्न का भोजन भर भर थाली ॥
आदित्य पुराण में पाया । इतवार का व्रत बतलाया ।
शिवपुराण ने समझाया । सोमवार का व्रत सुनाया ॥

शैर–चंद्र खण्ड अब देख लिखे हैं सोम ग्रह वाले वहां ।
मंगल और बुद्ध वृहस्पति, शुक्र शनिश्चर हैं जहां ॥
बारों का किया बयान, तिथों पर ध्यान, धरिये गुणवान ।

ज़रा रहिये खामोश हजूर तुम, व्रतों से करूं अगाही ॥ जि० ॥
है विष्णु की एकादशी व्रत निराहारी ।
बामन की द्वादशी ये व्रत है भारी ॥
है शिव की त्रयोदशी व्रत जानें नर नारी ।
व्रत अनन्त वा नरसिंह चतुर्दशि जारी ॥

जब पूरणमासी आवे । वह चन्द्रमा व्रत कहलावे ।
अब दशमी को दर्शावे । दिग्पालों का व्रत बतलावे ॥
शैर–दिग्पालों का है व्रत दशमी सब को रहना चाहिये ।
नवमी को दुर्गा के व्रत पर ध्यान देना चाहिये ॥
ये है पुराणों का लेख, समझ कर देख, झूठ नहीं एक ।
इस लिये करो मंजूर तुम, पढ़ने से पता लगजाई ॥ जि० ॥
है व्रत अष्टमी वसुओं का मेरे भाई ।
मुनियो का सप्तमी व्रत दिया बतलाई ॥
है छठ स्वामिकार्त्तिक का व्रत सुखदाई ।
और नाग की पांचें पुराणों में फर्माई ॥
गणपति की चतुर्थी जानो । गौरी की तृतीया मानो ।
इन बातों को पहँचानो । मत झूठा झगड़ा ठानो ॥
शैर–द्वितीया का जो व्रत है वह देवता अश्विनी कुमार ।
आद्यादेवी की प्रतिपदा लिखा पित्रों की मावस पुकार ॥
जब है पुराणों में खास, उपवास, फिर क्यों विश्वास ।
छोड़कर करते हो मित्र क़सूर तुम, क्यों रुची अन्नमें आई ॥जि०
सब पुराणों पर ये पौराणिको दृष्टि लाओ ।

सब ग्रन्थों में सर्वत्र लेख यही पाओ ॥
रहो भूखे मर कर व्रत अन्न मत खाओ ।
करो अन्नपान का ग्रहण नरक में जाओ ॥
जो चाहो स्वर्ग में जाना । मत हर्गिज़ खाओ खाना ।
हो मित्र अगर तुम दाना । तुम्हें लाज़िम है मरजाना ॥
शैर-क्या खूब अटकी पुराणियों से सुलझनी दुश्वार है ।
अन्न छोड़ें प्राण जायँ नहीं नरक के मझधार है ॥
जिनका पुराणों पर अमल, देते हैं दखल, सन्मुख आओ सम्हल
अगर रखते हो मित्रो शहूर तुम, कहे तेजसिंह समझाई ॥ जि०॥

भजन १३६

दोहा-आज कल के ज्योतिषी, इनका करूं बयान ।
इनसे भी इस जगत में, पहुँची पूरी हान ॥
टेक-ठग बहुत फिरें संसार में, ज्योतिष का लिये बहाना ।
जब कोई उन्हें पूछने जावे, जाली पत्रा खोल बिछावे ।
सूर्य आदि ग्रह क्रूर बतावे. इस छल के व्यवहार में ।
धोखे से उन्हें फंसाना ॥ ज्यो० ॥
जो हम कहें उसे सुन जाओ, शान्ति पाठ ग्रहदान कराओ ।
इसमें मत अब देर लगाओ, नहीं तो इस आज़ार में ।
क्या अचरज है मरजाना ॥ ज्यो० ॥
अरे मित्र पृथ्वी जड़ जैसे, सूर्य आदि लोक जड़ वैसे ।
फिर सुख दुख पहुंचावें कैसे । लाओ बात विचार में ।
क्या हैं यह चेतन दाना ॥ ज्यो० ॥

क्यों बहँके हो बहँकाने से, अब भी समझो समझाने से।
लाभ उठाओ इस गाने से, तेजसिंह संसार में।
जो नहीं माने दीवाना ॥ ज्यों० ॥

भजन १४०

शैर-क्या जो इस संसार में है राजा प्रजा जहां कहीं।
पा रहे दुख सुख सभी क्या यह ग्रहों का फल नहीं॥
प्रश्न तुमने जो किया है उसका उत्तर दें अभी।
कर्मों के अनुसार सुख दुख, ग्रह नहीं देते कभी॥
क्या ये ज्योतिष शास्त्र भी झूठा है समझाओ हमें।
क्या जन्मपत्र आदि भी निष्फल हैं बतलाओ हमें॥
जितनी है कुछ गणित विद्या वो तो है सब सही।
फलित लीला जन्मपत्र आदि यह निष्फल हैं सभी॥
टेक-सुनो जन्मपत्र की लीला, जिसमें अद्भुत चतुराई।
ख्याल-जन्मपत्र मत कहो मित्र ये शोकपत्र कहना चहिये।
जन्मपत्र का हाल कहूं अब इधर ध्यान रहना चहिये॥
जिसके घर में पुत्र जन्मता अति आनन्दित होते हैं।
जन्मपत्र के ग्रहो का फल सुन मात पिता सब रोते हैं॥
कहा पुरोहित जीने जन्मपत्र बनवाओ।
इस काम नेक में मत अब देर लगाओ॥
कहें मात पिता पुरोहित से जल्द बनाओ।
सब घड़ी महूर्त ठीक २ लिख लाओ॥
ले क़लम व काराज़ स्याही, लिये और भी रँग मँगवाई।

रचने की सूरत लगाई, लिया जाली पत्रा मंगवाय के ॥
जल्दी से गढ़ लिया, लेके चल दिया, रंग में भर लिया,
मित्र कुछ कही नहीं जाई, किया बहुत लाल और पीला ॥ सु०॥
ख्याल-जन्मपत्र को बना ज्योतिषी यहां सुनाने जात हैं।
ज्योतिषी जी के पास मात और पिता पुत्र के आते हैं ॥
माता पिता ज्योतिषी को कर जोड़ के शीश झुकाते हैं।
लगे पूछने बना है कैसा ज्योतिषी जी फ़र्माते हैं ॥
जन्म ग्रह बहुत अच्छे पड़े हैं इसके।
और मित्र ग्रह भी बहुतही अच्छे हैं इसके ॥
धनवान और प्रतिष्ठा में खूब बढ़ेगा।
हर सभा में इसका सब पर तेज पड़ेगा ॥
जब ऐसे बचन सुनाये, पितु मातु बहुत हर्षाये।
सबने आनन्द मनाये, नहीं कुछ दई दक्षिणा लाय के ॥
तब गये ज्योतिषी जान, ये हैं अज्ञान, न देंगे दान, ऐसी
बातो से एक पाई, कोई करो मक्र और हीला ॥ सु० ॥
ख्याल-कहने लगे ज्योतिषी ऐसे यह ग्रह तो सब सुखदाई।
परन्तु यह ग्रह क्रूर है होकर आठ वर्ष का मरजाई ॥
इतना सुन मा बाप रो पड़े हाय ज्योतिषी जी महाराज।
ये क्या वाणी कही आपने अब क्या करना चहिये काज ॥
कहें ज्योतिषी जी ग्रह मन्त्र का जप करवाओ।
दो दान और विप्रो को नित्य जिमाओ ॥
इन नवग्रहों का विघ्न सब हट जावेगा।
ईश्वर इच्छा होगी तो बच जावेगा ॥

धन माल लीजिये सारा। बच जावे पुत्र हमारा।
हम दें सुते बचा तुम्हारा। दक्षिणा इतनी दीजे लायके ॥
अब देखो इन के हाल, वृद्ध और बाल, करके कुछ ख्याल,
दिया सुख मे दुख पहुँचाई, पितु मातु पड़ा मुख नीला ॥ सु० ॥
ख्याल–अब चातुरता लखो इन की जो कभी कोई मर भी जावे।
मर जाने के बाद ज्योतिषी इस रीति से फर्मावे ॥
हमने तुम से जभी कहा था, हाय! आज हो गई सोई।
ईश्वर की इच्छा में मित्रो कुछ नहीं कर सका कोई ॥
और जो कोई पीड़ित होकर बच जावे।
फिर देखो ज्योतिषी कैसे शब्द सुनावे ॥
देखो विप्रो में कैसी शक्ति है भाई।
जप मन्त्र तुम्हारे सुत को दिया बचाई ॥
इनका इलाज यह कीजै। नहीं इन्हें दक्षिणा दीजै।
दीजै तो उल्टी लीजै। दुगने तिगने मंगवाय के ॥
जब ईश्वर इच्छा रही, इन्होने कही, सबने सुनलई, दक्षिणा
फिर क्यो दीजाई, बर्मा का राग रँगीला ॥ सुनो० ॥

भजन १४१

ख्याल–कितने ही मनुष्य यो कहें, आर्यों न ऐसा अन्धेर किया।
नेंतिस कोटि देवता सब पर है पोछारा फेर दिया ॥
असल में तेंतिस कोटि नहीं हैं बस वह देवता हैं तेंतीस।
तेंतीस से तेंतीस कोटि बनाये खुदगर्जो ने हथफेर किया ॥
वेद शास्त्र में नहीं कहीं ये सब इनकी चालाकी है।
तेजसिंह ले उसी जाल में तुम को हकूमत जेर किया ॥

दोहा–देवों के भ्रमजाल में भूला सब संसार।
देवों का कहूँ हाल मैं, करिये मित्र विचार॥
टेक–वेदों में देव तेंतीस हैं, बता तेंतीस कोटि कहाँ हैं।
प्रथम देवता आठ वसु हैं भाई।
कहता हूँ इनका हाल सुनो चित लाई॥
जल, अग्नि, वायु, आकाश अवनि को जानो।
नक्षत्र, सूर्य, चन्द्रमा आठ ये मानो॥
तुम्हें आठ वसू बतलाये। सब अलग २ गिनवाये।
वसुओं का अर्थ कहूँ भाई। जरा तू सुनले चितलाई॥
इसलिये वसु इन्हें कहें, जीव सब रहें, दुःख सुख सहें।
न बाहर इन के बिस्वे बीस हैं, सब इन्ही में आयें जायें॥
कहूँ प्राण, अपान, व्यान, उदान, सुना के।
समान, नाग और कूर्म, सुनो चित लाके॥
और कृकल, धनंजय, देवदत्त, दशवां है।
और रुद्र ग्यारहवां जानो जीवात्मा है॥
दिये ग्यारह रुद्र बताके। सब मित्रों को समझा के।
ये इस लिये रुद्र कहावें। मरते समय रुदन करावें॥
दिये ग्यरह रुद्र बताय, अर्थ समझाय, वसु ले मिलाय, ये
मिलाकर वसु रुद्र उन्नीस हैं, अब आगे के और बतायें॥
सम्वतसर के बारह आदित्य कहावें।
हैं यह भी देवता वेदानुकूल कहावें॥
इस लिये देवता इनका नाम धरें हैं।
सब जीवों की आयु को खतम करें हैं॥

करो हवन यज्ञ चितलाई। हैं ये भी देवता भाई॥
शतपथ का लेख बताव। तुम्हें कांड चौदहवें में पावे॥
पढ़ देखो धर के ध्यान, जो हो गुणवान, सबको भी जान। ये
मिल कर सब बत्तीस हैं, बिजली तेंतीस यहां है॥ बता०॥
है देव वही जो सब को सब कुछ देवे।
उल्टा देवे और आप न कुछ भी लेवे॥
देखो यह सब को कितना सुख देते हैं।
और आप किसी से कुछ भी नहीं लेते हैं॥
सूर्य्य की ओर निहारो। बुद्धि से खूब विचारो।
कर प्रकाश जल वर्षावे। दे अन्न न खाने आवे॥
जग रचता बारम्बार, करता संहार, सब का आधार।
देवता चौंतिसवां जगदीश है, पद तेजसिंह कथ गावें॥ बता०॥

भजन १४२

दोहा—औरों को ही देव दें, उन्हें न कुछ दरकार।
अब के देव देते नहीं, लेने में हुशियार॥
टेक—अब के देव हमारे, देखो कैसे हुशियार।
यह उल्टा हम से लेवें। और हमें न कुछ भी देवें।
भुइयां भैरों सरदार॥ अब०॥
दे दिया तो क्या दिया नीका। दे दिया खून का टीका।
मूर्ख लें लगा लिलार॥ अब०॥
यह बकरा को भैंसा खावें। पानी से नाहिं अघावें॥
रक्त की बह रही धार॥ अब०॥

हमें कैसी अविद्या छाई । नहीं करता कोई दवाई ।
पुत्र जब हो बीमार ॥ अब० ॥
नीचों की झाड़ा खावें । कर जोड़ पगों पड़ जावें ।
भंगी या होवें चमार ॥ अब० ॥
यह देव नहीं सब छल है । क्यों जाती रही अक़ल है ।
तेजसिंह करो विचार ॥ अब० ॥

दादरा १४३

टेक–शुभ डगरी यह कैसे भुला दई रे ।

खोटे कर्म की अपने ही कर से, भारत में क्यों नींव जमा दई रे ॥ शुभ० ॥ शुभ गुण कहां से अब आयेंगे, विद्या की रीति छुड़ा दई रे ॥ शुभ० ॥ बाले से बच्चे से बाली सी कन्या, सोती उठाय के विवाह दई रे ॥ शुभ० ॥ कहे तेजसिंह खोटे कर्मों ने, भारत की नैया डुबा दई रे ॥ शुभ० ॥

भजन १४४

ईश्वर के बद्दाले और किसी को जो कोई ध्यावेगा ।
यह रख निश्चय वह नहीं मोक्ष को हर्गिज़ पावेगा ॥
वह प्रभू अजन्मा कहावे, नहीं आवागमन में आवे ।
जो उसका जन्म बतावे, वही अज्ञानी कहावेगा ॥ ईश्वर० ॥
वह चैतन शक्ती प्यारा, वह रूप रेख से न्यारा ।
पापी वह महा हत्यारा, जो उसकी प्रतिमा बनावेगा ॥ ईश्वर० ॥
सब जग का पालनहारा, खुद दंत कण्ठ से न्यारा ।

किस तर्फ है ध्यान तुम्हारा, भोग कोई किसे लगावेगा ॥ ई० ॥
विन श्रवण सुने सब वाणी, वह है सब घट का ज्ञानी।
निश्चय वह अति अज्ञानी, जो घण्टे बजा सुनावेगा ॥ ईश्वर० ॥
यह सब कुछ उसकी माया, जो बाग बगीचा लगाया।
वह डाल डाल में समाया, फूल फिर किसपै चढ़ावेगा ॥ ई० ॥
नहीं कभी जन्म में आता, नहीं लूट के माखन खाता।
जो उसको दोष लगाता, नर्क में निश्चय जावेगा ॥ ईश्वर० ॥
दे वेद यजुः यह दुहाई, नहीं उसकी प्रतिमा भाई।
फिर क्यों पत्थर की बनाई, किसे मल २ के निहलावेगा ॥ ई० ॥
यह सत्य खन्ने की वाणी, तुम मानों सभीपौराणी।
जिन वेद आज्ञा नहीं मानी, अन्त में वहही पछतावेगा ॥ ई० ॥

भजन १४५

झूठे ध्यान से जी, प्रभू प्रियतम नहीं मिलैगा।

उठाबैठ में वक्त गुज़ारै, कैसे कहें इबादत।
चिल्लाकर रौरों को सुनावे, दुनियादार शहादत ॥ झूठे० ॥
खुदा तुम्हारा दूर बसे ना, फिर क्यों रौल मचाई।
गौर करो कुछ दिल के अन्दर, इसमें नहीं भलाई ॥ झूठे० ॥
छोड़ वेद को बने पुरानी, भूलगये सब ज्ञान।
उमर गँवाई है नाहक में, बन मूरख नादान ॥ झूठे० ॥
जड़ वस्तु में कहां ज्ञान है, पूज्य एक ओंकार।
वेद रीति से सुमिरन करले, जगत यही है सार ॥ झूठे० ॥

दादरा १४६

टेक–ढूँढ हारी मेरा प्यारा तो मिले ना ।
ऊंचे सिंहासन तकिये लगाये, उस पै मूरत बिठलाई ।
चारों ओर परकरमा करली, बाजों की झनकार सुनैना ॥
मेरा प्यारा तो सुनै ना ॥ ढूँढ० ॥
बद्री काशी गंगा जी धाई, पूजे झुएड और झाड़ी ।
आय पत्थरों में सर मारा, हररैड़ी हरिद्वार लखै ना ॥
मेरा प्यारा तो लखै ना ॥ ढूँढ० ॥
देवी देवता सारे पूजे, कोई न छोड़ा खाली ।
एकादशी पूनो व्रत धारा, मोपै नज़र एक बार करै ना ॥
मेरा प्यारा तो करै ना ॥ ढूँढ० ॥
वृथा बखेड़ों से चित्त हटाओ, करो ईश्वर का ध्यान ।
अगन रिझाओ अपने प्रभु को, तो भवकूप परै ना ॥
मेरा प्यारा तो परै ना ॥ ढूँढ० ॥

गजल १४७

दिल माही दुनिया से लगाना नहीं अच्छा ।
विषयों में सदा उम्र गँवाना नहीं अच्छा ॥
मय पीके सदा अक़्ल गँवाना नहीं अच्छा ।
मजनूँ कभी अपने को बनाना नहीं अच्छा ॥
भूले से भी मयखाने का जाना नहीं अच्छा ।
दिल रंडियों से अपना लगाना नहीं अच्छा ॥
मय पीके कभी शोर मचाना नहीं अच्छा ।

और रंडियों से लुत्फ़ उड़ाना नहीं अच्छा ॥
ज़ीरूह कोई भी हो सताना नहीं अच्छा।
भूले से कभी मांस का खाना नहीं अच्छा ॥
अब वह भी जलाने लगे मुर्दों को हैं अपने।
कहते थे जो कल तक कि जलाना नहीं अच्छा ॥
हां भूल के भी धर्म के कामों में तुम्हें वाय।
हीला नहीं अच्छा है बहाना नहीं अच्छा ॥
मेहनत से जो पैसा भी मिले तो वही अच्छा।
और मुफ्त जो मिलता हो खज़ाना नहीं अच्छा ॥
जिस चीज़ का जो स्वामी हो उसके बिना पूछे।
उस चीज को हर्गिज़ भी उठाना नहीं अच्छा ॥
लाखों मिलें ईजायें मिलें कष्ट हज़ारों।
पर रास्ती से पांव उठाना नहीं अच्छा ॥
केवल उसी ईश्वर को कमर कीजिये सिज्दा।
सर बुतके कभी आगे झुकाना नहीं अच्छा ॥

दादरा १४८

कैसा पागल बनावे, खों २ करावै, चरस का पीना खराब। रोगी बनावें, दर दर फिरावे, धन माल लुटावे, चरस का पीना ख़राब ॥ इस की यारी है बदकारी, ज़िल्लत भारी, करो तौबा वारी रे। हमें दम में लावे, देह जलावे, चरस का पीना ख़राब ॥ कैसा० ॥

दोहा–इस को मत पीना भाइयो, धुँवा नरक का जान।
पीना इस का छोड़कर, हवन करो सुख मान॥
सुनो सब नर नारी रे॥ कैसा०
दोहा–आदत इस की बुरी है, कर दे कफ़ का रोग।
जगन मूर्ख जन जाहि को, समझें सुन्दर भोग॥
जल जांय हड्डी सारी रे॥ कैसा०

गजल १४६

नशा पीकर के नाहक दर्देसर क्यों आप सहते हैं।
सरासर बेवकूफ़ी मोल लेना इस को कहते हैं॥
बुरी लत पड़ गई जब छूटना फिर ग़ैरमुमकिन है।
इसी के हाथ से लाखों बने घर तुर्त ढहते हैं॥
तमीज़ों अक्ल को और तन्दुरुस्ती अपनी को खोकर।
लियाक़त सारी खो रिसवा सरे बाज़ार लहते हैं॥
कर्म और धर्म इज्जत बाप दादा ताक पर रखकर।
नशा में मस्त हो कर घरमें जा रगडों के रहते हैं।
करे सब दोस्तों से इल्तिजा यह शिवनारायण है॥
मिटाई दूध घृत मेवा नहीं क्यों वेग गहते हैं॥

दादरा १५०

(शतरंज)

हा! हा! गँवावे प्यारे समय तू मिथ्या ईश्वर का नहीं ध्यान।
मात हो जावे पावे प्रभु को योग की चालों के द्वार।

आवागमन जिच कैसे छुटै हा ! मनमाना शाह तुम्हार ॥ हा० ॥
इन्द्रियां घोड़े दौड़े जहां तहँ, फ़र्जी जो है तेरो ज्ञान ।
थी तो बिसात पैदल की, पर चलता है फ़ील समान ॥ हा० ॥
क्यों शतरंज का भाड़ लगाया, भारी तो हो एक रंज ।
इस रुख सोच विचार के देखो, ये विषय कोट दो भंज ॥हा०॥
पाठक कहे देखो थोड़ा समय है, जाता है आवे न हाथ ।
हे प्रभु हे प्रभु नित्य रटो, यक धर्म ही जावेगा साथ ॥ हा० ॥

भजन १५१

दोहा–विषधर बानर रोगिया, ज्वारी लुच्चो नार ।
पांचों की कुछ पत नहीं, छठवां झूठ लबार ॥

टेक–खेलन में नफ़ा नहीं है, पेशा बुरा ज्वांरी का ।
धर्म्म न्याय नृप नीति रहेना, शील दया सुख प्रीति रहेना ।
हार जीत कोई मीत रहेना । किसी खिलाड़ी का ।
पत किसी की नाहिं रही है ॥ खे० ॥
राज पाट धन वस्त्र हरादे । बेटा बेटी को पकड़ा दे ।
और के हाथ में हाथ गहा दे । अपनी नारी का ।
मैं सांची बात कही है ॥ खे० ॥
जीता ज्वांरी भड़क बनावे । हारा खोटे पाप कमावे ।
माल बिगाना ठग ठग लावे । चोरी जारी का ।
संगत भी सदा वही है ॥ खे० ॥
धर्म्म त्याग कर अधर्म करना । सत्पुरुषों को कभी न बरना ।

घीसा कहै ध्यान उर धरना। कथन हमारी का।
सत मत की डगर गही है ॥ खे० ॥

भजन १५२

दोहा--राजा नल से हर गये, डिगे युधिष्ठिर भूप।
सब प्रभुता घट जात हैं, जो नर खेलत जूप ॥
टेक--धिक्कार जुआ खेलन को, मत चाल चलो उत्पात की।
धर्म्म से बढ़ परताप नहीं है, ओ३म् से बढ़ कोई जाप नहीं है।
जुये से बढ़कर पाप नहीं है। ये आदत बदजात की।
लानत उन गुरु चेलन को ॥ धि० ॥
जीता ज्वारी धन खोवेगा। हारा मूड़ पकड़ रोवेगा।
विपत भरे ना सुख सोवेगा। नींद जाय दिन रात की।
दुखिया पापड़ बेलन को ॥ धि० ॥
गहना तक बालक मारेंगे। छल चोरी पर चित धारेंगे।
पर तिरियों पै हाथ डारेंगे। टूम तारने गात की।
अमृत में विष मेलन को ॥ धि० ॥
सर्वस खोये हिर्स मिटे ना। हँसे वो रोये हिर्स मिटे ना।
नार बिछोहे हिर्स मिटे ना। सुने न गुरु पितु मात की।
घीसा सब की झेलन को ॥ धि० ॥

भजन १५३

जब से वेश्या लगी प्यारी, तब से हो गये भ्रष्टाचारी।

वेश्या को द्रव्य लुटाया, कहीं घर भी रिहनकरायजी ।
हुई बहुतों की डिगरी जारी ॥ तब से० ॥
कड़े छड़े झूमर गढ़वाई, दिये नाना वस्त्र सिलाई जी ।
घर में माता बैठी उघारी ॥ तब से० ॥
मदिरा से प्रीति लगाइ, बकरों की नारि कटाई जी ।
लीन्ही गो हत्या शिर भारी ॥ तब से० ॥
धन यौवन धर्म गँवाया, छाय रोग आतिशक आया जी ।
दवा रो॰ करे घर नारी ॥ तब से० ॥
सब कुल की लाज गँवाई, बेशर्मी की करी कमाई जी ।
देख हँसते सब नर नारी ॥ तब से० ॥
तुव वीर्य्य से कन्या हो भाई, लाखों बनेंगे तेरे जमाई जी ।
कैसी मित्र गई मति मारी ॥ तब से० ॥
कहै तुलसीराम सुभाई, तजो वेश्या को जल्दी भाई जी ।
है कुलघातिन हत्यारी ॥ तब से० ॥

दादरा १५४

मत रण्डी का नाच कराओरे, मानो बात हमारी ।
सन्तानों को नाच दिखाकर, क्यों व्यभिचार सिखाओरे । यह तो पाप है भारी ॥ मत० ॥ बेटों पोतों को गोद बिठाकर । रण्डी का नाच दिखाओरे । सिखाओ बदकारी ॥ मत० ॥ काम दृष्टि से मोहित होकर । उस पर नजर घुमाओरे । बनो फिर व्यभिचारी ॥ मत० ॥ एक जगह पर बाप और बेटे । बैठ

के नैन लड़ाओरे । कैसा अनर्थ भारी ॥ मत० ॥ रगडी को धन दे दे कर के । नाहक गौवें कटाओरे । जो है पालन हारी ॥ मत० ॥ देखो प्रान किल्यर में जाकर । फिर दिल में शर्माओरे । तुम चोटा धारी ॥ मत० ॥ दीन अनाथ मरें है भूखे तुम यूं नाच कराओरे । कहां शर्म विसारी ॥ मत० ॥ मानो सालिगराम का कहना । धर्म उपदेश कराओरे । जो है अति शुभकारी ॥ मत० ॥

दादरा १५५

सइयां न ऐसी नचाओ पतुरियां ।

गाने पै रीझौ बजाने पै रीझौ, बन्दी की छाती में छेदो न छुरियां ॥ सैं० ॥ पापो की पूंजी पचैगी न प्यारे । खाते फिरोगे हकीमो की पुरियां ॥ सैं० ॥ डोलौगे डाली डुलाते डुलाते । हाथो में पूरी न होगी अंगुरिया ॥ सैं० ॥ जो हाय शंकर दशा होगी ऐसी । तो मेरी कैसे बचालोगे चुरियां ॥ सैं० ॥

भजन १५६

देखो आर्य समाज, क्या २ कीन्हा है काज, सजे उत्तम है साज, कहो ओ३म् ओ३म् ओ३म् ॥ १ ॥

कन्याशाला कहीं जारी, कहीं गुरुकुल है भारी, कहीं कालिज की त्यारी । कहो ओ३म् ३ ॥ २ ॥ सुन के दीनो की टेर, कीन्ही इसने ना देर, खोला दीनालय अजमेर, कहो ओ३म् ३ ॥ ३ ॥ संध्या करना बताया, बलि वैश्य भी सिखाया, यज्ञो में लगाया, कहो ओ३म् ३ ॥ ४ ॥ श्री स्वामी दयानन्द

काटे दुःखो के फन्द, दीन्हा सब को आनन्द, कहो ओ३म् ३॥५॥ धन लाला मुंशीराम, दीन्हा अपना धन धाम, कीन्हा आर्यों का ..त काम, कहो ओ३म् ३ ॥ ६ ॥ तन मन दीजै लगाय, कीजै ..की सहाय, जासो कार्य बन जाय, कहो ओ३म् ३ ॥ ७ ॥ बैर ..व दीजै छोड़, सत्य धर्म लीजै ओड, कहे तुलसी कर जोड़, ..हो ओ३म् ओ३म् ओ३म् ॥ देखो० ८ ॥

भजन १५७

दोहा-मुर्दे भारत वर्ष को, महा दया उर लाय।
देखो कैस भाव सो, ऋषिवर दियो जिलाय ॥

टक-फेर जिन्दा कियारे, मित्रो इस मुर्दे भारत को।
आज हाजमा और हिफाजत, यह दोनों दें दिखलाई।
जभी तो इनमे बचकर निकले मुसलमान ईसाई ॥ फेर० ॥
..िन वेदो को कहते थे, सब किस्से और कहानी।
..ज उन्हीं वेदो की इज्जत सब के मन में मानी ॥ फेर० ॥
..म्म आपस के बैर भाव से, मिट गया तख्त और ताज।
..के अंकुर तोड़ सर्वथा कायम किये समाज ॥ फेर० ॥
..ने सब का छोड़ दिया था, करना परउपकार।
.. उसी के एवज मे मित्रो! खुदगर्जी पै छा ॥ फेर० ॥
.. २ श्री स्वामी जी को मुर्दो को बख़शी जान।
.. नहीं थे इस लिये दे गये हम को अपने प्रान ॥ फेर०
..े पीछे सच्ची जिन्दगी का सबूत यह आई।

कदम न पीछे हटे मित्र ! चाहे कुछी पेश आई ॥ फेर० ॥
ईसा मसीह ने मुर्दे जिलाये ख्याल है कुछ आई ।
ऋषि दयानन्द के जिम्मा किये तुम्हें दे प्रत्यक्ष दिखाई ॥ फेर० ।
अब कोई नहीं रहा दुश्मन है, देखो आंख उठाई ।
यह तो सफ़रमैना की पलटन करती चले सफ़ाई ॥ फेर० ॥
तेजसिंह किस का ये काम था सोचो मित्र अख़ीर ।
आठ अरब के मुक़ाबले में अड़ा अकेला वीर ॥ फेर० ॥

भजन १५८

ख्याल ।

अय मित्रो कुछ सोच समझ कर खुदही ज़रा विचार करो ।
झूठी को हर्गिज़ मत मानों सच्ची को स्वीकार करो ॥
सच कहो अपने आप को क्या अब भी तुम ज़िन्दा जानों ।
लक्षण तो सब मुर्दों के मिलते फिर ज़िन्दा कैसे मानो ॥
गर खाने पीने व बोलने के ऊपर झगड़ा ठानो ।
खाता पीता और बोलता है अंजन इसको पहिचानो ॥
क्या अंजन को ज़िन्दा कहोगे इसका आप इक़रार करो । अय
इस लिये ज़िन्दे और मुर्दे का फ़र्क़ तुम्हें दिखलाऊंगा ।
ज़िन्दा कौन और मुर्दा कौन है इसका शक मिटाऊंगा ॥
ज़िन्दे से कैसे मुर्दे हुये यह सब तुम को दर्शाऊंगा ।
मुर्दों से ज़िन्दे बनो यही एक बात छन्द में गाऊंगा ॥
तेजसिंह कहे प्रेम से तुम को मत कोई तकरार करो । अय